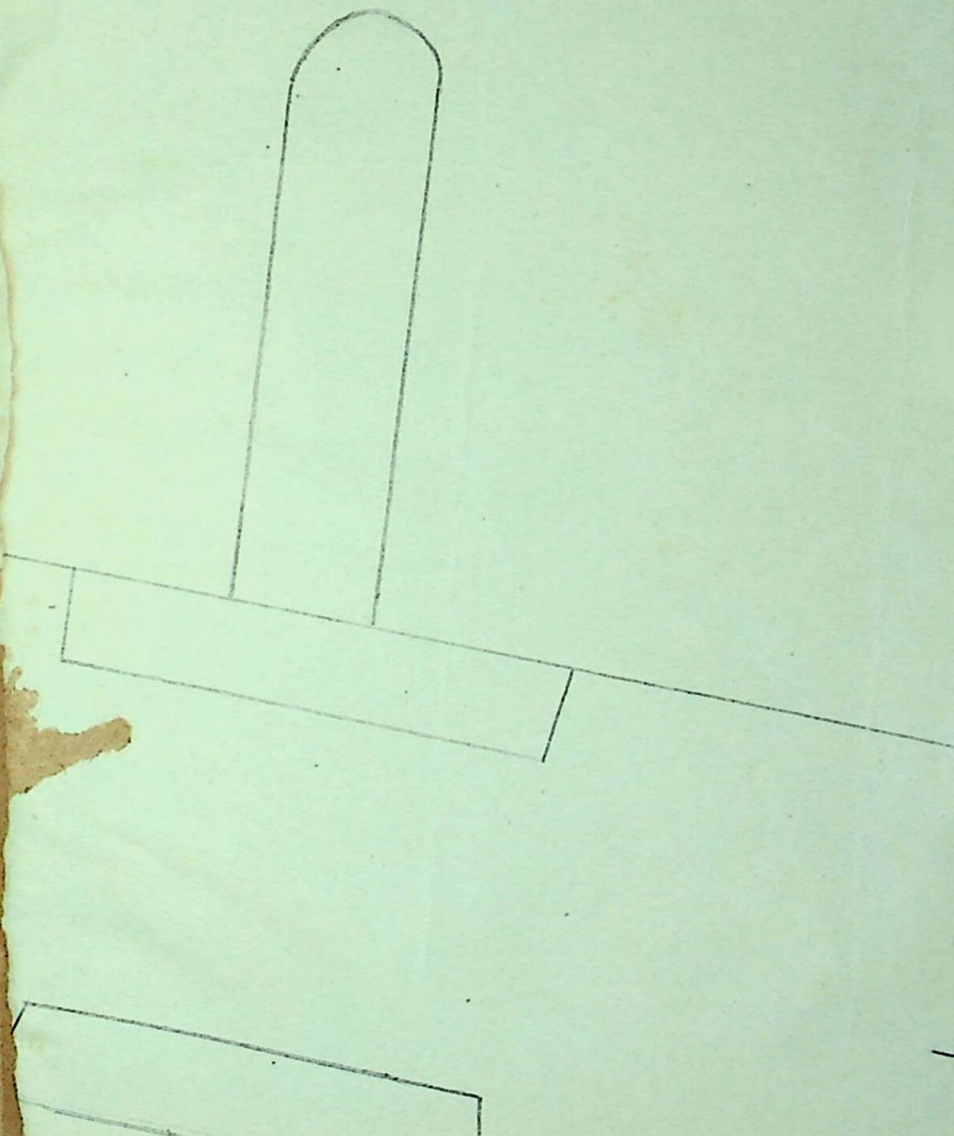
CH_3COON



श्रीमते नृसिंहायनमः

बृहज्जयौतिषसारः

'मधुमती' हिन्दी टीका

लेखक एवं टीकाकार

श्री पण्डित देवकीनन्दन शास्त्री

ज्यौतिषाचार्य

अध्यक्ष

श्री भृगु ज्योतिष कार्यालय

सी. के. ३ ·/६, सरस्वती फाटक

वाराणसी ।

प्राप्ति स्थान —

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार

५२७ ए./२ कक्कड़ नगर, इलाहाबाद

ब्रांच–जानसेनगंज, इलाहाबाद

द्वितीय संस्करण] [मूब्य ३० रुपये

वैक्रमाब्द २०३५

प्रकाशक :

बम्बई पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–१

प्रथम संस्करण १९७१ ई०

द्वितीय संस्करण १९७८ ई०

मुद्रक :

श्री विष्णु शंकर प्रेस

जालपादेवी रोड, वाराणसी ।

॥ श्रीः ॥

समर्पणम्

दत्ता यया मम कृतेह निवासहेतोः
भूमिः त्रिकण्टकविराजितकाशिकायाम् ।
मातेव या विपदि रक्षति सर्वदैव
तस्यै समर्पितमिदं हि विनम्रभावात् ॥

दया दान तपः सत्य विवेकः समुदारता ।
धर्मे दृढ़रतिः भक्तिः गुरुविप्रेषु गोषु च ॥
वात्सल्यं दीनहीनेषु निर्ममत्वं हि चात्मनि ।
साक्षादेतैगुणैर्युक्ता पुत्र - पौत्र - समन्विता ॥
तस्यै मातृस्वरूपायै तद्वंशवृद्धिकाम्यया ।
वसन्तीदेवी लोहियायै ग्रन्थरत्नं समर्पये ॥

—श्री देवकीनन्दन शास्त्री ज्यौतिषाचार्य

डी० ३६/ ०८ ए० अगस्त्यकुण्ड, काशी ।

॥ श्रीः ॥

भारतीय शिल्प विद्या के पुनरुद्धारक-विविध ग्रन्थों के निर्माता-अभिनव विश्वकर्मा एवं राष्ट्रपति द्वारा प्रदत पद्मश्री उपाधि से अलंकृत।

श्री प्रभाशंकर ओघड़ भाई सोमपुराजी

की

शुभा शंसा

आपने बृहज्ज्योतिषसार सप्रेम भेजा। इसलिए मैं आपका उपकृत हूँ। आपने ज्योतिष शास्त्र के गहन ज्ञान दोहन कर ग्रन्थ में देकर समाज की अमूल्य सेवा कर दिखाई है। आप विद्वान् हैं, आपका अध्ययन अद्भुत है। आपके ज्ञान से आपको P. H. D. की पदवी प्राप्त है। मगर दुःख की बात है कि अंग्रेजी एम० ए० नहीं हैं। खैर. ऐसी पदवी से आपकी कीर्ति अच्छी है।

आपका अमूल्य ग्रंथ बृहज्ज्योतिषसार अद्वितीय है। ऐसे प्रकाशन के लिए आपको धन्यवाद देता हूँ।

३, पथिक सोसाइटी
अहमदाबाद-१३,
१७।११।७१ ई०

—प्रभाशंकर ओघड़ भाई सोमपुरा
स्थापतिः आर्चिटेक्ट, पालीताणा

दामोदर दत्त शर्मा
रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

435, कटरा मेदगरान,
खारी बावली दिल्ली-6

कशिस्थ दैवज्ञ भूषण श्री देवकीनन्दन महोदयेन कृतोऽयम् बृहज्ज्योतिषसारस्य मधुमतीति हिन्दी भाषानुवादः स्थाली पुलाक न्यायेन मया यथावसरं क्वचित् क्वचिदवलोकितः। मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा टीकादि ग्रन्थानां प्रामाण्यवचनैः परिपुष्टोऽयं प्रयोगः यदेकस्मिन्नेव ग्रन्थे ज्योतिष सम्बन्धिनी विविधा सामग्री साररूपेण वरीवर्त्ति तद् ग्रन्थस्य उपादेयतां वर्धयति।

अतः सङ्ग्रहोऽयमत्युत्तमः सामान्योपयोक्तुश्चातीव लाभकरः। भूयसा प्रयत्नेन सौष्ठवेन च कार्यमेतद् सम्पादितम् श्री शास्त्रि-महोदयेन। श्री देवकीनन्दन महोदयैंस्ययशोवृद्धि समुन्नतिश्च सर्वदैव परमेश्वर सविधे प्रार्थ्यते।

॥ श्रीः ॥

बृहज्ज्यौतिषसार 'मधुमती' हिन्दी टीका

के सम्बन्ध में

देश के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद नेता, एवं साहित्य मनीषियों की सम्मतियाँ

सुधाकर पाण्डेय
संसद सदस्य

फोन { वाराणसी : ६२८५३, ६७००० / ६३३५४, ६२४८८ / दिल्ली : ३८८२५०

४२, अशोक रोड, नई दिल्ली

श्री पं. देवीनंदन शास्त्री को मैं बहुत वर्षों से जानता हूं। उनके ज्ञान और गुणग्राहकता के कारण मैं बहुत प्रभावित रहा हूं। बृहज्ज्योतिषसार: अपने विषय का एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। उसकी हिंदी टीका प्रस्तुत कर उन्होंने हिंदी की श्रीसमृद्धि की वृद्धि की है। टीका सरल सुबोध, स्पष्ट और सर्वथा भाव और विषय को मूल के गुण-धर्म के अनुरूप उसी परम्परा में प्रस्तुत करती है। ऐसी सुंदर टीका के लिए वे हमारी बधाई के पात्र हैं। आशा है उनके इस कार्य का हिंदी जगत आदर करेगा।

सुधाकर पाण्डेय

प्रधानमन्त्री

श्री नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

विद्यावाचस्पति सम्मानितप्राध्यापक
पण्डितराज श्रीकालीप्रसाद मिश्रः वाराणसेय संस्कृतविश्वविद्यालय
भूतपूर्व प्रिंसिपल संस्कृत महाविद्यालय डी १/६ सरस्वती फाटक
का० हि वि० वि० वाराणसी।

श्री मन्तः पण्डितप्रवराः देवकीनन्दन शर्मा शास्त्रिणोज्यौतिषाचार्या इह काश्यां बहोः कालान्महतींप्रसिद्धिं प्राप्ताः विराजन्ते।

समयेऽत्रैतत्प्रणीतो बृहज्ज्योतिषसारो ग्रन्थः मया साक्षात्कृतः। कुतुहला क्रान्तमानसोऽस्य कतिपयभागावलोकनायप्रासारयमहं मनश्चक्षुषी चेति निभाल्य नितान्तं प्रसन्नमना इदं प्रमिणोमि। ज्योतिषशास्त्र प्रविविक्षुणांविधेयानांमधिगत ज्योतिषरहस्यानाञ्च पण्डितानामपि बहूपकारकोऽयंग्रन्थ एतन्मात्राध्ययनेन निश्चितं ज्योतिष कार्यक्षमतां द्रुतं प्राप्स्यति जनइति

ता० ४।१०।७१

काली प्रसाद शर्म मिश्र
डी–१–६ सरस्वती फाटक
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

मिथिला (दरभङ्गा) नरेश द्वारा लब्ध धौत स्वर्णपदक शताधिक ज्योतिषग्रन्थों के लेखक एवं टीकाकार, मैथिली काव्य कानन के कोकिल, त्रिस्कंध ज्योतिषशास्त्र निष्णात, विश्व-विख्यात कीर्ति, काशी ज्योतिर्वित् समिति के अध्यक्ष श्रीपण्डित सीतारामजी झा

की

सम्मति

'श्री देवकीनन्दन शर्म निर्मितो—
ग्रन्थो बृहज्योतिषसार संज्ञकः।
दृष्ट्वैव यं ज्यौतिष तत्त्ववेदितां
बालोऽपि पञ्चाङ्गपटुत्वमेष्यति।''

सम्मतिरियं सीताराम झा शर्मणः
सम्मानित प्राध्यापक
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी,

सम्मति

मैंने श्री पण्डित देवकीनन्दन शास्त्री द्वारा कृत बृहज्ज्योतिषसारः पर 'मधुमती' हिन्दी टीका देखी है। इसमें उनके परिश्रम, विषय की पैठ और ज्योतिष के व्यापक ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है। ग्रन्थ के साथ विषय-प्रवर्त्तन से सम्बद्ध उनकी भूमिका उनके पाण्डित्य की पीठिका प्रस्तुत करती है। मधुमती' टीका मात्र अक्षरार्थ ही नहीं, विषय की व्याख्या है ! स्पष्ट है कि सम्माननीय शास्त्रीजी ज्योतिषशास्त्र पर स्वतन्त्र ग्रन्थकार के रूप में विद्वत्समाज के सामने आयें यही हमारी कामना है।

भगवती प्रसाद शुक्ल
सत्र न्यायाधीश
८।१०।७१

॥ श्रीः ॥

पं० श्रीराजमोहन उपाध्यायः
अध्यक्ष-ज्यौतिष, पञ्चाङ्ग विभाग
का० हि० वि० वि०

काशी हिन्दूविश्वविद्यालय
वाराणसी-५

पं० देवकीनन्दन शास्त्री जी द्वारा निर्मित बृहज्ज्योतिषसार' नामक ग्रन्थ का अवलोकन किया। ग्रन्थ कई परिच्छेदों में विभक्त है, जो अत्यन्त ही उपयोगी है। एक साथ कालज्ञान, पञ्चाङ्ग, मुहूर्त्त और जातक ज्ञान इस ग्रन्थ से विशेष सुलभ हैं। इस प्रकार के ग्रन्थों का होना ज्यौतिषजगत् के लिए बहुत ही प्रसन्नता का विषय है। सामान्य जनता से लेकर विद्वद्वर्ग तक के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी है। लेखक के अभ्युदय की कामना करते हुये जन समुदाय से अनुरोध है कि इस ग्रन्थ को अपना कर लाभ उठायेंगे और लेखक का उत्साह वर्धन करते हुये ज्यौतिषजगत् में अपना अपूर्व योग दानकर अनुगृहीत करेंगे।

राजमोहन उपाध्याय

॥ श्रीः ॥

मेरी सम्मति में बृहज्ज्योतिषसार 'मधुमती' टीका सहित नामक ग्रन्थ सर्वोपयोगी है।

श्री पं० शिवदयाल शास्त्री

गोविन्द जी पाण्डेयः प्राध्यापक संन्यासी सं० कालेज वाराणसी।

श्रीयुत् विद्यावाचस्पति श्री पं० देवकीनन्दन शास्त्री ने जो यह बृहज्ज्यौतिषसार नामक पुस्तक का निर्माण एवं इसकी 'मधुमती' हिन्दी टीका की है। इसे मैंने अच्छी तरह से देखा है। इस ग्रन्थ तथा इसकी टीका से मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ है, क्योंकि; यह ज्यौतिष शास्त्र में अभिरुचि रखने वाले विज्ञजनों एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

मैं आशा करता हूँ कि उत्साही विद्वान श्री पं० देवकीनन्दन शास्त्री भविष्य में भी ऐसे ही अपनी कृतियों से विज्ञ जनों एवं विद्यार्थियों का उपकार करेंगे। किमधिकं विज्ञवर्य्येषु।

गोविन्दजी पाण्डेय

॥ श्रीः ॥

श्री पं० सोमेश्वरजी पाठक पञ्चाङ्ग विभाग
ज्यौतिषाचार्य (लब्ध स्वर्ण पदक) वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय

श्री मतः पं० देवकीनन्दन शास्त्री महोदयस्य 'बृहज्योतिषसार' ग्रन्थस्य राष्ट्रभाषायां मधुमती टीका' मया ऽवलोकितम्। तत्र चानेक फलित ज्यौतिषशास्त्रीय विषयाः प्राचीन नवीन परम्परया च प्रदर्शितम्।

मन्ये यदनेन ज्योतिर्विदां छात्राणां च महानुपकारी भविष्यतीति।

सोमेश्वर पाठकः
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयः

॥ श्री. ॥

श्री पं० ओङ्कारदत्तजी रमलशास्त्री अध्यक्ष—
श्रीराम ज्योतिष कार्यालय,
१८१ ए० चित्तरञ्जन एवेन्यू कलकत्ता-७

सम्मति

'बृहज्ज्योतिषसार' मधुमती हिन्दी टीका सहित नामक ग्रन्थ मनोयोग पूर्वक पढ़ा। ज्योतिष विषयक संग्रह ग्रन्थों में यह अपने ढंग की अनूठी कृति है। इस ग्रन्थ के थोड़े से पृष्ठ देखने से ही जिज्ञासुओं को पूरा ग्रन्थ पढ़ने की उत्कण्ठा जागृत होती है।

आशा है, लेखक अपनी सरल सुबोध शैली में फलित ज्योतिष विषयक ग्रन्थ रचना का क्रम जारी रखेंगे। प्रत्येक गृहस्थ के नित्योपयोग की यह पुस्तक है।

आपका—
ओङ्कारदत्त शास्त्री

।। श्रीः ।।

दैवज्ञ भास्कर— भृगुसंहिता भवन
श्री पं० द्वारका प्रसाद शास्त्री सरस्वती फाटक
ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य वाराणसी—१

सृष्टि कर्ता ने मानव कल्याणार्थ वेद चतुष्टयी का सृजन कर विविध विद्या-ज्ञान के आलोक से विश्व को देदीप्यमान किया है। इससे समस्त विद्वज्जन सुपरिचित हैं। इस ज्ञान प्रवाह में ज्यौतिष शास्त्र का विशेष महत्त्व दर्शाते हुए महर्षियों ने—

"वेदस्य निर्मलः चक्षुः ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।
विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्त्तं न सिद्धयति ॥

इस उक्ति में श्रुति-स्मृति विहित कर्मों की परिपूर्ति ज्यौतिष द्वारा ही सम्भव कहा है।

ज्यौतिष सम्बन्धित अपार ज्ञान संहिता, होरा और सिद्धान्त संज्ञक ग्रन्थों में सविस्तार सुनियोजित है। इस त्रिस्कन्ध संज्ञक ज्योतिष के ग्रन्थ-रत्नों में से सार लेकर विद्यावाचस्पति प० देवकीनन्दन जी शास्त्री ने जो यह बृहज्ज्यौतिषसार' नामक पुस्तक निर्माण की है, वह अत्यन्त उपयोगी और विज्ञ जनों के लिए संग्रहणीय है।

इसमें पञ्चाङ्ग, मुहूर्त्त और जातक के फल दायक ज्ञान के लिए, काल ज्ञान, मास प्रकरण एवं पञ्चाङ्ग परिच्छेद के रूप में तिथि-वार नक्षत्र योग करण का स्पष्टीकरण किया है तथा इसके अतिरिक्त गोचर, संस्कार विवाह, यात्रा व भिन्न २ वस्तु व्यवसाय के अद्वितीय मुहूर्त्तों का बोध एवं वास्तु विचार तथा जातक परिच्छेद के रूप में देश-विदेश के अक्षांश और देशान्तर सारिणियों से युक्त ग्रह भाव स्पष्ट व इष्टकाल साधन की सरल प्रक्रिया सोदाहरण दर्शाते हुए विशेष योगायोगप्रदर्शित कर पुस्तक की अत्यधिक उपयोगिता सिद्ध की है।

इसलिए मेरे विचार से मधुमती हिन्दी टीका से युक्त संस्कृत पद्यात्मक यह "बृहज्ज्यौतिषसार" अन्य संग्रहों की अपेक्षा वहु विषय युक्त है।

अस्तु, ज्योतिर्विदों के लिए इस पुस्तक से कार्य करना अधिक सरल तथा विशुद्ध और पूर्ण विश्वासार्ह होगा। ऐसा मेरा सुनिश्चित मत है।

विजय दशमी द्वारका प्रसाद शास्त्री
वैक्रमाब्दाः २०२६, वाराणसी—१

ॐ

पं० चन्द्रनाथ जी व्यास

सामुद्रिकरत्न, पुराण भूषण
ज्यौतिष मार्त्तण्ड
ज्ञानवापी, वाराणसी–१

पं० देवकी नन्दन शास्त्री द्वारा प्रस्तुत 'वृहज्ज्योतिषसार' नामक पुस्तक में पूर्व प्रकाशित वृहज्ज्योतिषसार ग्रन्थों से कालमान, पंचांग संस्कार एवं विविध मुहूर्त वास्तु, यात्रा, जातक तथा विवाह प्रकरण के अतिरिक्त नक्षत्र योग करणादि प्रकरणों में विषय की वृद्धि कर देने से इसकी उपयोगिता बढ़ गई है ।

इसमें अन्यान्य ज्योतिष ग्रन्थों के आवश्यकीय एवं परमोपयोगी विषयों का विस्तार से किया गया वर्णन ज्योतिष शास्त्र में अभिरुचि रखने वाले विद्यार्थियों की आवश्यकता पूर्ति का सम्बल है । पुस्तक मुद्रण, प्रकाशन की सावधानी के लिए भी प्रशसनीय है ।

—चन्द्रनाथ व्यास

पं० श्री जटाशङ्कर जोगाई

जोगाई निवास
डी ६।१६ ए० रानी भवानी गली
वाराणसी–१

सम्मति

मैंने दैवज्ञ प्रवर पं० देवकीनन्दन जी शास्त्री द्वारा सग्रहीत, वृहज्ज्यौतिषसार नामक ग्रन्थ का आद्योपान्त अवलोकन कर, यह अनुभव किया कि देश में सर्व साधारण की सुविधा के लिए ज्यौतिष के ऐसे सरल ग्रन्थ के आविर्भाव की ही आवश्यकता है ।

क्योंकि, ऐसी सरल पद्धति से इस ग्रन्थ का निर्माण किया गया है कि विद्वद्वर्ग के लिए तो परमोपयोगी है ही, इसके अतिरिक्त ग्राम्य जीवन में व्यस्त सर्व साधारण जनता जनार्दन भी इससे अपना ज्यौतिष सम्बन्धी कार्य कलाप पूर्ण कर नगर स्थित विज्ञजनों से सम्पर्क में होने वाले व्यय और समय को वचाकर अपना हित सुरक्षित रख सकती है ।

—जटाशकर जोगाई

श्रीहरिः

याज्ञिकसम्राट्, वेदवाचस्पति
श्री वेणीराम शर्मा गौड
वेदाचार्य, काव्यतीर्थ

अध्यापक—गोयनका संस्कृत कालेज
७/१४, सकरकन्द गली
वाराणसी।

काशी सदा से ज्यौतिष विद्या का प्रधान केन्द्र रहा है। यहाँ फलित ज्यौतिष, और सिद्धान्त ज्यौतिष के प्रकाण्ड विद्वान् होते चले आये हैं, जिनकी विद्वत्ता से सारा संसार आलोकित है। आज भी काशी में ज्यौतिष-शास्त्र के मूर्द्धन्य विद्वानों की कमी नहीं है, जिनमें पण्डित श्री देवकीनन्दनजी शास्त्री धरड़ का विशिष्ट स्थान है। आप अनेक शास्त्रों के ज्ञाता होते हुए ज्यौतिष-शास्त्र के विशिष्ट विद्वान् हैं। आपने ज्यौतिष-शास्त्र के 'बृहज्ज्यौतिषसार' नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ की 'मधुमती' नाम की महत्वपूर्ण हिन्दी-टीका लिखकर संस्कृतज्ञों का, विशेषतः ज्यौतिष-शास्त्र प्रेमियों का महान् कल्याण किया है। आपने मधुमती' टीका के साथ-साथ स्थल-विशेष में अनेक लोक प्रचलित रूढ़ियों का तथा अनेक आवश्यक विषयों का समावेश कर इस पुस्तक को सर्वोपयोगी बना दिया है। ऐसी पुस्तक की विशेष आवश्यकता थी। मैं इस पुस्तक का प्रचुर प्रचार चाहता हूँ।

वेणीराम गौड

॥ श्री. ॥

पं० सतीशचन्द्र शास्त्री
ज्योतिषशास्त्राचार्य (का० हि० वि० वि०)

अध्यक्ष
चन्द्र ज्योतिष कार्यालय
त्रिपुराभैरवी, वाराणसी—१

श्री पण्डित देवकीनन्दन शास्त्री महोदयैः रचितं सप्तपरिच्छेदात्मक "बृहज्ज्यौतिषसारः" नामक पुस्तकं मयावलोकितम्। अस्मिन पुस्तके भारतीय ज्योतिष फलित शास्त्रस्य सर्वाङ्गाणामतीव वैदुष्येन समावेशः कृतः लेखकेन। ज्योतिष जगति अस्य महत्याऽऽवश्यकतास्तितथा यावन्तो विषया अत्र प्रदिष्टादिस्तावतानां ज्ञानं ग्रन्थान्तरान्न सम्भवेदितिमन्ये। ज्योतिष-शास्त्रप्रसारणे पुस्तकेनानेन अतीव साहाय्यं भविष्यतीति लेखकस्य शुभकामनया सहैव आशास्महे! शुभम्!

पं० सतीशचन्द्र शास्त्री
९।१०।७१

फोन नं* ६७०२६

डा० श्री गोपालचन्द्र मिश्र
आचार्य—वेद धर्मशास्त्र-मीमांसा,
एम्० ए०, पी० एच० डी०
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष-वेदविभाग

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालय
७ अध्यापक निवास, जगतगंज
वाराणसी—२
मिति ५।१०।७१

ज्यौतिष शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् एवं फलादेश के सिद्ध वक्ता पं० श्री देवकीनन्दन शास्त्रीजी के द्वारा विरचित बृहज्ज्यौतिषसार' पुस्तक देखने का अवसर मिला।

आज भारतीय संस्कृति के प्रति जनसाधारण में जो उदासीनता है उसका एक कारण यह है कि प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रम्' के तलस्पर्शी विद्वान् अपने अनुभव एवं ज्ञान को समयानुरूप शैली से शिक्षित जनों में पहुँचाते नहीं है। भारतीय ज्यौतिष में अनुभवी विद्वानों की मौलिक रचना की प्रवृत्ति इधर विच्छिन्न सी चल रही थी। हर्ष की बात है कि श्रीशास्त्रीजी जैसे स्वराष्ट्र एवं परराष्ट्र के गण्य मान्य सज्जनों में ख्यातिप्राप्त विद्वान् ने इस ओर ध्यान दिया।

इस पुस्तक में प्रारम्भिक ज्ञान देने के साथ मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से गहराई की ओर सोपान लगा दिया है। विद्यार्थी, विज्ञासु तथा अनुसन्धाताओं के लिए यह पूर्ण उपकारक है। इस ग्रन्थ में उन अनुभवों के समावेश से सुवर्ण में सौरभ की उक्ति सफल हुई है, जिन दैविक गुरुपरम्परा प्राप्त काल सम्बन्धी गुण दोषों का अन्य पुस्तकों में मिलना असंम्भव है।

मैं विद्वान् लेखक की अन्य प्रौढ रचनाओं की प्राप्ति की शुभ कामना के साथ इस ज्योतिषसार को सबको जानने के लिए अनुरोध करता हूँ।

—श्रीगोपालचन्द्र मिश्र

"ज्योतिष शास्त्री" ज्योतिष रत्नाकर, दैवज्ञ रत्नाकर 'सामुद्रिकशास्त्रालंकार'
तंत्र शिरोमणि
सम्पादक :—"कटाक्ष" पत्र, प्रणेता, एवं सम्पादक लक्ष्मी पॉकेट जंत्री,
गीता जंत्री, ठाकुर प्रसाद कैलेण्डर एवं चिन्ताहरण कैलेण्डर आदि ।

एकमात्र वितरक :— २९१२ पीली कोठी,
"चिन्ताहरण जंत्री" कानपुर ।

डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी "निर्भय"

आपने जो बृहज्ज्योतिषसार सम्मत्यर्थ भेजा, मिला, धन्यवाद ।

मैंने दैवज्ञ प्रवर प० देवकी नन्दन शास्त्री द्वारा निर्मित बृहज्योतिषसार नामक ग्रन्थ का आद्योपान्त अवलोकन किया । पुस्तक कई परिच्छेदों में विभक्त है, जो अत्यन्त ही ज्योतिषजनोपयोगी है, साथ ही साथ कालज्ञान, पञ्चाङ्ग, मुहूर्त और जातक ज्ञान तथा कुछ बड़ी ही उपयोगी सारणियाँ आदि इसमें विशेष सुलभ है ।

इस प्रकार के ग्रन्थों का होना ज्योतिष जगत् के लिए बहुत ही उपयोगिता का विषय है । सामान्य जनता से लेकर विद्वद्वर्ग तक के लिए यह पुस्तक परमोपयोगी है ।

वैसे तो शास्त्री जी हमारे अभिन्न मित्रों में से हैं और ज्यौतिष शास्त्र विशेष कर फलित के ज्ञाता हैं । हम चाहेंगे कि शास्त्री जी इसी प्रकार के और भी जनोपयोगी फलित पर कुछ बढ़िया सामग्री जनता के समक्ष प्रस्तुत करें । मैं आपके अभ्युदय की कामना करते हुए जनता से भी अनुरोध करता हूँ कि इसे अपनाकर लाभ उठावें और लेखक का उत्साह वर्धन करें ।

साथही इसके प्रकाशक महानुभाव श्री विश्वनाथ जी तथा सोमनाथ जी खन्ना अध्यक्ष बम्बई पुस्तकालय वाराणसी भी जिन्होंने इसे सुन्दर रूप से प्रकाशित किया है, बधाई के पात्र हैं ।

रामेश्वर त्रिपाठी निर्भय

॥ श्रीः ॥

ज्योतिर्वित्तिलक

पं० श्रीयागेश्वर जी पाठक ज्योतिषी,

शारदा ज्यौतिष कार्यालय

डी. ३६/८८, अगस्त्यकुण्ड,

वाराणसी

पं० देवकीनन्दन शास्त्री ने वृहत् जो वृहज्ज्योतिषसार छपाया है इसमें प्राचीन छपे हुए ज्यौतिषसार से अधिक विषय का सप्रमाण संग्रह किया हैं। जो कि सर्वजनोपयोगी है अतः इस ग्रन्थ को रखने से दूसरे ग्रन्थ की आवश्यकता प्रचलित व्यवहार में नहीं पड़ सकती।

श्री यागेश्वर पाठक

॥ श्रीः ॥

श्रीपंडित देवकीनन्दन शास्त्री कृत 'वृहज्ज्यौतिषसारः नामकं ग्रन्थं मया सम्यक अवलोकितम्। वेदांगज्यौतिषं हि नाम प्राचीन विज्ञानम्। आधुनिके प्रत्यक्षप्रमाण प्रधाने वैज्ञानिके युगे च स्य महत्वम् अनुदिनं ह्रासनेति। अतः एवं विध व्यवहारोपयोगी ग्रन्थस्य सम्प्रति महती आवश्यकता अस्ति।

कृतो हि महान् उपकारो लोकस्य, श्रीमताशास्त्रिमहाभागेन ग्रन्थेऽस्मिन् कालज्ञानादारभ्य राजयोगपर्यन्तावश्यक विषयाणां क्रमबद्धन्यासं नानाविधानुभवसिद्ध योगानां योगं च कुर्वता।

सरलया सुस्पष्टया नामानुगुणया 'मधुमत्या" टीकया, अनुभव सिद्धानां देशभेदेन व्यवहारोपयोगिनां विषयाणां, सोदाहरणेष्टकाल ग्रहस्पष्ट लग्नस्पष्टादि गणितरीतीनाञ्च सुगमतया प्रदर्शनं कृतम्।

अस्य ग्रन्थस्य मौलिक वैशिष्टयं प्रशंसनीयं यत् अनेकेषां विदुषां अनुभवसिद्धानां नवीनानां योगानां सन्निवेशः।

ज्योतिष जगतामत्यन्तोपयोगिनाऽनेनैकेनैव ग्रन्थेन सम्यक् अभ्यस्तेन समस्तं ज्यौतिष कार्य सम्पादयितुं शक्यते। आशास्से यत् उत्साहीविद्वान् लेखकोऽग्रिम संस्करणे फलस्यापि विस्तारं कृत्वा ज्योतिषजगतां महत् उपकरिष्यतीति।

क्षेमेन्द्रकुमार जोशी

ज्योतिषाचार्य, (सिद्धान्त एवं फलित)

ज्यौतिषविभागाध्यक्षः

आदर्श श्रीविश्वनाथ गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालयः

कर्णघंटा, वाराणसी

प्राध्यापक :—
ज्योतिष विभाग
मीठालाल हिंमतलाल ओझा वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
ज्योतिषाचार्य

वाराणसी का. कृ. ७ रवि संवत् २०१८

॥ श्रीः ॥

बृहज्ज्यौतिसार का संग्रह गङ्गा प्रवाह की तरह विस्तृत होता जा रहा है। अभीतक इसके अनेक संग्रह छपे हैं, परन्तु इस समय श्रीयुत पं० देवकीनन्दन शास्त्री द्वारा इसका संग्रह अतीव उपयुक्त प्रकार से हुआ है। इसमें व्यवहार की आवश्यक सामग्री का अच्छा समावेश दिखता है। और इस एक पुस्तक के अध्ययन से ज्यौतिषशास्त्रका प्रारम्भिक अभ्यासी अच्छा लाभ उठा सकेगा। मुहूर्तादि विषय के साथ साथ जातक गणित का भी समावेश कर इसे अधिक उपयोगी बनाया है। यदि कुछ फलादेश का भी समावेश होजाता तो सोने में सुगन्ध का रूप धारण कर लेता। मैं उत्साही लेखक की सर्वतोभावेन उन्नति के विश्वेश के चरणारविन्द में प्रार्थना करता हूँ। इसी प्रकार के और भी ग्रन्थों का निर्माण कर ज्यौतिषशास्त्र के अभ्यासीयों का मार्ग प्रशस्त करेंगे। यही मेरी शुभ कामना है।

"शुभम्" मीठालाल हिंमतराम ओझा

॥ श्रीः ॥

श्री पं० युगल किशोर शर्मा गौडः
मु० पो० वारा सिवनी
जि० बालाघाट (मध्यप्रदेश)

बालानां सुखबोधाय. रञ्जनाय सुमेधसाम्।
ग्रन्थरत्नमहम्मन्ये बृहज्जोतिषसारकम्॥
सर्वदा रक्षणीयं हि भृशमुपयोगिदमिमम्।
जनैः साधारणैर्ज्योतिर्विद्या संरक्षकैस्तथा॥

—सम्मतिरियं युगल किशोर शर्मणः

॥ श्रीः ॥

श्री पं० शङ्करलालजी शर्मा भातरा

अविक्ल सुप्रीम कोर्ट

सम्पादक—

शङ्खनाद (साप्ताहिक गौहाटी)

सम्मति

श्रीपण्डित देवकीनन्दन शास्त्री द्वारा लिखित एवं मधुमती हिन्दी टीका विभूषित बृहज्ज्यौतिषसार आद्योपान्त अवलोकन किया। ग्रन्थमें विषय चयन सुन्दर ढंगसे हुआ है। टीकाकार के रूप में मूलगत विषयों का सुन्दर स्पष्टीकरण करते हुए निर्भीकता पूर्वक लेखक ने समाज में प्रचलित कुछ कुरीतियों पर जहाँ कटाक्ष किया है, वहीं संस्कार प्रकरण में उपनयन सहित कई संस्कारों को करना हिन्दू मात्र के लिए आवश्यक भी बतलाया है।

इस एक पुस्तक को अपने घर में रखने से जहाँ गृहस्थको मुहूर्त्तादि की जानकारी होगी, वहीं बच्चे-बच्ची एवं नवयुवक तथा नवयुवतियों को मुहूर्त्त एवं संस्कारों के वैज्ञानिक रहस्यों की भी जानकारी होगी तथा उनके हृदय में हिन्दुत्व के प्रति प्रेम भी जाग्रत होगा। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक का बहुत प्रचार होगा तथा आगामी संस्करण इससे भी बृहत् और महत्त्वपूर्ण सामग्रियों से सज्जित होगा।

—शङ्करलाल शर्मा भातरा

भूमिका

आज के युग में भले ही कोई अपने को विज्ञानवादी कहे या अध्यात्मवादी दोनों ही ज्योतिषशास्त्र के मूलाधार भाग्यवाद या ग्रह प्रभावित नियतिवाद पर विश्वास करते हैं।

ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिक भित्ति बड़ी ठोस हैं चाहे वैज्ञानिक प्रत्यक्ष प्रमाणों की कसौटी (जैसे कुछ पौधों फूलों का सूर्य चन्द्रादि के राशि परिवर्त्तन और उदयास्त से प्रभावित होना, मोती और शंख की स्वाती और विशाखा की वृष्टि में उत्पत्ति, ग्रहण काल में पशुओं द्वारा भी तन्द्रा, आलस्य और भोजन में अरुचि आदि बातें) पर, चाहे तार्किक अनुमान प्रमाण (आकाशस्थ चन्द्र की बनावट हंसमुख, शीतल प्रियदर्शी है तो चन्द्र प्रभावित व्यक्ति भी शीतल, हंसमुख, प्रियदर्शी होता है आदि) के आधार पर और चाहे अध्यात्मवादी घट के भीतर ही ग्रहपिण्डों की कल्पना करके आप्त वाक्य (शास्त्र एवं महर्षि वाक्यों) को या स्वर एवं तन्त्र शास्त्रीय ज्योतिष विषयक बातें परख कर देखलें ज्योतिष की सत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकते हैं।

फलित ज्योतिष (सूर्यादि खगोल एवं भूगोल पदार्थों का मानव के वातावरण पर शुभाशुभ प्रभाव) की सत्ता में सहायक वैज्ञानिकों के रश्मि, शब्द, और अणु, तरङ्गगति, भौतिक, चिकित्सा, धातु और वर्ण विषयक अभिनव अनुसंधान हैं।

मानसिक रोगों के क्षेत्र में अनुसंधान रत वैज्ञानिक चिकित्सकों ने मृगी, पागलपन, फीलपाँव, दृष्टिदोष आदि कतिपय रोगों में तथा भौतिक विदों ने भौतिकी के क्षेत्र में भूकम्प, ज्वार भाटा, वर्षा, बाढ़, हिमपात आदि में कारण भूत ग्रहों की विशिष्ट स्थितियों को माना है।

भारत वर्ष ज्योतिष विद्या का उद्गम स्थान है। जितना वैविध्य पूर्ण विस्तृत ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य यहाँ निर्मित हुआ है, उतना अभी तक विश्व में किसी एक देश में नहीं हुआ है। वैदिककाल से आज तक भारत वर्ष इस विद्या में अपना जगद्गुरुत्व अक्षुण्ण रखे हुए हैं। जब सम्पूर्ण विश्व में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से आज साङ्गोपाङ्ग ज्योतिर्विद्या प्रचारित हो रही है, भारतवर्ष के विद्वान् अंग्रेजी भाषा के माध्यम

से भी ज्योतिर्विद्या की सेवा करने में किसी भी देश के विद्वानों से पीछे नहीं हैं। श्री डा० बी० वी० रमन के सम्पादकत्व में बेंगलोर से प्रकाशित, दी एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन The Astrological Magazine नामक मासिक पत्रिका विश्व की श्रेष्ठतम पत्रिकाओं में समझी जाती है। इस पत्रिका के सम्पादक ने अपने विदेश यात्रा काल में पाश्चात्त्य जगत् को अपने भाषणों के माध्यम से भारतीय फलित ज्योतिष के विषय में चमत्कृत कर दिया है।

ऐसे समय में ज्योतिष ज्ञान शून्य डाक्टरेट की बोझिल उपाधि से लदे हुए कुछ भारतीय लेखक ऐसे भी हैं, जो इस शास्त्र को भारत मूलक नहीं मानते ! धीरज रखना चाहिए कि उनका मान मर्दन करने वाले कुछ विदेशी और कुछ देशी डाक्टर तैयार हो चुके हैं। इन होनहार विद्वानों में से एक डा० श्री शक्तिधर शर्मा एम्० एस् सी० ने ९ अप्रैल सन् १९७० ई० को अमेरिका के ओक्लाहोमा युनिवर्सिटी में वैदिक साहित्य एवं भारतीय ज्योतिष के मर्मज्ञ के रूप में पाश्चात्य जगत् में विख्यात वयोवृद्ध विलायती विद्वान् डा० व्हिटनी को एस्ट्रो फिजिक्स पर आयोजित विचार सभा में यह मानने के लिए विवश कर दिया कि भारतीय ज्योतिष ग्रीक से न ली जाकर अपने स्वतंत्र रूप से विकसित हुई है। डा० व्हिटनी ने डा० शक्तिधर शर्मा के प्रमाणों को देखते हुए उनके मत को स्वीकार कर लिया। (विशेष विवरण मार्तण्ड पञ्चाङ्ग संवत् २०२८ पृ० ६ पर देखें)

वर्तमान शताब्दी में भारतवर्ष में अनेक सुयोग्य ज्योतिर्विद हुए हैं, तथा वर्त्तमान भी हैं; जिनकी कीर्त्ति विदेशों में भी फैली हुई है। स्वातंत्र्योत्तर काल में ज्योतिष के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ विभिन्न राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालयों तथा प्रकाशकों ने प्रकाशित किये हैं। कुछ संस्थाओं एवं ज्योतिष विषयक पत्र पत्रिकाओं को केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों ने आर्थिक सहायता प्रदान की हैं। भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति बिरला परिवार ने कलकत्ता के अलीपुर नामक स्थान में 'बिरला प्लेनेटोरियम' नामक वेधशाला की स्थापना की है। केन्द्रीय सरकार ने भी कई वेधशालाओं की स्थापना एवं परिष्कार किया है। इस प्रकार हमारे देश में ज्योतिर्विद्यालता दिनों दिन पल्लवित और पुष्पित हो रही है।

किन्तु अभी हमारा प्रयास सन्तोष जनक नहीं है। जिस प्रकार देश

में चिकित्सकों और वकीलों का संगठन है, उसी प्रकार ज्योतिषियों का भी एक सुदृढ़ संगठन होना चाहिए।

कम से कम प्रत्येक विश्वविद्यालय के अन्तर्गत एक ज्योतिष महा विद्यालय की स्थापना होनी चाहिये। जहाँ साङ्गोपाङ्ग ज्योतिष शास्त्र का अध्यापन एवं अनुसंधान कार्य हो। अन्य भी अनेक आवश्यक बातें सामने आवेंगी। किन्तु, इन दोनों बातों की महती आवश्यकता है।

'वृहज्ज्योतिषसार' नाम की अनेक पुस्तकें पिछले सौ वर्षों में प्रकाशित हुई हैं और मैंने भी इस ग्रंथ के लिए यही नाम चुना है। इसका कारण स्पष्ट है अपने विचारों को अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचाने की इच्छा। दूसरे यह नाम बहु प्रचलित है और इसमें प्रायः वही विषय हैं जो अन्यान्य इस नाम से प्रचलित ग्रन्थों में भी मिलते हैं, किन्तु इसकी विशेषता इसका मधुमती नामक विस्तृत और तथ्य पूर्ण टीका से युक्त होना है। जैसे मुहूर्त चिन्तामणि पीयूषधारा टीका प्रामाण्य वचनों से परिपुष्ट है, वैसे ही यह टीका श्लोकों का केवल हिन्दी अनुवाद मात्र नहीं हैं, इसमें मैंने स्थान २ पर लोक प्रचलित रूढ़ियाँ, उलझन की परिस्थितियों में उपयुक्त सुझाव, आधुनिक युग में बदलती हुई सामाजिक मान्यताओं के अनुकूल प्राचीन संस्कारों का वैज्ञानिक पद्धति से समर्थन आदि नवीन प्रयोग किये हैं। क्लिष्ट विषयों को सोदाहरण सरल रूप में प्रदर्शित किया है।

विगत २२ वर्षों से ज्योतिष विद्या की सेवा करते हुए मुझे अनेक विद्वानों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उनके बहुमूल्य अनुभवों को मधु की तरह से सञ्चित किया। आज उन विचारों को इस 'वृहज्ज्योतिषसार' ग्रंथ और इसकी मधुमती टीका के द्वारा आपके सामने रखते हुए मुझे अतीव हर्ष है।

प्रस्तुत ग्रंथ में मुझे केरल के वयोवृद्ध विद्वान् स्वामी रामानन्दजी, पू० श्री पण्डित यागेश्वरजी पाठक, श्री पं० सीतारामजी झा, श्री पंडित गोविन्दजी पांडेय, श्री पं० सोमेश्वरजी पाठक, श्री पं० द्वारका प्रसादजी शास्त्री, सामुद्रिक रत्न श्री वासुदेव प्रसादजी मेहरोत्रा, श्री पं० काशीनाथजी मोहले, श्री पं० कीर्त्यानन्दजी झा न्यायाचार्य, श्री पं० दौलतरामजी गौड़ वेदाचार्य, श्री पं० माधव प्रसादजी मिश्र, साधु रामसुखदासजी, श्री पं० ओंकारदत्तजी रमल शास्त्री, आचार्य श्री काशीलालजी

मिश्र, श्री पं० पुरुषोत्तमजी शास्त्री, श्री पं० रघुवीरशरण दैवज्ञवाचस्पति (देहली), श्री पं० रमेशचन्द्र शास्त्री (सरवन, रतलाम) से पर्याप्त सहयोग मिला है। मैं इनके प्रति श्रद्धावनत हूँ।

प्रस्तुत संस्करण में मेरे प्रमाद वश त्रुटियाँ रह गई हैं, उन्हें पाठक गण सुधार लेंगे तथा मुझे सूचित करगे। भावी संस्करण में सुधारने में सुविधा रहेगी।

विद्वज्जन चरण चञ्चरीक :—

श्री देवकीनन्दन शास्त्री

शारदीय नवरात्र
२०२८

श्रीभृगु ज्योतिष कार्यालय
सी० के० ३५/६, सरस्वती फाटक,
वाराणसी–१

द्वितीय संस्करण के बारे में—

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण स्वल्पावधि में ही समाप्त हो गया था। पुस्तक की बराबर माँग हो रही थी। जिसे परिस्थितियों वश हम शीघ्र पूर्ण न कर सके। अब इसे नवीन संशोधित रूप में आपके सम्मुख रख रहे हैं। आशा है पाठक जन इसे अपना कर अनुगृहीत करेंगे। भारतीय कुण्डली विज्ञान के यशस्वी लेखक पूज्य गुरुवर्य स्व० श्री पं० मीठालाल जी ओझा एवं उनके ज्येष्ठ पुत्र चि० वसन्त भाई का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपने ग्रन्थ से कुछ उपयोगी सारिणियाँ उद्धृत करने की अनुमति प्रदान की। इस पुस्तक में संशोधन एवं सम्पादन में मेरे ज्येष्ठ पुत्र चि० गोपालचन्द्र शर्मा का पूर्ण सहयोग रहा है। एतदर्थ धन्यवाद।

—देवकीनन्दन शास्त्री।

विषय-सूची

वार प्रकरण

शुभमस्तु नित्यम्

॥ श्रीः ॥

वसुनयन खनेत्रे वैक्रमेब्दे च भाद्रे
भृगुतनय सुवारे कृष्णचन्द्रावतारे ।
व्यरचि वृहज्ज्योतिस्सारमादाय टीकां
कुसुमरससमोऽस्तु प्रीतये पाठकानाम् ॥

श्रीमद्विश्वेश सान्निध्ये श्रीनृसिंहप्रभावतः ।
देवकानन्दनः शास्त्री गौड़विप्रकुलोद्भवः ॥
नानाग्रन्थानुसारेण कतिपयाँश्च यथामतिः ।
श्लोकान्निमाय ग्रन्थेऽस्मिन् न्यविशत् परिपूर्त्तये ॥
ज्योतिर्विदग्रगण्यो मे पितृव्यः पूर्णचन्द्रजी ।
प्रीयताम् मानसे नित्यं दृष्ट्वेदं बालकौतुकम् ॥

देवकीनन्दन शास्त्री
जन्माष्टमी, वैक्रमाब्द २०२७

॥ श्री मन्मङ्गलमूर्त्तये नमः ॥

अथ

मधुमतीटीकयान्वितो

बृहज्ज्यौतिषसारः

प्रारभ्यते

तत्र

मङ्गलाचरणम्

नत्वा गजास्यस्य पदारविन्दयोः
लक्ष्मीनृसिंहस्य कुलेश्वरस्य ।
प्रारभ्यते फलितशास्त्रसमूहसारो
ग्रन्थः बृहज्ज्योतिषसारनामा ॥१॥

अर्थः—मैं श्रीगणेशजी एवं अपने कुलदेव श्रीलक्ष्मी-नृसिंह भगवान् को प्रणाम करके फलित ज्योतिषशास्त्र समूह का सारभूत बृहज्ज्योतिषसार नामक ग्रन्थ बनाता हूँ ।

ज्योतिःशास्त्रवनप्रसूननिचयैः सारं गृहीत्वा मुदा
टीकेयं रचिता मयाऽतिसरला विद्वन्मनोतुष्टये ।
माधुर्य्यादिगुणैर्युता मधुमती हिन्दीगिरः श्रेयसे
यां दृष्ट्वा सुखमाप्नुवन्तु सकलाः विद्यायशोभूषिता।२।

अर्थः—ज्योतिषशास्त्र रूपी वन के सुन्दर कुसुम समूहों का सार लेकर मैं प्रसन्न मन से विद्वानों के मनस्तोष एवं हिन्दीभाषा की मानवृद्धि के लिए माधुर्यादि गुणों से युक्त अत्यन्त सरल यह मधुमती नाम की टीका भी बनता हूँ जिसे देख कर विद्या यशस्वी विद्वान् सुख प्राप्त करें ।

देवकीनन्दनः शर्मा गौड़विप्रकुलोद्भवः ।
बृहज्ज्योतिषसारं हि करोति टीकयान्वितम् ॥३॥

गौड़ब्राह्मणकुलोत्पन्न देवकीनन्दनशर्मा बृहज्ज्योतिषसार नामक ग्रन्थको टीकायुक्त करते हैं ।

काल ज्ञान परिच्छेदः—

काल महिमा

कलनात्सर्वभूतानां सः कालः परिकीर्तितः ।
अनादि निधनत्वेन सः महान् परमेश्वरः ॥ ४ ॥

सम्पूर्ण प्राणियों का अपने में समावेश (कलन) करने से वह परमेश्वर काल के नाम से कहे जाते हैं । वह काल ही जन्म मृत्यु से रहित होने के कारण महान् परमेश्वर हैं ।

स द्विधा स्थूल सूक्ष्मत्वान्मूर्त्तश्चामूर्त्त उच्यते ।
प्राणादि कथितो मूर्त्तस्त्त्रुट्याद्योऽमूर्त्त संज्ञकः ।५।

वह कालरूपी परमेश्वर भी साकार और निराकार भेद से दो प्रकार के हैं । प्राण (दशदीर्घ अक्षरों के बोलने में जो समय व्यतीत होता है, उसे प्राण कहते हैं) आदि काल का मूर्त्त (साकार) रूप है और त्रुटि (आँख की पलक झंपने के तीसवें भाग का भी सौवाँ हिस्सा) इत्यादि रूप काल का अमूर्त्त (निराकार) रूप है ।

काल के भेद

सः कालः षड्विधः प्रोक्तः मुनिभिस्तु पुरातनैः ।
अब्दोऽयनमृतुर्मासः पक्षो दिवस संज्ञया ॥ ६ ॥

वह काल अब्द (वर्ष) अयन, ऋतु, मास, पक्ष और दिवस इन संज्ञाओं के भेद से छः प्रकार के पुराने मुनियों के द्वारा कहा गया है ।

वर्ष के भेद

अब्दः पञ्चविधः प्रोक्तः मर्त्यैस्तु मान भेदतः ।
जैवः सौरस्तथा चान्द्रः नाक्षत्रः सावनस्तथा ॥७॥

विद्वान् मनुष्यों के द्वारा मानभेद से वर्ष के पाँच भेद कहे गये हैं १—जैव (बार्हस्पत्य) वर्ष—बृहस्पति जब मेषादि किसी राशि में प्रवेश करता है, तब बार्हस्पत्य संवत्सरका प्रारम्भ होता है। धर्मसिंधु कार ने ३६१ दिन का बार्हस्पत्य वर्ष का मान कहा है। बृहस्पति के एक राशि भोगने के काल को बार्हस्पत्य वर्ष कहते हैं।

सौरवर्षः—मेष से मीन राशि तक बारह राशियों में सूर्य का भोग काल सौरवर्ष कहलाता है, यह ३६५ दिन का होता है।

चान्द्रवर्षः—शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि से आरम्भ होकर अमावस्या तिथि पर्यन्त चान्द्र मास होता है। ऐसे १२ चान्द्र मासों का एक चान्द्रवर्ष होता है, यह ३५४ दिन का होता है। दूसरे प्रकार से कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होकर पूर्णिमा तक १ चान्द्रमास होता है। इसमें शुक्लादि चान्द्रमास ही मुख्य है। कृष्णादि चान्द्रमास विन्ध्य के उत्तर में प्रचलित है, ऐसा धर्मसिन्धुकार ने लिखा है। चान्द्र वर्ष का प्रारम्भ चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से होता है।

नाक्षत्र वर्ष—चन्द्रमा के अश्विन्यादि रेवत्यन्त २७ नक्षत्रों के भोग पर्यन्त काल को १ नाक्षत्रमास कहते हैं। ऐसे १२ नाक्षत्र मासों का १ नाक्षत्र वर्ष होता है।

(५) सावन वर्षः—एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के पूर्व तक एक सावन दिन होता है। ऐसे ३० सावन दिनों

का १ सावन मास होता हैं। ऐसे १२ सावन मासों का १ सावन वर्ष कहलाता है।

संव्वत्सरों के नाम

प्रभवो विभवः शुल्कः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥
अँगिरा श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥८॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ६ ॥
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥
नंदनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥१०॥
हेमलंबी विलंबी च विकारी शार्वरी प्लवः ॥
शुभकृत् शोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥११॥
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारण विरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादी च आनंदो राक्षसो ऽनल ॥१२॥
पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्र दुर्मतीः ॥
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षय ॥१३॥

१ प्रभव २ विभव ३ शुक्ल ४ प्रमोद ५ प्रजापति ६ अङ्गिरा ७ श्रीमुख ८ भाव ९ युवा १० धाता ११ ईश्वर १२ बहुधान्य १३ प्रमाथी १४ विक्रम १५ वृप १६ चित्रभानु १७ सुभानु १८ तारण १९ पार्थिव २० व्यय २१ सर्वजित् २२ सर्वधारी २३ विरोधी २४ विकृति २५ खर २६ नन्दन २७ विजय २८ जय २९ मन्मथ ३० दुर्मुख ३१ हेमलम्बी ३२ विलम्बी ३३ विकारी ३४ शर्वरी ३५ प्लव ३६ शुभकृत् ३७

शोभन ३८ क्रोधी ३९ विश्वावसु ४० पराभव ४१ प्लवङ्ग ४२ कीलक ४३ सौम्य ४४ साधारण ४५ विरोधकृत् ४६ परिधावी ४७ प्रमादी ४८ आनन्द ४९ राक्षस ५० अनल ५१ पिंगल ५२ कालयुक्तः ५३ सिद्धार्थी ५४ रौद्र ५५ दुर्मति ५६ दुन्दुभि ५७ रुधिरोद्गारी ५८ रक्ताक्षी ५९ क्रोधन ६० क्षय। ये ६० संवत्सरों के नाम हैं, जो क्रमशः व्यतीत होते हैं। इनमें २०-२० वर्षों की तीन विंशि होती है। प्रभव से व्यय नाम संवत्सर तक २० संवत् ब्रह्मविंशि के अन्तर्गत तथा सर्वजित् से पराभव तक विष्णुविंशि और प्लवङ्ग से क्षय सम्वत्सर तक रुद्रविंशि के अन्तर्गत माने जाते हैं।

कुछ लोगों के मत से

आनन्दादि पतिर्ब्रह्मा भावादि विष्णुरेव च।
जयादिशंकरः प्रोक्तः सृष्टिपालन नाशकाः ॥१४॥

आनन्दादि २० संवत्सरों के स्वामी ब्रह्मा, भावादि २० संवत्सरों के स्वामी विष्णु, जयादि २० संवत्सरों के स्वामी रुद्र हैं, जिनका कार्य क्रमशः सृष्टि, पालन और नाश करना है। इन विंशियों का फल स्वामियों के गुणानुसार होता है।

निर्णयसिन्धु के अनुसार चान्द्रवर्षों के ये प्रभवादि ६० नाम हैं। किन्तु मुहूर्त्तगणपत्यादि ने बार्हस्पत्यमान के वर्षों के भी ये ६० प्रभवादि नाम माने हैं।

रेवा के दक्षिण मे संवत्सर नाम-ज्ञान की विधि

शकेन्द्रकालोर्कयुतः कृत्वा शून्य रसैः हृतिः।
शेषः संवत्सरो ज्ञेयः प्रभवादि बुधैः क्रमात् ॥१५॥

अर्थः —शालिवाहन शकसंवत् में १२ जोड़ कर ६० से भाग देने पर जो शेष बचे उस संख्या तक प्रभव संवत्सर से गिनने पर वर्तमान शकाब्द का सांवत्सरिक नाम मालूम होगा। यह नाम मानवसंवत् का होगा।

सकल शुभकर्म (संकल्पादि) में चान्द्रसंवत्सर ग्रहण करना चाहिये ऐसा आर्ष्टिषेण का मत है—

स्मरेत्सर्वत्र कर्मादौ चान्द्रं संवत्सरं सदा।
नान्यं यस्माद्वत्सरादौ प्रवृत्तिस्तस्य कीर्तिता:॥१६॥

चान्द्र प्रभवादि सम्वत्सर चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपद से प्रारम्भ होगा। किन्तु, बार्हस्पत्य प्रभवादि सम्वत्सर (बृहस्पति के राशि भ्रमण वश) माघ दि भिन्न मासों में शुरू होगा।

बार्हस्पत्य संवत्सर

निर्णयसिन्धुकार ने ज्योतिर्निबन्ध और ब्रह्मसिद्धान्त के निम्न वचन—

व्यावहारिक संज्ञोऽयं कालः स्मृत्यादि कर्मसु।
योज्यः सर्वत्र तत्रापि जैवो वा नर्मदोत्तरे॥१७॥

के अनुसार बार्हस्पत्य प्रभवादि सम्वत्सर को स्मृत्यादि प्रोक्त सकलकर्मों (संकल्पादि) में सर्वत्र (पूरे देश के लिए) अथवा नर्मदा के उत्तर तट वासियों के लिए व्यवहार योग्य कहा है। इस जैव संवत्सर का नाम पूर्वोक्त श्लोक १५ के अनुसार आये नाम में ९ संख्या जोड़ने पर होगा।

बार्हस्पत्यमान से सम्वत्सरनाम ज्ञान-विधि

शकेन्द्र कालःपृथगाकृति२२घ्नः
शशाङ्कनन्दा-श्वियुगैः४२९१ समेतः।
शराद्रि वस्विन्दु १८७५ हृतः सलब्धः
षष्ट्याप्त शेषे प्रभवादयोऽब्दाः॥१८॥

अपने अभीष्ट वर्ष में सम्वत् का प्रभवादि नाम जानने के लिए शालिवाहन शकाब्द को अलग-अलग दो जगहों में रखें और एक जगह रखी हुई शकाब्द संख्या को २२ से गुणा करें तथा गुणनफल में ४२९१ जोड़ दें, तब योगफल में १८७५ का भाग देकर लब्धि को दूसरी जगह रखे हुए शकाब्द संख्या में जोड़ दें अगर यह जोड़ी हुई संख्या ६० से अधिक है तो इसमें ६० से भाग देवें। शेष तुल्य गत सम्वत्सर संख्या होगी। उससे आगे वाली संख्या वर्तमान सम्वत्सर के नाम का संख्या होगी।

उदाहरण

जैसे वर्तमान शकाब्द १८९२ है इसको दो स्थानों पर रखा— १८९२

प्रथम संख्याको = ×२२

बाइस से गुणा किया ३७८४

तब गुणन फल हुआ = ३७८४
४१६२४

इस गुणन फल में जोड़ा = +४२९२

तब योग फल (४१६२४+४२९२)
=४५९१६ हुआ

अब इसमें १८७५ का भाग दिया तो (४५९१६÷१८७५) भागफल २४ तथा शेष ९१६ बचा अब भाग फल २४ को दूसरी जगह रखे शकाब्द संख्या में जोड़ दिया गया तो—

१८९२
+२४

१९१६ हुआ

इसमें ६० से भाग दिया तो (१९१६÷६०=३१) भागफल तथा शेष ५६ बचे अब प्रभवादि क्रम से गणना करने से ५६ वां दुन्दुभि सम्वत्सर होता है। अतः इससे आगे वाला ५७ वां रूधिरोद्गारी सम्वत्सर शकाब्द १८९२ में है।

शकाब्द से विक्रम संवत् का ज्ञान

स एव चापवन्हीन्दुर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि।
रेवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नाति विश्रुतः ॥१६॥

टीका—जो शालिवाहन की शक संख्या है उसमें १३५ मिलाने से विक्रम सम्वत् होता है, जो रेवा के उत्तर भाग में सम्वत् के नाम से प्रसिद्ध है।

संवत्सरों के फल

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत्।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥२०॥
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्च द्वाभ्यां सुभिक्षकम्।
त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं अन्ये पीड़ा न संशयः ॥२१॥

प्रभवादि सम्वत्सर से विद्यमान सम्वत्सर तक गिनने पर जो संख्या आवे उसको दूना करना और उसमें से ३ निकाल देना जो संख्या बाकी बचे उसको ७ से भाग देना जो शेष बचे उससे शुभाशुभ जानना चाहिये। १ या ४ बचे तो दुर्भिक्ष, ५ अथवा २ बचे तो सुभिक्ष, ३ या ६ बचे तो सामान्य और अन्य संख्या आवे तो पीड़ा जानना चाहिए।

संवत्सरों के नाम

युगं भवेद्वत्सर पञ्चकेन युगानि च द्वादशवर्ष षष्ट्या
भवंति तेषामधिदेवताश्चक्रमेणवक्ष्यामि मुनिप्रणीताः
विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टः महेश्वरः पितरः ॥
विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौदस्रौ भगःक्रमात् ज्ञेयाः।२३।

पांच वर्ष का एक युग होता है। इस प्रकार साठ सम्वत्सरों के १२ युग होंगे। और इन युगों के स्वामी भी क्रमशः १ विष्णु, २–बृहस्पति, ३ इन्द्र, ४–अग्नि, ५–ब्रह्मा, ६–शिव, ७–पितर, ८–विश्वेदेवा, ९–चन्द्र, १०–अग्नि, ११–अश्विनी कुमार, और १२–भग, हैं।

युगों के स्वामी ज्ञान का अन्य प्रकार

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोन्य-
स्तस्मादिडान्विदिति पूर्वपदाद्भवेयुः ।
एवं युगेषु सकलेषु तदीयनाथा
वन्ह्यर्कशीतगुविरञ्चिशिवाः क्रमेण ॥२४॥

टीका—अभीष्ट शक वर्ष को पांच से भाग देने पर जो शेष बचे उससे संवत्सर का नाम क्रम से जानना चाहिए । एक शेष बचने पर संवत्सर का स्वामी अग्नि, दो शेष से दूसरा परिवत्सर उसका स्वामी सूर्य, ३ शेष से तीसरा इडावत्सर जिसका स्वामी चन्द्र, ४ शेष से चौथे अनुवत्सर का स्वामी ब्रह्मा और ५ शेष से पाँचवें इद्वत्सर की स्वामी गौरी होती है ।

वर्षे राजा मन्त्री ज्ञानम्

चैत्रे मासि सिते पक्षे यद्वारः प्रथमे दिने ।
वर्षे वर्षेशता तस्य ग्रहस्य भवति ध्रुवम् ॥२५॥
मेषराशौ यदा भानुः विशति यस्य वासरे ।
वर्षे मंत्री ग्रहः प्रोक्तः दैवज्ञैरिति निश्चितम् ॥२६॥

चैत्र मास शुक्लपक्ष प्रतिपद् तिथि को जो वार होता हे वही वर्ष का राजा कहलावेगा । मेष राशि में जब सूय का प्रवेश हो अर्थात् मेष की संक्रान्ति के दिन जो वार होगा वह मन्त्री कहलावेगा ।

अयन संज्ञा

मकराद्राशि षट्कस्य प्रोक्तं चैवोत्तरायणम् ।
षट्सु कर्कादितो ज्ञेयं दक्षिणं ह्ययनं रवेः ॥२७॥

मकर से लेकर छः राशियों में उत्तरायन सूर्य तथा कर्क से लेकर छः राशियों में दक्षिणायन सूर्य होता है।

ऋतुओं से अयन ज्ञान

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरे
ह्ययनमाहुरहश्च तदामरम्।
भवति दक्षिणमन्यऋतुत्रयं
निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥२८॥

टीका—शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म इन तीन ऋतु में सूर्य की गति उत्तर की तरफ होती है। उस समय उसको "उत्तरायण" कहते हैं और वह देवताओं का दिन भी है। वर्षा शरद् और हेमन्त इन तीन ऋतु में, सूर्य की गति दक्षिण में होती है। इसे "दक्षिणायन" और देवताओं की रात्रि कहते हैं।

अयन में शुभाशुभ कर्म

गृहप्रवेशस्त्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबन्धदीक्षा।
सौम्यायने कर्मशुभंविधेयंयद्गर्हितंतत्खलुदक्षिणायने

गृहप्रवेश, देवप्रतिष्ठा, विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत और मन्त्रदीक्षाग्रहणादि ये सब काम उत्तरायण में करना; इनके अतिरिक्त निंद्यकर्म दक्षिणायन में करना चाहिये।

अग्न्याधानं विवाहश्च चौलं राज्याभिषेचनम्।
जलाशयसुरारामप्रतिष्ठा व्रतबन्धनम् ॥३०॥
नवगेहप्रवेशादीन् न कुर्याद्दक्षिणायने।

अग्न्याधान, विवाह, मुण्डन, राज्याभिषेक, जलाशय, देव बगीचे की प्रतिष्ठा जनेऊ, नवनिर्मित गृह में प्रवेश, दक्षिणायन में नहीं करना चाहिए।

गोल संज्ञा

मेषादिराशिषट्के सूर्यः ह्युत्तरगोलके।
तुलादौ राशिषट्केऽर्कः याम्यगोलगतो भवेत्।३१।

मेषादि छः राशियों में सूर्य के स्थित रहने से उत्तर गोल एवं तुलादि छः राशियों में सूर्य के रहने से दक्षिण गोल होता है।

सङ्क्रान्त्यनुसार ऋतु-ज्ञान

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षडर्तवः स्युःशिशिरोवसंतः
ग्रीष्मश्चवर्षाश्चशरच्चतत्हेमन्तनामाकथितश्चषष्ठः ३२

जब मकरादि दो दो राशि सूर्य भोगता है तब शिशिरादि क्रम से एक एक ऋतु होती है।

ऋतु चक्रम

संक्रान्ति मास	ऋतु	संक्रान्ति मास	ऋतु
१ मकर २ कुम्भ	शशिर ऋतु १	७ कर्क ८ सिंह	वर्षा ऋतु ४
३ मीन ४ मेष	वसंत ऋतु	९ कन्या १० तुला	शरत् ऋतु ५
५ वृषभ ६ मिथुन	ग्रीष्म ऋतु	११ वृश्चिक १२ धनु	हेमन्त ऋतु ६

अन्य प्रकार:

मीनादितो द्विद्विभभानुभोगात्
वसन्तपूर्वा ऋतवः षडुक्ताः ॥३३॥

मीनादि दो दो राशियों में सूर्य रहता है तब वसन्तादि ६ ऋतुएँ क्रम से होती हैं।

चैत्रादि मासों पर से ऋतु ज्ञान

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्दृतवश्च षट् ।
दाक्षिणात्याःप्रगृह्णन्ति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ।३४।

दाक्षिणात्य लोग चैत्रादि दो दो महीनों की वसन्तादि छःऋतुएँ देव और पितृ कर्म में ग्रहण करते हैं।

मासप्रकरणम्

चान्द्रमासों के नाम

मासश्चैत्रोथ वैशाखो ज्येष्ठः आषाढ संज्ञकः ।
ततस्तु श्रावणो भाद्रपदोथाश्विनसंज्ञकः ॥३५॥
कार्तिको मार्गशीर्षश्च पौषो माघोऽथ फाल्गुनः ।

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन ये बारह चान्द्र मासों के नाम हैं।

सौर मासपरिज्ञान

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरां याति भास्करः ॥
सा राशिः संक्रमाख्यः स्यान्मासर्त्वयनहायने ॥३६॥

पहली राशिको छोड़कर दूसरी राशि पर जब सूर्य जाता है तो उस राशि को 'संक्रान्ति' कहते हैं और उस सक्रांति से ही मास, ऋतु, अयन, वर्ष इन सब की गणना होती है।

मासभेद

दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं
सौरं तथा भास्कर राशिभोगात् ।
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्याः
नाक्षत्रमिन्दोर्भगणाश्रयाश्च ॥३७॥

शुक्लप्रतिपदा से लेकर अमावस्या पर्यन्त चान्द्रमास कहलाता है, एक राशिको भोगकर जब दूसरी राशि में सूर्य जाता है. तब उसको सौरमास कहते हैं। तीस दिन का सावन मास होता है नक्षत्रों का परिभ्रमण जितने समय में चन्द्रमा करता है, उसको नाक्षत्रमास कहते हैं।

वैदिक मासों के नाम,

मधुस्तथा माधव संज्ञकश्च
शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः ॥
तथेष ऊर्जश्च सहो सहस्य-
स्तपस्तपस्यश्च यथा क्रमेण ॥३८॥

मधु (चैत्र); माधव (वैशाख) शुक्र (ज्येष्ठ), शुचि (आषाढ़) नभ (श्रावण) नभस्य (भाद्रपद) इष (आश्विन) ऊर्ज (कार्तिक) सह (मार्गशीर्ष) सहस्य (पौष) तप (माघ) तपस्य (फाल्गुन) यथा क्रम से ये वेदोक्त मास हैं।

१२ मासों के द्वादशादित्य

अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा।
चैत्रमासे तु वेदांगो भानुर्वैशाख एव च ॥३९॥
ज्येष्ठमासे तपेदिन्द्र आषाढ़े तपते रविः।
गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥४०॥
सुवर्णरेताश्वयुजि कार्तिके च दिवाकरः।
मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुः सनातनः॥४१॥
इत्येते द्वादशादित्याः मासनामान्यनुक्रमात् ॥४२॥

टीका—माघ मास में अरुण, फाल्गुन में सूर्य, चैत्र मास में वेदांग, वैशाख में भानु, ज्येष्ठ में इन्द्र, आषाढ़ में रवि, श्रावण में गभस्ति, भाद्रपद में यम, आश्विन में सुवर्ण रेता, कार्तिक में दिवाकर, मार्गशीर्ष में मित्र, पौष में सनातन विष्णु, इन नामों से सूर्य भगवान बताए गये १२ महीनों में तपते हैं।

१२ मासों के देवता

केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः।
माधवं माघमासे तु गोविन्दमथ फाल्गुने ॥४३॥
चैत्रे विष्णुं तथा विद्याद् वैशाखे मधुसूदनम्।
त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः ॥४४॥
श्रावणे श्रीधरं विद्याधृषीकेशं तु भाद्रके।
आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः ॥४५॥

टीका—मार्गशीर्ष में केशव पौष में नारायण, माघ में माधव, फाल्गुन में गोविन्द, चैत्र में विष्णु, वैशाख में मधुसूदन, ज्येष्ठ में त्रिविक्रम, आषाढ़ में वामन, श्रावण में श्रीधर, भाद्रपद में हृषीकेश, आश्विन में पद्मनाभ, कार्तिक में दामोदर नामवाले देवता १२ महीनों के अधिपति हैं।

१२ मासों की देवी

मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता।
माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका।४६।
चैत्रेमासि रमादेवी वैशाखे मोहिनी तथा।
पद्माक्षी ज्येष्ठमासे तु आषाढ़े कमलेति च ॥४७॥
कान्तिमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता।
पद्मावती आश्विने राधादेवी तु कार्तिके ॥४८॥

टीका—मार्गशीर्ष मास में विशालाक्षी, पौष में लक्ष्मी, माघ में रुक्मिणी, फाल्गुन में धात्री, चैत्र मास में रमा देवी, वैशाख में मोहिनी, ज्येष्ठ मास में पद्माक्षी, आषाढ़ में कमला, श्रावण में कान्तिमती, भाद्रपद में अपराजिता, आश्विन में पद्मावती तथा कार्तिक में राधादेवी ये इन १२ मासों की अधिष्ठात्री देवियाँ हैं।

मास-मासाधिप-चक्रम

	मास	नाम	सूर्य	देवी	देवता
१	चैत्र	मधु	वेदांग	रमा	विष्णु
२	वैशाख	माधव	भानु	मोहिनी	मधुसूदन
३	ज्येष्ठ	शुक्र	इन्द्र	पद्माक्षी	त्रिविक्रम
४	आषाढ़	शुचि	रवि	कमला	वामन
५	श्रावण	नभ	गभस्ति	कान्तिमती	श्रीधर
६	भाद्रपद	नभस्य	यम	अपराजिता	हृषीकेश
७	आश्विन	इष	सुवर्णरेता	पद्मावती	पद्मनाभ
८	कार्तिक	ऊर्ज	दिवाकर	राधा	दामोदर
९	मार्गशीर्ष	सह	मित्र	विशालाक्षी	नारायण
१०	पौष	सहस्य	सनातन विष्णु	लक्ष्मी	नारायण
११	माघ	तप	अरुण	रुक्मिणी	माधव
१२	फाल्गुन	तपस्य	सूर्य	धात्री	गोविन्द

वार के अनुसार मासफल

पञ्चार्कवासराः रोगाः पञ्चभौमा महद्भयम् ।
पञ्चार्कवाराः दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥४६॥

अगर एक महीने में पाँच रविवार हों तो रोग उत्पन्न होता है । पाँच मंगलवार हों तो महान् भय उत्पन्न होता है । पाँच शनिवार हों तो दुर्भिक्ष होता है और शेष रहे हुए वार हों तो शुभप्रद है ।

किस कार्य में कौन मास ग्राह्य है

विवाहादौ स्मृतः सौरः यज्ञादौ सावनो मतः ।
पितृकार्ये स्मृतश्चान्द्रः नाक्षत्रं व्रतदानयोः ॥५०॥

विवाहादि संस्कारों में सौरमास, यज्ञादि में सावन मास और पितृ कार्य में चान्द्रमास, व्रत और दानादि में नाक्षत्र मास का ग्रहण होता है ।

अधिक मास कब होता है

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासै दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥५१॥

टीका—मोटे तौर पर ३२ मास १६ दिन और ४ घटिका व्यतीत होने से अधिक मास का महीना होता है ।

अधिक मास ज्ञान की रीति

शाके चापकराङ्कैर्विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते
शेषाग्नौ च मधुश्च माधव शिवे ज्येष्ठश्च खेचाष्टके ॥
आषाढ़े नृपते नभश्च शरके भाद्रश्च विश्वांसके ।
नेत्रेचाश्विनकोऽधिमास उदितो शेषेन्यके स्यान्नहि।५२।

टीका—वर्तमान शालिवाहन वर्ष शाके के अंकों में ८२५ घटावें, शेष अंकों में १९ का भाग दें, अगर ३ शेष बचे तो चैत्र; ११ शेष बचे तो वैशाख, और ८ या शून्य बचे तो ज्येष्ठ; १६ बचे तो आषाढ़, पाँच बचे तो श्रावण, १३ बचे तो भाद्रपद, २ बचे तो आश्विन मास की वृद्धि होगी और अन्य संख्या शेष रहे तो अधिक मास नहीं होता है।

क्षयमास

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्याद्-
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्-
तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयञ्च ॥ ५३ ॥

जो चान्द्रमास संक्रांति से रहित हो तो उसे अधिक मास और जिस चान्द्र महीने में दो रवि संक्रान्ति होती हैं उसे क्षयमास जानना चाहिये। यह क्षयमास कार्तिकादि तीन महीनों में ही होता है। उस वर्ष में एक वर्ष के भीतर ही कार्तिकादि में दो अधिकमास आते हैं। आजकल नवीन सूक्ष्मगणित से अन्य मास भी अधिक मास होते हैं। जिस साल क्षय मास होता है उससे या तो १९ वें वर्ष अथवा १४१ वें वर्ष पर पुनः क्षय मास आता है।

विश्वघस्रपक्ष

पक्ष मध्ये क्षयः स्यातास् यस्मिन्मासे तिथि द्वयोः।
विश्वघस्रो भवेत्पक्षः लोकानां भयकारकः ॥५४॥

जिस पक्ष में दो तिथि क्षय हों वह विश्वघस्रपक्ष (१३ दिन का पक्ष) लोक भय कारक होता है।

पञ्चाङ्ग परिच्छेद :—

तिथि प्रकरण

तिथियों के नाम

प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम् ।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ॥५५॥
नवमी दशमी चैवेकादशी द्वादशी ततः ।
त्रयोदशी ततः प्रोक्ता ततो ज्ञेया चतुर्दशी ॥५६॥
पूर्णिमा शुक्लपक्षेन्त्या कृष्णपक्षेत्वमा स्मृता: ।

१–प्रतिपदा, २–द्वितीया, ३–तृतीया, ४–चतुर्थी, ५–पञ्चमी, ६–षष्ठी, ७–सप्तमी, ८–अष्टमी, ९–नवमी, १०–दशमी, ११–एकादशी, १२–द्वादशी, १३–त्रयोदशी, १४–चतुर्दशी। ये तिथियाँ शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों में ही समान और क्रमशः व्यतीत होती हैं, किन्तु, शुक्ल पक्ष की अन्तिम १५ वीं तिथि पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की १५वीं तिथि अमावस्या होती है।

तिथियों के स्वामी

वह्नि - धातृ - गिरिजा - गणनाथाः
कुण्डली - गुह - रवीश्वर - दुर्गाः ।
काल - विश्व - हरि - काम - शिवाः स्युः
चन्द्रमाश्च पितरस्तिथिनाथाः ॥५७॥

१-अग्नि, २–ब्रह्मा, ३–पार्वती (गौरी) ४–गणेशजी, ५–सर्प ६–गुह ७–रवि ८–शिव–९–दुर्गा १०–काल (यम) ११–विश्वेदेवा १२–हरि १३–काम १४–शिव, १५–पौर्णमासी का स्वामी चन्द्र ३०–अमावास्या के पितर ये क्रमशः प्रतिपदा से अमावास्या पर्यन्त तिथियों के देवता कहे गये हैं। इस श्लोक में रवीश्वर शब्द में रवि और ईश्वर का समास है।

नन्दादि संज्ञाएँ और सिद्धि योग

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता-
पूर्णेति तिथ्योऽशुभ मध्य शस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः
सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥५८॥

प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त तिथियों की क्रमशः नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा ये संज्ञाएँ होती हैं जैसे—प्रतिपदा की नन्दा, द्वितीया की भद्रा, तृतीया की जया; चतुर्थी की रिक्ता, पञ्चमी की पूर्णा तथा षष्ठी की पुनः नन्दा, सप्तमी की भद्रा, अष्टमी की जया, नवमी की रिक्ता, दशमी की पूर्णा और एकादशी की नन्दा इत्यादि क्रम से संज्ञाएँ हैं। शुक्ल पक्ष में प्रतिपद से पञ्चमी तक की तिथियाँ अशुभ तथा षष्ठी से दशमी तक की मध्यम और एकादशी से पूर्णिमा तक की तिथियाँ शुभ संज्ञक हैं। कृष्णपक्ष में प्रतिपदा से पञ्चमी तक शुभ, षष्ठी से दशमी तक सम और एकादशी से अमावस्या तक अधम (अशुभ) होती हैं। शुक्रवार को नन्दा तिथि, बुधवार को भद्रा तिथि, मङ्गलवार को जया तिथि, शनिवार को रिक्ता तिथि और वृहस्पतिवार को पूर्णा तिथि होने से सिद्धि योग होता है।

तिथियों की विष घटियाँ

तिथीषु नागाद्रि गिरीश वारिधि
गजाद्रि दिक् पावक दिक् च भास्कराः ।
मुनीभ संख्या प्रथमातिथेः क्रमात्
परं विषाख्यं घटिका चतुष्टयम् ॥५९॥

प्रतिपदादि तिथियों में क्रमशः १५।५।८।७।७।११।४।८।७।१०।३।१०।१२।७।८। इतनी घड़ियों के बाद की ४ घड़ियाँ विषघटी कहलाती हैं अर्थात् प्रतिपदा को १५ घटी के बाद १६।१७।१८।१९ ये घड़ियाँ विषघटी होंगी। दैवज्ञ मनोहर ग्रन्थकार षष्ठी में ९ घटी द्वादशी में १३ घटी त्रयोदशी में १४ घटी के उपरान्त ४ घटियों को मानते हैं। उस श्लोक में में 'गिरीश' शब्दमें गिरि से ७ और ईश से ११ संख्या गृहीत है।

पक्षरन्ध्र तिथियाँ

चतुः षडष्ट निध्यर्क: भूत तिथ्यावनाड़िकाः।
अष्टाङ्कमनु तत्वाऽऽशा बाण संख्या विवर्जयेत्॥६०॥

चतुर्थी; षष्ठी; अष्टमी; नवमी; द्वादशी और चतुर्दशी इन तिथियों की क्रमशः ८ ९।१४ २५ १० ५ ये आरम्भिक घटियाँ पक्षरन्ध्र होने से त्याज्य हैं।

पक्षरन्ध्र तिथियाँ

४	६	८	९	१२	१४	तिथियाँ
८	९	१४	२५	१०	५	त्याज्य घटियाँ

पर्व तिथियाँ

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावस्या च पूर्णिमा।
एतानि पञ्च पर्वाणि रवि संक्रांतिरेव च॥६१॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या और पूर्णिमा तथा रवि की संक्रान्ति पर्व तिथि हैं। इनमें भी शुभ कार्य (विहित कर्मादि को छोड़कर) नहीं करना चाहिए।

विषघटी दोष परिहारः

चन्द्रो विषघटी दोषं हन्ति केन्द्र त्रिकोणगः ।
लग्नं विनाशुभैर्दृष्टः केन्द्रे वा लग्नपस्तथा ॥६२॥
विषनाड्युत्थितं दोषं हन्ति सौम्यर्क्षगः शशी ।
मित्र दृष्टोऽथवा स्वीय वर्गस्थो लग्नपो भवेत् ॥६३॥

लग्न को छोड़कर चन्द्रमा अथवा लग्नेश शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों अथवा चन्द्रमा या लग्नेश सौम्य ग्रह की राशि में मित्र से दृष्ट अथवा अपने वर्ग-गत हो तो विषघटी जन्य दोष दूर हो जाता है।

तिथियों में निषिद्ध कार्य

षष्ठ्यष्टमी भूत विधु क्षयेषु
नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं रतम् ।
नाभ्यञ्जनं विश्वदश द्विके तिथौ
धात्रीफलैः स्नानममाद्रिगोष्वसत् ॥६४॥

शुभेच्छुक मनुष्य षष्ठी को तैल, अष्टमी को मांस, चतुर्दशी को हजामत और अमावस्या को स्त्रियो के संग विषय भोग न करें। त्रयोदशी; दशमी; द्वितीया; इन तिथियों में उबटन एवं मालिश पूर्वक स्नान नहीं करना चाहिए। अमावस्या; सप्तमी; नवमी इन तिथियों में आँवला लगाकर स्नान नही करना चाहिए।

दन्त धावन में निषिद्ध तिथियाँ

अमायां च तथा षष्ठ्यामेकादश्यां रवेर्दिने ।
प्रतिपद्युत्तरे यामान्नकुर्याद्दन्तधावनम् ॥६५॥

अमावस्या; षष्ठी; एकादशी; रविवार और प्रतिपदा के अन्तिम तीन घंटों में दँतुवन नहीं करना चाहिए ।

सामान्यतया शुभाशुभ तिथियाँ

द्वितीया पञ्चमी चैव तृतीया सप्तमी तथा ।
दशम्येकादशी कृष्णप्रतिपच्च त्रयोदशी ॥६६॥
पूर्णिमा तिथयो ह्येताः सर्व कार्ये शुभावहाः ।
अन्यास्तु तिथयोः नेष्टाः प्रोक्तकृत्ये शुभामता ॥६७॥
कृष्णा चतुर्दशी शुक्लाप्रतिपद्दर्श संज्ञका ।
एताः शुभेषु कार्येषु वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥६८॥

द्वितीया, पञ्चमी, तृतीया, सप्तमी, दशमी, एकादशी, कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, त्रयोदशी, पूर्णिमा ये तिथियाँ सब कार्यों में शुभ हैं तथा इनके अतिरिक्त अन्य तिथियाँ इनमें कहे हुए कार्योंको छोड़ कर नेष्ट हैं तथा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा और अमावस्या ये तिथियाँ प्रयत्न पूर्वक शुभ कार्यों में वर्जनीय (त्याज्य) हैं ।

तिथियों में वर्ज्यवस्तुएं

त्यजेत्प्रतिपदाद्यासु कुष्मांडं बृहतीफलम् ।
लवणं मूलकं चैव पनसं तैल सेवनम् ॥६९॥
धात्रीफलं नारिकेलं फलं तुंब्याः पटोलकम् ।
निष्पावान्नं मसूरांश्च वृंत्ताकं माक्षिकं क्रमात् ॥७०॥
अमांयां सुरतं चैव पौर्णमास्यां दुरोदरम् ।

प्रतिपदा को कुम्हड़ा (पेठा) द्वितीया को लवण (मतान्तर से परवल) चतुर्थी में मूली (अन्य मत से बैगन

पंचमी में कटहल (अन्य मत से बेल भी) षष्ठी को तैल की बनी चीजें मतान्तर से पिचुमन्द (कमरख) सप्तमी में आँवला, अष्टमी में नारियल; नवमी में तुंबी (तोराई) दशमी में परवल, एकादशी में दलिया, मतान्तर से चावल, द्वादशी में मसूर, त्रयोदशी में बैंगन, चतुर्दशी में शहद, अमावस्या में स्त्री प्रसङ्ग और पौर्णमासी के दिन जूआ नहीं खेलना चाहिए।

प्रतिपदादि तिथियों में विहित कृत्य

नोद्वाहयात्रोपनयप्रतिष्ठा
सीमन्तचौलाखिलवास्तुकर्म।
गृह प्रवेशाखिल मंगलाद्यं
कार्यं हि मासाद्य तिथौ कदाचित् ॥७१॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के दिन, विवाह, यात्रा, उपनयन प्रतिष्ठा, सीमन्तोन्नयन, चूड़ाकर्म, सभी प्रकार के भवन वास्तु सम्बन्धी और गृह प्रवेशादि व मांगलिक कार्य नहीं करने चाहिएँ। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा में करने चाहिए।

द्वितीया विहित कृत्य

सप्तांग चिन्हानि नृपस्य वास्तु
व्रतप्रतिष्ठाखिलमंगलानि।
यात्राविवाहाखिलभूषणाद्यं
कार्यं द्वितीयादिवसे सदैव ॥७२॥

राजा के सात अंगचिह्न, वास्तु, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन एवं सम्पूर्ण मङ्गलकार्य, यात्रा विवाह एवं सम्पूर्ण आभूषण धारणादि कार्य द्वितीया तिथि में करना चाहिए।

तृतीया विहित कृत्य

संगीत विद्याखिलशिल्पकर्म
सीमन्त चौलान्नगृह प्रवेशम् ।
कार्यं द्वितीया दिवसे यदुक्तं
सदा तृतीया दिवसेऽपिकार्यम् ॥७३॥

संगीत, विद्या, भवनादि सम्बन्धी सम्पूर्ण शिल्प कार्य, सीमन्त, चौल (मुण्डन), अन्नप्राशन, गृह प्रवेश और द्वितीया तिथि में विहित सभी कार्य तृतीया तिथि में भी करने चाहिएँ ।

रिक्ता विहित कार्य

रिक्तासु विद्विड्वध बन्धशस्त्र
विषाग्नि घातादि च यातिसिद्धिम् ।
यन्मङ्गलं तासु कृतं च मूढैः
विनाशमायाति तदाशु नूनम् ॥७४॥

रिक्ता (४।९।१४) तिथियों में शत्रुद्वेष, वध, बन्धन शस्त्र चालन, विषप्रयोग, अग्निकर्म, घातकर्म किये जाने पर सफल रहते हैं तथा मूर्खों के द्वारा इन तिथियों में किये गये मङ्गल कार्य नष्ट हो जाते हैं ।

पञ्चमी विहित कृत्य

शुभ कर्माणि सर्वाणि स्थिराणि च चराणि च ।
ऋणदानं विनायान्ति सुसिद्धिं पञ्चमी दिने ॥७५॥

केवल कर्ज देने को छोड़कर जितने भीं चर, स्थिर शुभ कार्य हैं वे सब पञ्चमी तिथि को करने पर सफल होते हैं ।

षष्ठी विहित कृत्य

अभ्यंग यात्रा पितृकर्म दन्त—
काष्ठं विना पौष्टिक मंगलानि।
षष्ठ्यां विधेयानि रणोपभोग्य
शिल्पानि वास्त्वम्वरभूषणञ्च ॥७६॥

उबटन, यात्रा, श्राद्ध, दंतुवन को छोड़कर प्रायः सभी पौष्टिक एवं मंगल कार्य तथा युद्ध योग्य शिल्प कार्य, वास्तु, वस्त्र एवं आभूषण सम्बन्धी कार्य षष्ठी तिथि में करना चाहिए।

सप्तमी विहित कृत्य

गज कृत्यं विवाहादि संगीतं वस्त्रभूषणम्।
यात्रा प्रवेश संग्रामः सिद्धेयुः सप्तमीतिथौ ॥७७॥

सप्तमी तिथि में गज कृत्य, विवाह सम्बन्धी तथा संगीत, वस्त्र, आभूषण, यात्रा, प्रवेश और संग्राम सम्बन्धित सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

अष्टमी विहित कृत्य

संग्रामयोग्याखिल वास्तुकर्म-
नृत्य प्रमोदाखिल लेखनानि।
स्त्रीरत्नकार्याखिलभूषणानि
कार्याणि कार्याणि महेशतिथ्याम् ॥७८॥

संग्राम सम्बन्धी, सम्पूर्ण वास्तु कर्म, नृत्य, प्रमोद एवं लेख सम्बन्धी, स्त्री, रत्न, सभी प्रकार के आभूषणादि सम्बन्धित कार्य अष्टमी तिथि में करने चाहिए।

नवमी विहित कृत्य

विग्रहः कलहः द्यूतमद्यमाखेटकस्तथा ।
विषाग्नि शस्त्रकृत्यं च नवम्यां सिद्धिमाप्नुयात्॥७९॥

विग्रह, कलह, जूआ, शराब, शिकार तथा विष, अग्नि और शस्त्र सम्बन्धी कार्य नवमी तिथि में सिद्ध होते हैं ।

दशमी विहित कृत्य

विवाहादि शुभं कार्यं भूषा यात्रा प्रवेशनम् ।
गजाश्व नृप कार्याणि सिद्धयन्ति दशमी दिने॥८०॥

विवाहादि शुभ कार्य, वेशभूषा आभूषणादि, यात्रा और प्रवेश, हाथी, घोड़ा, राजसम्बन्धी कार्य दशमी तिथि में सिद्ध होते हैं ।

एकादशी विहित कृत्य

व्रतोपवासाखिल धर्म कार्य
सुरोत्सवाद्याखिल वास्तुकर्म ।
संग्राम योग्याखिल वास्तु कर्म
विश्वे तिथौ सिद्धयति शिल्पकर्म ॥८१॥

व्रत, उपवास, सम्पूर्ण धर्म कार्य, देवता, उत्सव एवं सम्पूर्ण वास्तु कर्म तथा संग्राम सम्बन्धी सम्पूर्ण वास्तु कर्म एवं शिल्प कार्य एकादशी तिथि में करने से फसल होते हैं ।

द्वादशी विहित कृत्य

चिरस्थिराणि कार्याणि विवाह व्रतबन्धनम् ।
द्वादश्यां तत्प्रकुर्वीत तैलयात्रादिकं त्यजेत् ॥८२॥

संपूर्ण चर और स्थिर कार्य; विवाह; जनेऊ आदि द्वादशी में करने चाहिये तथा तैल भक्षण एवं यात्रादि कार्य इसमें नहीं करने चाहिए ।

त्रयोदशी विहित कृत्य

यात्रा प्रवेश संग्राम वस्त्र भूषण मङ्गलम् ।
व्रतबन्धं विनाऽन्यत्र शुभा शुक्ल त्रयोदशी ॥८३॥

यात्रा; प्रवेश; संग्राम; वस्त्र; आभूषण एवं उपनयन को छोड़कर मंगल कार्य में शुक्लपक्ष की त्रयोदशी शुभ है ।

चतुर्दशी विहित कृत्य

विषबंधादि शस्त्राग्नि प्रकुर्याद्दुष्ट कर्म च ।
चतुर्दश्यां शुभं कर्म चौरं यात्रां विवर्जयेत् ॥८४॥

विष प्रयोग; शत्रु को पकड़ना; शस्त्र चालन; अग्निकर्म एवं दुष्टतापूर्ण कार्यों की सफलता चतुर्दशी में करने से होती है । इस तिथि में शुभ (मंगल) कार्य हजामत और यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

पूर्णिमा विहित कृत्य

यज्ञ क्रिया पौष्टिक मङ्गलानि
संग्राम योग्याखिल वास्तुकर्म ।
उद्वाह शिल्पाखिल भूषणाद्यं
कार्यं प्रतिष्ठा खलु पौर्णमास्याम् ॥८५॥

यज्ञ क्रिया; पौष्टिक एवं मांगलिक कृत्य; संग्राम योग्य सम्पूर्ण वास्तुकर्म; विवाह; शिल्प, सम्पूर्ण आभूषणादि कार्य एवं देवप्रतिष्ठादि पौर्णमासी तिथि में करने से सफल होते हैं ।

अमावस्या कृत्य

सदैव दर्शे पितृकर्म मुक्त्वा
नान्यद्विधेयं शुभ पौष्टिकाद्यम् ।
मूढैः कृतं तत्र शुभोत्सवाद्यं
विनाशमायात्यचिराद्भृशं तत् ॥८६॥

अमावस्या तिथि में पितृकर्म (श्राद्ध; पिण्डदान तर्पणादि) छोड़कर अन्य पौष्टिक कार्य नहीं करने चाहिए। मूर्खों के द्वारा इस तिथि में किये गये सम्पूर्ण शुभ कर्म (उत्सवादि) शीघ्र ही नष्ट होते हैं।

तिथियों के फल

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी।
तृतीयारोग्यदात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥८७॥
शुभा तु पञ्चमी ज्ञेया षष्ठी नैव शुभाभवेत्।
सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी ॥८८॥
नवमी मृत्युदा ज्ञेया द्रव्यदा दशमी तथा।
एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥८९॥
त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी।
पुष्टिदा पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावस्या शुभातिथि ।९०।

प्रतिपदादि तिथियाँ क्रमशः निम्न फलदायक होती हैं – प्रतिपदा सिद्धिदायिनी; द्वितीया कार्य साधन करनेवाली, तृतीया आरोग्य देनेवाली, चतुर्थी हानि कारिणी; पञ्चमी शुभ करनेवाली, षष्ठी अशुभकारक, सप्तमी शुभकारक, अष्टमी व्याधि नाशिनी, नवमी मृत्यु कारिणी, दशमी द्रव्य देनेवाली, एकादशी शुभ को देनेवाली, द्वादशी सर्व कार्यों में सिद्धि देनेवाली, इसी प्रकार त्रयोदशी भी सर्व सिद्धि दायिनी तथा चतुर्दशी उग्र कार्यों में सिद्धिदात्री और पूर्णिमा कार्य फल की पुष्टिदात्री एवं अमावस्या अशुभ है।

तिथि लक्षणम्

अमादि पौर्णमास्यन्ता या एव शशिनः कलाः।
तिथयस्ताः समाख्याताः षोडशैव सुधीजनैः ॥९१॥

तन्यते कलया यस्मात तस्मात् तास्तिथयः स्मृताः ।

अमावस्या से लेकर पौर्णमासी तक चन्द्रमा की प्रतिदिन बढ़नेवाली १६ कलाएँ ही प्रतिदिन की तिथि कहलाती हैं। चन्द्रमा की १६ कलाओं के अनुसार ही अमावस्या सहित पूर्णिमा तक १६ तिथियाँ हैं। चन्द्रमा की कला के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होने से ये तिथियाँ कही जाती हैं।

तिथि लक्षणम्

अर्काद्विनिःसृतः प्राची यद्यात्यहरहः शशी ।
तच्चान्द्रमानमंशैस्तु ज्ञेया द्वादशभिस्तिथिः ॥६२॥

अमावस्या के पश्चात् चन्द्रमा सूर्य के सम्पर्क से निकल कर प्रतिदिन पूर्व दिशा की ओर जो चलता है वही चन्द्रमा की १ दिन की मध्यम गति १२ अंश के तुल्य को तिथि कहते हैं।

चन्द्रमा की कलाएँ और देवगण

प्रथमां पिबते वह्निः द्वितीयां पिबते रविः ।
विश्वेदेवास्तृतीयां तु चतुर्थीं सलिलाधिपः ॥६३॥
पञ्चमीं तु वषट्कारः षष्ठीं पिबति वासवः ।
सप्तमीं ऋषयो दिव्या अष्टमीमजएकपात् ॥६४॥
नवमीं कृष्णपक्षस्य यमः प्राश्नाति वै कलाम् ।
दशमीं पिबते वायुः पिबत्येकादशीमुमा ॥६५॥
द्वादशीं पितरः सर्वे समं प्राश्नाति भागशः ।
त्रयोदशीं धनाध्यक्षः कुबेरः पिबते कलाम् ॥६६॥
चतुर्दशीं पशुपतिः पञ्चदशीं प्रजापतिः ।
निष्पीतश्च कलाशेषः चन्द्रमा न प्रकाशते ॥६७॥

कला षोडशिका या तु अपः प्रविशते सदा ।
अमायां तु सदा सोमः औषधीः प्रतिपद्यते ॥६८॥
तमोषधिगतं गावः पिबन्त्यम्बुगतं च यत् ।
तत्क्षीरममृतं भूत्वा मन्त्रापूतं द्विजातिभिः ॥६९॥
हुतमग्निषु यज्ञेषु पुनराप्यायते शशी ।
दिनेदिने कलावृद्धिः पौर्णमास्यां तु पूर्यते ॥१००॥

चन्द्रमा की किरणों में अमृत है और अमृत देवताओं का पेय पदार्थ है अतः कृष्ण पक्ष की १५ तिथियों में देवतागण क्रमशः चन्द्रमा की प्रतिकला में अमृत पीते हैं वे शुक्ल पक्ष की १५ तिथियों में वापस चन्द्रमा को अमृत प्रदान करते हैं। इस प्रकार सर्वदा चन्द्रमा का देवताओं के साथ अमृत का आदान प्रदान चला करता है।

प्रतिपदा को चन्द्रमा की प्रथम कला रूपी अमृत को अग्निदेव; द्वितीया को द्वितीय कला रूपी अमृत को रवि; तृतीया को विश्वे देवा; चतुर्थी को वरुण; पञ्चमी को वषट्कार; षष्ठी को वासव; सप्तमी को दिव्य ऋषगण; अष्टमी को एकपात्; कृष्ण पक्ष की नवमी को यम, दशमी को वायु; एकादशी को उमा, द्वादशी को सम्पूर्ण पितृगण यथा भाग आपस में बाँटकर बारहवीं कला के अमृत को पीते हैं। इसी प्रकार त्रयोदशी तिथि में धनाध्यक्ष कुबेर, चतुर्दशी को पशुपति (भगवान शिव) और पूर्णिमा तिथि को प्रजापति (ब्रह्मा) पन्द्रहवीं कला के अमृत को पीते हैं। इस प्रकार पन्द्रह कला रूपी अमृत के देवताओं के द्वारा पी लिये जाने पर चन्द्रमा अपनी एक मात्र अवशिष्ट १६ वीं कला को जल में प्रविष्ट करा देता है और स्वयं अमावस्या के दिन औषधियों में

निवास करता है। उन औषधियों में तथा जल में प्रविष्ट चन्द्र एवं उसकी अमृत कला को वन में वनस्पतियों को चरने वाली गौयें खा एवं पी जाती हैं और वही अमृत दूध के रूप में और दूध से घी के रूप में प्राप्त कर ऋषि लोग यज्ञों में आहुति देते हैं। जिससे चन्द्रमा पुनः पुष्ट होता है। आहुतियों के माध्यम से प्राप्त अमृत शुक्लपक्ष में प्रतिपदादि तिथियों में अग्न्यादि देवताओं द्वारा पुनः चन्द्रमा को प्राप्त होता है। जिससे चन्द्रमा शुक्लपक्ष में दिनोंदिन बढ़ता रहता है।

मास नक्षत्र और दिन नक्षत्र से तिथि का ज्ञान

मासभाच्चान्द्रभं यावत् गणयेत्तावदेव तु।
यावंति गणनाङ्कानि तावन्त्यस्तिथयः स्मृताः॥१०१॥

चान्द्र मास का नामकरण पूर्णिमा के दिन नक्षत्र पर निर्धारित किया गया है इसलिए मास नक्षत्र पूर्णिमा नक्षत्र है। जैसे—पूर्णिमा के दिन चित्रा नक्षत्र पड़ने से महीने का नाम चैत्र, पूर्णिमा के दिन पुष्य नक्षत्र होने से पौष इत्यादि। इस मास नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या होगी उस दिन तत्तुल्य तिथि होगी। जैसे—वैशाख कृष्ण पक्ष में ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन तिथि विचार के लिए हम आसन्न पूर्णिमा चैत्र की लेंगे। चैत्र की पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र में होती है। अतः चित्रा (मास नक्षत्र) से दिन नक्षत्र ज्येष्ठा तक गिना ५ संख्या हुई अर्थात् उस दिन वैशाख कृष्ण पक्ष की पञ्चमी तिथि ही स्थूल है अतः लगभग आसन्न तिथि आवेगी बिल्कुल सही तिथि इस प्रकार से नहीं आती है।

नन्दादितिथियों में विहित कृत्य

नंदासु चित्रोत्सव वास्तुतंत्र
क्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम्॥

विवाह भूषा शकटाध्वयानं
भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥१०२॥
जयासु संग्राम बलोपयोगी
कार्याणि सिद्ध्यन्त्यपिनिर्मितानि ॥
रिक्तासुविड्वधघातसिद्धि
विषादि शस्त्रादि च याति सिद्धिम् ॥१०३॥
पूर्णासु मांगल्य विवाह यात्रा
सपौष्टिकं शांतिककर्म कार्यम् ॥
सदैव दर्शे पितृकर्म चोक्त
नान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि ॥१०४॥

टी०—नन्दा (प्रतिपदा; षष्ठी, एकादशी) इन तिथियों में आनन्द दायक काम; देवताओं के उत्सव गृह निर्माण कार्य खेत तैयार करना; नृत्य आदि का काम करना चाहिए। भद्रा (द्वितीया, सप्तमी द्वादशी) तिथियों में विवाह; आभूषण गाड़ी रथ; रास्ता बनाना; गमन करना; पौष्टिक क्रिया इत्यादि करना चाहिए। जया (तृतीया, अष्टमी त्रयोदशी) तिथियों में सैन्य के उपयोग में आनेवाले पदार्थ शस्त्र ध्वजादि का काम करने से सिद्ध होते हैं। रिक्ता (चतुर्थी, नवमी; चतुर्दशी) तिथियों में शत्रु का नाश, घात कर्म की सिद्धि, विष प्रयोग; शस्त्र प्रयोग आदि काम सिद्ध होते हैं। पूर्णा (पञ्चमी; दशमी, पौर्णिमा) तिथियों में विवाह आदि शुभ कृत्य, महायात्रा, शान्तिक व पौष्टिक काम करने चाहिए। अमावास्या में केवल पितृकार्य करें अन्य मङ्गल कार्य नहीं करना चाहिए।

मासशून्यतिथियाँ

भाद्रे चंद्रदृशौ नभस्यनलनेत्रे माधवे द्वादशी।
पौषे वेदशरा इषे दशशिवा मार्गेद्रिनागा मधौ ॥
गोष्टौचोभयपक्षगाश्चतिथयः शून्याः बुधैः कीर्तिताः
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे शराङ्गाब्धयः १०५
शक्राः पञ्चसिते शक्राद्व्यग्निविश्वरसाः क्रमात्।
तथा निद्यं शुभे सार्पं द्वादश्यां वैश्वमादिमे ॥१०६॥

भाद्रपद मास में दोनों पक्षों की १।२, श्रावण मास दोनों पक्षों की ३।२, वैशाख मास दोनों पक्षों की १२, पौष मास में दोनों पक्षों की ४।५, आश्विन मास दोनों पक्षों की १०।११, मार्गशीर्ष मास में दोनों पक्षों की ७।८, चैत्र मास के दोनों पक्षों की ८।८, इन तिथियों को शून्य जानना चाहिए और कार्तिक कृष्ण ५, आषाढ़कृष्ण ६, फाल्गुनकृष्ण ४, ज्येष्ठकृष्ण १४ और माघकृष्ण ५, इन तिथियों को महीनों की शून्य तिथि जानना चाहिए। कार्तिक शुक्ल १४, आषाढ शुक्ल ७, फाल्गुन शुक्ल ३, ज्येष्ठ शुक्ल १३, माघ शुक्ल ६, उक्त मासों में उक्त तिथियाँ शून्य हैं, और द्वादशी को आश्लेषा, प्रतिपदा को उत्तराषाढा हो तो शुभ कार्य में निन्दित हैं। ये मासशून्य तिथियाँ मध्यदेश में वर्जित हैं।

युगादि तिथियाँ

नवमी कार्तिके शुक्ला वैशाखे च तृतीयका।
त्रयोदश्याश्विनेकृष्णातथा दर्शश्च फाल्गुने ॥१०७
कार्तिकेऽभूत् कृतारम्भस्त्रेतारंभस्तु माधवे।
फाल्गुने द्वापरारंभ आरंभश्चाश्विने कलेः ॥१०८॥

टीका—कार्तिक शुक्ल नवमी, वैशाख शुक्ल अक्षय

तृतीया, आश्विन कृष्ण त्रयोदशी और फाल्गुन की अमावस्या ये तिथियां युगादि कहलाती हैं। कार्तिक में कृतयुग का, वैशाख में त्रेता का, फाल्गुन में द्वापर का और आश्विन में कलियुग का प्रारम्भ होता है।

युगादि स्वामी

क्रमाच्छंभुर्हरिर्वेधाः पितरस्तत्रदेवताः।
तिलान् लवण सौवर्णः गाश्च दद्याद्युगादिषु ॥१०६
एता युगादयः पुण्याः शुभे वर्ज्या मनीषिभिः।
तत्राक्षय्य तृतीया तु सर्वकार्येषु शोभना: ॥११०

टीका — क्रमश, शंभु, हरि, ब्रह्मा और पितर ये चारों युगों के देवता हैं। युगादि तिथियों में तिल, लवण, सोना और गौ दान करनी चाहिए। युगादि तिथि पुण्य कार्य में शुभ हैं और अन्य कार्य में वर्ज्य है। परन्तु उनमें से अक्षय तृतीया को सब काम में शुभ जानना चाहिए।

मन्वादि तिथियाँ

आश्विने नवमी शुक्ला माघ मासे तु सप्तमी।
भाद्रे चैत्रे तृतीया च कार्तिके द्वादशी तथा ॥१११॥
आषाढ़े दशमी प्रोक्ता ज्येष्ठमासे तु पौर्णिमा।
आषाढी फाल्गुनी चैत्री कार्तिकी पौर्णिमा तथा ११२
भाद्रे कृष्णाष्टमी प्रोक्ता पौषे त्वेकादशी सिता।
अमा भाद्रपदे मासि मन्वाद्या स्तिथय स्त्विमाः ११३
अत्र मासास्तु विज्ञेया राकान्ताः परिकीर्तिताः ॥

टीका—आश्विन शुक्ल नवमी, माघ शुक्ल सप्तमी, भाद्रपद और चैत्रशुक्ल तृतीया, कार्तिकशुक्ल १२,, आषाढशुक्ल १०, ज्येष्ठ

आषाढ, फाल्गुन, चैत्र, कार्तिक की पूर्णिमा, भाद्रपद कृष्ण ८, पौष शुक्ल ११, भाद्रपद की अमावास्या, ये मन्वादि तिथि हैं इनमें पौर्णिमान्त मास लेना चाहिए ।

अमावस्या फल

अमायां हि भवेद्वारो यदा भूमिसुतस्य वै ।
जाह्नवी स्नानमात्रेण गो सहस्रफलं लभेत् ॥११४॥
अमा वा सोमवारेण रविवारेण सप्तमी ।
चतुर्थी भौमवारेण विषुवत्सदृशं फलम् ॥११५॥
सिनीवाली कुहूर्वापि यदि सोमदिने भवेत् ।
गोसहस्रफलं दद्यात्स्नानं चेन्मौनिना कृतम् ॥११६॥
दृष्टचंद्रा सिनीवाली नष्टचन्द्रा कुहूःस्मृता ॥११७॥

टीका--अमावस्या मंगलवार पड़े तो उस दिन गंगा स्नान करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है । अमावस्या सोमवार को और सप्तमी रविवार, चतुर्थी मंगलवार पड़े तो विषुवत् संक्रान्ति का फल होता है । अमावस्या को चन्द्रमा दिखे तो सिनीवाली और नहीं दिखे तो कुहू संज्ञा होती है । उस दिन सोमवार हो तो मौन होकर स्नान करे तो सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है ।

अमावास्या में व्यतिपात योग

श्रवणाश्वि धनिष्ठार्द्रा नाग दैवत मस्तके ।
यद्यमा रविवारेण व्यतीपातः स उच्यते ॥११८॥

श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, मृगशिरा इन नक्षत्रों में अमावस्या रविवार युक्त हो तो व्यतीपात योग होता है ।

अर्द्धोदय योग

माघेमासि रवौदर्शे व्यतीपाते श्रवान्विते ।
अर्द्धोदयाभिधो योगः सूर्य पर्व शताधिकः ॥११९॥
अयमुक्तो दिवायोगः किञ्चिन्यूनं महोदयः ॥१२०॥

माघ मास में अमावस्या, रविवार को व्यतीपात व श्रवण नक्षत्र हों तो यह अर्द्धोदय योग होता है। यह १०० सूर्य पर्व से अधिक जानना चाहिए। यह दिवा योग कहा है इसमें किञ्चित् न्यूनता हो तो महोदय योग जानना चाहिये।

कपिला षष्ठी

आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमोऽथरोहिणी ॥
व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिलानन्तपुण्यदा ॥१२१॥

आश्विन कृष्ण षष्ठी, तिथि को मंगलवार, रोहिणी और व्यतीपात योग हो तो कपिलाषष्ठी योग नामक अनन्त पुण्यदायक काल होता है।

वारुणी योग

वारुणेन समायुक्ता मधोः कृष्णा त्रयोदशी ।
गङ्गायां यदि लभ्येत सूर्य ग्रहशतैः समा ॥१२२॥
शनिवार समायुक्ता सा महावारुणी स्मृता ।
शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि ॥१२३॥
महामहेति विख्याता त्रिकोटि कुलमुद्धरेत् ।

शतभिषा युक्त चैत्र कृष्ण त्रयोदशी हो तो उस दिन गंगा स्नान करने से सौ सूर्य ग्रहण के समान फल होता है। शनिवारयुक्त हो तो महावारुणी जाननी चाहिए। शुभयोग युक्त शनिवार शतभिषा हो तो महामहा वारुणी जाननी चाहिए। यह तीन कोटि कुल का उद्धार करती है।

मासशून्य-युगादि तिथि चक्रम्

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
उभय पक्ष की शून्यतिथि	८.९	१२	+	+	३।२	१।२	१०।११	+	७८	४५	+	+
कृष्णपक्ष की, शून्य तिथियाँ	+	+	१४	६	+	+	+	५	+	+	५	४
शुक्लपक्ष की शून्य तिथियाँ	+	+	१३	+	+	+	+	१४	+	+	६	३
युगादि तिथियाँ	+	शु-३ त्रेतायुग	+	+	+	+	कृष्ण १३ कलियुग	शुक्ल ९ सत्ययुग	+	+	+	अमावस्या द्वापरयुग
युगादि स्वामी	+	हरि त्रेतायुग	+	+	+	+	[illegible] कालयुग	शंभु सतयुग	×	+	+	ब्रह्मा द्वाप युग
देय वस्तुएँ	+	लवण	+	+	+	+	गौं	तिल	+	+	+	स्वर्ण

तिथि स्वामी नन्दादि संज्ञा चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	तिथयः
अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सप	स्कन्द	सूर्य	शिव	दुर्गा	यम	विश्वदेवा	विष्णु	काम	शिव	चन्द्र	पितर	स्वामिनः
नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जमा	रिक्ता	पूर्णा	पूर्णा	संज्ञा
अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	मध्यम	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	×	शुक्लपक्षे अशुभादिसं.
शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	मध्यम	मध्यम	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	×	अशुभ	कृष्णपक्षे अशुभादिसं.
सिद्धिद	कार्यं साधिनी	आरोग्यदा	हानि	शुभ	अशुभ	शुभा	रोग नाशि	मृत्युदा	द्रव्यद	शुभदा	सिद्धि.	सिद्धि	उग्रा	पुष्टिदा	अशुभ	तिथिफलम्
कूष्मांड	कटेरी बिजौरा	नमक परवल	मूली वैंगन	कटहल वेल	तैल कमरख	आंवला	गरी	तुबी तोरई	परवल	दलिया चावल	मसूर	वेंगन	शहद	जुआ	स्त्रीरति	त्याज्यपदार्थं

क्षय तिथि

तिथीनां त्रितयं वारः एकः स्पृशति यत्र वै ।
अवमं तद्दिनं ज्ञेयं शुभ कर्मसु संत्यजेत् ॥१२४॥

जब एक ही वार (दिन) में तीन तिथियाँ पड़ जावें अर्थात् सूर्योदय के समय कोई एक तिथि हो उसके बाद दूसरी तिथि दूसरे दिन के सूर्योदय के पहले ही समाप्त हो जाय तो वह तिथि अवम (क्षय तिथि) होती है । उक्त तिथि शुभ कर्म में त्याज्य होती है ।

वृद्धि तिथि

वाराणां त्रितयं यत्र तिथिरेका स्पृशेद्यदा ।
त्रिद्युःस्पृक् चेतिसाख्यातानग्राह्यामंगलादिषु॥१२५॥

जब एक ही तिथि में तीनवार (सूर्योदय) हों तो वह त्रिद्युः स्पृक् तथा जिस तिथि में दो बार (दिन सूर्योदय) हो तो वह वृद्धि तिथि कहलाती है। उक्त (त्रिद्युःस्पृक्) तिथि भी मङ्गल कार्यों में त्याज्यही है ।

राशि पर से तिथियों का शुभत्व

मेषादीनां चतुर्णां हि चतस्रः प्रतिपन्मुखाः ।
तिथयस्तच्चतुष्कस्य पञ्चमा परिकीर्तिताः ॥१२६॥
सिंह कन्या तुलालीनां षष्ठाद्यास्तिथयः क्रमात् ।
दशम्येतच्चतुष्कस्य तथा चैकादशी मुखाः ॥१२७॥
चतस्त्रो धनुरादीनामेतेषां पूर्णिमास्यमा ।
पाप युक्तस्य राशेर्या तिथिः सा न शुभावहा ॥१२८॥

मेष, वृष, मिथुन और कर्क इन चार राशियों में हर एक की प्रतिपदा, द्वितीया और चतुर्थी इन चार

तिथियों का चतुष्क (चौका) है और पञ्चमी इन चारों राशियों की पूर्णा तिथि है। सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक इन चारों राशियों का षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी और नवमी इन चार तिथियों का चतुष्क है और दशमी इनकी पूर्णा तिथि है। धन, मकर, कुम्भ और मीन इन राशियों के चन्द्र का एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी इन चार तिथियों का चतुष्क है तथा पूर्णिमा इनकी पूर्णा तिथि है। जिस तिथि की राशि में पाप ग्रह बैठा हो उस राशि से सम्बन्धित तिथि शुभ फल दायक नहीं होती है।

शिव वास विचार.

तिथिं च द्विगुणी कृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिव वासं समुद्दिशेत् ॥१२६॥
एकेन वासः कैलासे द्वितीये गौरी संन्निधौ।
तृतीये वृषमारूढः सभायां च चतुष्टये ॥१३०॥
पञ्चके भोजने चैव क्रीडायां परिमते तथा।
श्मसाने शून्य शेषे च शिववासः समीरितः ॥१३१॥

टी०—शिवजी से सम्बन्धित अनुष्ठान करने के लिए शिव वास का विचार होता है। उसका तरीका यह है कि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ करके अभीष्ट दिन की तिथि तक गिनने पर जो संख्या आवे उसको २ से गुणा करके गुणन फल में, ५ जोड़कर ७ से भाग दें। शेष १ बचे तो कैलास में, २ बचे तो गौरी के पास, ३ बचे तो नन्दी पर, ४ शेष बचे तो सभा में, ५ बचे तो भोजन पर, ६ बचे तो क्रीड़ा करते हुए और शून्य शेष बचे तो श्मसान में शिव का वास होता है।

शिव वास फलम्

कैलासे लभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः।
वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् तथा सन्तापकारिणी ॥
भोजन च भवेत्पीड़ा क्रीड़ायां कष्टमेव च।
श्मसाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचिन्तयेत् ॥१३३॥

शिव का वास कैलासमें हो तो सौख्य, गौरी के पास होतो सुख सम्पत्ति, नन्दी (वृष) पर हो तो अभीष्ट (मन चाहे) कार्य में सिद्धि, सभा में हों तो सन्ताप, भोजन में हो तो पीड़ा, क्रीड़ा में हो तो कष्ट और श्मसान में हों तो मृत्यु रूपी फल होता है।

शिव वासे तिथि चक्रम्

शुक्लपक्ष में शुभ तिथि	२	५	६	८	९	१२	१३	१[illegible]
कृष्णपक्ष में शुभ तिथि	१	४	५	८	११	१२	३०	

अमावस्या और पूर्णिमा के भेद

सिनीवाली कुहूश्चैव अमावस्या द्विधैव सा।
राका चानुमतिश्चैव पौर्णमासी द्विधास्मृता:।१३४।

अमावस्या सिनीवाली और कुहू नाम से दो प्रकार की होती है उसी प्रकार पौर्णमासी भी अनुमति और राका नाम से दो प्रकार की होती हैं। अर्थात् रात्रि में चतुर्दशी मिश्रा पूर्णिमा अनुमति और रात्रि में चतुर्दशी मिश्रा अमावस्या सिनी वाली तथा इनसे भिन्ना पूर्णिमा राका और अमावस्या कुहू' कहलावेगी।

खार

एकादशीं समारभ्य यावद्धै पूर्णिमा तिथिः ।
कार्तिके खार दोषोऽयं वर्जितः मरुदेशजैः ।१३५।

कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी से पूर्णिमा तक मरूदेश (राजस्थान) के शेखावाटी हिस्से के आसपास ५ दिन का खार दोष मानते हैं जो यात्रादि शुभ कार्यों में विशेषतः नवोढ़ा स्त्रियों के गमनागमन आदि में वर्जित मानते हैं। इसमें वाग्दान, चूड़ी पहनाना, गंगा पूजैया आदि नहीं करते हैं।

अमावस्या परिभाषा

कलावशिष्टो निष्क्रान्तः प्रविष्टः सूर्यमण्डलात् ।
अमायां विशते यस्यादमावस्या ततः स्मृता ।१३६।

अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र एक साथ रहते हैं जिस समय अमावस्या का अन्त होता है उस समय सूर्य और चन्द्र के दिन भोग्यांश समान रहते हैं। तत्पश्चात् तीव्रगति होने से चन्द्र सूर्य के अंशों से आगे हो जाता है जिस समय सूर्य और चन्द्रमा के अंशों में अन्तर नही रहता है उस समय को अमावस्या कहते हैं।

गज छाया योग

पितृपक्षे त्रयोदश्यां हस्तेऽर्केऽब्जे मघागते ।
गजच्छायाभिधोयोगः श्राद्धेत्वय्यफलप्रदः ॥१३७॥

आश्विन मास में कृष्णपक्ष त्रयोदशी के दिन हस्त नक्षत्र पर सूर्य और मघा में चन्द्रमा हो तो श्राद्ध में अक्षय फल दायक गजच्छाया योग होता है।

साढे तीन मुहूर्त

वर्षादौ प्रतिपच्चैव दशमी विजयाभिधा ।
अक्षयाख्या तृतीया च कार्त्तिकी प्रतिपत्सिते ॥१३८॥
सार्धतिस्रः दिनान्येते शुभेषु सिद्धिदायकाः ।
नात्र दोषो भवेत्किञ्चिन्नित्यं च शुभ वर्द्धते ॥१३९॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (नवीन वर्षारम्भ का दिन), विजय दशमी (आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी) और अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया) तथा कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि ये ३॥ तिथियाँ साढ़े तीन मुहूर्त कहलाती हैं। इसमें प्रथम ३ पूरे और कार्तिक शुक्ल प्रतिपद् की गिनती आधे मुहूर्त में है। ये साढ़े तीन दिन शुभ कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। इन दिनों में थोड़ा सा भी दोष नहीं लगता है और काम करने से शुभफल की बढ़ोत्तरी होती है।

वार प्रकरणम्

वारों के नाम

आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः ।
शुक्र शनैश्चरश्चेतैः वासराः परिकीर्तिताः ॥१॥

सूर्य (रवि), चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनैश्चर (शनि) ये सात वारों के नाम क्रमशः बताये गये हैं।

वारों के स्वामी

शिवो दुर्गा गुहो विष्णु ब्रह्मेन्द्रः कालसंज्ञकः ।
सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तितः ॥२॥

रविवार के स्वामी शिव, सोमवार की दुर्गा, मंगलवार के स्वामी कार्तिकेय, बुधवार के विष्णु, गुरुवार के ब्रह्मा, शुक्रवार के इन्द्र और शनिवार के स्वामी काल हैं।

वार एवं वाराधिपति चक्रम्

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्वामी	शिव	दुर्गा	कार्तिकेय	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	काल
स्थिरादि संज्ञा	स्थिर	चर	उग्र	सम	लघु	मृदु	तीक्ष्ण
क्रूरादि संज्ञा	क्रूर	शुभ	क्रूर	शुभ	शुभ	शुभ	क्रूर

क्रूरादि संज्ञा

गुरुश्चन्द्रो बुधः शुक्रः शुभाः वाराः प्रकीर्तिताः ।
क्रूरास्तु क्रूरकृत्येषु ग्राह्याः भौमार्कसूर्यजाः ॥३॥

गुरुवार, चन्द्र (सोम) बुध और शुक्रवार ये शुभ संज्ञक वार शुभ कृत्यों में ग्रहण किये जाते हैं और मङ्गल, सूर्य तथा शनि इन वारों की क्रूर संज्ञा है इन्हे क्रूर कृत्यों में ग्रहण करना चाहिए।

स्थिरादि संज्ञा

स्थिरः सूर्यो चरश्चन्द्रो भौमश्चोग्रो बुधः समः ।
लघुः जीवो मृदुः शुक्रः शनिस्तीक्ष्णः समीरितः ॥४॥

टीका—रविवार की स्थिर, सोमवार की चर, मङ्गलवार की उग्र और बुधवार की सम, बृहस्पतिवार की लघु, शुक्रवार की मृदु तथा शनिवार की तीक्ष्ण संज्ञा है।

वासरारम्भः

द्विविधः वासरारम्भः स्थिरश्च चरसंज्ञकः ।
मध्यरेखागतः स्थायी चराख्योभीष्ट देशजः ॥५॥

वार के प्रारम्भ होने का काल भी दो तरह का होता है। (१) स्थायी (स्थिर) (२) चर। स्थिर वार कल्पित मध्य रेखा पर सूर्योदय के अनुसार होता है और चर वार का प्रारंभ अपने देश के उदयमान से होता है। स्थिर का सम्बन्ध नाक्षत्र काल (२४ घण्टे) से है। ठीक २४ घण्टे के बाद नक्षत्र मानीय (भू-केन्द्रीय) या मध्य रेखीय स्थिर वार का प्रारम्भ हो जायगा। मध्य रेखा से मध्य रात्रि से वार (दिन) का आरम्भ युक्ति संगत प्रतीत होता है क्योंकि युगारम्भ (सृष्टि के प्रारम्भ काल) मध्य रात्रि से रविवार की गणना हुई थी जिसका उल्लेख हमारे सिद्धान्त ग्रन्थों में हुआ है।

मध्य रेखा—जिसे अंग्रेजी में स्टैंडर्ड टाईम लाईन (प्रमाणित समय रेखा) कहते हैं। अलग-अलग देशों की अलग-अलग होती हैं। आजकल पूरे विश्व में ग्रीनविच (इङ्गलैण्ड) के पास से ० शून्य रेखांश का समय अन्तर्राष्ट्रीय माना जाता है। ग्रीनविच से पूर्वापर (पूरब और पश्चिम में) स्थित देश अपने देश के किसी भी स्थान से मध्य रेखा मानकर उस पर के समय को अपने यहाँ का स्टैंडर्ड (प्रमाणित) समय मानते हैं। इस समय भारतवर्ष में ग्रीनविच (शून्य रेखांश) से ८२।३० रेखांश पर के समय को स्टैंडर्ड टाइम के रूप में

(भारत के मध्य रेखा स्थानीय समय के रूप में) मान्यता है। यह स्थान मीरजापुर (विन्ध्याचल धाम) का है।

प्राचीन काल में भारतीय आचार्यों ने ७६ रेखांश पर से गुजरने वाली रेखा को मध्य रेखा मान रखा था और पञ्चाङ्गीय गणित तथा सिद्धान्त सम्बन्धी ग्रन्थों में अभी भी उसी रेखा की ही मान्यता है।

इस प्राचीन मध्य रेखा के देश

पुरी रक्षसां देवकन्याऽथ कांची
सितः पर्वतः पर्य्यली वत्सगुल्मम् ।
पुरी चोज्जयिन्याह्विका गर्गराटं
कुरुक्षेत्र मेरू भुवो मध्यरेखा ॥६॥

लङ्का, कन्याकुमारी, काञ्ची, सतपुड़ा की पहाड़ियाँ पल्ली वैद्यनाथ (द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक स्थान) वत्स गुल्म (वत्स देश) गर्गराट (गर्ग ऋषि की यजमानी का प्रदेश अलवर जयपुर मथुरा आदि) कुरुक्षेत्र और सुमेरु पर्वत इन देशोंपर से गुजरने वाली रेखा भूमि के मध्य की रेखा है।

एक रेखांश से प्रत्येक अंश का पूर्वापर में ४ मिनट का अन्तर पड़ता है अर्थात् मध्य रेखा से पूर्व स्थान में समय ४ मि. बढ़ेगा और पश्चिम में ४ मिनट कम रहेगा। जैसे—मध्य रेखा का रेखांश ७६° या ८२°३० कोई भी मान लें इस पर ६ बजे होंगे तथा इससे पश्चिम ७५° रेखांश पर ५ बजकर ५६ मिनट का समय रहेगा और उसी प्रकार (८२°३० रेखांश में १ अंश कम) ८१°३० पर भी वही समय होगा। ७६ रेखांश से १ रेखांश आगे ७७° रेखांश पर उस समय ६ बज कर ४ मिनट समय रहेगा तथा ८२°३० रेखांश मान से भी

१ रेखांश अधिक यानी ८३°३० रेखांश पर वही ६ बजकर ४ मिनट का समय रहेगा ।

यही समयान्तर देखकर आचार्यों ने वार प्रवृत्ति की कल्पना की ।

वार प्रवृत्ति ज्ञान का तरीका

निशार्द्धं दिनमानं च युक्तं वाणेन्दुभिस्तथा ।
वार प्रवृत्ति विज्ञेया गर्ग लल्लादिभाषितम् ॥७॥

टीका—पञ्चाङ्ग के अनुसार इष्ट देशीय दिनमान और रात्रिमान का ज्ञान करके रात्रिमान का आधा करके उस (रात्र्यर्ध) में दिनमान जोड़ देना चाहिए तथा दोनों का (दिनमान और रात्र्यर्ध का) जो योग फल (जोड़) आवे उसमें पन्द्रह और जोड़ देना चाहिए यह संख्या वार प्रवृत्ति की घट्यादि होंगी अगर यह योगफल ६० से अधिक हो तो उसे ६० में से घटा देना चाहिए शेष बचे हुए घट्यादि पर से वार की प्रवृत्ति समझनी चाहिए ।

उदाहरण—

वैक्रमाब्द २०२७ शालिवाहन शकाब्द १८९२ में श्रावण शुक्लपक्ष ६ षष्ठी शनिवार को दिनमान ३२ घ० ३८ प० है तथा रात्रिमान २७ घ० २१ प० है । दिनमान को अहोरात्र मान ६०।० घट्यादि में से घटाने से रात्रिमान बनता है । रात्रि मान में २ का भाग देने से रात्र्यर्ध में दिनमान का योग करने पर (३२।३८+१३।४०) इनका योगफल ४६।१९ हुआ । इस योग फल में १५ घटी जोड़ने पर इनका पारस्परिक (४६।१९+१५।०) योगफल ६१।१९ हुआ । चूंकि; योगफल ६० घटी से अधिक है अतः सूर्योदय के १ घटी १८ पल बाद रविवार की प्रवृत्ति ७ सप्तमी तिथि

को होगी। सूर्योदय ५ बजकर २८ मिनट पर होगा इसलिए वार प्रवृत्ति ५ बजकर ५० मिनट पर होगी।

अन्य प्रकार

स्वदेशान्मध्यरेखांतर्योजनैः पादवर्जितैः ।
तावत्पलैर्युतोनाः स्युः तिथयः (१५) पर पूर्वतः ॥८॥
तद्दिनार्द्धांतरपलैरूनाधिक्ये दिनार्द्धतः ।
ऊर्ध्वं चाधः क्रमाद्वारप्रवेशस्तपनोदयात् ॥९॥

अपने अभीष्ट नगर और उज्जयिनी कुरुक्षेत्रादि से गुजरने वाली मध्य रेखा के मध्य योजनों में जो दूरी है (एक रेखा से दूसरी रेखा ७ योजन की दूरी पर होती है) उस योजन संख्यात्मक दूरी में से उसी का चतुर्थांश घटाना चाहिए। घटाने पर जो शेष बचते हैं वे पल होंगे। इन पलों को अगर आपका अभीष्टदेश मध्यरेखा से पश्चिम हो तो १५ घड़ियों में जोड़ दें अगर मध्यरेखा से अपनी इष्ट भूमि पूर्व की ओर है तो १५ घड़ियों में से प्राप्त फल को घटा दें। यह संख्या ध्रुवांक कहलावेगी। अब जिस दिन का वार प्रवेश जानना हो उस दिन के दिनार्द्ध और ध्रुवांक का अन्तर करलें, शेष वार प्रवेश के घड़ी और पल होंगे। यहाँ यह ध्यान रखें कि दिनार्ध में से ध्रुवांक घट रहा हो तो सूर्योदय के उतने घड़ी पल बाद अथवा ध्रुवांक में से दिनार्ध घट रहा हो तो उतने घड़ी पल सूर्योदय से पहिले ही वार प्रवेश होगा।

उदाहरण—

संवत् २०२७ श्रावण शुक्ल ६ षष्ठी शनिवार को दिनमान ३२।३८ है। वाराणसी में वार प्रवेश जानना है। कुरुक्षेत्र से वाराणसी ६३ योजन पूर्व में है। ६३ का चतुर्थांश

६३ ÷ ४ = १५।४५ पलादि हुआ। इसको ६३ में से घटाया तो (६३ − १५।४५) ४७।१५ पल हुआ। चूँकि; वाराणसी कुरुक्षेत्र से पूर्व में स्थित है, इसलिए १५ घटी में से घटाया गया (१५।० − ०।४७।१५) = १४।१२।४५ घट्यादि हुआ। इसकी ध्रुवाङ्क संज्ञा होती है। अभीष्ट दिनका दिनमान ३२।३९ है। जिसका आधा अर्थात् दिनार्ध १६।१९ है। जब दिनार्ध अधिक होने से दिनार्ध (१६।१९) में से १४।१३ घटाया तो शेष २।६ बचा। अतः सूर्योदय से २ घ. ६ प. बाद अर्थात् (५ घं. २८ मि. + ०।५१) = ६ बजकर १९ मि. पर वार का प्रवेश होगा।

ध्यान देने योग्य—

पाठक वृन्द !

वार प्रवेश के दोनों ही श्लोक आप लोगों ने देख लिए हैं। दोनों से किसी भी प्रकार एक सा उत्तर नहीं आवेगा। तथ्य जानने की इच्छा बनी की बनी रह गयी। ऐसी परिस्थिति में मुझे पूज्य गुरुवर श्री पण्डित सीतारामजी झा का मत आप लोगों के सम्मुख रखने में गौरव का अनुभव हो रहा है।

आचार्य श्री पं० सीताराम झा का मत—

यह है कि सूर्यसिद्धान्त के अनुसार वार की प्रवृत्ति लंका (भू मध्यरेखा) रेखा पर मध्यरात्रि में होती है। वार और दिन अलग २ दो चीजें हैं। वार ठीक २४ घण्टे का होता है और उसमें कहीं भी भूमण्डल में न्यूनाधिक्य नहीं होगा। दिन सूर्योदय से सूर्यास्त और रात्रि सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य समय को कहेंगे जो अलग २ देशों में अलग २ मानने होंगे। कहीं ६ महीने का दिन और ६ महिने की रात्रि हो सकती है लेकिन वार वहाँ भी २४ घन्टे का होगा।

सूर्यसिद्धान्त के बाद सिद्धान्तशिरोमणि आदि के प्रणेता आचार्य गणों ने वार की प्रवृत्ति सूर्योदय से मानी है

वह भी लंका रेखा के मध्य रात्रि से ठीक १५ घटी यानी ६ घन्टे बाद से ही स्थिर रूप से होती है।

श्रीपति के मत के अनुसार

वार प्रवृत्तिं मुनयो वदन्ति
सूर्योदयाद्रावणराजधान्याम्।
ऊर्ध्वं तथाधो ऽप्यपरत्र तस्मात्
चरार्धदेशान्तरनाडिकाभिः ॥१०॥

रावण की राजधानी लंका में सूर्योदय के समय से वार प्रवृत्ति होती है। किन्तु, अपने अभीष्ट देश की वार प्रवृत्ति के लिए अगर इष्ट देश लंका रेखा से पूर्व हो तो चरार्ध और देशान्तर धन तथा पश्चिम होने से चरार्ध देशान्तर ऋण करने से अभीष्ट देश की वार प्रवृत्ति होगीं। इसके अनुसार चरार्ध १५ मि. १२ सेकेण्ड, देशान्तर २८ मिनट पूर्व, इनको सूर्योदय में जोड़ा तो (५ घण्टा २८ मि०+०।४३ मिनट=६ बजकर ११ मिनट पर वार प्रवृत्ति हुई।

अतः वार का आरम्भ लंका रेखा प्राचीन भारतीय भू मध्य रेखा ० अक्षांश और ७६ रेखांश से मध्य रात्रि या सूर्योदय के समय से मानना यह सर्व सम्मत है।

उपरोक्त तीनों श्लोकों को लेकर वाद विवाद खड़ा करना केवल समय का दुरुपयोग मात्र है। ये श्लोक गोलज्ञ ज्योतिषियों के लिए समान अर्थ में ही सूचक हैं।

ग्रहों की कक्षा

ब्रह्माण्ड मध्ये परिधिः व्योमकक्षाभिधीयते।
तन्मध्ये भ्रमणं भानामधोऽधः क्रमतस्तथा ॥११॥
मन्दामरेज्यभूपुत्र सूर्य शुक्रेन्दुजेन्दवः।
परिभ्रमन्त्यधोऽधः सिद्धविद्याधरा घनाः ॥१२॥

ब्रह्माण्ड में परिधि को व्योम कक्षा कहते हैं। इस परिधि (घेरे में) नीचे उससे भी नीचे इस क्रम से ग्रहों का भ्रमण अपनी कक्षा में होता रहता है। सबसे ऊपर शनि की कक्षा है, उससे नीचे बृहस्पति, उससे नीचे मंगल, उससे नीचे सूर्य, उससे नीचे शुक्र, उससे नीचे बुध और उससे नीचे चन्द्र इस क्रम से ग्रहगण अपनी-अपनी कक्षाओं में भ्रमण करते रहते हैं।

कक्षा क्रम

कक्षा	ग्रहनाम
१	शनि
२	गुरु
३	भौम
४	सूर्य
५	शुक्र
६	बुध
७	चन्द्र

वारों के अधिपति और होरेश

मन्दादधः क्रमेण स्युः चतुर्थाः दिवसाधिपा।
वर्षाधिपतयस्तद्वत् तृतीयाश्च प्रकीर्तिताः ॥१३॥
ऊर्ध्वं क्रमेण शशिनो मासानामधिपाः स्मृताः।
होरेशाः सूर्यतनयादधोऽधः क्रमतस्तथा ॥१४॥

शनि की कक्षा के नीचे की ओर गिनने पर चौथी कक्षाओं के अधिपति ग्रह क्रमशः सात वार होंगे। जैसे-शनि से नीचे चौथी कक्षा सूर्य की है अतः सप्ताह का पहला वार रविवार हुआ। सूर्य से चौथी कक्षा चन्द्रमा की हुई अतः

सप्ताह का दूसरा दिन (वार) सोमवार हुआ । चन्द्रमा से नीचे चौथी कक्षा मङ्गल की है अतः सप्ताह का तीसरा दिन मङ्गलवार हुआ । मङ्गल से नीचे चौथी कक्षा बुध ग्रह की है अतः सप्ताह का चौथा दिन (वार) बुधवार हुआ । बुध से गिनने पर चौथी कक्षा का अधिपति बृहस्पति होता है अतः सप्ताह का पाँचवा वार बृहस्पति वार हुआ । बृहस्पति से नीचे चौथी कक्षा शुक्र की होती है अतः सप्ताह के छठे दिन (वार) का नामकरण शुक्रवार हुआ । इसी प्रकार शुक्र की कक्षा से गिनने पर चौथी कक्षा शनि की हुई इस लिए सप्ताह का अन्तिम सांतवां दिन (वार) शनिवार हुआ वार सदृश नाम वाले ग्रह दिनपति (वासर पति) हैं। शनि की कक्षा से तीसरी कक्षा के अधिपति सावन वर्षेश होते हैं । चन्द्रमा से ऊपर की कक्षाओं के अधिपति क्रमशः सावन मासपति होते हैं । शनि की कक्षा से क्रमशः नीचे वाली कक्षाओं के अधिपति सावन होरापति होते हैं ।

रविवार की प्राथमिकता का कारण

उदेति प्रथमं भानु प्रलयान्ते ग्रहेश्वरः ।
आद्यहोरापतिस्तस्मात् भास्करःमुनिभिःस्मृतः॥१५॥

प्रलय का अन्त होने पर ऋषियों ने सर्वप्रथम भगवान भास्कर को ग्रहों के स्वामी रूप में प्रथम प्रभात में उदित होते देखा अतः उन्हें ही प्रथम होरा तथा प्रथम वार का स्वामित्व प्रदान किया । काल होरा वार गणना क्रम से (१) रवि (२) सोम (३) मंगल (४) बुध (५) गुरु (६) शुक्र वार की हुई । होरा चक्र में देखिये रविवार को पहली होरा के बाद दूसरी होरा शुक्र की है इसी प्रकार की सभी होरा एक होरापति से वार गणना क्रम से छठे वार की ही पड़ती हैं ।

काल होरापति

वारात्षष्ठस्य षष्ठस्य होरा सार्द्धद्विनाडिका ।
वारारंभाद्गतानाड्यो द्विघ्नाःपंच विभाजिताः॥१६॥
लब्धाङ्के गत होरा स्युः वारेशादितः क्रमात् ।
रविः शुक्रो बुधश्चन्द्रः शनिर्जीवस्ततः कुजः ॥१७॥
एवं क्रमेण विज्ञेयाः काल होरेश्वराः ग्रहाः ।

सूर्योदय के समय पहली होरा अपने वार से, दूसरी होरा पहली काल होरा (दिन की वार होरा) से छठे होरा स्वामी की होती है ।

जैसे—रविवार को पहली काल होरा रवि की है और दूसरी काल होरा वार गणना क्रम से –(१) रवि (२) सोम (३) मंगल, (४) बुध, (५) गुरु और शुक्रवार की हुई। होरा चक्र में देखिये—रविवार को पहली होरा के बाद दूसरी होरा शुक्र की है। इसी प्रकार सभी होरा एक होरापति से वार गणना क्रम से छठे वार की ही पड़ती है।

एक होरा २॥ घटी की होती है। अंग्रेजी का Hour (आवर) शब्द संस्कृत शब्द 'होरा' से ही निकला है। एक होरा एक घण्टे के बराबर होती है। इस प्रकार २४ घण्टे में २४ होरा होगी। वर्तमान समय में किसकी होरा चल रही है ? यह जानने के लिए सरल तरीका यह है कि लका के सूर्योदय से अपने अभीष्ट समय तक के घण्टा मिनटादि काल को घटी पलात्मक बना लें और उसको दो से गुणा कर पाँच का भाग देने पर लब्ध अंक के तुल्य अपने वार पति की होरा से होरा व्यतीत हो गई है और उसके आगे वाली होरा चल रही है, ऐसा समझना चाहिए। रविवार के सूर्योदय से क्रमशः रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, बृहस्पति, मंगल ये काल होराओं के अधिपति होंगे और ये काल होरा इन ग्रहों के नाम से ही प्रसिद्ध हैं।

होरा चक्रम्

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५.	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु	बु.	चं	श.	गु.	मं.	सू	शु.	बु	च	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु	बु.
चं.	चं	श.	गु.	म	सू	शु.	बु	च	श	गु.	मं.	सू	शु	बु	चं.	श.	गु.	मं.	सू	शु.	बु	च.	श.	वृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु	चं	श.	गु	मं.	सू.	शु.	बु.	च	श.	गु	मं.	सू.	शु.	बु	चं.	श	गु.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु	चं.	श	गु	मं.	सू.	शु.	बु.	च.	श	गु	मं	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	वृ.	मं	सू.	शु	बु	चं	श.
गु.	गु.	मं.	सू	शु	बु	चं.	श	गु	मं.	सू.	शु	बु.	च.	श.	गु.	मं	सू.	शु.	बु.	चं.	श	गु.	मं.	सू.
शु	शु.	बु.	चं.	श	गु	मं	सू	शु	बु.	च.	श	गु.	मं.	सू	शु.	बु	चं.	श.	वृ	मं.	सू.	शु.	बु.	च.
श	श	गु	मं.	सू	शु	बु.	च	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	च.	श.	गु.	मं.

होरा के कृत्य

यस्मिन्वारे तु यत्कृत्यं पूर्वाचार्यैरुदाहृतम् ।
तत्कृत्यं तस्य खेटस्य होरायां खलु सिद्ध्यति ॥१८॥

जिस बार में जो कृत्य पूर्वाचार्यों ने करने योग्य बतलाये हैं, वे सब कृत्य उस बार की होरा में करने से भी सफल होते हैं।

होरा में विशेष कर्म

गुरौविवाहः गमनं च शुक्रे
सौम्यः बुधे हिमकरे खलु सर्वकृत्यः ।
कुजे रणादि तपने नृपस्य
होरा शनैश्चरगते चयनं प्रशस्तः ॥१९॥

गुरु की होरा में विवाह, शुक्र की होरा में यात्रा, बुध और चन्द्रमा की होरा में सभी प्रकार के कार्य, मङ्गल की होरा में युद्ध सम्बन्धी तथा सूर्य की होरा में संग्रह सम्बन्धी कार्य शुभ होते हैं।

रविवार कृत्य

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवा-
गो वह्नि मन्त्रौषध शस्त्रकर्म ।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठ-
संग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥२०॥

राज्याभिषेक, उत्सव, यात्रा, गौ, अग्नि सम्बन्धी कार्य मन्त्रोपदेश, औषध बनाना या खाना, शस्त्र, सुवर्ण, ताँबा, ऊन, चर्म, काष्ठ व बाजार आदि से सम्बन्धित कर्म रविवार को शुभ हैं।

चन्द्रवार कृत्य

शङ्खाब्जमुक्तारजतं सुभोज्यः
स्त्रीवृक्षकृष्यं भुवि भूषणाद्याः ।
गानंक्रतुक्षीरविकारशृंगो
पुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ॥२१॥

शङ्ख, कमल, मोती, चाँदी, भोजन, स्त्री, वृक्ष, खेती, जलकर्म, भूषणादि, गानविद्या, यज्ञ, गोरस (दूध-दही) आदि से सम्बन्धित कर्म, सींग व पुष्प अर्थात् फूल सम्बन्धी कर्म तथा वस्त्र सम्बन्धी कार्य सोमवार को करने चाहिए ।

भौमवार-कृत्य

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्र
वन्ध्याविघाताहवशाठ्यदम्भान् ।
सेनानिवेशाकरजातुहेम-
प्रवालरत्नानि कुजे विदध्यात् ॥२२॥

भेद, झूठ, चोरी इत्यादि तथा विष, अग्नि, वध, वन्ध्या, घात, रण, शाठ्य, दम्भादि, सेनानिवेश, (छावनी), खान (खदान) तथा धातु सुवर्ण, मूँगा और रत्नादि से सम्बन्धित कृत्य मङ्गलवार को करने शुभ हैं ।

बुधवार-कृत्य

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च
शिल्पादिसेवा लिपिलेखकानि ।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्ति सन्धि-
व्यायामवादश्च बुधे विधेयाः ॥२३॥

चतुरता, पुण्य, विद्या पढ़ना कला एवं शिल्प विद्या, धातुक्रिया, सोने का भूषण जड़ना, व्यायाम और विवाद इतने कार्य बुधवार को करने शुभ हैं।

गुरुवार कृत्य

धर्मक्रियापौष्टिक यज्ञविद्या-
माङ्गल्यहेमांबरवेश्मयात्रा।
रथाश्वभैषज्यविभूषणादि
कार्यं विदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥२४॥

धर्म क्रिया, पौष्टिक कर्म, यज्ञ, विद्या, माङ्गलिक कर्म, सोना वस्त्र, गृह, यात्रा, रथ, औषध और भूषण धारण सम्बन्धी कार्य बृहस्पतिवार को करने चाहिये।

शुक्रवार कृत्य

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्ध
वस्त्रोत्सवालङ्करणादि कर्म।
भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च
सिद्ध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥२५॥

स्त्री, गीत, शय्या, मणि, रत्नकर्म, चन्दन, वस्त्र, उत्साह तथा अलङ्कार, भूमि, बाजार, गौ, द्रव्यकार्य तथा खेती के कार्य शुक्रवार को शुभ हैं।

शनिवार कृत्य

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदास
पापानृतस्तेयविषादविद्या।
गृहप्रवेशः द्विपबन्धदीक्षा
स्थिरं च तीक्ष्णांशु सुतेऽह्निकुर्यात् ॥२६॥

लौह, पत्थर, सीसा, पीतल, शस्त्र, नौकर, पाप, झूठ चोरी (तस्कर व्यापार), विषाद (दुःख), विद्या, गृहप्रवेश हाथी, बन्धन, दीक्षा, इनसे सम्बन्धित और स्थायी कार्य शनि वार को करने चाहिए ।

सब वारों के कृत्य

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः
सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदा ।
भानु भौम शनिवासरेषु च
प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति ॥२७॥

सोम, बुध, बृहस्पति और शुक्रवार में सभी तरह के कार्य सिद्ध होते हैं, लेकिन; रवि, मंगल और शनि वारों में बताये गये (पूर्वोक्त) कर्म ही सफल होते हैं ।

वार दोषः

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ
देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ।
दिवाशशाङ्कार्कजभूसुतानां
सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥२७॥

बृहस्पति, शुक्रऔर रविवार का दोष रात्रि में नहीं लगता है तथा चन्द्र, शनि और मंगलवार का दोष दिन में नहीं होता है । बुधवार का दोष दिन और रात्रि सब समय रहता है अतः बुधवार सर्वत्र निन्द्य है ।

तैल मर्दन में वारों का फल

रविः तापं कान्तिं वितरति शशी भूमितनयो
मृतिं लक्ष्मी सौम्यः सुरपतिगुरुः वित्तहरणम् ।

विपत्तिर्दैत्यानां गुरुरखिल भोगानुगमनं
अनृणी तैलाभ्यंगात्स ादि कुरुते सूर्यतनयः ॥२९॥

रविवार को तैल लगाने से ताप होता है। सोमवार को कान्ति बढ़ती है। मङ्गलवार को मृत्यु (तत्तुल्य कष्टादि) का भय, बुधवार को लक्ष्मी प्राप्ति, गुरुवार को धन-नाश और विपत्ति आगमन, शनिवार को तैल लगाने से शीघ्र ही ऋण से छुटकारा मिलता है।

तैल मर्दन फल चक्रम्

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
ताप	कान्ति	मृति	लक्ष्मी	धननाश विपत्ति	भोगप्राप्ति	ऋणनाश	फल

वारों में हजामत का फल

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डसूनुः
भौमश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पञ्चमासान् ।
सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरू शुक्र एकादशेति
प्राहुः गर्गप्रभृति मुनयः क्षौरकार्येषु चायुः ॥३०॥

रविवार को हजामत बनवाने से १ मास आयु घटती है। शनिवार को ७ मास (मतान्तर से पाँच मास), मङ्गलवार को ८ मास आयु घटती है। बुधवार को ५ मास, सोमवार को ७ मास, बृहस्पति को १० मास और शुक्रवार को ११ मास आयु बढ़ती है, ऐसा गर्गादि मुनियों का मत है। कहीं-कहीं लोग बृहस्पति वार को भी हजामत नहीं बनवाते हैं तथा पुत्रवान् गृही सोमवार को भी परहेज करते हैं।

तैल मर्दन में दोष-परिहार

रवौ दूर्वा गुरौ पुष्पं भौमवारे च मृत्तिका ।
भृगौ तु गोमयं दद्यात् तैलदोषो न विद्यते ॥३१॥

रविवार को दूर्वा, गुरुवार को पुष्प, मङ्गलवार को मृत्तिका, शुक्रवार को गोबर डालकर तेल लगाने से कोई दोष नहीं लगता है।

तैलाभ्यंगे न दोषाय प्रत्यहं क्रियते च यः ।
उत्सवे वातरोगे वा यत्र वाचनिकोऽपि वा ॥३२॥

प्रतिदिन जो लोग मालिश करते एवं कराते हैं, उनको तथा उत्सव (विवाहाद्युत्सवाङ्गीभूत) में, वायु सम्बन्धी रोग से से पीड़ित अवस्था में और पुण्याह वाचनादि के पूर्व मांगलिक स्नानादि कार्यों में तैलाभ्यंग दोषप्रद नहीं है।

मंत्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्पवासितम् ।
द्रव्यान्तरयुतं वापि नैव दुष्येत्कदाचन: ॥३३॥

मन्त्र पढ़ा हुआ, अग्नि पर पकाया हुआ, सरसों का, फूलों की सुगन्ध डाला हुआ अथवा फूलों से सुगन्धित किया हुआ, औषधि मिश्रित, तैल कभी भी दूषित नहीं होता है। किसी भी दिन लगा सकते हैं।

हजामत में वार-दोष का अपव.द

नृपाज्ञया ब्राह्मणसंमताद्यौ
विवाहकाले मृतसूतके च ।
वद्धस्यमोक्षे क्रतुसर्वकार्ये
क्षौरे न तिथ्यर्क्षकुवारदोष: ॥३४॥

राजाज्ञा, ब्राह्मण की सम्मति, विवाह, जनेऊ आदि, मृत सूतक, बन्दी मोक्ष, यज्ञ में दीक्षित कार्यों के लिए क्षौर कराने पर तिथि, वार, नक्षत्रादि का कोई दोष नहीं लगता है।

वारों के विष घटी का विचार

नखार्यभार्क दिक् सप्त बाण तत्त्व मिताः क्रमात्।
आभ्यो नाड़ी चतुष्कं च विषं तद्रविवासरात् ॥३५॥

रविवार को बीस घटी सोमवार को २ घटी, मङ्गलवार को १२ घटी, बुधवार को १० घटी, गुरुवार को ७ घटी, शुक्रवार को ५ घटी तथा शनिवार को २५ घटी के उपरान्त की ४।४ घड़ी विष घड़ियाँ कहलाती हैं।

विषघटी चक्रम्

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
२०	२	१२	१०	७	५	२५	इन घटियों के पश्चात् की चार घड़ियाँ हैं।

जन्म लग्न से शुभाशुभ वार

स्वक्षेत्रोच्चर्क्ष मित्रेषु दिनेशो वृद्धिमावहेत्।
शेषाः दोषकराः ज्ञेयाः विफलाय तथैव च ॥३६॥

अपनी जन्म पत्रिका के अनुसार ग्रहों की स्थिति देखे, अगर ७ वारों के अधिपति ग्रह कुण्डली में अपनी या उच्च राशियों में अथवा मित्र क्षेत्र में हों तो उन ग्रहों का वार उस प्राणी को शुभ होता है। शेष वार विफल रहते हैं।

पापग्रहोऽपि वारेशो लग्नात्त्र्यायारि वित्तगः।
स्ववारकथितं दोषं न शुभेषु प्रयच्छति ॥३७॥

अगर आपके जन्म लग्न से पापग्रह ३, ११, ६, २ स्थानों में हों तो वह ग्रह भी अपने वार को किये गये शुभ कार्यों में सफलता देता है। दोष नहीं करेगा।

दिन के विभाग

षड्भिः सूर्यस्योदयान्नाडिकाभिः
प्रातःकालः सङ्गवश्चाथ षड्भिः।
मध्याह्नाऽऽख्यास्तद्वदन्योऽपराह्नः
सायङ्कालश्चात्र निन्द्यौ परौ द्वौ ॥३८॥

सूर्योदय से ६ घड़ी तक प्रातःकाल होता है। उसके बाद ६ घड़ी तक संगव काल होता है। संगव काल के बाद की ६ घड़ियाँ मध्याह्न काल कहलाती हैं। तत्पश्चात् की ६ घड़ियाँ अपराह्न और उसके बाद की ६ घड़ियाँ सायाह्न काल कहलाती हैं। इनमें अन्तिम अपराह्न और सायाह्न काल शुभ कर्मों में निन्दित हैं। कुछ लोग दिनमान में ५ का भाग देकर भी काल की घड़ियाँ रखते हैं, ऐसा भी ग्रंथों में है। यह कल्पना भूमध्य रेखागत दिनमान को ३० घटी मानकर स्थायी विभाग की सूचक है।

दिन विभाग चक्रम्

प्रातःकाल	सङ्गव०	मध्याह्न	अपराह्न	सायाह्न
सूर्योदय से ६ घटो तक	७ घटी से १२ तक	१३ घटीसे १८घटीतक	१९ घटी से १४ घटी तक	२५ घटीसे ३९ घटी तक
शुभ	शुभ	शुभ	निन्दित	निन्दित

प्रभात, प्रदोष और रौद्रकाल

प्रभातमुदयाद्भानोः पूर्वं षड् घटिकात्मकम्।
प्रदोषोऽस्तमयात् पश्चात् घटिकात्रयमिहोदितः ॥३९

सूर्यास्त समयात्पञ्च कलापुंजो हि रौद्रकः।
वर्जितः शुभकार्येषु शस्तः चन्द्रो बली यदा।४०।

सूर्योदय से ६ घटी (२ घंटे २४ मिनट) पहले तक का समय प्रभात काल और सूर्यास्त के पश्चात् ३ घटी (१ घंटा १२ मिनट) तक का समय प्रदोष काल कहलाता है। से ५ घटी बाद तक का समय रौद्रकाल (भगवान् शिव के विचरण का समय) कहलाता है, जिसमें कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। पुराणों में आता है कि महर्षि कश्यप की पत्नी दिति ने इसी रौद्रवेला में गर्भाधान कर दैत्यों को उत्पन्न किया था। आजकल लोग गोधूलि वेला को अत्यन्त शुभ विवाहादि में मानते हैं, वह इसी काल में पड़ती है। अतः गोधूलि में विवाह करने वालों को चन्द्र बल विचार करके ही करना चाहिए अन्यथा विपरीत फल भी भोगना पड़ता है। रौद्र काल चन्द्र बल (मुहूर्त, लग्न एवं कर्त्ता की जन्म राशि) के प्राप्त होने पर ही शुभ है।

चौघड़िया मुहूर्त्त

इस मुहूर्त को प्रायः गुजराती समाज सभी प्रकार के शुभ कार्यो में विचारता है तथा देश के सभी भागों में थोड़े बहुत रूप में लोग प्रयोग करते हैं। उत्तर भारत के प्रायः सभी पञ्चाङ्गकार इसको अपने पञ्चाङ्ग में देते हैं।

वेलाओं के नाम

अमृतः कालरोगौ च चरश्च लाभसंज्ञकः।
शुभमुद्वेगसंज्ञौ च वेला सप्त प्रकीर्तिताः॥४१॥

१ अमृत, २ काल, ३ रोग, ४ चर, ५ लाभ, ६ शुभ, ७ उद्वेग ये काल (दिन या रात्रि) की ७ वेलाएं हैं।

वेला ज्ञान प्रकार

दिनमानं रात्रिमानं वा वसुभिर्विभजेत् पुनः ।
वसुवेला दिने चैव चाष्टौ रात्रिगता भवेत् ॥४२॥

दिनमान अथवा रात्रिमान में ८ का भाग देने पर लब्ध तुल्य १ वेला का घट्यात्मक मान होता है। उसी हिसाब से अपने इष्ट काल तक गिनकर चालू वेला की संख्या ज्ञात करे।

रवि के दिन और रात्रि के चौघड़िया

आदित्ये दिवसे नित्यमुद्वेगः चरलाभकौ ।
अमृतं यमशुभौ रोगमुद्वेगौ भवति क्रमात् ॥४३॥
रात्रौ चरस्तथालाभः पीयूषः कालसंज्ञकः ।
शुभं रोगस्तथोद्वेगः चरश्च सूर्यवासरे ॥४४॥

रविवार के दिन में उद्वेग, चर, लाभ, अमृत, यम (काल) शुभ, रोग और उद्वेग संज्ञक ८ वेलाएँ होती हैं।

रविवार की रात्रि में चर, लाभ, अमृत, काल, शुभ, रोग, उद्वेग, और चर संज्ञक ८ वेलाएँ होती हैं।

सोमवार की दिन-रात्रि गत वेलाएँ

अमृतं कालवेला च शुभं रोगश्च मञ्चमी ।
उद्वेगं चर लाभौ च अमृतं चन्द्रमा दिने ॥४५॥
कालः शुभं तथा रोगः उद्वेगश्चर लाभकौ ।
पीयूषं च पुनः कालः रात्रौ चन्द्रमसात्विमाः ॥४६॥

सोमवार के दिन में अमृत, काल, शुभ, रोग, उद्वेग, चर, लाभ, अमृत वेलाएँ होती हैं।

सोमवार की रात्रि में काल, शुभ, रोग, उद्वेग, चर, लाभ, पीयूष (अमृत) और पुनः काल वेला रहती है।

मंगलवार की दिन और रात्रिगत वेलाएँ

रोगोद्वेगश्चरश्चैव लाभममृतसंज्ञकः ।
कालः शुभस्तथारोगः कुजस्यदिवसे स्मृतः ॥४७॥
आदित्यस्य दिने प्रोक्ताः ता भौमस्य निशागताः ।

मंगलवार के दिन में रोग, उद्वेग, चर, लाभ, अमृत, काल शुभ, रोग इस क्रम से चौघड़िया बीतते हैं तथा रविवार के दिन में बीतने वाले चौघड़िया उसी क्रम से मंगल की रात्रि में बीतते हैं ।

बुधवार की दिन-रात्रि-वेलाएँ

लाभममृतकालौ च शोभनं रोगमुद्विजौ ।
चरः लाभात्मिका प्रोक्ताःदिने वेला बुधस्य वै ॥४८॥
दिने सोमस्य या वेला रात्रौ सौम्यस्य ताः स्मृताः ।

बुधवार के दिन में लाभ, अमृत, काल, शुभ, रोग, उद्वेग, चर, लाभ ये चौघड़िया होते हैं तथा सोमवार को दिन में जो चौघड़िये व्यतीत होते हैं, ठीक उसी क्रम से बुधवार की रात्रि में रहते हैं ।

गुरुवार की दिन और रात्रिगत वेलाएँ

शुभं रोग तथोद्वेगः चरः लाभोऽमृतं तथा ।
कालस्तथा शुभश्चैव जीवस्यदिवसे स्मृता ।
कुजेऽह्नि गते याः स्यु जीवरात्रौ तताःस्मृताः ॥४९॥

गुरुवार के दिन में शुभ, रोग उद्वेग, चर, लाभ, अमृत,

काल और शुभ संज्ञक चौघड़िया होते हैं तथा गुरुवार की रात्रि में वे ही चौघड़ियाँ होते हैं जो मंगलवार के दिन में होते हैं।

शुक्रवार की दिन और रात्रि वेलाएँ

शुक्रेऽह्नि गताः सर्वाः रवेः रात्रौ च ता स्मृताः।
कवेः रात्रौ भवेयुस्ता बुधस्याहनि याः मताः ॥५०॥

शुक्रवार के दिन में रवि की रात्रि में होने वाले तथा शुक्रवार की रात्रि में बुध के दिन में होने वाले चौघड़ियाँ रहते हैं।

शनि की दिन व रात्रि की वेलाएँ

चन्द्ररात्रौ च याः वेला ताः सर्वा शनेः दिने।
जीवस्याहनि याः प्रोक्ताः शने रात्रौ हि ताः स्मृताः।५१

चन्द्रमा की रात्रि में जो चौघड़िया कहे गये हैं वे शनिवार के दिन में तथा गुरुवार के दिन में जो चौघड़िया होते हैं, वे शनिवार की रात्रि में होते हैं।

चौघड़ियों का फल अपने नाम के अनुसार होता है। कुछ लोग बही बसना पूजन में चौघड़िया विचारते हैं।

चौघड़िया मुहूर्त चक्रम्

घ.	सू. दि.	सू. रा	चं. दि.	चं. रा.	मं. दि.	मं. रा.	बु. दि.	बु. रा.	गु. दि.	गु. रा.	शु. दि	शु. रा.	श. दि.	श. रा.
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ
४	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग
४	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	काल	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

यामलोक्त दुघड़िया मुहूर्त्त

त्रिपुरहरमुहुर्तं केन दृष्टं श्रुतं वा
सकलमपि हि दिष्टं शम्भुना भूतहेतोः ।
यदि शुभमशुभं वा यादृशं तादृशं वा
तदिदमपि नरेन्द्रैः सर्वदा चिन्तनीयम् ॥५२॥

यह मुहूर्त राजस्थान, मालवा, गुजरात हरयाणा आदि प्रदेशों में प्रचलित है। किसी भी कार्य के पूर्व वहाँ के निवासी प्रायः इसे देखते हैं तथा इन प्रदेशों के पञ्चाङ्ग कार भी इसे लगाते हैं। रुद्रयामल तन्त्र में शिव पार्वती संवाद के रूप में इसका उल्लेख हुआ है, ऐसा प्राचीन ज्योतिषी जनों का मत है। चूँकि; रुद्रयामल अधूरा छपा है अतः उसमें उल्लेख न होने से प्रामाणिकता के विषय में कुछ भी नहीं कह सकते हैं।

श्री शिवजी के दुघड़िया मुहूर्त को किसने देखा व सुना है? इसे जीवों के कल्याण हेतु श्रीमहादेवजी ने कहा है शुभ या अशुभ चाहे जैसा भी कार्य हो श्रेष्ठ पुरुषों को उसमें इस मुहूर्त का विचार करना चाहिए।

श्रीपार्वत्युवाच—

श्रीशम्भो! प्राणनाथेश? वद मे करुणानिधे!
त्रिपुरस्य वधे प्रोक्ताः मुहूर्ताः ये शुभप्रदाः ॥५३॥
भूतानामुपकाराय, सर्वकालेष्टसिद्धिदम्।
पुरुषार्थप्रदं ब्रूहि करुणाकर! शङ्कर! ॥५४॥

श्रीपार्वतीजी भगवान शंकर से पूछती हैं कि हे शम्भो! प्राणनाथ! दया के समुद्र! त्रिपुरासुर के वध हेतु आपने जिन शुभ मुहूर्त्तों का उपयोग किया है। जो सार्वकालिक सिद्धि को और पुरुषार्थ को देनेवाले हैं, ऐसे मुहूर्तों को जीवों के उपकार के लिए आप मुझे बतलाइये!

ईश्वर उवाच—

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि ज्ञानं त्रैलोक्यदीपकम् ।
ज्योतिः सारस्य यत्सारं देवानामपि दुर्लभम् ॥५५॥
न तिथिः न च नक्षत्रं न योगः करणं तथा ।
कुलिकं यमयोगं च न भद्रा न च चन्द्रमाः ॥५६॥
न शूलं योगिनी राशिर्न होरा न तमोगुणः ।
व्यतीपाते च संक्रान्तौ भद्रायामशुभे दिने ॥५७॥
शिवालिखितमित्येतत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।
कदाचिच्चलते मेरुः सागराश्च महीधराः ॥५८॥

श्रीशङ्करजी कहते हैं—''हे देवि ! तुम सुनो मैं त्रैलोक्य के प्रकाशक ज्ञान को कहता हूँ ! जो कि ज्योतिः शास्त्र के सार का सार है, और देवताओं को भी दुर्लभ है। इस मुहूर्त में न तिथि, न नक्षत्र, न योग, न करण, न कुलिक, न यम-(घंट) योग, न काल, न चन्द्रमा, न दिशाशूल, न योगिनी न राशि, न काल-होरा, न तमोगुण, न व्यतीपात, न संक्रांति, न भद्रा आदि से दूषित अशुभ दिन ही इस मुहूर्त में विचारने योग्य हैं। शिवजी के द्वारा बताया हुआ और पार्वती द्वारा लिखा हुआ यह मुहूर्त सब प्रकार से विघ्नों की शान्त करने वाला है। भले ही सुमेरु पर्वत चलायमान हो गया हो अथवा समुद्र और पर्वत भी चलने लगे ॥ ५४-५७ ॥

सूर्यं पतति वा भूमौ वह्निर्वा याति शीतताम् ।
निश्चलश्च भवेद्वायुर्नान्यथा मम भाषितम् ॥५९॥
तत्रादौ कथयिष्यामि मुहूर्तानि च षोडश ।
गुणत्रयप्रयोगेन चलत्येव अहर्निशम् ॥६०॥

सूर्यका पृथ्वी पर पतन हो सकता है या अग्नि ठंढी हो सकती है। वायु निश्चल रह सकती है परन्तु हमारा कथन अन्यथा नहीं होगा। प्रथमतः मैं सोलह मुहूर्त्त कहूँगा जो तीनों गुणों के प्रयोग से दिन रात्रि में चक्रवत् चलते रहते हैं।

षोडश मुहूर्त-विचार

रौद्रं श्वेतं तथा मैत्रं चार्वटं च चतुर्थकम्।
पञ्चमं जयदेवं च षष्ठं वैरोचनं तथा ॥६१॥
तुरगं सप्तमं चैव ह्यष्टमं चाभिजित्तथा।
रावणं नवमं प्रोक्तं बालवं दशमं तथा ॥६२॥
विभीषणं रुद्रसंज्ञं द्वादशं च सुनन्दनम्।
याम्यं त्रयोदशं ज्ञेयं सौम्यं प्रोक्तं चतुर्दशम् ॥६३॥
भार्गवं तिथिसंज्ञं च सविता षोडशं तथा।
एतानि प्रोक्तकार्येषु नियोज्यानि यथाक्रमात् ॥६४॥

१ रौद्र २ श्वेत ३ मैत्र ४ चार्वट ५ जयदेव ६ वैरोचन ७ तुरगदेव ८ अभिजित् ९ रावण १० बालव ११ विभीषण १२ नन्दन १३ याम्य १४ सौम्य १५ भार्गव १६ सावित्र इन सोलह मुहूर्तों को आगे कहे हुए कार्यों में क्रम से नियोजित करें।

मुहूर्त-कर्म-विचार।

रौद्रे रौद्रतरं कार्यं श्वेते कुञ्जरबन्धनम्।
स्नानदानादिकं मैत्रे चार्वटे स्तम्भनं भवेत् ॥६५॥

रौद्र-मुहूर्त में घोर-कार्य करना चाहिए तथा श्वेत में हाथी का बन्धन शुभ है। मैत्र में स्नानदानादि श्रेष्ठ है तथा चार्वत में स्तम्भन-शुभ है।

कार्यं यज्जयदेवसंज्ञकवरे सर्वार्थकं साधयेत्—
तद्वैरोचनसंज्ञके प्रभवति पट्टाभिषेकं क्रमात् ।
ज्ञात्वैवं तुरदेवाम्नि विदिते शस्त्रास्त्रकं साधयेत्
कार्यंस्यादभिजिन्मुहूर्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥६६॥

जयदेव में सब कार्य शुभ तथा वैरोचन में राजा का अभिषेक शुभ है। तुरदेव में शस्त्रों का संचालन शुभ है तथा अभिजित् मुहुर्त में ग्रामप्रवेश शुभ है।

रावणे साधयेद्वैरं युद्धकार्यं च बालवे ।
विभीषणे शुभं कार्यं यन्त्रकार्यं सुनन्दने ॥६७॥

रावण में वैरसाधन, वालव में युद्ध-कार्य, विभीषण में शुभ कार्य तथा सुनन्दन में यन्त्र अर्थात् कल कारखाने मिल आदि चलावे।

याम्ये भवेन्मारणकार्यमुग्रं
सौम्ये सभायामुपवेशनं स्यात् ।
स्त्रीसेवनं भार्गवके मुहूर्तो
सावितृनाम्नि प्रपठेत्सुविद्याम् ॥६८॥

याम्य में मारण सम्बन्धी कार्य करें, सौम्य में सभाप्रवेश करें तथा भार्गव में स्त्री-प्रसंग करें और सावित्र मुहूर्त में विद्या पढ़े।

षोडश मुहूर्त चक्र

मु०	फ०
सावित्र	विद्यारम्भ
भार्गव	स्त्रीसेवा
सौम्य	सभाप्रवेश
याम्य	मारणकर्म
सुनंदन	यन्त्रचालन
विभीषण	शुभकार्य
बालव	युद्धकार्य
रावण	वैरकार्य
अभिजित्	ग्रामप्रवेश
तुरग	शस्त्र साधन
वैरोचन	शुभपट्टाभिषेक (राजगद्दी)
जयदेव	सर्वकार्यसिद्धि
चार्वट	स्तम्भन
मैत्र	स्नानदानादि शुभकार्य
श्वेत	कुञ्जर-बन्धन
रौद्र	रौद्रकार्य

वारक्रम से मुहूर्तोदय-विचार

उदये रौद्रमादित्ये मैत्रौ सोमे प्रकीर्तितम् । जयदेवं कुजे वारे तुरदेवं बुधे स्मृतम् ॥६६॥

रविवार के उदय काल में पहला रौद्र-मुहूर्त का प्रवेश, सोमवार के उदय समय में मैत्र नामक मुहूर्त, मङ्गलवार के उदय में प्रथम जयदेव और बुधवार के उदय में तुरदेव संज्ञक मुहूर्त रहता है ।

मुहूर्तोदय विचार चक्रम्—

रवि	चन्द्र	भौम	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
रौद्र	मैत्र	जयदेव	तुरदेव	रावण	विभीषण	याम्य	मुहूर्तोदय

रावणं च गुरौ ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् ।
शनौ याम्यं मुहूर्तं च दिवारात्रिप्रयोगतः ॥७०॥

बृहस्पतिवार के उदय में रावण मुहूर्त, शुक्रवार के उदय में विभीषणसंज्ञक और शनिवार के उदयकाल में याम्यसंज्ञक मुहूर्त होता है। इसी प्रकार दिन और रात्रि के क्रम से मुहूर्तों का वास रहता है।

दिनादौ यत्प्रवर्त्तेत रात्र्यादौ तदनन्तरम् ।
दिनान्ते यः समायाति तस्मादेकान्तरेण वै ॥७१॥

दिन और रात्रि के क्रम से दिन के शुरू में जो मुहूर्त होगा उससे दूसरा मुहूर्त रात्रि के समय उदय होता है। जो मुहूर्त दिन के अन्त में होता है उससे एक मुहूर्त्त आगे वाला रात्रि के अन्त में होता है।

दिनमान में सोलह का भाग देकर जो लब्ध मिले वही मुहूर्त्त का प्रमाण होता है। दिनमान को साठ में घटा देने पर जो शेष रहे वही रात्रिमान है। उसमें सोलह का भाग देकर जो लब्ध मिले उसी के अनुसार से रात्रि में भी सोलह ही मुहूर्त्त होते हैं।

गुणोदय तथा वास-विचार

गुरुसोमदिने सत्त्वं रजश्चाङ्गारके भृगौ ।
रवौ मन्दे बुधे वारे तमो नाडीचतुष्टयम् ॥७२॥

गुरूवार और सोमवार के उदय काल में दो मुहूर्त्त तक सतोगुण का निवास रहता है तथा शुक्रवार को दो मुहूर्त्तों तक रजोगुण का वास तथा रविवार, शनिवार और बुधवार को दो मुहूर्त्तों तक तमोगुण का वास जानना चाहिए।

गुणों के वर्ण

सत्त्वं गौरं रजः श्यामं तामसं कृष्णमेव च ।
वर्णान्येतानिजानीयात्सत्त्वादीनां यथोदितम् ॥७३॥

सतोगुण गोरे रंग का, रजोगुण सांवले रंग का और तमोगुण कृष्णवर्ण है। ये वर्ण सतोगुण आदि के जानने चाहिए ।

गुणों के फल

सत्त्वेन साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसम्पदाम् ।
तमसा छेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥७४॥

सतोगुण में सिद्धि साधन (साधना क्रम) और रजोगुण में धन और सम्पत्ति सम्बन्धी काम करे । तमोगुण में काटना और तोड़-फोड़ आदि करना शुभ है तथा मोक्ष मार्ग की साधना करना शुभ है ।

मुहूर्तों की रेखाएँ

शून्यं नभः खादिभिरेव वर्णै—
विघ्नं धनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः ।
मृत्युस्तथा पादयमादिवर्णैः
श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥७५॥

शून्य रेखा के शून्य, नभ व ख संज्ञा तथा अभ्रसंज्ञा ये नाम हैं । विघ्न रेखा के विघ्न, धनु, युग्म तथा गणाधिप ये

नाम हैं। काल रेखा के मृत्युपाद और यम ये नाम हैं। अमृत रेखा के श्रीविष्णु और और अमृतसिद्धि ये नाम हैं।

रेखा संज्ञा चक्रम्

रेखा	शून्य	विघ्न	काल	अमृत
संज्ञा	शून्य नभ ख	विघ्न धनु युग्म	मृत्युपाद यम	श्रीविष्णु मृतसिद्धि
		गणाधिप		

रेखाओं का स्वरूप

अमृतश्चोर्ध्वरेखैका कालरेखात्रयं भवेत्।
विघ्नमावर्त्तकं ज्ञेयं शून्ये शून्यमितिक्रमः ॥७६॥

शून्य के एक रेखा ऊपर करने से अमृत रेखा का स्वरूप बनता है, शून्य पर तीन रेखा लगाने से कालसंज्ञक अर्थात् मृत्युसंज्ञक रेखा होती है। गोल दो शून्यों को रेखा से मिलाने से विघ्नसंज्ञक रेखा होती है। शून्य का स्वरूप लिखने से शून्यसंज्ञक रेखा होती है।

रेखा चक्रम्

अमृत	काल	विघ्न	शून्य
δ	‴ ०	$\overline{० ०}$	०

रेखाओं का फल

शून्ये नैव भवेत्कार्यं विघ्नमावर्तके भवेत्।
स्यान्मृत्युः कालरेखायां सर्वसिद्धिस्तथामृते ॥७७॥

शून्य में कार्य नही होता है और आवर्त्तक रेखा चिन्ह में विघ्न होते हैं। कालरेखा में मृत्यु और अमृतरेखा में सब बात से सिद्धि होती है।

राशियों के घात-गुण

धनुर्मीनकर्कटानां सत्त्वे घातो विनिर्दिशेत्।
तुलावृषभमेषानां घातो रजसि निश्चितम् ॥७८॥

धनु, मीन और कर्क राशियों को घातक सतोगुण है। तुला, वृष और मेष राशियों को घातक रजोगुण है।

कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्य मकरस्य च।
घातस्तमसि वेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥७९॥

कन्या, मिथुन, सिंह, कुम्भ और मकर राशियों का घातक तमोगुण है। इनके विपरीत गुण राशियों को शुभ होते हैं।

राशियों के वर्ण

धनुष्कर्कटमीनाख्या गौरवर्णाः प्रकीर्तिताः।
वृषमेषतुलाश्चैव वृश्चिकः श्यामवर्णकः ॥८०॥

धनु, कर्क और मीन राशियों का गौरवर्ण होता है तथा वृष, मेष, तुला और वृश्चिक का श्यामवर्ण है।

मिथुनो मकरः कुम्भः कन्या सिंहश्च कृष्णकः।
गौरश्च म्रियते सत्त्वे श्यामवर्णो रजोगुणे ॥८१॥
कृष्णस्तामसवेलायां म्रियते नात्र संशयः।

मिथुन, मकर, कुम्भ, कन्या और सिंह का कृष्णवर्ण है गौरवर्ण राशियों का मृत्युकारक सतोगुण श्यामवर्ण का रजोगुण और कृष्णवर्ण का तमोगुण मृत्युकारक है।

कहीं कहीं यह श्लोक भी मिलता है—

यस्मिन्वर्षे भवेन्मासस्त्वधिकाख्यो तथा क्षयः ।
मासेन गृह्यते मासः सर्वकार्यार्थ साधने ॥८२॥

जिस वर्ष में अधिकमास तथा क्षयमास होता है, उस वर्ष में उसी मास के अनुसार संपूर्ण कार्य सिद्ध करने चाहिए ।

महीनों में मुहूर्त व्यवस्था

माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा ।
नभस्यमासिवाराणां मुहूर्तानि यथाक्रमात् ॥८३॥

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण तथा भाद्रपद इन महीनों में रविवारादि के पूर्वोक्त मुहूर्त्त नीचे लिखे हुए क्रम से होते हैं—

उक्त मासों में रव्यादिवारों में क्रम से दिन-रात्रि रेखा

रवौ नभः केशव विघ्नराजो
गोविन्दनामा नभश्चाखुगामी ।
रात्रौ नृसिंहो युगलं नभ प-
ल्लक्ष्मीशलम्बोदर रामसंज्ञौ ॥८४॥

रविवार के दिन पहले मुहूर्त्त में शून्यरेखा होती है, फिर तीन मु० तक अमृतरेखा, फिर चार मु० तक विघ्नरेखा, फिर तीन मु० तक अमृतरेखा, फिर एक मु० में शून्यरेखा तथा शेष में विघ्नरेखा होगी । रात्रि को पहले तीन मु० में अमृतरेखा, फिर दो मु० तक विघ्नरेखा, फिर एक मु० शून्यरेखा, फिर तीन मु० अमृतरेखा, फिर चार मु० तक विघ्नरेखा होती है, उसके बाद दो मु० तक अमृतरेखा होती है ।

सोमे हरिर्विघ्नपतिः सुरेशः
शून्यं च गौरीसुतविष्णुसंज्ञौ ।
पदं निशायां खखविष्णुशून्यं
युग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥८५॥

सोमवार के दिन पहले दो मु० अमृत रेखा, फिर चार मु० तक विघ्नरेखा, फिर तीन मु० अमृत रेखा, फिर एक मु० शून्यरेखा होती हैं। रात्रि में पहले मु० में कालरेखा, फिर दो मु० शून्यरेखा, फिर दो मु० अमृतरेखा, फिर एक मु० तक शून्यरेखा होती है। तत्पश्चात् दो मुहूर्त तक विघ्न-रेखा, फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा शेष चार मु० में विघ्नरेखा समझिए।

भौमे यमौ मारमणोऽथ युग्मं
युग्मं हरिश्चैव गजाननश्च ।
नक्तं च विघ्नो द्विपदं मुकुन्दः
पदत्रयं श्रीपतिखंनभश्री ॥८६॥

मङ्गल के दिन पहले दो मु० तक कालरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मु० विघ्नसंज्ञक, फिर दो मु० अमृतरेखा, शेष मु० में विघ्नरेखा हैं। रात्रि में प्रथम दो मु० तक विघ्नरेखा, फिर दो मु० कालरेखा, फिर ३ मुहूर्त अमृतरेखा, फिर तीन मु० कालरेखा, फिर ३ मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मु० तक शून्यरेखा, फिर एक मु० अमृत-रेखा होती है।

बुधे धनुः कृष्णयमौ च सौरिः
सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः ।
रात्रौ सुपर्णध्वज एव युग्मं
नभोऽथ दामोदरकुञ्जरास्यौ ॥८७॥

बुध के दिन पहले दो मु० तक विघ्नरेखा, फिर दो मु० अमृतरेखा, फिर दो कालरेखा, फिर तीन अमृतरेखा, फिर दो मु० तक विघ्नरेखा, फिर दो मु० अमृतरेखा समझना चाहिए। तत्पश्चात् दो मु० तक काल० शेष अमृतरेखा समझिये।

गुरौ गोपिनाथस्तथा विघ्नराजो
नभः केशवः कुञ्जरास्यस्तथैव ।
निशायां पदं नन्दजः सूर्यसूनु-
र्नभोमाधवश्चापमेकं हरिश्च ॥८८॥

बृहस्पति के दिन पहले चार मु० तक अमृतरेखा, फिर चार विघ्नरेखा, फिर एक मु० शून्यरेखा, फिर तीन मु० अमृतरेखा है, शेष में विघ्नरेखा समझिए। रात्रि को प्रथम एक मु० कालरेखा, फिर तीन मु० अमृतरेखा, फिर चार मु० कालरेखा जानिए। फिर एक मु० शून्यसंज्ञक, फिर तीन मु० अमृतरेखा जानना चाहिए। फिर दो मु० तक विघ्न है, शेष दो मु० अमृतरेखा जानना चाहिए।

शुक्रे कृष्णः स्याद्यमः खं मुरारि-
र्गौरीपुत्रः श्रीपतिः शून्यमेकम् ।
नक्तं कालः कंसहा खं च युग्मं
पादद्वन्द्वो वामनः खं च पादौ ॥८९॥

शुक्र के दिन पहले दो मु० अमृतरेखा, फिर दो मु० कालरेखा फिर एक मु० शून्यरेखा, फिर तीन मु० अमृतरेखा समझें। फिर चार मु० विघ्नसंज्ञक, फिर तीन मु० अमृतसंज्ञक शेष शून्य रेखा जानिए। उसके बाद रात्रि को पहले दो मु० तक कालरेखा, फिर तीन मु० तक अमृतरेखा, फिर एक मु० की शून्य रेखा, फिर दो मु० तक विघ्नसंज्ञक रेखा जाननी चाहिए। तत्पश्चात् दो मु० की कालरेखा होती है। इसके बाद तीन मु० तक अमृतरेखा और फिर एक मु० तक शून्यरेखा है। शेष कालरेखा समझिए।

शनौ पदं श्रोः खं नभोनभः खं
नारायणः खं हरि खं हरिश्च।
रात्रौ च शून्यं यमयुग्मभाधवो
खविघ्नराजौ नृहरिश्च पादौ ॥ ६० ॥

शनैचर के दिन पहले एक मु० तक कालरेखा, फिर एक मु० अमृत, फिर चार मु० शून्यरेखा फिर चार मु० की अमृतरेखा होती है। उसके बाद फिर एक मु० शून्यसंज्ञक रेखा फिर दो मु० तक अमृतरेखा, फिर एक मु० की शून्यरेखा होती है। शेष मु० अमृतरेखा, का वास जानिए और रात्रि का पहले शून्यरेखा, फिर दो मु० कालरेखा, फिर तीन मु० अमृतरेखा, उसके बाद एक शून्यरेखा जानिए; फिर चार मु० तक विघ्नरेखा उसके बाद फिर तीन अमृतरेखायें होती हैं। शेष मु० कालरेखा होते हैं।

आश्विन, कार्तिक आदि मासों के रवि आदि वारों की
मुहूर्त-रेखाओं का विचार।

अथाश्विने कार्तिकमार्गपौष-
सूर्यादिवारेषु मुहूर्तरेखाः।
नामाक्षराणां वचनप्रवृत्त्या
विचारपूर्वं विबुधैर्विचिन्त्यम् ॥६१॥
धृताभवेद्धस्त द्वयेन चापः
द्विष्ठाभवेत्तेन हि विघ्नरेखा।
सूर्ये नृसिंहो द्विपदश्च चापो
हरिर्नभः खं पदमच्युतोऽङ्घ्रिः।
रात्रौ पदं चापखमच्युतं च
युग्मं यमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥६२॥

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों ने आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष और पौष इन महीनों के रविवारादि के मुहूर्तों की रेखा का विचार करते हुए कहा है कि श्लोक गत नाम के तथा वचन के अक्षरों के प्रमाण से रेखा जाननी चाहिए अर्थात् श्लोक संख्या ७५ में कहे हुए नामों के अलावा रेखा के दूसरे नाम से जितने अक्षर हों उतने मुहूर्त तक वही रेखा समझना तथा वचन अर्थात् श्लोक ७५ के पहले रेखाओं के प्रधान नाम कहे हैं उनमें से किसी का नाम श्लोक में आवे तो एक मुहूर्त तक वही रेखा जाननी चाहिए।

विघ्न रेखा दो मुहूर्तों तक वास करती है, क्योंकि; उसका स्वरूप धनुष के आकार का होता है और धनुष दोनों हाथों

से धारण होती है और नीचे रखने पर दो कोने रोकती है। इससे यह दो कोठों में हमेशा स्थापित की जाती है।

रविवार के दिन पहले तीन मुहूर्तों तक अमृतरेखा फिर दो मु० तक कालरेखा, फिर दो मु० तक विघ्नरेखा जाननी चाहिए। फिर दो तक अमृतरेखा है, उसके बाद दो तक शून्य० रहती है। फिर एक मुहुर्त कालरेखा फिर तीन तक अमृत होती है। फिर एक मुहूर्त तक कालरेखा समझें। रवि की रात्रिको कालरेखा प्रथम एक मुहूर्त तक, फिर दो तक विघ्न०, फिर १ तक शून्यरेखा रहती है। फिर तीन तक अ०, फिर दो तक विघ्न० होगी। उसके बाद दो तक काल०, फिर दो तक अ०, फिर १ मु० तक शून्य० रहती है। फिर दो तक अ० जानिए।

सौमेऽङ्घ्रिचापं खनभो मुकुन्दो
नभश्च युग्म हरिः खं हरिश्च।
पदं निशायां खयुगं मुरारि-
विनायको विष्णुनभश्च विष्णुः ॥६३॥

सोमवार के दिन प्रथम मुहूर्त में कालरेखा, फिर दो तक विघ्न०, फिर दो शून्य०, फिर तीन अ०, फिर १ शून्य०, फिर दो तक विघ्न०, फिर दो अ०, फिर १ तक शून्यरेखा रहती है और फिर अमृतरेखा जानना।

सोमवार की रात्रि में १ मुहूर्त तक कालरेखा. १ शून्य०, २ विघ्न०, ३ अ०, फिर २ विघ्न०, पुनः २ अ०, १ शून्य० और शेष २ अ० होती है।

भौमे तथेभास्यनभोऽथ विष्णु-

र्नभोयुगं गोपति खं गणेशः ।

नक्तं गजेन्द्रास्यखमच्युतं च

युग्मं च शून्यं नृहरिश्च शून्यम् ॥६४॥

मङ्गल के दिन प्रथम चार मु० तक विघ्नरेखा, फिर, १ तक शून्यरेखा, फिर दो तक अ०, फिर १ तक शून्यरेखा, फिर दो तक विघ्नरेखा, फिर तीन तक अ०, फिर १ शून्य०, शेष विघ्नरेखा होती हैं । रात्रि को प्रथम चार मु० वि० रेखा, फिर १ शून्यरेखा, फिर तीन अ०, फिर दो वि०, फिर १ शून्यरेखा, फिर तीन अ० रेखा होते हैं, शेष २ वि० रेखा जानने चाहिए ।

बुधे धनुः श्रीपतिपादयुग्मं

नारायणः स्याद्गणनाथसिद्धिः ।

रात्रौ तु कालौ हरिशून्यकालौ

गोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥६५॥

बुध के दिन प्रथम दो मु० में विघ्नरेखा, फिर तीन तक अ० रेखा, फिर दो तक कालरेखा, फिर चार तक अ० रेखा, उसके बाद चार मु० तक वि०, और शेष शून्य० होती हैं । रात्रिको प्रथम दो मु० कालरेखा, फिर अ०, फिर १ शून्य०, फिर दो काल, फिर तीन अ०, फिर चार मुहूर्त्त तक विघ्न०, फिर १ मु० तक शून्य०, फिर १ मुहूर्त्त तक अ० रेखा रहती है ।

गुरौ हरिः शून्ययुगं सुरेशः
श्रीविघ्नराजो गगनं तथा श्रीः ।
निश्यंघ्रिदैत्यारि ख कार्मुकं च
पदे मुरारिः खयुगं पुनः श्रीः ॥९६॥

बृहस्पति के दिन प्रथम दो मु० अ० रेखा, फिर एक तक शून्य०, फिर दो तक विघ्न, फिर चार तक अ०, फिर चार तक वि० रेखा, उसके बाद दो तक शून्यरेखा के होते हैं, शेष अ० के मु० जानिए । गुरुवार रात्रि के प्रथम एक मु० कालरेखा, पुनः तीन तक अ०, फिर एक तक शून्यसंज्ञक होती है, फिर दो तक वि०, उसके बाद दो तक काल०, फिर तीन तक अ०, फिर एक तक शून्य०, पुनः दो तक विघ्न-संज्ञक जानिए, शेष में अ० होती है ।

शुक्रेऽमृतं चापमरिन्दमश्च
लम्बोदरः केशवशून्यपादम् ।
नक्तं च युग्मं नृहरिः खयुग्मं
नृसिंहयुग्मं गगनं च युग्मम् ॥९७॥

शुक्रवार के दिन प्रथम एक मुहूर्त में अमृतरेखा, फिर दो तक वि०, फिर चार तक अ०, फिर चार तक वि० संज्ञक, फिर तीन तक अ०, फिर एक तक शून्यरेखा होती है, शेष एक मुहूर्त कालसंज्ञक जानिये । शुक्र की रात्रिको प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक रेखा रहती है, फिर तीन तक अ०, फिर एक तक शून्यरेखा, फिर दो तक वि०, फिर तीन तक अ०, फिर दो तक वि०, फिर, एक तक शून्यरेखा होती है । शेष विघ्नसंज्ञक रेखा जानिये ।

शनौ पदं श्रीर्न नभो न कृष्णः
खं श्रीपदं विष्णुनभो हरिः पत् ।
रात्रौ पदं खं पदनन्दसूनु-
र्गजाननौ गोपतिशून्यपादाः ॥९८॥

शनि के दिन प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा, फिर एक मु० तक अ०, फिर एक शून्यरेखा, फिर एक अमृतरेख, फिर एक मु० तक शून्यरेखा, फिर दो तक अ० होते हैं। फिर एक तक शून्य०, फ़िर एक तक अ०, पुनः एक तक कालरेखा, फिर दो अ०, पुनः एक शून्य०, फिर दो तक अ०, तत्पश्चात् एक मु० तक कालरेखा रहती है। शनि की रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त्त कालरेख, फिर एक शून्य०, पुनः एक काल०, फिर चार अ०, पुनः चार वि०, पुनः तीन तक अ०, पुनः १ तक शून्यरेखा और शेष १ तक कालरेखा रहती है।

ज्येष्ठ और मलमास आदि की रेखाएँ

ज्येष्ठे मासे तथाषाढे तथा वै मलमासके ।
सूर्यादिवारे संशोध्याः क्रमशो नामभादिमे ॥९९॥

ज्येष्ठ, आषाढ तथा अधिक मास में रविवारादि के क्रम से नाम की अक्षर राशि (समूह) से मुहूर्तों का विचार करना चाहिये।

अर्के शून्ये च कृष्णो युगपदयुगलं
खं हरिर्विष्णुचापम् ।
रात्रौ लक्ष्मीश युग्मं युगलहरियुगं
युग्मं कृष्णं च शून्यम् ॥१००॥

रविवार के दिन प्रथम दो मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो तक अमृतरेखा, पुनः दो तक वि०, फिर १ कालरेखा, फिर दो वि०, पुनः १ तक शून्य, फिर चार तक अमृतरेखा के हैं। शेष विघ्नसंज्ञक जानिये। रविवार में रात्रि को प्रथम तीन मु० तक अमृत फिर चार मु० तक विघ्नसंज्ञक, पुनः दो तक अमृतरेखा, फिर चार मु० तक विघ्नसंज्ञक, उसके बाद दो तक अ० है। शेष शून्यरेखा जानना चाहिए।

सोमे चाप द्वयं नो नृहरिखयुगलं
पीतवासाश्च शून्यम्।
चापं द्वन्द्वं निशायामजपदखमजं
चाप पञ्चेश पादाः ॥१०१॥

सोमवार के दिन प्रथम चार मु० विघ्नरेखा फिर एकतक शून्य०, फिर तीन अ०, पुनः १ तक शून्य, फिर दो मु० तक वि०, पुनः चार तक अमृतरेखा, शेष शून्य जानिये तथा सोम की रात्रिको प्रथम चार मु० तक वि०, फिर दो तक अ०, फिर १ तक काल, फिर एक तक शून्य, पुनः दो तक अ०, फिर दो तक वि०, तत्पश्चात् तीन तक अमृतरेखा है। शेष १ तक कालरेखा रहेगी।

भौमे शून्ये च कृष्णो युगगगनहरि-
क्षोणिचापानिसिद्धि-
र्नक्तं युग्मं द्विशून्यं युगयुगलपदं
श्रीखचापं हरिश्च।

सौम्ये श्रीविघ्ननाथोऽथ हरिगणपतिः
पद्मनाभश्च पादा
दोषायांसिद्धियुग्मंहरिखगजमुखाः
कृष्णशून्ये च कृष्णः ॥१०२॥

मङ्गलवार को दिन में प्रथम दो मु० शून्यरेखा, फिर दो तक अमृतरेखा फिर दो तक वि०, फिर एक तक शून्यरेखा, फिर दो अ०, फिर छः तक वि० और शेष १ मु० अमृतरेखा जानना चाहिए। भौम की रात्रि को प्रथम चार मु० तक वि०, फिर १ तक शून्यरेखा, फिर चार तक वि०, फिर एक कालरेखा है उसके बाद १ मुहूर्त तक अमृत, फिर १ शून्य, फिर दो विघ्न और शेष दो अमृतरेखा रहती है।

बुध के दिन पहला मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार तक वि., पुनः दो तक अमृतरेखा, फिर चार तक विघ्न, पुनः चार तक अ० और अन्तिम एक मु० में कालरेखा होती है। बुध की रात्रि को प्रथम मुहूर्त्त तक अ०, दो तक विघ्न०, दो तक अ०, फिर १ शून्य, फिर चार विघ्न, फिर दो अ०, फिर दो तक शून्य एवं शेष दो मु. अमृतरेखा के होते हैं।

जीवे विष्णुश्च चापोगगनमजितखश्चां
घ्रिपादौनृसिंहो
रात्रौयोखंमुरारिर्गगनयुगगजो
विष्णुचापोऽङ्घ्रियुग्मम्।

शुके युग्मं मुरारिर्गगनयुगगजो
रामचापोऽथ पादौ
तद्रात्रौ युग्मगोपीपतियुगगगनं
श्रीवरः खं पदे श्रीः ॥१०३॥

गुरुवार के दिन प्रथम दो मु. अमृतरेखा, पुनः दो तक विघ्न. तत्पश्चात् एक मु. शून्यरे०, फिर तीन मु० अमृत० फिर १ मु० शून्यरे०, उसके बाद चार मु० तक कालरे० और शेष तीन मु० अमृतरेखा होगी। गुरु की रात्रि को प्रथम दो मु० में शून्यरे०, फिर तीन मु० अमृतरे०, फिर एक तक शून्य, फिर चार विघ्नरे०, फिर दो अमृतरे०, पुनः दो विघ्नरे०, और शेष दो कालसंज्ञक जानिये।

शुक्रवार को दिन में प्रथम दो मुहूर्त्त वि०, फिर तीन मु० अ०, फिर १ मु० शून्यरेखा, उसके बाद चार तक वि०, फिर फिर दो मु० अमृतरेखा, फिर दो मु० विघ्नरेखा, अन्तिम दो कालसंज्ञक होते है। शुक्र की रात्रि को पहले दो मु० वि०, फिर चार मु० अमृतरेखा, फिर दो मु० वि०, फिर एक मु० शून्यरेखा, फिर तीन मु० अमृतरेखा, फिर एक मु० शून्य, फिर दो मु० तक कालरेखा और शेष १ मु० अमृतरेखा का जानना चाहिए।

मन्दे श्रीयुग्मसिद्धिः खहरिहरिनभः
शौरिखं सिद्धिखं वा।
नक्तं श्रीयुग्मसिद्धिः खखयुगलहरि-
र्व्योमगोविन्द शून्यम्। १०४।

शनैश्चर के दिन पहला एक मुहूर्त्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त्त विघ्नसंज्ञक रेखा, पुनः दो मु० तक अमृतरे., फिर एक तक शून्यरेखा, फिर चार तक अ०, फिर एक तक शून्यरेखा, फिर दो मु० तक अ०, पुनः एक मु० शून्यरेखा, तत्पश्चात् एक मु० तक अ० और शेष शून्यरेखा का होता है। शनिवार की रात्रि में एक मु० अमृतरेखा, फिर दो मु० विघ्नरेखा, फिर दो मु० अमृतरेखा, फिर दो तक शून्यरेखा, फिर दो तक त्रि., फिर दो तक अ०, फिर एक शून्यरेखा, फिर तीन तक अ०, और शेष १ मु० शून्यरेखा का होगा।

रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवायै रुद्रयामले।
गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥१०५॥

रुद्रयामल ग्रन्थ में इस ज्ञान को श्रीभगवान रुद्र ने श्रीपार्वतीजी के लिए कहा है। अतः इसे प्रयत्न पूर्वक गुप्त रखना चाहिए, यह शीघ्र विश्वस्त सिद्धिकारक है।

अब आगे श्लोक संख्या ८३ से १०३ तक वर्णित मुहूर्त्तों का प्रत्येक वार के दिन और रात्रि के विभागों में अलग २ मुहूर्त्त चक्र सारणी के द्वारा प्रदर्शित करते हैं :—

अथ माघ-फाल्गुन-चैत्र वैशाख-श्रावण-भाद्रपदमासेषु,
आश्विन-कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौषमासेषु-ज्येष्ठाषाढ़
मलमासेषु च सूर्यादिवारे दिवा वा रात्रौ
मुहूर्तानि नामराशितः शोध्यानि तानि प्रदर्श्यन्ते।

रवि दिन मुहूर्त चक्र ।

रौद्र	श्वेत	मैत्र	चारभट	जयदेव	वैरोचन	तुरग	अभिजित्	रावण	बालव	विभीषण	सुनन्दन	याम्य	सौम्य	भार्गव	सावित्र	मुहूर्त
त-	त-	स-	स-	र-	र-	त-	त	स	स-	र-	र	त	त-	स	स	गुण
०	१	१	१	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	१	१	१	०	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	माघ-फा-चै-वैशा-खादेषु
१	१	१	४	४	०⌒	⌒०	१	१	०	०	४	१	१	१	४	आश्विन-कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौषेषु
०	०	१	१	०⌒	⌒०	४	०⌒	⌒०	०	०	१	१	१	०⌒	⌒०	ज्येष्ठा-षाढ़-मल-मासेषु

रवि रात्रि मुहूर्त चक्र

श्वे.	मै.	चा	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा	वि	सु.	या	सौ.	भा	स.	रौ.	मु.
र-	र-	त-	त-	स-	स-	र-	र-	त	त	स-	स-	र-	र-	त	त	गु.
१	१	१	०⌒	⌒०	०	४	१	१	१	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	१	१	माघ-फा-चै-वै-श्रा-भाद्रेषु
४	०⌒	⌒०	०	१	१	१	०⌒	⌒०	४	४	१	१	०	१	१	आश्विन-का-मार्ग-पौषेषु
१	१	१	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	१	१	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	१	१	०	ज्येष्ठा-षाढ़-मल-मासेषु

चन्द्र-दिन-मुहूर्त-चक्र

मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मु.
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गु.
ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	माघ-फा.-चै.-वै.-आ.-भाद्रेषु
[illegible]	०⌒	⌒०	०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	आश्विन-का.-मार्ग-पौषेषु
०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	ज्येष्ठा-षाढ़-मल-मासेषु

चन्द्र-रात्रि-मुहूर्त-चक्र

च.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	मु.
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गु.
[illegible]	०	०	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	माघ-का.-चै.-वै.-आ.-भाद्रेषु
[illegible]	०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	आश्विन-का.-मार्ग-पौषेषु
०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	[illegible]	०	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	[illegible]	ज्येष्ठा-षाढ़-मल-मासेषु

भौम-दिन-मुहूर्त-चक्र।

ज·	वै·	तु·	अ·	रा·	चा·	वि·	सु·	या·	सौ·	मा·	ल·	रौ·	श्वे	सै·	चा	·मु·
र·	र·	ल·	ल·	स·	ल·	र·	र·	ल·	ल·	स·	स·	र·	र·	ल·	ल·	गु·
♉	♉	δ	δ	δ	δ	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	δ	δ	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	माघ-फा· चै-वै-आ भाद्रेषु
o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	o	δ	δ	o	o⌒	⌒o	δ	δ	δ	o	o⌒	⌒o	आश्वि-का-मार्ग पौषेषु
o	o	δ	δ	o⌒	⌒o	o	δ	δ	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	δ	ज्येष्ठा-षाढ-मल मासेषु

भौम-रात्रि-मुहूर्त-चक्र।

वै	तु	अ	रा	चा	वि	सु	या	सौ	[illegible]	स·	रौ·	श्वे	मै	चं	ज	मु·
स·	स·	र·	र·	ल·	ल	स·	स·	र·	र	ल·	ल·	स·	स·	र·	र·	गु·
o⌒	⌒o	♉	♉	δ	δ	δ	♉	♉	♉	δ	δ	δ	o	o	δ	माघ-फा-चै-वै-आ भाद्रेषु-
o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	o	δ	δ	δ	o⌒	⌒o	o	δ	δ	δ	o⌒	⌒o	आश्विन् का-मार्ग पौषेषु
o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	o	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	♉	δ	o	o⌒	⌒o	δ	δ	ज्येष्ठा-षाढ-मल-मासेषु-

बुध-दिन-मुहूर्त-चक्र ।

तु·	आ·	रा·	वा·	वि·	सु·	या·	सो·	भ·	स·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	ज·	वै·	मु·
त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	ल·	ल·	ल·	गु·
०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	४	४	ऽ	माघ-फा· चै-वै-श्रा· भाद्रेषु
०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	आश्विन का·मार्ग पौषेषु ·
ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	४	ज्येष्ठा· षाढ मल मासेषु ·

बुध-रात्रि-मुहूर्त-चक्र ।

आ·	रा·	वा·	वि·	सु·	वा·	सौ·	भा·	स·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	मु·
र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	गु·
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	माघ·फा चै·वै·श्रा· भाद्रेषु
४	४	ऽ	ऽ	०	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	०	ऽ	आश्विन् का·मार्ग पौषेषु
ऽ	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	०	०	ऽ	ऽ	ज्येष्ठा षाढ मल मासेषु

गुरु-दिन-मुहूर्त-चक्र ।

श.	क.	वि.	सु.	या.	सौ.	ब्रा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	हु.	अ.	मु.
स.	स.	र.	र.	स.	त.	स.	त.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गु.
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	माघ-फा. चै.वै.-आ. षाढेषु
ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	०	०	ऽ	आश्विन का.मार्ग पौषेषु
ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	ᴗ	ᴗ	ᴗ	ᴗ	ऽ	ऽ	ऽ	ज्येष्ठा-भाद्र पद मासेषु

गुरु-रात्रि-मुहूर्त-चक्र ।

चा.	वि.	सु.	या.	सौ.	ब्र.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	क.	ज.	वै.	तु.	ब्रा.	रा.	मु.
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गु.
ᴗ	ऽ	ऽ	ऽ	ᴗ	ᴗ	ᴗ	ᴗ	०	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	माघ-फा चै.वै.-आ षाढेषु
ᴗ	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	ᴗ	ᴗ	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	ऽ	आश्विन का.मार्ग पौषेषु
०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒	⌒०	०⌒	⌒०	ऽ	ऽ	०⌒	⌒०	ᴗ	ᴗ	ज्येष्ठा-भाद्र पद मासेषु

शुक्र-दिन-मुहूर्त चक्र ।

नि	सु	धा	सौ	भा	ल	रौ	श्वे	मै	च	ज	वै	तु	ग्र	र	वा	मु
र	र	त	त	त	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	गु
८	८	४	४	०	८	८	८	०‿०		०‿०		८	८	८	०	माघ.फा. चै.वै.आ. माद्रेषु
८	०‿०		८	८	८	८	०‿०		०‿०		८	८	८	०	४	आश्विन का.मार्ग पौषेषु
०‿०		८	८	८	०	०‿०		०‿०		८	८	०‿०		४	४	ज्येष्ठा षाढ.मल मासेषु

शुक्र-रात्रि-मुहूर्त-चक्र ।

सु	धा	तौ	भा	ल	रौ	श्वे	मै	च	ज	वै	तु	ग्र	र	वा	नि	मु०
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	गु
४	४	८	८	८	०	०‿०		४	४	८	८	८	०	४	४	माघ.फा. चै.वै.आ. माद्रेषु
०‿०		८	८	८	०	०‿०		८	८	०	०‿०		०	०‿०		आश्विन का.मार्ग पौषेषु
०‿०		८	८	८	८	०‿०		०‿८		८	८	०	४	४	८	ज्येष्ठा षाढमल मासेषु

शनि-दिन-मुहूर्त-चक्र ।

सौ	भा	स·	रौ	श्वे	मै	चा	ज·	बै	तु	अ·	रा·	बा	वि	सु	मा	मु·
र·	र·	त·	त·	स	ल	र·	र·	त	त	स	स·	र·	र·	ल	त·	गु·
०	४	४	८	८	८	०	८		८		८	८	८	४	४	माघ-फा चै·वै·आ भाद्रेषु
४	०	४	८	८	८	८	८		८		८	८	८	०	४	आश्विन का·मार्ग पौषेषु
८	८		८	८	०	०	८		८	८	०	८	८	८	०	ज्येष्ठा· षाढ·मल मासेषु

शनि-रात्रि-मुहूर्त-चक्र ।

या·	सौ·	भा	स·	रौ·	श्वे	मै	का	ज	बै·	तु·	अ·	रा	बा	वि·	सु	·मु·
त·	त·	स	स·	र·	र·	त	न	ल	स	र·	र	त	त	स·	स	गु·
४	८	०	०	०	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	८	माघ-फा चै·वै·आ भाद्रेषु
४	८	०	८	०	८	८	०	८	४	८	८	०	८	८	४	आश्विन का·मार्ग पौषेषु
८	८		८	८	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	४	ज्येष्ठा· षाढ·मल मासेषु

नक्षत्र प्रकरण

नक्षत्र परिभाषा

नभसो न क्षरन्त्यस्मात् नक्षत्राणि प्रकीर्तिताः ।
ये वै क्षरणशीला स्युः तारकाः कथिताः बुधैः ॥१॥
तारकास्तु असंख्याताः तन्मध्ये वसु विंशतिः ।
नक्षत्राणि स्थिराख्यानि नित्यं कालोपयोगिनः॥२॥

जिसका आकाश से कभी गिरना (क्षरण) न हो वह तारा नक्षत्र कहलाता है और जो तारे क्षरणशील (आकाश से टूटकर गिरते हुए) दीख पड़ते हैं, वे तारा कहलाते हैं । आकाश में अनगिनती तारे हैं, किन्तु उनमें से केवल २८ तारों की ही नक्षत्र संज्ञा है । वे स्थिर होने के कारण नित्य व्यवहार योग्य काल के उपयोगी साधन हैं ।

नक्षत्रों के नाम

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसु पुष्याऽश्लेषा च मघा तथा ॥३॥
पूर्वाफाल्गुनी चैव ह्युत्तराफाल्गुनी ततः ।
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥४॥
अनुराधा तथा ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढा अभिजित्श्रवणस्तथा ॥५॥
धनिष्ठा शतभिषक् चैव पूर्वाभाद्रपदा तथा ।
उत्तराभाद्रपच्चैव रेवत्येतानि भानि वै ॥६॥

(१) अश्विनी (२) भरणी (३) कृत्तिका (४) रोहिणी (५) मृगशिरा (६) आर्द्रा (७) पुनर्वसु (८) पुष्य (९)आश्लेषा (१०)मघा(११)पूर्वाफाल्गुनी (१२) उत्तराफाल्गुनी (१३) हस्त (१४) चित्रा (१५) स्वाती (१६) विशाखा (१७) अनुराधा (१८) ज्येष्ठा (१९) मूल (२०) पूर्वाषाढ़ा (२१) उत्तराषाढ़ा(२२) अभिजित् (२३)श्रवण (२४) धनिष्ठा (२५) शतभिषक् (२६) पूर्वाभाद्रपद (२७) उत्तराभाद्रपद (२८) रेवती ये २८ नक्षत्रों के नाम हैं।

अभिजित् नक्षत्र की गणना चन्द्रस्पष्ट, विंशोत्तरीदशा स्पष्ट आदि में नहीं करते हैं, किन्तु, स्वरशास्त्रोक्त तथा ज्योतिषशास्त्र में भी सप्तशलाका आदि चक्रों में की जाती है। उत्तराषाढा के चौथे चरणकी अन्तिम १५ तथा श्रवण के प्रथम चरण की आद्य ४ घड़ियाँ मिलकर अभिजित् नक्षत्र का मान होता है।

नक्षत्रों के स्वामी

अश्विनी दस्रदैवत्या भरणी यमदेवता।
आग्नेयी कृत्तिका प्रोक्ता विधाता रोहिणीश्वरः॥७॥
मृगशीर्षेश्वरश्चन्द्रस्तथैवार्द्रेश्वरः शिवः।
अदितिस्तु पुनर्वस्वोः पतिः पुष्यस्य वाक्पतिः॥८॥
अश्लेषाधिपतिः सर्पो मघेशाः पितरः स्मृताः।
भगश्च पूर्वाफाल्गुन्या उफायाः पतिरर्यमा॥९॥
हस्तस्याधिपतिः सूर्यस्त्वष्टाचित्राभिधस्यच।
स्वातेश्च दैवतं वायुर्विशाखेन्द्राऽग्निदेवता॥१०॥
अनुराधेश्वरोमित्रो ज्येष्ठाया इन्द्र उच्यते।
मूलस्य दैवतं रक्षः पूर्वाषाढ़ेश्वरो जलम्॥११॥

उषाया: दैवतं विश्वे विधिश्चाभिजिदाधिपः।
श्रवणाधिपतिर्विष्णुर्धनिष्ठावसुदेवता ॥१२॥
वरुणः शततारायाः पूर्भेशः कथितोऽजपात्।
अहिर्बुध्न्यस्तथोभायाः पूषोक्तो रेवतीपतिः॥१३॥

अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनी कुमार, भरणी के यम, कृत्तिका के अग्नि रोहिणी के ब्रह्मा स्वामी हैं। मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के शिव, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के बृहस्पति स्वामी हैं। आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भगदेव, उत्तराफाल्गुनी के अर्यमादेव स्वामी हैं। हस्त के सूर्य, चित्रा के त्वष्टा, स्वाती के वायु, विशाखा के अग्नि तथा इन्द्र स्वामी हैं। अनुराधा के मित्रदेव, ज्येष्ठा के इन्द्र, मूल के राक्षस, पूर्वाषाढा के जल, उत्तराषाढा के विश्वेदेवा अभिजित् के विधि, श्रवण के विष्णुदेव, धनिष्ठा के वसुदेव स्वामी हैं। शतभिषा के वरुण, पूर्वाभाद्रपद के अजपात् देव, उत्तराभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य, रेवती के पूषादेव स्वामी हैं।

ध्रुव नक्षत्र संज्ञा एवं कृत्य

ध्रुवं स्थिरमितिख्यातं रोहिणी चोत्तरा त्रयम्।
भास्करश्चाभिषेकादि हर्म्यारामादिसिद्धये ॥१४॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा (उत्तर फाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद) और रविवार इनकी ध्रुव एवं स्थिर संज्ञा हैं इनमें राज्याभिषेक, भवन, बगीचा आदि से सम्बन्धित काय करना चाहिए।

चर नक्षत्र एवं कृत्य

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन् गजादिका रोहो वाटिकागमनादिकम्॥१५॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण; धनिष्ठा, शतभिषा और सोमवार इनकी चर एवं चल संज्ञा है, इनमें हाथी घोड़े आदि पर चढ़ना बगीचे आदि का भ्रमण, यात्रा आदि होने चाहिए।

उग्र और क्रूर संज्ञा व कृत्य

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्नि शाठ्यानि विषशस्त्रादिसिद्धये॥१६॥

लघुक्षिप्र नक्षत्र एवं कृत्य

तीनों पूर्वा (पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद) भरणी, मघा और मंगलवार इनकी उग्र और क्रूरसंज्ञा है। इनमें घात, अग्नि, शठता, विष, शस्त्रादि कार्यसिद्ध होते हैं।

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।
तस्मिन्पण्यरतिर्ज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्॥१७॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित तथा गुरुवार इनकी क्षिप्र और लघु संज्ञा है इनमें व्यापार, रति एवं ज्ञान भूषा, शिल्प, कला आदि से सम्बन्धित काम करने चाहिएँ।

मिश्र नक्षत्र एवं कृत्य

विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति॥१८॥

विशाखा, कृत्तिका और बुधवार इनकी मिश्र तथा साधारण संज्ञा है, इनमें अग्नि कर्म; वृषोत्सर्ग एवं अन्य मिश्रित (शुभाशुभ) कर्म सिद्ध होते हैं।

मृदु मैत्र नक्षत्र एवं कृत्य

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदुमैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यविभूषणम्॥१९॥

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनकी मृदु एवं मैत्र संज्ञा है इनमें गीत, वस्त्र, क्रीड़ा, आभूषण और मैत्री कार्य करने चाहिए।

तीक्ष्ण एवं दारुण नक्षत्र एवं कृत्य

मूलेन्द्राद्रार्हिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुण संज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥२०॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार इन सबकी तीक्ष्ण और दारुण संज्ञा है इनमें अभिचार, घात, उग्र, भेद तथा पशु दमनादि कर्म करने चाहिए।

अधोमुख नक्षत्र एवं कृत्य

मूलाश्लेषामघा पूर्वा विशाखाभरणीद्वयम्।
अधोमुखानिभान्यत्र कर्मसिद्ध्येदधोमुखम् ॥२१॥
वापीकूपतडागादि खातस्तत्र विधीयते।
निधिक्षेपोद्धृती रन्ध्रप्रवेशो गणितं तथा ॥२२॥

मूल, आश्लेषा, मघा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका ये अधो मुख संज्ञक नक्षत्र हैं इनमें वापी, कूप, तालाब, जमीन में गड्ढा खोदना, धन संग्रह, खान या जमीन से धन निकालना, गुफा या खान में प्रवेश, गणित कर्म शुभ हैं।

ऊर्ध्वमुख नक्षत्र एवं कृत्य

उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्रा श्रुतित्रयम्।
उर्ध्ववक्त्रोगणो ज्ञेयो नक्षत्राणि मनीषिभिः ॥२३॥
प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकार ध्वजतोरणम्।
नानाभिषेकमश्वं च कुर्यादूर्ध्वमुखेगणे ॥२४॥

तीनों उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र उर्ध्वमुख कहलाते हैं। इनमें प्रासाद, छत्र, मकान, दीवार, ध्वजा, तोरण, अभिषेक और अश्वकार्य करने चाहिए।

तिर्यङ्मुख नक्षत्र एवं कृत्य

पुनर्वस्वनुराधाख्यं ज्येष्ठाहस्तत्रयं मृगः।
रेवती द्वितयं तिर्यग्वक्त्रं तस्मिंस्तथा क्रियाः ॥२५॥
गजाश्वरथगंत्रीणां नौकायाश्च गमादिकम्।
शिबिकाहलयंत्राणां कार्यं तिर्यङ्मुखे तु भे ॥२६॥

पुनर्वसु, अनुराधा ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मृगशिरा, रेवती, अश्विनी ये तिर्यङ्मुख नक्षत्र हैं। इनमें तिर्यङ्मुख कार्य जैसे गज, अश्व, रथ, गाड़ी आदि एवं नौकायात्रा, पालकी, हल आदि काम करने चाहिएँ।

द्विपुष्कर और त्रिपुष्कर योग

भद्रातिथि रविजभूतनयार्कवारे
द्वीशार्यमाजचरणा तिथिवह्निवैश्वे।
त्रैपुष्करो भवतिमृत्युविनाश वृद्धौ
त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद् वसुतक्षचान्द्रे ॥२७॥

भद्रा (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) तिथियों में शनि, मंगल या रविवार हों और विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु, कृत्तिका उत्तराषाढ़ा ये नक्षत्र हों तो त्रिपुष्कर योग होता है। इस त्रिपुष्कर सज्ञक योग में किसी के घर मृत्यु जन्म, वृद्धि और विनाश की घटनाएँ हों तो तीन गुनी होती हैं। इसी प्रकार भद्रा (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) तिथि और शनि, मंगल, रविवार को धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा ये नक्षत्र

हों तो द्विपुष्कर संज्ञक योग बनता है इसमें पूर्वोक्त बातें, जन्म, मृत्यु, विनाश, वृद्धि द्विगुणित होती हैं।

धनिष्ठापञ्चक और उसमें त्याज्यकार्य

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पंच ऋक्षेष्वेषु त्यजेद्बुधः।
याम्यदिग्गमनं शय्यापूर्णकं गेह गोपनम् ॥२८॥
स्तम्भोच्छ्रायं प्रेतदाहं तृणकाष्ठादिसंग्रहः।
भवेत्पञ्चगुणं चात्र लब्धं नष्टं मृतं गतम् ॥२९॥

धनिष्ठा का उत्तरार्थ, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती इन पाँच नक्षत्रों को 'पंचक' कहते हैं इनमें दक्षिण दिशा की यात्रा, शय्या बनाना (खाट बुनवाना) घास फूसकी झोंपड़ी डालना, स्तम्भ खड़ा करना, मुर्दा जलाना, घास भूसा लकड़ी की चीजों का संग्रह नहीं करना चाहिए। पञ्चकों में उत्पन्न = जैसे लड़के, लड़की पैदा होना, लब्ध = प्राप्त जैसे धनकी प्राप्ति होना, मृत = किसी की मृत्यु होना गत = किसी का खोजाना, आदि बातें पाँच गुनी होती हैं। लोक में यह प्रसिद्ध है, कि, जितने पंचक के नक्षत्र बीत गये हों उतना प्रभाव कम हो जाता है। मोटी बात यह है कि कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में पंचक रहता है।

नक्षत्रों की विष घटियाँ

खरामतोऽन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे
खवेदतः के रदतश्च सार्पभे।
खबाणतोऽश्वे धृतितोऽर्यमाम्बुपे
कृतेर्भगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥३०॥

रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिका, मघा इन नक्षत्रों में तीस घड़ियों

के पश्चात् की ४ घड़ियाँ रोहिणी नक्षत्र में ४० घड़ी के उपरान्त की ४ घड़ी, आश्लेषा में ३२ घड़ी के बाद की ४ घड़ी, अश्विनी नक्षत्र में ५० घड़ी के बाद की ४ घड़ी, उत्तराफाल्गुनी और शतभिषा में १८ घड़ी के बाद की ४ घड़ी, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढा, पुष्य इनमें २० घड़ी के बाद की ४ घड़ी विष घड़ी होती है।

मनोर्द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे
कुपक्षतः शैवकरेष्ठितोऽजभे।
युगाश्वितो बुध्न्यभतोययाम्यभे
खचन्द्रतो मित्रभवासव श्रुतौ ॥३१॥

विशाखा, स्वाती, मृगशिरा ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में १४ घड़ी के बाद की ४ घड़ी आर्द्रा और हस्त में २१ घड़ी के बाद की ४ घड़ियाँ, पूर्वाभाद्रपद में १६ घड़ी के उपरान्त की ४ घड़ियाँ उत्तराभाद्रपद, पूर्वाषाढा और भरणी इन नक्षत्र में २४ घड़ी के बाद की ४ घड़ी, अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण इनमें १० घड़ी के बाद की ४ घड़ी विष घड़ी होती है।

मूलेङ्गबाणाद्विषनाडिकाः कृता
वर्ज्याशुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः।
निघ्नाः भभोगेन खतर्कभाजिताः
स्फुटाः भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥३२॥

मूल नक्षत्र में ५६ घड़ियों के पश्चात् की ४ घड़ियाँ विष नाड़ी कहलाती हैं। ये विष नाड़ियाँ विवाहान्नप्राशनादि शुभ संस्कार एवं यात्रा, सन्धि, नूतन क्रियारम्भ में वर्जित करने योग्य हैं। यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अगर

नक्षत्र का भोग मान ६० घड़ी हो तब तो उक्त घड़ियों में ४ घड़ी ही त्याज्य हैं। अगर नक्षत्र मान न्यूनाधिक्य हो तो उपर श्लोकों में बतलायी गयी घड़ियाँ जैसे अश्विनी की ५० घड़ी के उपरान्त है तो इसमें अन्तर पड़ जावेगा। उसके लिए हमें अभीष्ट नक्षत्र के भोगमान को अभीष्ट नक्षत्र के लिए श्लोक में बतलायी गई घड़ियों से गुण करके ६० का भाग देने पर जो घट्यात्मक काल आवेगा उसके बाद की ४ घड़ियाँ विष घड़ियाँ होगी। उदाहरण—चित्राका मान पञ्चाङ्गके अनुसार ५६ घड़ी है। इसको श्लोक सं० ३० के चित्राकी २० घड़ियों से गुणा किया ५६ × २० हुआ इसमें ६० से भाग दिया तो $\frac{५६ \times २०}{६०} = \frac{५६}{३} =$ १८ घ० ४० प० आया अर्थात् चित्रा में १८ घ० ४० प० के बाद की ४ घड़ी विष घड़ी होगी।

नक्षत्रों की यात्रा में निषिद्ध घड़ियाँ

पूर्वाग्निपित्र्यन्तक तारकाणां
भूपप्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः स्युः।
स्वातीविशाखेन्द्र भुजङ्गमानां
नाड्यो निषिद्धामनुः संमिताश्च ॥३३॥

यात्रा काल में तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, और पूर्वाभाद्रपद) की १६ घड़ियाँ, कृत्तिका की २१ घड़ियाँ मघा की ११ घड़ियाँ, भरणी की सात घड़ियाँ, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और आश्लेषा की १४ घड़ियाँ निषिद्ध होती हैं।

यात्रा में निषिद्ध नक्षत्र नाड़ी चक्र

पू. ३	कृ.	म	भ.	स्वा	वि	ज्ये.	श्ले.	नक्षत्र
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	घड़ी

पुष्य नक्षत्र की प्रशंसा

सिंहो यथा सर्व चतुष्पदानां
तथैव पुष्यो बलवान् उडूनाम् ।
चन्द्रे विरुद्धेप्यथ गोचरेपि
सिद्ध्यन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥३४॥

जिस प्रकार सब पशुओं में सिंह बलवान है, उसी प्रकार सब नक्षत्रों में पुष्य भी बलवान है। गोचर में चन्द्रमा के विरुद्ध होने पर भी पुष्य नक्षत्र में किये हुए कार्य सिद्ध होते हैं। पुष्य नक्षत्र विवाह में शुभ नहीं होता है। क्योंकि. यह अत्यन्त मदातुर नक्षत्र माना गया है। इसमें ब्रह्माजी अपनी पुत्री पर मोहित हो गये थे तभी से इसको विवाह कार्य में वर्जित कर दिया गया।

सर्वकार्योपयोगी नक्षत्र

रोहिण्यश्विमृगाः पुष्यो हस्तश्चित्रोत्तरा त्रयम् ।
रेवती श्रवणश्चैव धनिष्ठा च पुनर्वसुः ॥३५॥
अनुराधा तथा स्वाती सर्वकार्येषु सिद्धिदा ।

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, अनुराधा, स्वाती ये सब कार्यों में सिद्धिप्रद शुभ नक्षत्र हैं।

पूर्वात्रयं विशाखा च ज्येष्ठाद्र्रा मूलमेव च ।
शतताराभमेतेषु कृत्यं साधारणं स्मृतम् ॥३६॥

तीनों पूर्वा, (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वापाढा, पूर्वाभाद्रपद,) विशाखा ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, शतभिषा ये साधारण नक्षत्र हैं इनमें साधारण कार्य सिद्ध होते हैं ।

भरणी कृत्तिका चैव मघाश्लेषा तथैव च ।
अत्युग्रं दुष्टकार्यं यत्प्रोक्तमेषु विधीयते ॥३७॥

भरणी, कृत्तिका, मघा, श्लेषा, ये अत्यन्त उग्र नक्षत्र हैं इनमें अत्यन्त उग्र दुष्ट कार्य करने पर सफल होते हैं ।

नक्षत्रों के चरणों का विचार

चू चे चो ला अश्विनी ली लू ले लो भरणी ।
आ ई ऊ ए कृत्तिका ओ वा वी वू रोहिणी ॥३८॥
वे वो का की मृगशिरा कु घ ङ छ आर्द्रा ।
के को हा ही पुनर्वसु हु हे हो डा पुष्य ॥३९॥
डी डू डे डो आश्लेषा मा मी मू मे मघा ।
मो टा टी टू पूर्वाफाल्गुनी टे टो पा पी उ.फा. ॥४०॥
पू ष ण ठ हस्त पे पो रा री चित्रा ।
रू रे रो ता स्वाती ती तू ते तो विशाखा ॥४१॥
ना नी नू ने अनुराधा नो या यी यू ज्येष्ठा ।
ये यो भा भी मूल भू ध फ ढ पूर्वाषाढा ॥४२॥
भे भो जा जी उत्तराषाढ़ा जू जे जो खा अभिजित् ।
खी खू खे खो श्रवण गा गी गू गे धनिष्ठा ॥४३॥

गो सा सी सु शतभिषा से सो दा दी पूर्वाभाद्रपद ।
दू थ झ ञ उत्तराभाद्रपद दे दो चा ची रेवती ॥४४॥

अर्थात् प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण होते हैं। हर एक नक्षत्र चरण का बोधक हर एक अक्षर है। जैसे किसी का जन्म अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण (हिस्से) में हुआ है तो उसका नाम 'चू' अक्षर पर रखा जायगा अथवा अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण का ज्ञान चू अक्षर से द्वितीय चरण का 'चे' अक्षर से तीसरे चरण का चो अक्षर से और चौथे चरण का 'ला' अक्षर से होगा। इसी तरह प्रत्येक नक्षत्र के चरण का ज्ञान होता है। प्रत्येक नक्षत्र चरण में ह्रस्व या दीर्घ दोनों अक्षरों का ज्ञान होगा। जैसे 'चू' से ह्रस्व 'चु' का भी ज्ञान होगा, ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए। इसी प्रकार व और ब श और स का बोध होगा।

नक्षत्रों से राशि ज्ञान

अश्विनी भरणी कृत्तिका पादमेकं मेषः ।
कृत्तिकायास्त्रयोपादा रोहिणीमृगशिरोर्द्धंवृषः ॥४५॥
मृगशिरोर्द्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनम् ।
पुनर्वसुपादमेकं पुष्याऽऽश्लेषान्तं कर्कः ॥४६॥
मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनीपादमेकं सिंहः ।
उत्तरायास्त्रयोपादाः हस्तचित्रार्द्धं कन्या ॥४७॥
चित्रार्धं स्वाती विशाखा पादत्रयं तुला ।
विशाखायापादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः॥४८॥
मूलं पूर्वाषाढा उत्तराषाढा पादमेकं धनुः ।
उत्तरायास्त्रयोपादा श्रवणधनिष्ठार्धं मकरः ॥४९॥

धनिष्ठार्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपद पादमेकं कुम्भः ।
पूर्वायास्त्रयोपादा उत्तराभाद्रपदरेवत्यन्तं मीनः ॥५०॥

अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र के प्रथम चरण तक मेषराशि रहती है। कृत्तिका नक्षत्र के तीन चरण, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्र के २ चरण तक की वृषराशि है। मृगशिरा के बाकी २ चरण, आर्द्रा, और पुनर्वसु नक्षत्र के ३ चरणों तक मिथुनराशि है। पुनर्वसु के बाकी १ चरण, पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र तक की कर्कराशि होती है। मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण तक की सिंहराशि है। उत्तरा-फाल्गुनी के बाकी ३ चरण, हस्त और चित्रा के २ च ण तक कन्याराशि रहती है। चित्रा के बाकी २ चरण स्वाती, विशाखा के ३ चरण तक तुलाराशि को समझना चाहिए। विशाखा का १ चरण अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त तक की वृश्चिक राशि होगी। मूल, पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा का १ पाद की धनु राशि है। उत्तराषाढ़ा के ३ पाद, श्रवण, धनिष्ठा के २ चरण तक मकरराशि रहती है। धनिष्ठा के बाकी २ चरण, शतभिषा और पूर्वा भाद्रपद के प्रथम चरण तक की कुम्भराशि होती है। पूर्वाभाद्रपद के ३ चरण, उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र को मिलाकर मीनराशि बनती है।

जैसेः—किसी का नाम कामेश्वर नाथ है, इनकी राशि जानने के लिए पहले यह देखिये, कि; इसका किस नक्षत्र के किस चरण में जन्म हैं? इसके लिए नक्षत्रों के चरणों का विचार शीर्षक पृ. १०४ के नीचे दिये श्लोकों से नाम का पहला अक्षर मालुम हुआ कि वे वो का की मृगशिरा इस पद में तीसरा अक्षर 'का' है अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण में इसका नामाक्षर है अब हम नक्षत्रों से राशिज्ञान शीर्षक

पृ० १०८ के नीचे दिये प्रकरण को देखेंगे इस प्रकरण में बतलाया गया है कि मृगशिरोर्धमाद्री पुनर्वसु पादत्रयं मिथुनम् अर्थात् मृगशिरा के उत्तरार्ध के दो चरण (तीसरा और चौथा-चरण) आर्द्रा के चारों चरण और पुनर्वसु के तीन चरण तक मिथुन राशि होती है अतः इनकी राशि मिथुन हुई।

राशि जानने में सरलता के लिए यह बात याद रखें कि अश्विनी के पहले चरण से लेकर नौ नौ नक्षत्र चरणों (अक्षरों) की एक एक राशि होगी।

जन्म राशि विचार

विवाहे सर्व माङ्गल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥५१॥

विवाह और सब प्रकार के माङ्गलिक कार्य (गर्भाधानादि १६ संस्कार) यात्रा के मुहूर्त विचार, ग्रह गोचर [ग्रहों के राश्यादि चार वश शुभाशुभ फल जानने में] विचार में जन्म राशि की ही प्रधानता है इन कार्यों में नाम राशि का ग्रहण नहीं करना चाहिए।

नाम राशिका ग्रहण विचार

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्॥५२॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये।
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता॥५३॥

किसी देश में, मुहल्ले प्रान्त या नगर में, घर में जाकर बसने में, मकान बनाने खरीदने में, युद्ध [मामला मुकदमा, शास्त्रार्थ, प्रतियोगिता, परीक्षा में] में, नौकरी करने में, व्यवहार में [व्यापार, लेन-देन, साझा, पार्टनरशिप में] काकिणी

विचार [धनी-ऋणी अर्थात् दो व्यक्तियों अथा किसी गाँव या व्यापारिक प्रतिष्ठान या व्यवसाय आदि में कौन किसको लाभप्रद है इस प्रकार के विचार में] वर्ग शुद्धि [अवर्गादि आठ वर्गों के स्वामियों के मैत्री विचार में] दानकालिक संकल्पादि में, जुए [लाटरी, सट्टा, रेस] और ज्वर चढ़ने पर, अभीष्ट कार्य सिद्धि के लिए जपने लायक मन्त्र का तन्त्रोक्त चक्र शुद्धि देखनेमें, पु र्विवाहमें नाम राशिको ही प्रधानता देनी चाहिए।

विशेष ध्यान देने योग्य—

विवाहादि कार्यों में जहाँ जन्म राशि की प्रधानता बतलायी गई है, वहाँ अगर जन्मराशि मालूम न हो तो नक्षत्र मेलापक एवं लग्न तथा ग्रहबल विचार में नामराशि से विचार करें किन्तु, दोनों में से एक की भी जन्म राशि मालुम हो तो पण्डितों को चाहिए कि नक्षत्र मेलापक (गुण विचार) तो नाम राशि से करें और विवाह मुहूर्त विचार में गुरु, सूर्य, चन्द्र बलादिका विचार जिसकी जन्म राशि मालुम है, उसकी जन्म राशि से और जिस एक की नाम राशि मालुम है उसकी उसकी नाम राशि से करें। विशेष विवरण मुहूर्त प्रकाश के संस्कार प्रकरण श्लोक १५१ से १८७ तक में देखें। मुहूर्त मार्तण्ड, विद्यामाधवीय में भी इसका स र्थन है।

योगों के नाम

विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनाभिधः।
अतिगण्डः सुकर्माख्यो धृतिः शूलोऽथ गण्डकः।५४।
वृद्धिः ध्रुवोऽथ व्याघातः हर्षणश्चततः स्मृतः।
वज्रं सिद्धिः व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।५५।
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्म ऐन्द्रोऽथ वैधृतिः।
योगानां ज्ञेय मेतेषां स्वनाम सदृशं फलम्॥५६॥

१. विष्कंभ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान्, ४. सौभाग्य, ५. शोभन, ६. अतिगण्ड, ७. सुकर्मा, ८. धृति, ९. शूल, १०. गण्ड, ११. वृद्धि, १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. वज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतिपात, १८. वरीयान्, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्धि, २२. साध्य, २३. शुभ, २४. शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६. ऐन्द्र, २७. वैधृति, ये २७ योग हैं जिनका अपने नाम के अनुरूप ही फल होता है।

दुष्टयोगों के त्याज्य अंश

विरूद्ध संज्ञा इह ये च योगाः
तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः।
सवैधृतिस्तु व्यतिपात नामा
सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्यचार्द्धम् ॥५७॥

तिस्रस्तु योगो प्रथमे च वज्रे
व्याघातसंज्ञे नव पंचशूले।
गण्डेऽति गण्डे च षडेव नाड्यः
शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥५८॥

अशुभ संज्ञक योगों का पहला चरण वर्जित है, ऐसा किसी आचार्य का मत है। यहाँ विशेष विचार कहते हैं वैधृति और व्यतिपात संज्ञक योग शुभ कार्यों में सम्पूर्ण त्याज्य हैं तथा परिघ का पूर्वार्ध विष्कंभ और वज्र के प्रारम्भ की ३ घड़ियाँ, व्याघात की ९ घड़ियाँ शूल योग की ५ घड़ियाँ गण्ड और अतिगण्ड योग की प्रारम्भिक ६ घड़ियाँ त्याज्य हैं।

प्रति दिन के योग जानने का तरीका

वाक्पतेरर्कभं यावत् श्रवणाच्चान्द्रभं तथा ।
मिथो योगफलं कृत्वा भाजयेद्भमानतः ॥५६॥
शेषसंख्या समं योगः तद्दिने भवति स्फुटम् ।

बार्हस्पत्य (पुष्य) नक्षत्र से सूर्याधिष्ठित नक्षत्र तक और श्रवण नक्षत्र से चन्द्राधिष्ठित (पञ्चाङ्गीय दिन नक्षत्र) नक्षत्र तक गिनकर दोनों का योग कर २७ से भाग देने पर शेष जो बचे उस संख्या तक विष्कम्भ से गिनने पर योग का नाम मालूम हो जायगा ।

प्रति दिन करण जानने का तरीका

गततिथ्यः द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ।
एकोनाः सप्तकृच्छेषाः करणं स्याद्बवादिकम् ॥६०॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गिनकर प्राप्त संख्या को दो से गुणा करें, उसमें से १ घटा देवें और प्राप्त संख्या में ७ से भाग देने पर जो शेष बचे उस संख्या तक बव से गिनने पर करण होगा ।

करणों के नाम

बवाह्वयं बालव कौलवाख्यं
ततो भवेत्तैतिल नामधेयम् ।
गराभिधानं वणिजं च विष्टिः
इत्याहुरार्याः करणानि सप्त ॥६१॥
अन्ते कृष्ण चतुर्दश्यां शकुनिः दर्शभागयोः ।
ज्ञेयं चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दिने ॥६२॥

१—वव, २ बालव, ३ कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज ७ विष्टि ये क्रमशः ७ चर करण कहलाते हैं तथा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्द्ध में चतुष्पद तथा उत्तरार्ध में नाग और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में हमेशा किंस्तुघ्न करण रहता है। इसी से ये ४ स्थिर करण कहलाते हैं।

करणों के कृत्य

पौष्टिक स्थिर शुभानि ववाख्ये
बालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात्।
कौलवे च वसन मुद्वाहो
तैतिले शुभ गताश्रय कर्म ॥६३॥

पौष्टिक, स्थिर और शुभ कार्य वव करण में, धार्मिक अनुष्ठान दानादि ब्राह्मणों के हित कार्य बालव में, वस्त्र एवं विवाहादि कौलव में, शुभ एवं आश्रय कर्म तैतिल करण में करें।

गरे च बीजाश्रय कर्षणानि
वाणिज्यके स्थैर्य वणिक् क्रियाश्च।
न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां
विषारिघातादिषु तत्र सिद्धिः ॥६४॥

बीज, आश्रय, खेती गर करणमें, व्यापारादि स्थिर कार्य वणिज में करें भद्रामें कोई भी शुभ कार्य सफल नहीं होता है। इसमें विष, शत्रु, घात आदि सम्बधित कार्य सिद्ध होते हैं।

मन्त्रौषधानि शकुनौ तु सपौष्टिकानि
गोविप्रराज्यपितृकर्म चतुष्पदानि ।
सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्म नागे
किंस्तुघ्न नाम्नि निखिलं शुभकर्मकार्यम् ॥६५॥

शकुनि करण में मन्त्र साधन, औषधि सेवनादि पौष्टिक कर्म, चतुष्पद में गौ, विप्र, राज्य, पितृकार्य और पशुकृत्य करने चाहिए । नागकरण में सौभाग्य, दारुण धैर्य और ध्रुव कर्म तथा किंस्तुघ्न करण में सब प्रकार के शुभकर्म होते हैं ।

भद्रा का विचार

कृष्णेग्नि दशयो रूर्ध्वं सप्तमी भूतयोरधः ।
शुक्ले वेदेशयोरूर्ध्वं भद्राप्राग्वसुपूर्णयोः ॥६६॥

कृष्णपक्ष में तृतीया और दशमी के उत्तरार्ध में तथा सप्तमी और चतुर्दशी तिथियों के पूर्वार्ध में और शुक्लपक्ष में चतुर्थी तथा एकादशी के उत्तरार्द्ध तथा अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में भद्रा रहती है ।

सर्पिणी और वृश्चिकी भद्रा

दिवा सर्पमुखी भद्रा रात्रौ भद्रा च वृश्चिकी ।
सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् ॥६७॥

दिन में अधिक काल तक रहने वाली भद्रा सर्पमुखी और रात्रि में अधिक काल तक व्याप्त रहने वाली भद्रा वृश्चिकी कहलाती है सर्पिणी भद्रा का मुख और वृश्चिकी का पुच्छ वर्जित है ।

भद्रा के शरीर का विभाग

नाड्यस्तु पंच वदनेऽथगले तथैका
हृदये दशैक सहिता नियतं चतस्ः।
नाभ्यां कटौ षडथ पुच्छगताश्च तिस्रो
विष्टेः बुधैरभिहितोङ्ग विभाग एषः ॥६८॥

पाँच घटी तक भद्रा का मुख, १ घटी तक गला, ११ हृदय, ४ घटी नाभि, ६ घटी कमर, ३ घटी तक पुच्छ रहती है भद्रा का ऐसा अङ्ग विभाग पण्डितों ने किया है।

भद्रा के अंगों का फल

मुखे कार्य ध्वंसः भवति मरणं चाथ गलके
लयः स्यात् सम्पतेः हृदि कटितटे बुद्धि विलयः।
कलिर्नाभौदेशे विजयमथ पुच्छे च जगदुः
शरीरे भद्रायाः पृथगिति फलं पूर्व मुनयः ॥६९॥

प्राचीन मुनियों ने भद्रा के अङ्गों का पृथक् २ फल कहा है जैसे पूर्व कथित अङ्गों का घड़ियों के विभाग क्रम से भद्रा के मुख में कार्य नाश, गले में मरण, हृदय में सम्पत्ति नाश, कमर में बुद्धि नाश, नाभि में कलह, भद्रा की पुच्छ में विजय होती है।

चन्द्र जन्य भद्रा काल

कुम्भकर्कद्वये मर्त्यें स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनुजूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥७०॥

कुम्भ, मीन और कर्क, सिंह राशि गत चन्द्रमा में भद्रा का वास मृत्यु लोक में तथा मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक

राशि गत चन्द्रमा में स्वर्ग में, कन्या तुला धन और मकर राशि में स्थित चन्द्रमा के रहते भद्रा का निवास पाताल लोक में रहता है। भद्रा का जब जिस लोक में वास हो उसका फल वहीं होगा अन्य लोक में नहीं।

तिथि परक भद्रा पुच्छ

चतुर्थ्याश्चाष्टमे यामे प्रथमे चाष्टमी दिने।
एकादश्यास्तथाषष्ठे पूर्णिमायास्तृतीयके ॥७१॥
सप्तमेस्यात्तृतीयाया: सप्तम्यस्तु द्वितीयके।
दशम्या: पञ्चमेयामे चतुर्दश्या: चतुर्थके ॥७२॥
प्रान्ते घटीत्रयं पुच्छं शुभे कार्ये शुभावहः।

शुक्ल पक्ष की चतुर्थी के आठवें प्रहर के और अष्टमी के प्रथम प्रहर के एकादशी को छठे प्रहर के तथा पूर्णिमा के तीसरे प्रहर के अन्तिम की ३-३ घड़ियाँ भद्रा पुच्छ होती हैं। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में तृतीया को सातवें प्रहर, सप्तमी को दूसरे प्रहर, दशमी को ५ वें प्रहर, चतुर्दशी को चौथे प्रहर के अन्त की ३-३ घड़ी भद्रा पुच्छ मानी जाती हैं। इनमें कोई भी शुभ कार्य कर लेना चाहिए।

भद्रा में निषिद्ध

भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति राष्ट्रं दहति फाल्गुनी ॥७३॥

भद्रा में श्रावणी अर्थात् श्रावण मास की पूर्णिमा को होने वाला रक्षाबन्धन तथा फाल्गुन अर्थात् फाल्गुनी पूर्णिमा को होने वाला होलिकादहन नहीं करना चाहिये किन्तु भद्रा के पुच्छ में होलिका दाह और रक्षाबन्धन

अगत्या हो सकते हैं। भद्रा में करने से श्रावणी राजाको और फाल्गुनी प्रजा को पीड़ा दायक होती है।

भद्रा में विहित कार्य

खराश्वा प्रसवे दुर्गापूजने दानकर्मणि।
दाहघातादिके भद्रा शस्ता नान्यत्र शोभना: ॥७४॥

घोड़ा गदहे आदि के जन्म में, दुर्गा पूजा में, तुलादानादि में दाह एवं घात कार्यों में, शत्रु दमन, शास्त्रार्थ, मुकदमा, चोरी आदि में भद्रा शुभ होती है अन्य कार्यों में अशुभ होती है।

भद्रा का परिहार

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतिपातोऽथ वैधृतिः।
प्रत्यरि जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥७५॥

भद्रा, मङ्गलवार, व्यतिपात एवं वैधृति योग और प्रत्यरि तारा (अपने जन्म या नाम नक्षत्र से ५, १४, २३ वाँ नक्षत्र) एवं जन्मनक्षत्र (जिस नक्षत्र में जन्म हो या नाम हो वह और उससे १० वाँ १९ वाँ नक्षत्र) ये मध्यान्ह के उपरान्त शुभ होते हैं। विवाहादि शुभ कार्यों तथा यज्ञादि में भद्रा के कारण अड़चन पैदा हो रही हो तो मध्यान्ह के बाद उक्त कार्य किये जा सकते हैं।

इति पञ्चाङ्ग परिच्छेद:

अथ गोचर परिच्छेद:

गोचरे चन्द्रमसः महत्व वर्णनम्

लग्नं हस्ती नृपश्चन्द्रः सौम्यपापाश्च भृत्यकाः।
नृपे नष्टे कथं युद्धं कथं च फलमादिशेत् ॥१॥

देह रूपी लग्न हाथी के समान है और मन रूपी चन्द्रमा राजा के समान है सौम्य और पाप ग्रह राजा के कर्मचारी हैं जिस प्रकार राजा के नष्ट हो जाने पर केवल हाथी और राजकर्मचारी युद्ध नहीं कर सकते उसी प्रकार ग्रहों में राजा रूपी चन्द्रमा की राशि को प्रधान मानकर न चलने से फल कैसे कहा जा सकता है ?

यथा देहे मनः सर्वमीन्द्रियाणां सुखादिकम्।
प्राप्नोति गोचरे तद्वत् चन्द्ररेव शुभाशुभम् ॥२॥

जिस प्रकार शरीर में हाथ, पैर, मुखादि इन्द्रियों द्वारा प्राप्त सुख और दुःख का अनुभव प्रथम मन को होने से अन्य इन्द्रियों का वह प्राप्त होता है उसी प्रकार गोचर (आकाश में ग्रहों के संचरण काल जन्य) फल का अनुभव भी ग्रहों में मन के प्रतिनिधि रूप चन्द्र को ही प्रथम अनुभव होगा।

गोचर में चन्द्र राशि का वैशिष्टय

सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु चन्द्र-
लग्नं प्रधानं खलु गोचरेषु।
तस्मात्तदृचादपि वर्तमान
ग्रहेन्द्रचारैः कथयेत् फलानि ॥३॥

अत एव सब प्रकार के लग्नों (जन्म लग्न सूर्य लग्नादि अनेक प्रकार के लग्नों की कल्पनाओं) के रहते हुए भी गोचर में चन्द्र लग्न ही प्रधान है अतः ज्योतिषियों को चाहिए कि वर्तमान ग्रह चार विचार में जन्म कालिक चन्द्र लग्न और जन्म नक्षत्र से ग्रहों की स्थिति जान कर उस पर से शुभाशुभ कहें। आज कल पाश्चात्य परम्परा का अनुकरण करके कुछ भारतीय जन्म कालिक सूर्य राशि से गोचर विचार करते हैं। उन्हें सोचना चाहिए कि यह हमारे पूर्व दैवज्ञों से अज्ञात विषय नहीं था बल्कि सहेतुक ही इसे उन्होंने छोड़कर मुख्यतः चन्द्र राशि अथवा कहीं २ जन्म लग्न राशि पर से ही गोचर गत ग्रह फल विचार किया है।

गोचर में ग्रहों के शुभ स्थान

सर्वे लाभगृहे स्थिता
त्रिखरिपुष्वर्केऽसृजार्कित्रिषट्
बन्धौचाद्य ख मन्मथारिषु
शशी खास्तारि वर्ज्यं भृगुः।
धी धर्माऽस्त धनेषु वाक्-
पतिररि स्वाष्टाम्बुखस्थो बुधः
श्रेष्ठाः जन्मविधोःहि गोचर
गताः नान्यैरविद्धाः ग्रहाः ॥४॥

जन्मकालिक चन्द्रराशि से दूसरे ग्रहों के वेध से रहित सभी ग्रह अपने गोचर भ्रमण काल में ११ वें स्थान में तथा सूर्य ३, ६, १० वें स्थान में, मंगल और शनि ३, ६वें स्थान में, चन्द्रमा १, ३, ६, ७, १० वें स्थान में और शुक्र १०,

६, ७ स्थानों को छोड़ कर अवशिष्ट १, २, ३, ४, ५, ६, ९, ११, १२, इन स्थानों में, बृहस्पति २, ५, ७, ९ इन स्थानों में तथा बुध २, ४, ६, ८, १० इन स्थानों में शुभ होता है। राहु केतु का गोचर फल 'तिग्मांशुवद्धोगिनौ' इस वचन से सूर्य की तरह ही है।

ग्रहों से वेध के स्थान—

अपनी स्थित राशि से सूर्य ४।५।९।१२ चन्द्र २।४।५। ८।९।१२ मंगल ५।९।१२ बुध १।३।५।८।९।१२ गुरु ३।४।८।१०।१२ शुक्र १।३।५।६।७।८।९।१०।११ शनि ५।९।१२ इन स्थानों में स्थित ग्रहों से विद्ध होते हैं। यह ध्यान रखने योग्य है, कि; सूर्य का शनि से एवं चन्द्र का बुध से आपस में वेध नहीं होता है। कुछ लोगों का विचार है, कि; यह वेध विचार हिमालय और विंध्याचल के मध्य उत्पन्न लोगों की राशियों से ही है। किन्तु, यह मत हेय है। दाक्षिणात्य दैवज्ञ भी इसका विचार करते हैं। उपरोक्त वेध क्रमवेध कहलाता है अगर ग्रह अपने निन्दित स्थानों में हो और उस ग्रह के शुभ स्थानों में कोई अन्य ग्रह बैठा हो तो वह विलोम वेध कहलावेगा यथा जन्मराशि से ८ वें सूर्य हो तो सूर्य से ३।६।१०।११ में स्थित ग्रह से विलोम वेध होगा।

गोचरगत सूर्य-फल।

गमो हानिर्धनं रोगो दैन्यं सौख्यं गतीरूजः।
पापं सौख्यं धर्मपीड़ा फलं भानो स्वजन्मभात्॥५॥

जन्म राशि से पहले स्थान के सूर्य में यात्रा, दूसरे में हानि, तीसरे में लक्ष्मी, चौथे में रोग, पाँचवें में दीनता, छठे

स्थान में सौख्य, सातवें यात्रा, आठवें में रोगपीड़ा, नवें सूर्य पाप, दसवें में सौख्य, ग्यारहवें में धर्म और बारहवें सूर्य में पीडा होती है ।

गोचरगत चन्द्र-फल ।

चन्द्रोऽन्नं च धनं सौख्यं रोगं कार्यक्षतिं श्रियम् ।
श्रियं मृत्युं नृपभयं सुखामायव्ययौ क्रमात् ॥६॥

जन्म के चन्द्रमा में उत्तम भोजन दूसरे धन लाभ, तीसरे चन्द्रमा में सौख्य, चौथे में पीड़ा, पाँचवें में कार्यनाश, छठे लाभ, सातवें धन, आठवें मृत्यु तुल्य कष्ट, नवें राजभय, दसवें सुख, ग्यारहवें लाभ और बारहवें चन्द्र में व्यय होता है।

गोचरगत भौम-फल ।

भीतिः हानिः श्रियो वैरं रुग्लाभौ कार्य्यमेवच ।
पापं रोगःसुखं लाभो हानिः भौमफलं स्मृतम् ॥७॥

जन्म के मंगल में भय, दूसरे हानि, तीसरे धन, चौथे शत्रुवृद्धि, पाँचवं रोग, छठे धन लाभ, सातवें चिन्ता, आठवें पाप, नवें रोग, दसवें सुख व ग्यारहवें लाभ और बारहवें मंगल में हानि होती है ।

गोचरगत बुध-फल ।

बन्धं लाभं भयं वित्तं शोकः लक्ष्मीः क्षयं धनम् ।
रोगो भोगः सुखं बाधा फलं सौम्यस्य वै क्रमात् ।८।

जन्मराशि के बुध में बन्धन, दूसरे लाभ, तीसरे भय, चौथे धन की प्राप्ति, पाँचवें पीड़ा, छटे लक्ष्मी, सातवें नाश, आठवें धनलाभ, नवें रोग, दसवें भोग, ग्यारहवें सुख और बारहवें बाधा होती है ।

गुरु-फल

गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाशं सुखं शुचम् ।
मानं रोगं सुखं दैन्यं लाभं पीड़ा च जन्मभात् ॥९॥

जन्मराशि के बृहस्पति में भय, दूसरे धन, तीसरे पीड़ा, चौथे धननाश, पाँचवें सुख, छठे शोक, सातवें मान, आठवें रोग, नवें सुख, दशवें दीनता, ग्यारहवें लाभ और बारहवें बृहस्पति में पीड़ा होगी ।

शुक्र-फल

सुखं वित्तं धनं सौख्यं पुत्रपीडाविपत्सुखम् ।
धर्मो दुःखं धनं लाभः फलं शुक्रस्यजन्मभात्॥१०॥

जन्मराशि के शुक्र में सुख, दूसरे धनलाभ, तीसरे धन चौथे बहुसुख, पांचवें पुत्र, छठे कष्ट, सातवें विपत्ति, आठवें सुख, नवें धर्मप्राप्ति, दशवें पीड़ा, ग्यारहवें धनवृद्धि और बारहवें धन का लाभ होता है ।

शनि-फल

भीति शोकः श्रियो दुःखं हानिःसौख्यं भयं रूजः ।
पापं शोको धनं कष्टं शनेरेतत्फलं क्रमात् ॥११॥

जन्मराशि के शनैश्चर में भीति, दूसरे शोक, तीसरे लक्ष्मी चौथे दुःख, पाँचवें हानि, छठे शरीरिक सुख, सातवें भय, आठवें रोग पीड़ा, नवें पाप, दशवें शोक, ग्यारहवें धनलाभ और बारहवें शनैश्चर में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं ।

राहु-फल

राहुर्हानिं तथा नैःस्वं धनं वैरं शुचं श्रियम् ।
कलिं वसुं च दुरितं वैरं सौख्यं शुचं क्रमात् ॥१२॥

❀ गोचर स्थित द्वादशस्थानगत ग्रहों का फलसूचक चक्र ❀

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
१	यात्रा	अन्नप्रद	भयप्रद	बंधन	भयकृ.	सुखप्रद	भयकृ.	हानिक.	रोग
२	हानि	वित्तलाभ	हानिप्रद	द्रव्यप्र.	द्रव्यद	द्रव्यप्रद	शोकप्र	नैःस्व	वैर
३	धनप्रद	सुखद	धनप्रद	भयप्रद	क्लेश.	धनकर	लक्ष्मी.	धन	सुख
४	रोग	रोगप्रद	शत्रुप्रद	धनप्रद	धनना.	सौख्यलाभ	दुःखकृ	वैरकृत्	भय
५	दैन्य	कार्यभय	रोगप्रद	शोकप्र	सौख्य	पुत्रप्रद	हानि	शोककृ	शोक
६	सौख्य	द्रव्यलाभ	धनप्रद	लक्ष्मी.	शोकद	पीडाकर	सुख	वित्त	धनला
७	यात्रा	धनप्रद	कृशता	नाशक	मानप्र	विपत्तिप्रद	भय	वाद	यात्रा
८	रोग	मृत्यु	पापफल	द्रव्यप्र	रोगप्र	सुखप्रद	पीडाक	धन	रोग
९	पाप	राजभय	रोगप्रद	रोगकर	सौख्य.	धर्मप्रद	पाप	पापकृ	दुष्कर्म
१०	सिद्धि	सौख्यप्रद	सुख	सुखप्र.	दैन्यप्र.	पीड़ाकर	शोक	वैरकृत्	शोक
११	धर्म	धनप्रद	लाभप्रद	लाभप्र	लाभ	द्रव्यप्रद	धनागम	सौख्य	कीर्ति.
१२	पीडा	व्ययकारक	हानिकृत्	क्षयकर	पीडा.	द्रव्यप्रद	कष्टप्रद	शोकद	वैर

जन्मराशि के राहु में हानि, दूसरे निर्धनता, तीसरे धन, चौथे वैर, पाँचवें शोक, छठे धन, सातवें कलह, आठवें धन, नवें पाप, दशवें वैर, ग्यारहवें सुख, और बारहवें राहु में शोक होगा।

गोचर गत केतुफल

केतुः क्रमात् रुजं वैरं सुखं भीतिं शुचं धनम्।
गतिं गदं दुष्कृतिं च शोकं कीर्तिञ्च शत्रुताम् ॥१३॥

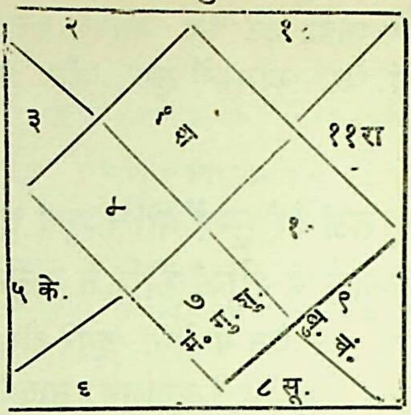
जन्म राशि गत केतु में रोग, दूसरे वैर, तीसरे सुख, चौथे भय, पाँचवें शोक, छठे धनलाभ, सातवें यात्रा, आठवें रोग, नौवें दुष्कृति, दशवें शोक, ग्यारहवें कीर्ति और बारहवें शत्रुता होती हैं।

गोचर में विचारने का तरीका

गोचर गत ग्रहों का सूक्ष्म रूप से विचार करने के लिए अपनी जन्म पत्रिका के ग्रह एवं लग्न से अष्टक वर्ग रेखा विचार किसी ज्योतिषी से करावें और अधिक रेखा गत स्थानों को शुभ समझें। अगर अपनी जन्म पत्रिका नहीं है, तो अपने जन्म नक्षत्र से सर्वतोभद्र चक्र (सप्तशलाका चक्र) के अनुसार तथा जन्म राशि से ऊपर बताये गये स्थानों के अनुसार ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति जानकर फल का ज्ञान करें।

जैसे—किसी व्यक्ति का जन्म अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण और मेष राशि में हुआ है। वह वैक्रमाब्द २०२७ मार्ग शीर्ष शुक्ल ३ मंगलवार को अपना गोचर फल जानना चाहता है। पञ्चाङ्ग में उस दिन वृश्चिक का सूर्य, धनु का बुध चन्द्र, तुला में मंगल, गुरु, शुक्र, मेष में शनि, कुम्भ में राहु और सिंह में केतु है। इन ग्रहों को उसकी जन्म राशि को लग्न मानकर कुण्डली चक्र में इस तरह रखा—

गोचर कुण्डली



अब ग्रहों का परस्पर वेध देखा तो पता चला कि सूर्य से ४ थे राहु, १२ वें मंगल, गुरू और शुक्र का वेध है। चन्द्र को ५ वें शनि, ९ वें केतु तथा १२ वें सूर्य का तथा मंगल को ५ वें राहु, बुध को १ ले चन्द्र, ३ रे राहु ५ वें शनि ८ वें केतु १२ वें सूर्य का वेध है। गुरू को ३ रे बुध एवं चन्द्र का, शुक्र को १ ले मं० गु०, ३ रे बुध, चन्द्र, ५ वें राहु ७ वें शनि ११ ५ वें केतु का शनि को ५ वें केतु ८ वें बुध और चन्द्र का वेध है। इसी प्रकार राहु को ८ वें मंगल, गुरू, शुक्र और केतु को ४ थे सूर्य, ५ वें बुध चन्द्र, ८ वें शनि का वेध है।

यहाँ सूर्य जन्म राशि से ८ वां रोग कारक है। मित्र क्षेत्री है। वेधक पाप और शुभ ग्रहों की संख्या बराबर रहने से साधारण पीड़ा का सूचक है। जन्म राशि से ९ वां चन्द्र मान वृद्धि का सूचक है; किन्तु, पाप ग्रहों का वेध होने से मान वृद्धि नहीं होगी। इसी प्रकार राशि से सप्तम मंगल कृशता का सूचक है राहु का पाप वेध कृशता को बढ़ावेगा। राशि से नवम बुध रोग सूचक है पाप वेधाधिक्य रोग वृद्धि कारक होगा। राशि से ७ वां गुरू सौख्य कारक है शुभ वेधाधिक्य सौख्य वृद्धि करेगा। राशि से ७ वां शुक्र विपत्ति

सूचक है पाप वेधाधिक्य भी विपत्ति ही करेगा जन्म राशि गत शनि भी भय सूचक है, किन्तु; वेध में शुभाधिक्य होने से शनि निष्फल रहेगा। राहु ११ वां सुखद है किन्तु मिश्रितवेध से मिश्र फलद और केतु भी ९ वें शोकद होते हुए भी मिश्र फलदायक होगा।

इस प्रकार सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ये चारग्रह पीड़ा और केवल मात्र बृहस्पति ही सौख्य कारक है अतः जब तक आकाश में इस प्रकार की ग्रह स्थिति रहेगी समय पीड़ा कर ही रहेगा।

ग्रहों का राशि भोगकाल

मासं शुक्रो बुधः सूर्यः सार्द्धमासं महीसुतः।
गुरुरब्दः तमस्सार्द्ध शनि सार्द्धाब्दक द्वयम्॥
सपाद द्विदिनं चन्द्रः राहुवत्केतुरूच्यते॥१४॥

शुक्र, बुध और सूर्य एक राशि में एकमास और मंगल डेढ़ मास और बृहस्पति एक वर्ष (लगभग तेरह महीने) राहु डेढ़ वर्ष तथा शनि २॥ वर्ष एवं चन्द्रमा २। दिन तक रहता है। केतु का भोगकाल राहु जितना ही है।

शनि की साढ़े साती

गोचर में जब शनि अपनी जन्म अथवा नाम राशि से बारहवीं राशि में प्रवेश करता है तब साढ़े साती शुरू होती है। २॥ वर्ष शनि बारहवीं राशिमें और २॥ वर्ष जन्म राशि में तथा २॥ वर्ष तक जन्म राशि से दूसरी राशि पर रहेगा। इन तीनों राशियों के भोगकाल मिलाकर ७॥ वर्ष होते हैं। इसी को साढ़े साती कहते हैं। संस्कृत में इसको 'बृहत् कल्याणी' मराठी में 'बड़ा पनोति' भी कहते हैं। लोक में साढ़े साती शनि को

बड़ा ही अशुभ माना जाता है। लेकिन, ऐसी बात नहीं है। मैंने अनुभव किया है कि जन्म काल में शनि एवं चन्द्रमा पाप युक्त या पाप दृष्ट या पाप मध्यवर्ती अर्थात् शनि से दूसरे वा बारहवें में पाप ग्रह नहीं हों और शनि मित्र या स्वक्षेत्री या उच्च राशि का होकर अपने प्रशस्त ३, ६, ११ भावों में हो तथा उसका दशा और अन्तर्दशा काल श्रेष्ठ है वह साढ़े साती निश्चित रूप से ही मनुष्य को विपुल धनधान्य, व राजसी सुख से सम्पन्न करने वाला होता है।

राशौ द्वादश मूर्ध्नि जन्म--
हृदये पादौ द्वितीये शनिः
नाना क्लेशकरोति दुर्जनजनात्
पुत्रान् पशुं पीडयेत्।
हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं
सौख्यं च साधारणं
रामान्नऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते
राज्याद्भयं बन्धनम् ॥१५॥

अपनी राशि से १२ वाँ शनि शिर पर तथा जन्म राशि का शनि हृदय पर और अपनी राशि से दूसरी राशि का शनि पैरों पर आया हुआ कहा जाता है। इन राशियों का शनि अत्यन्त दुष्ट लोगों से नाना प्रकार का क्लेशदायक, पुत्र और पशुओं को पीड़ा, हानि, मृत्यु, विदेश गमन, साधारण सौख्य, पत्नी और और धन की समृद्धि का विनाश, राज्य से भय तथा बन्धन का सूचक होता है।

लघुकल्याणी फलम्

कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो
राशेश्चतुर्थाष्टमे
व्याधिः बन्धुविरोधदेशगमनं
क्लेशं च चिन्ताधिकम् ।
मृत्युश्चैव करोति चापि मनुजं
दुःखादि वह्नेर्भयम्
लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं
कुर्यादसौ सर्वदा ॥१६॥

शनिमहाराज जब गोचर में अपनी राशि से चौथे या ८ वें स्थान में आते हैं तो २॥ वर्ष का शनि अर्थात् शनि का अढ़ैया शुरू होता है । इसको संस्कृत में लघुकल्याणी तथा गुजराती व मराठी में छोटी पनोति कहते हैं इन स्थानों पर रहने वाला शनि, व्याधि, बन्धु बान्धवोंसे विरोध, परदेश गमन, क्लेश और चिन्ता की अधिकता, मृत्यु, दुःख, अग्नि एवं लौह अथवा शस्त्र का भय तथा हमेशा सुख रहित (बेचैन) करने वाला होता है ।

नराकार शनि वास फलम्

मुखे चैकं तु विन्यस्य युगाश्च दक्षिणे करे ।
शराः पादगताश्चाग्रे हृदि शास्त्रसमास्ततः ॥१७॥
वामहस्ते युगा देया त्रीणि देया च मस्तके ।
दक्षसंख्यास्ततः नेत्रे युगलं हि गुदे शनेः ॥१८॥

गोचर में शनि जिस नक्षत्र में बैठा हो उस नक्षत्रको

एक मनुष्य के आकार का चक्र बनाकर उसके मुख में रक्खें। उससे आगे के ४ नक्षत्र दाहिने हाथ में तथा उससे आगे के ५ नक्षत्र पैरों में तत्पश्चात् छः नक्षत्र मस्तक में फिर ४ नक्षत्र बाएँ हाथ में और ३ नक्षत्र मस्तक में उससे आगे के २ नक्षत्र नेत्रों पर, अन्तिम २ नक्षत्र उस पुरुष के गुदा स्थान में रखे। तदनन्तर यह देखें कि अपना जन्म नक्षत्र इसके कौनसे अंग पर आया है उसी अंग का फल आपको अनुभव में आयेगा।

विविध अङ्गों पर शनि का फल

मुखे हानिः कलिर्हस्ते दक्षे यात्रा च पादयोः।
हृदये धनधान्यं हि दुःखं वामकरे मतः ॥१६॥
मस्तके च भवेत्प्राप्तिः सुखं नेत्रे गुदे दुःखम्।
मन्दस्य गोचरे ज्ञेयं फलमङ्गविभागशः ॥२०॥

शनि मुखस्थ नक्षत्र में हो तो हानि, दाहिने हाथ में कलह, पैरों में भ्रमण, हृदय में लाभ, बाएँ हाथ में दुःख, मस्तक में लाभ, नेत्रों में सुख, गुदा में दुःखदायक होता है।

शनि के चरणों का विचार

जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं
द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम्।
त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति
वेदाष्टसार्केष्विह लोहपादम् ॥२१।

जिस दिन शनि अपनी राशि बदलकर दूसरी राशि में जा रहा हो उस समय अगर आपकी नाम या जन्म राशि से जन्म का चन्द्रमा हो या छठे तथा ११वें हो तो शनैश्चर का चरण सोने का जानिये। दूसरा, पाँचवां और नवाँ हो तो

चाँदी का चरण होता है। तीसरा, सातवाँ और दसवाँ चंद्रमा हो तो ताम्र का पाद जानिए। चौथा, आठवाँ और बारहवाँ चन्द्रमा हो तो लोहे का पाद होता है। मारवाड़ी समाज में बच्चे के पैदा होने पर उसके जन्म लग्न से चन्द्रमा के इन ऊपर कहे हुए स्थानों में रहने से पाये का विचार होता है।

पाद-फलम्

लौहे धनविनाशः स्यात्सर्वसौख्यं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत् ॥२२॥

लोहे का पाद धन का नाश करेगा और सोने का सर्वसुख देगा, ताम्र पाद सम फल देगा तथा चाँदी के पाद का फल सौभाग्यदायक है।

शनिवाहन विचार

येषां जन्मनि तारकादिगणयेत्सूर्यात्मजो भावधिं
चन्द्राङ्केन युतं पुनस्त्रिगुणितं पश्चाद्युगैर्भाजितम्।
शेषे कुञ्जरवाजिनोत्तमरथः स्याद्वाहनं शैविका
श्वेतं पीतमरक्तश्यामशुभदं सौख्यं च शोकः क्षयः२३

जन्म नक्षत्र से शनैश्चर के नक्षत्र तक गिने और उस अंक में एक और जोड़ दे, फिर उस अङ्क को ३ से गुणा करें तथा गुणनफल में ४ का भाग दे, अगर शेषाङ्क १ बचे तो हाथी का वाहन जानिए। दो बचे तो घोड़े का वाहन होगा। ३ बचे तो रथ वाहन होता है। शेष ४ बचे तो पालकी का वाहन जानना चाहिए। इसी क्रम से वस्त्र जानें—अर्थात् एक बचे तो श्वेत वस्त्र, दो बचे तो पीतवस्त्र, तीन बचे तो लाल वस्त्र, शून्य रहे तो काला वस्त्र होता है। अब इनका फल कहते हैं–

हाथी का वाहन और श्वेत वस्त्र शुभ है। घोड़े का वाहन और पीला कपड़ा सुखदायक है। रथ का वाहन और लाल कपड़ा शोककारक है तथा पालकी का वाहन एवं काला कपड़ा क्षयकारक है।

अन्य मतेन शनिवाहन-विचार

मन्दर्क्षाच्छशिवेदतर्कविशिखाऽब्ध्यग्नि द्विपक्षक्रमा
च्छागोऽश्वो भषणो गजो हय रपुहँसो वृषो वायसः।
हानिर्वैरिजयो भ्रमो धनचयो मानाल्पता भूपता
सौख्यं रोगचयो नरर्क्षवशतो मन्दस्य वाहा क्रमी॥२४

शनि के नक्षत्र से एक, चार, छः, पाँच, चार, तीन, दो फिर दो इन नक्षत्रों को स्थापित करे। इसके बाद अपने जन्म नक्षत्र को देखे। उसी क्रम से छाग १ घोड़ा २ कुत्ता ३ हाथी ४ भैंसा ५ हंस ६ बैल ७ कौवा ८ ये ८ वाहन होते हैं।

छाग में हानि, अश्व में शत्रु से जीत हो, कुत्ता में भ्रम हो, हाथी में धन की वृद्धि हो, भैंसा में मान में कमी हो, हंस में राज्यपद की प्राप्ति हो, बैल में सुख प्राप्ति हो और कौवा वाहन में रोग की वृद्धि होती है।

तृतीय प्रकार से शनिवाहन-विचार

शनि भान्नरभं यावत् माघादिर्मास संयुतम्।
विभजेत् मुनिभिः पश्चात् शेषाद्वाहनमुच्यते ॥२५॥
एक शेषे च शुण्डी स्यात् द्वौ शेषे जम्बुकः स्मृतः।
त्रिके चाश्व चतुर्थेश्वा चापे सिंहः रसे खरः।
सप्त शेषे मृगो ज्ञेयः शनेर्हि वाहनाः स्मृताः ॥२६॥

जिस नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हो उस नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनकर उसमें माघ से लेकर जो महीना शनि के राशि के परिवर्तन के समय हो उसको भी उसी नक्षत्रों के योग के अंकों में जोड़ें। प्राप्त अंकों में ७ का भाग दें, और क्रम से शनि वाहन जान लीजिए अर्थात् एक बचे तो हाथी वाहन, दो बचे तो सियार, तीन बचे तो घोड़ा, चार बचे तो कुत्ता, पाँच बचे तो सिंह, छः बचे तो गदहा और सात बचे तो मृगवाहन होता है।

फलम्

गजे च लभते लक्ष्मीं जम्बुके बुद्धिनाशनम्।
अश्वे कनकं प्राप्तिः श्वाने चोरगृहे गृहे ॥२७॥
सिंहे च जायते सिद्धिर्गर्दभे हानिरेव च।
मृगे च प्राणसंदेहो वाहनानां फलं दिशेत् ॥२८॥

हाथी वाहन में लक्ष्मी का लाभ, सियार में बुद्धिनाश, घोड़े में सोना मिले, कुत्ता घर में चोरी कराये, सिंह में सिद्धि हो, गदहा में हानि और मृग में प्राणसन्देह फल होता है।

अथ वाहन देखना

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं वाहनमुच्यते ॥२९॥

टी—शनि का जिस दिन राशिचार या नक्षत्रचार (परिवर्तन) हो उस दिन की तिथि, वार, नक्षत्र और नाम के अक्षर इनको एकत्रित करे और उसमें ९ का भाग दे जो शेष संख्या रहे उसे क्रम से वाहन जाने।

वाहन के नाम

गर्दभोऽश्वश्चहस्ती च मेषः सिंहश्च जम्बुकः।
काको मयूरो हंसश्च नवैते शनिवाहनाः ॥३०॥

टी—एक शेष रहे तो गर्दभ, २ रहे तो अश्व, ३ रहे तो हाथी, ४ रहे तो मेष, ५ रहे तो सिंह, ६ रहे तो जंबुक, ७ रहे तो काक, ८ रहे तो मयूर, ९ रहे तो हंस वाहन जानना चाहिए।

वाहन फलम्

गर्दभे मानभङ्गश्च धनलाभश्च घोटके।
सर्वसिद्धि र्गजे चैव मेषश्चेद्रोगदायकः ॥३१॥
जम्बुके च भवेद्युद्धं सिंहे शत्रुविनाशनम्।
काको हि मरणायैव मयूरो धनलाभदः।
हंसके सर्वसिद्धिश्च वाहनस्यफलं शनेः ॥३२॥

टी—गर्दभ वाहन हो तो मानभङ्ग, अश्व में धन का लाभ, हाथी की सवारी में सब तरह से सफलता, मेष में रोग होना, गीदड़ में युद्ध और सिंह में शत्रुओं का नाश, कौवे के वाहन में मृत्यु, मयूर में धन की प्राप्ति, हंस में सब कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

नवग्रहदान व जप संख्या चक्र

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्य	बांस या कांस्य पात्र	मूँगा	बैल	पीली शक्कर	चित्र वस्त्र	उड़द	गोमेद	वैदूर्य मणि
गेहूँ	चावल	गेहूँ	कांसा	हल्दी	सफेद घोड़ा	तैल	घोड़ा	तिल
गौ बछड़ा	कर्पूर	मसूर	मूँग	घोड़ा	गौ	नीलम	नीला वस्त्र	तैल
लाल वस्त्र	मोती	लाल बैल	घृत	पीतअन्न (चनेकी दाल)	हीरा	तिल	कम्बल	कम्बल
गुड़	दही	गुड़	पन्ना	पीतवस्त्र	चाँदी	कुरथी	तिल	कस्तूरी
सोना	सफेद वस्त्र	सोना	फूल	पुखराज	सोना	भैंस	तैल	शस्त्र
ताँबा	बछड़ा	लाल वस्त्र	दासी	नमक	चावल	लोह	लौह	छाग
लाल चंदन	चाँदी	लाल कनेर के फूल	हाथी का दाँत	सोना	चन्दन	काली गौ	दक्षिणा	दक्षिणा
कमल	घृत कुम्भ	ताँबा	नील वस्त्र	दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	० ०	० ०
७ ह. जप	११ हजार जप	१०ह. जप	८ह जप	१९ हजार जप	१६ हजार जप	२३ह. जप	१८ ह. जप	१८ह. जप

इति गोचर परिच्छेदः

संस्कार-परिच्छेदः

संस्कारैर्विहीनानां खनिजां नोपयोगिता ।
गर्भदोषैर्युतस्तद्वत् नोपयोगस्तु प्राणिनाम् ॥१॥

जिस प्रकार खान आदि अपने उत्पत्ति स्थान से उत्पन्न पदार्थ प्राकृतिक दोषों से दूषित होने के कारण बिना शुद्ध किये अनुपयोगी होते हैं उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी भी अपने माता पिता के रजवीर्यगत गुण दोषों से एवं गर्भावस्था में होने वाले रोगादि के प्रभाव से दूषित रहते हैं अतः इन दोषों के कारण दैहिक दैविक भौतिक इनमें से किसी भी ताप से वे संतप्त होने से अपने जीवन में पूर्ण उपयोगी सिद्ध नहीं होते हैं।

सञ्चिन्त्य मुनयो सम्यक् नृनार्योः हितकारकाः ।
संस्काराः बहवः पूर्वमब्रुवन् तानहं ब्रुवे ॥२॥

यह सोच कर पुराने मुनियों ने स्त्री पुरुषों के हितकारी जिन अनेक संस्कारों को बतलाया है उनको मैं यहाँ बतलाऊँगा ।

स्त्री की राशि से चन्द्र शुद्धि का विचार

विवाहकार्यं कुसुमप्रतिष्ठा
गर्भप्रतिष्ठा वनिता विशुद्धौ ।
अन्यानि कार्याणि धवस्य शुद्धौ
पत्या विहीने प्रमदात्मशुद्ध्या ॥३॥

विवाह, गर्भाधान, रजोशुद्धि, द्विरागमन आदि कार्यों में स्त्री की राशि से भी चन्द्र शुद्धि देखनी चाहिए। बाकी

स्त्रियों के चूड़ी पहरने आभूषण या वस्त्रादि धारण करने में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए पति के अभाव में स्त्री की ही राशि से विचार करें।

गर्भाधान मुहूर्त

पुत्रकाम स्त्रियं गच्छेत् शुद्धां स्नातामरोगिणीम् ।
तृतीय दिवसादूर्ध्वंषष्ठीं सम रात्रिषु ॥ ४ ॥
शुभे त्रिकोण केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभके ।
योषितामुपचयैः हीनेश्चन्द्रे नृणां विलोमगे ॥५॥
मृगानुराधाश्रुति रोहिणीषु
हस्तोत्तरास्वातीवसौ शतर्क्षे ।
सुसज्जिते तल्पगतः प्रसन्नः
गर्भस्यचाधान विधिं प्रकुर्यात् ॥६॥

पुत्र की कामना से पुरुष शुद्ध कुलोत्पन्न एवं अवगुणों से रहित रजस्वला होने के बाद स्नानादि से पवित्र हुई तथा रोग रहित (स्वस्थ) पत्नी के पास रजस्वला होने के तीसरे दिन के बाद छठी रात्रि को छोड़ कर १६ दिन के भीतर सम रात्रियों में जब स्त्री का राशि से १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १२ इन स्थानों में (४, ८, को भी छोड़ दें तो अच्छा है) और पुरुष की राशि से ३, ६, १०, ११ इन स्थानों में चन्द्रमा हो तथा आधान लग्न से केन्द्र (१, ४, ७, १०) एवं त्रिकोण ५, ९ स्थानों में शुभ ग्रहों की अधिकता और ३, ६, ११ में पाप ग्रह हों लग्न, पंचम एवं चन्द्रमा पर पुरुष ग्रहों सू. मं. गु. की दृष्टि हो, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी हस्त, तीनों उत्तरा, स्वाती, धनिष्ठा शतभिषा इनमें

से कोई नक्षत्र हो ऐसे समय में सुसज्जित शय्या पर प्रसन्न मन से जाकर गर्भाधान संस्कार की विधि करें। गुजरात महाराष्ट्र दक्षिण एवं हिमालय की तराई में बसे प्रदेशों में प्रथम गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व माना गया है वहाँ इस मूहूर्त का विशेष विचार होता है।

सीमन्तोन्नयन व पुंसवन और विष्णु बलि

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजि
सौरेण गर्भे प्रथमे विधेयम् ॥
सीमन्तकर्म द्विजभामिनीनां
मासेष्टमे विष्णुबलिं च कुर्यात् ॥७॥

मूलादित्रितये करे श्रवणके भाद्रद्वयाद्रात्रये-
रेवत्यामृगपञ्चके दिनकरारेज्येस्वरिक्ता तिथौ।
नेत्रेमास्यथवाग्निमासिधनुषि स्त्रीमीनयोश्च स्थिरे-
लग्ने पुंसवने तथैव शुभदं सीमन्तकर्माष्टमे ॥८॥

प्रथम बार गर्भवती होने पर द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) पत्नी के गर्भाधान समय से सौरमान से (सूर्य संक्रान्ति मास गणना विधि से (४, ६, ८ वें महीने में सीमन्त एवं पुंसवन कर्म तथा ८ वें महीने में विष्णु बलि (विष्णु पूजन) अक्षत पुञ्ज पर सुपारी के मौली लपेट कर उसी को विष्णु मानकर पूजन करना चाहिए क्योंकि; स्त्रियाँ अपवित्र होती हैं और गर्भवती स्त्री तो नितान्त ही अपवित्र मानी जाती है। वह पूजन के समय शालग्राम शिलादि का स्पर्श नहीं कर सकती है। मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा हस्त, श्रवण पूर्वाभाद्र पद, उत्तरा भाद्रपद, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी,

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा ये नक्षत्र रवि, मंगल और गुरुवार तथा रिक्ता (४।९ १४) रहित तिथियाँ दूसरा; तीसरा महीना, धन, कन्या और मीन तथा स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक कुम्भ) लग्न पुंसवन संस्कार में ग्राह्य हैं ये ही नक्षत्रादि आठवें महीने होनेवाले सीमन्तोन्नयन संस्कारमें भी गृहीत हैं।

सूतिका गृह प्रवेश मुहूर्तः

रोहिण्यैन्दव पौष्णेषु स्वाती वारुणयोरपि।
पुनर्वसौपुष्यहस्त धनिष्ठात्र्युत्तरासु च ॥९॥
मैत्रे त्वाष्ट्रे तथाश्विन्यां सूतिकागारवेशनम्।
प्रसूति सम्भवे काले सद्य एव प्रवेशयेत् ॥१०॥

रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, अनुराधा, चित्रा, अश्विनी इन नक्षत्रों में गर्भवती स्त्री को साफ-सुथरे व सुगन्धित तथा सौम्य और सुन्दर आकृति वाले चित्रों से विभूषित एकान्त कमरे में प्रवेश करावे या अस्पताल में भर्ती करावे अगर प्रसव काल आसन्न हो और समय न हो तो तत्काल ही बिना मुहूर्त विचारे ही सूतिकागार या अस्पताल में भर्ती करा दे। बच्चा पैदा हो जाने पर घर में ही बच्चा पैदा हो तो सूतिका गृह (जच्चा के कमरे) द्वार पर ऊनी चादर या कम्बल का परदा लगाना चाहिए और नाग फणी की डाली काटकर दरवाजे पर टांगनी चाहिए। नीम की पत्तियों की बन्दनवार बांधे और अंगीठी में अग्नि दरवाजे के पास रखे, बाहर से सूतिकागृह में प्रवेश करने वाला व्यक्ति पैर हाथ धोकर उस अंगीठी वाली अग्नि में चोकर डाल कर ही प्रवेश करेगा सुबह शाम अजवायन का धुंआ भी करना चाहिए। ऐसा

करने से संक्रामक रोग भूतादि बाधा होने का डर नहीं होता है।

जातकर्म और नामकरण मुहूर्त

जाते पुत्रे पिता स्नात्वा वृद्धिश्राद्धं विधानतः।
कृत्वाकर्माखिलं कुर्यात् नान्यैरालंभनात् पुरा ११।
पुष्यार्कत्रयमैत्रभे तु मृगभे ज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा
दित्याख्येषु च नामकर्मशुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ।
अह्निद्वादशके तथान्यदिवसे शस्ते ततैकादशे
गोसिंहालिघटेषुसूर्यबुधयोर्जीवे शशांकेपि च ॥१२॥

पुत्रकी उत्पत्ति सुनकर पिता किसी का स्पर्श किये बिना पहले जो वस्त्र पहिने हुए हो उनके साथ ही स्नान करे और स्नान से निवृत्त होकर वृद्धिश्राद्ध या उसकी जगह स्वर्ण अथवा तन्मूल्य द्रव्य से सांकल्पिक श्राद्ध करे पुनः नाल च्छेदनादि जातकर्म करे तत्पश्चात् उत्पत्ति दिन से ११ वें या १२ वें अथवा किसी अन्य प्रशस्त दिन में प्रशस्त (शुभ) तिथियों में पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद) पुनर्वसु इन नक्षत्रों में वृष, सिंह, वृश्चिक कुंभ लग्नों में सूर्य, बुध, गुरु, चन्द्र इन ग्रहों के केन्द्र कोण स्थिति वश नामकरण संस्कार करे।

सूतिका स्नान

पौष्णाध्रुवेन्दुकर वातहयेषु सूती
स्नानं समित्रभ रवीज्यकुजेषु शस्तम्।
नार्द्रात्रयं श्रुतिमघान्तकमिश्रमूल—
त्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्त तिथ्याम् १३॥

सूतिका की शुद्धि के लिए ३ स्नान होते हैं। प्रथम स्नान ५वें या छठें दिन जिसे 'पाँचइ' या छठी का नहान कहते हैं। दूसरा दसवें या ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन का स्नान जिसे 'दसूठन' अथवा बरही या बड़ा नहान कहते हैं। राजस्थान के लोग बारहवें दिन तथा उत्तर प्रदेश के लोग १३वें दिन यह स्नान नहीं करते हैं। तीसरा स्नान १ मास बीत जाने पर होता है। इस स्नान के बाद ही स्त्री सब प्रकार के कर्मों के योग्य होती है। अतः इस तीसरे स्नान में नक्षत्रादि के शुद्धि का विशेष विचार करना चाहिये। पहले और दूसरे मुहूर्त में यथा सम्भव नक्षत्र शुद्धि लेनी चाहिए। रेवती, तीनों उत्तरा (उ. फा., उ. षा., उ. भा.) रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा ये नक्षत्र रवि, मङ्गल और बृहस्पतिवार सूतिका स्नान में शुभ हैं। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी मिश्र संज्ञक नक्षत्र (विशाखा, कृत्तिका) मूल चित्रा ये नक्षत्र और बुध, शनिवार तथा ६।८। १२ एवं रिक्ता (४।९।१४) तिथियाँ सूतिका स्नान में वर्जित हैं। सूतिकास्नान में श्रीपति ने शतभिषा का भी निषेध किया है।

जलपूजा (गङ्गा पुजैया) मुहुर्त्त

पुनर्वसुद्वये हस्ते मृगे मूलानुराधयोः।
श्रवेगुरौबुधेचन्द्रे सतिथौ जलपूजनम् ॥१४॥
गुरौशुक्रेऽस्तगे चैत्रे पौषे वा मलमासके।
मासपूर्तौ विरुद्धाहे न कुर्यात्तु जलार्चनम् ॥१५॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, अनुराधा, श्रवण इन नक्षत्रों में गुरु, बुध, सोमवारों में तथा सूतिका स्नान में वर्जित

६।८।१२ रिक्ता पर्वादि रहित शुभ तिथियों में जल-पूजन (कुआँ पूजन, जल या गङ्गा पुजैया, नदी या तालाब पूजन) शुभ है। इसमें गुरु और शुक्र का अस्त, चैत्र, पौप एवं मल-मास, क्षयमास, विश्वघस्र पक्ष, संक्रान्ति दिन, वार (पृ० ४२ श्लोक १३५) ग्रहण आदि निषिद्ध दिनों में जल पूजन नहीं होना चाहिए। यह पूजन जब प्रसूता स्त्री पूरे १ महीने की हो जाय तभी करना जाहिए। आज-कल स्त्रियाँ १ महीने के भीतर ही चूडा पहिन कर जलपूजन कर लेती हैं; यह बिल्कुल अशास्त्रीय परम्परा है।

चूडिका मुहूर्त्त

यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे
धिष्ण्यानि संख्या ततः।
वह्निर्भूतगुणाब्धिसप्तनयनं
पृथ्वीकरेन्दुः क्रमात् ॥
सूर्यारौ कविसौम्यराहुरविजाः
जीवः शशी केतवः।
क्रूरेऽसच्च शुभे शुभं च कथितं
चक्रे च चूडाह्वयः ॥१६॥

जिस नक्षत्र में सूर्य बैठा हो वहाँ से दिन के नक्षत्र (चंद्र नक्षत्र) तक अभिजित् सहित गिनिये। क्रमशः ३।५।३।४।७।२।१।२।१ इन संख्या में नक्षत्रों के रवि, मंगल, शुक्र, बुध, राहु, शनि, गुरु, चन्द्र और केतु अधिपति होते हैं। जिस नक्षत्र समूह के क्रूरग्रह स्वामी हों वह चूड़ियाँ पहिनने में अशुभ तथा जिस नक्षत्र समूह का शुभ ग्रह स्वामी होगा; वह नक्षत्र

समूह शुभ फलकारक होता है। जैसे—सूर्य श्रवण नक्षत्र में है, वहाँ से गिनने पर पहले ३ नक्षत्र श्र. ध. श. का सूर्य और उसने आगे पू. भा., उ. भा., रेवती अश्विनी, भरणी तक ५ नक्षत्रों का मंगल स्वामी है, तत्पश्चात् ३ नक्षत्र कृ. रो. मृ. का शुक्र स्वामी है, जो कि शुभ ग्रह है। इसके पूर्व रवि, मंगल अशुभ ग्रह थे। अतः उनके नक्षत्र छोड़कर इनमें शुक्र के नक्षत्रों में चूड़ियाँ पहनी जा सकती हैं।

अन्य मतेन चूडिका मुहूर्त्तः

अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपञ्चके।
भौमजीवार्कशुक्राणां वारः सच्चूडिकाधृतौ ।१७।
रोहिण्यां त्र्युत्तरे पुष्ये पुनर्वस्वोः कदाचनः।
न दध्यात् सुभगा भूषा वस्त्राण्यन्ये कुजेऽपि न॥१८॥

अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा ये नक्षत्र मंगल, बृहस्पति, रवि और शुक्रवार ये स्त्रियों के चूड़ी धारण में शुभ हैं किन्तु, रोहिणी, ३ उत्तरा (उ.फा., उ.षा., उ.भा.) पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र सौभाग्यवती स्त्रियों के वस्त्र और आभूषण (चूडियाँ आदि) धारण करने में निषिद्ध हैं। कुछ लोगों के मत से मङ्गलवार भी निषिद्ध है।

निष्क्रमण मुहूर्त्त

मैत्रे पुष्यपुनर्वसुप्रथमभे पौष्णयेनुकूले विधौ–
हस्ते चैव सुरेश्वरे च मृगभे तारासु शस्तासु च।
कुर्यान्निष्क्रमणं शिशोर्बुध गुरौ शुक्रे विरिक्ते तिथौ
कन्याकुंभतुलामृगारिभवने सौम्यग्रहालोकिते।१९॥

अनुराधा, पुष्य, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती, हस्त, ज्येष्ठा, मृगशिरा इन नक्षत्रों में अपना जन्मराशि से शुभ चन्द्रमा एवं अनुकूल तारा (जन्म, संपत् आदि ९ ताराओं में से विपत्, प्रत्यरि, वध ताराओं को छोड़कर) में बुध गुरु, शुक्रवारों में रिक्ता (४, ९, १४) रहित तिथियों में तथा सौम्यग्रहों से दृष्ट कन्या, कुम्भ, तुला सिंह, लग्नों में बालक को प्रथम बार अपने गृह से बाहर निकालना चाहिए।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त

पूर्वार्द्रा भरणी भुजङ्ग वरुणं त्यक्त्वा कुजार्कौ तथा-
नन्दा पर्व च सप्तमीमपि तथा रिक्तामपि द्वादशीम्।
षष्ठेमास्यथवान्नभक्षणविधिं स्त्रीणामयुक् पञ्चमे-
गोकन्याझष मन्मथेषु धवले पक्षे च योगे शुभे॥२०॥

अन्नप्राशन में तीनों पूर्वा, (पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वा भाद्रपद) आर्द्रा, भरणी, आश्लेषा, शतभिषा ये नक्षत्र मंगल और शनिवार, नंदा (१।६।११) पर्व (देखें पृष्ठ २० श्लोक ६१) रिक्ता (४।९।१४) सप्तमी और द्वादशी तिथियों को छोड़कर शेष तिथि और वारों तथा नक्षत्रों में छठे मास में और कन्या का ५ वें या विषम महिनों में वृष, कन्या मीन और मिथुन लग्नों में तथा शुक्लपक्ष और शुभयोग में करें। अन्नप्राशन में लग्न से दशम स्थान ग्रह रहित होना चाहिए। दशम स्थित शुभग्रह भी अशुभकारक ही होता है ऐसा प्रयोग पारिजात का मत है।

गर्भाधान से अन्नप्राशनान्त संस्कारों में केवलमात्र पञ्चाङ्गशुद्धि ही देखनी चाहिए। कालशुद्धि (याम्यायन, गुरु शुक्रास्तादि) नहीं देखनी चाहिये।

कनछेदन (कर्णवेध) मुहूर्त

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं
जन्ममासं च रिक्तां
युग्माब्दं जन्मताराम्रृतुमुनिवसुभिः
संमिते मास्यथो वा ।
जन्माहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसे
ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारेऽ-
थौजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः
कर्णवेधः प्रशस्तः ॥२१॥
संशुद्धे मृतिभवने त्रिकोणकेन्द्र-
त्र्यायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने ।
पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थै-
र्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ॥२२॥

चैत्रमास, पौषमास तथा अवम तिथि (तिथि की हानि) हरिशयन अर्थात् आषाढशुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक, तथा जन्म का महीना व रिक्तातिथि (४।९ १४), युग्म वर्ष अर्थात् जन्म से दूसरा, चौथा, छठा इस क्रम से युग्मवर्ष, जन्मतारा कर्णवेध में वर्जित है, जन्म के समय से छठवाँ, सातवाँ और आठवाँ महीना, जन्म से बारहवाँ सोलहवाँ दिन तथा बुध, बृहस्पति, शुक्र और सोमवार, ओजवर्ष अर्थात् पहला, तीसरा, पाचवाँ साल श्रेष्ठ हैं, श्रवण, धनिष्ठा. पुनर्वसु मृदु और लघुसंज्ञक नक्षत्रों में कर्णवेध करना शुभ है। लग्न से आठवें स्थान में कोई ग्रह न हो, त्रिकोण ९।५ एवं केन्द्र १।४।७।१०, तथा तीसरे व ग्यारहवें घर में शुभग्रह हों और

शुक्र, बृहस्पति की राशि अर्थात् वृष, तुला, धन, मीन ये लग्न में हों और पापग्रह छठे, तीसरे और ग्यारहवें तथा लग्न में बृहस्पति हों तो कर्णवेध शुभ होता है।

कन्या का नासिका वेध

कर्ण वेधोक्तभे शस्तं कन्यायाःघ्राण वेधनम् ॥
त्र्युत्तराजलपस्वातौ पूर्वाह्णे शुक्लपक्षके ॥२३॥

कर्ण वेधोक्त नक्षत्र एवं तीनों उत्तरा, शतभिषा, स्वाती इनमें तथा शुक्लपक्ष और पूर्वाह्न में कन्या का नासिका वेध करना चाहिए। यह ध्यान रखने योग्य है कि यह नासिका वेध संस्कार वैदिक नहीं है। गृह्यसूत्रों में तथा मनुस्मृति में इसका उल्लेख नहीं है।

मुण्डन का मुहूर्त्त

चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी
पर्वोनाहेविचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।
वारेलग्नांशयोश्च स्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः॥२४

तीसरे वर्ष से अथवा जन्म से विषम वर्ष में अर्थात् तीसरे, पाँचवें आदि क्रम से विषम वर्ष में, अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता (४।९।१४), प्रतिपदा और छठ, पर्व (पृ. २० श्लो. ६१) व चैत्रमास इनको छोड़कर उत्तरायण सूर्य; बुध, चन्द्र, शुक्र तथा बृहस्पतिवार में और इन ग्रहों के ही लग्न व नवांशों में जन्म की राशि व जन्म की राशि से आठवाँ लग्न छोड़कर लग्न से आठवाँ गृह ग्रह रहित हो, ज्येष्ठा नक्षत्र से युक्त और अनुराधा नक्षत्र के बिना मृदु, चर एवं लघुसंज्ञक नक्षत्र और पापग्रह लग्न से ११ वें, छठे और तीसरे ... में हो तो मुण्डन श्रेष्ठ है।

पञ्चमासाधिके मातुर्गर्भे चौलः शिशोर्न सत् ।
पञ्चवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥२५॥

जिस बालक की माता के पाँच महीनों से अधिक का गर्भ हो उस बालक का मुण्डन वर्जित है। यदि बालक पाँच वर्ष से अधिक का हो तो माता के उक्त स्थिति में रहने पर भी मुण्डन श्रेष्ठ है।

तारादौष्ट्येऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा
चौरं सत्स्यात् सौम्यमित्रस्ववर्गे ।
सौम्येभेऽब्जे शोभने दुष्टतारा
शस्ता ज्ञेया चौरयात्रादिकृत्ये ॥२६॥

अगर तारा दुष्ट हो और चन्द्रमा (अपने त्रिकोण या उच्च राशि अथवा सौम्य मित्र या स्व वर्ग का हो) शुभ हो तो तारा का दोष क्षौर, यात्रा आदि में नहीं है।

ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे केचिन्मार्गेऽपिनेष्यते ॥२७॥

अगर बालक की माता रजस्वला हो या ज्येष्ठ (जेठा) बालक हो तो ज्येष्ठमास में मुण्डन नहीं करना चाहिए। कोई आचार्य कहते हैं कि जेठे बालक का अगहन में भी मुण्डन वर्जित है।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दके
तिथौ शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक् ।
लघुश्रवोऽनिलान्त्य भादितीशतर्क्षमित्रभे
चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥२८॥

गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके पञ्चम, वर्ष में एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, छठ, पञ्चमी और तीज ये तिथियाँ, उत्तरायण सूर्य, लघुसंज्ञक नक्षत्र व श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, चित्रा और अनुराधा ये नक्षत्र अक्षरारम्भ में शुभ हैं। चरसंज्ञक लग्न (मेष, कर्क, तुला, मकर) इसमें वर्जित हैं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त

मृगात्कराच्छ्रुतित्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये
गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽह्नि षट्शरत्रिके।
शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥२६॥

मृग., आर्द्रा., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., श., अश्वि., मूल, पू. फा., पू. षा., पू. भा., पुष्य, आश्ले., रवि, गुरु, बुध, शुक्रवार ६।५।३।११।१२।१०।२ तिथियाँ और अन्य आचार्यों के मत से ध्रुवसंज्ञक, मित्रसंज्ञक और रेवती नक्षत्र में तथा लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रहों की स्थिति में विद्यारम्भ करना शुभ है।

उपनयन शब्दार्थ

गुरोश्शरणमासाद्य गायत्री मन्त्रपूर्वकम्।
प्राप्नोत्यर्हतां हिन्दूः पितृदैवतकर्मसु ॥३०॥

तत् सूचकः स्वास्थ्यरक्षार्थं काले मूत्रपुरीषयोः।
यज्ञोपवीतसंस्कारः उपनयनं निगद्यते ॥३१॥

विशिखो व्युपवीतिश्च भारती ज्ञानवर्जितः ।
कालज्ञानेन यः शून्यः न तं हिन्दुः बुधाः विदुः॥३२

प्रत्येक हिन्दूमात्र का कर्तव्य है, कि; वह सुयोग्य ब्राह्मण कुल में उत्पन्न जिस मेधावी पुरुष पर यह श्रद्धा उत्पन्न हो कि इनको गुरु बनाने पर मुझे जीवन भर इनके सद्विचारों से ऐहिक और पारलौकिक उन्नति करने का अवसर मिलेगा ऐसे समान भाषा भाषी और अपने कुलाचार को जानने वाले विद्वानको गुरू बनाकर उससे गायत्रीमन्त्र की दीक्षा लेकर पितृगणों को तृप्तिदायक श्राद्ध तर्पणादि और देवकर्म पूजा तथा दान वेदाध्ययनादि की योग्यता प्राप्त करे । इस योग्यता का सूचक एवं शौच क्रिया (मल मूत्र त्याग) के समय स्वास्थ्य रक्षा करने वाला यज्ञोपवीत संस्कार ही उपनयन संस्कार कहलाता है । चोटी, जनेऊ; भारती (संस्कृत भाषा) भारतीय पहनावा, रहन सहन तथा कालज्ञान से रहित व्यक्ति को विद्वान् लोग हिन्दू कहने में लज्जा का अनुभव करते हैं ।

व्रतबन्ध का समय

व्रतबंधस्तु विप्राणां गर्भाद्वाजन्मतोऽष्टमे ।
षष्ठेऽब्दे सप्तमे मध्यो विद्याकामस्य पंचमे ॥३३॥
षष्ठेऽब्दे चैकादशेऽब्दे वा क्षत्रियाणामुदीरितः ।
वैश्यानां द्वादशेऽब्दे स्यादष्टमे गर्भतोऽपिवा ३४॥

ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत गर्भाधान से या जन्म दिन से ८वें वर्ष में श्रेष्ठ है, छठे या ७वें वर्ष में मध्यम है । विद्या काम ५वें वर्ष में उपनयन कर सकते हैं । छठे या ११वें वर्ष में क्षत्रिय का और जन्म से या गर्भ से ८वें या १२वें वर्ष में

वैश्य वर्ण के बालकों का यज्ञोपवीतसंस्कार शास्त्रों ने कहा है। यह उपनयन का मुख्य काल है। इसके बीत जाने पर गौण काल निम्न हैं।

गौणकाल:

विप्रस्याषोडशाद्वर्षाद् वा द्वाविंशात्तु भूभुजाम्।
वैश्यानामाचतुर्विंशाद्गौणकालः उदाहृतः ॥३५॥
कालातीतेऽपि सावित्री गणहोमविधानतः।
भवत्येव द्विजातीनां प्रायश्चित्तीयते विना ॥३६॥
अयाज्याश्च बहिष्कार्या सर्वेभ्योहितचिन्तकैः।
येन जातिः समुत्कर्षं भवेत्तेज प्रभावतः ॥३७॥

१६वें वर्ष तक ब्राह्मण, २२वें वर्ष तक क्षत्रिय और २४वें वर्ष तक वैश्य के लिए यज्ञोपवीत लेने का गौणकाल कहा गया है। इसके बाद प्रायश्चित करके गणहोम विधि से यज्ञोपवीत होता है। द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) मात्र को यज्ञोपवीत अवश्य लेना चाहिए, क्योंकि; यज्ञोपवीत धारण न करने से पाप लगता है और शास्त्रकारों ने यज्ञोपवीत रहित को यज्ञ, देव-पूजा, श्राद्ध, वार्तालाप, व्यवहार, पठन-पाठन, विवाहादि संस्कारों से उसके हित चिन्तक बहिष्कृत करें, ऐसा सुझाव दिया है; जिससे हिन्दू जाति तेजस्वी बनकर समुत्कर्ष प्राप्त करे।

उपनयन मुहूर्त्त

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रये रेवती–
ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगतेभानौ च पक्षे सिते।

गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रे गुरौ भास्करे
पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमिह श्रेष्ठं द्वितीयाद्वये ॥३८॥

पूर्वाषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरायण (मकर संक्रान्ति से ६ मास), शुक्लपक्ष, वृष, मीन, कन्या, धनु और सिंह लग्न, शुक्र, सूर्य बृहस्पतिवार, पञ्चमी, दशमी, एकादशी और द्वादशी, द्वितीया, तृतीया इन तिथियों में द्विजातियों का उपनयन करना श्रेयस्कर है।

उपनयन मुहुर्त्त में आवश्यक विषय

वर्णाधिपे च शाखेशे बलोपेते क्रिया हिता।
सर्वेषां च गुरौ सूर्ये चन्द्रे च बलसंयुते ॥३९॥

वर्णाधिप (वर्ण स्वामी) और शाखापति बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा जब उपनयन लेने वाले बालक की जन्म राशि से अनुकूल हों उस समय यज्ञोपवीत ग्रहण हितकारक होता है।

वर्णों के स्वामी ग्रह

जीवशुक्रौ तु विप्रेशौ भूभुजां रविमङ्गलौ।
विशोऽब्जो ज्ञश्च शूद्राणामन्त्यजानांपतिःशनिः॥४०

बृहस्पति, शुक्र ब्राह्मणों के अधिपति, सूर्य और मङ्गल क्षत्रियों के अधिपति, चन्द्र और बुध वैश्यों के अधिपति तथा शूद्र और अन्त्यज वर्ण का शनि अधिपति होता है। अतः ये ग्रह अस्त एवं निन्दित राशियों में नहीं होने चाहिए।

वेदों के अधिपति

ऋग्वेदेशो गुरुः प्रोक्तः यजुषां भार्गवः पतिः।
सामवेदाधिपो भौमः पतिश्चाथर्वणां बुधः ॥४१॥

ऋग्वेद का स्वामी गुरु, यजुर्वेद का शुक्र, सामवेद का मंगल और अथर्ववेद का अधिपति बुध होता है।

गुरु शुद्धि

द्वितीये पञ्चमे भाग्ये सप्तमस्थे बृहस्पतिः।
विवाहे कन्यकाराशेः बटोश्च व्रतबन्धने।
शुभः स्वोच्चे स्वभे मैत्रे नेष्टस्थानेऽपिगोचरे ॥४२॥

पुरुष की राशि से उपनयन संस्कार में और कन्या की राशि से विवाह में २, ५, ७, ९वां गुरु श्रेष्ठ होता है। अगर बृहस्पति गोचर में अपनी उच्च या स्वराशि अथवा मित्रगृही हो तो नेष्टस्थान ४, ८, १२वें स्थानों में होते हुए भी शुभ होता है (ऐसा अत्यन्त आवश्यकता होने पर ही आगे कही हुई द्विगुणित, त्रिगुणित पूजा करके ही करना चाहिए। यह मेरा मत है।)

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदो गुरुः।
व्रतोद्वाहे चतुर्थाष्टद्वादशस्थो मृतिप्रदः ॥४३॥

बटु (उपनयन के योग्य बालक या ब्रह्मचारी) के उपनयन के दिन एवं कन्या की जन्मराशि से (विवाह मुहूर्त के दिन) बृहस्पति पहला, तीसरा, छठा, दशवां हो तो पूजा से शुभ होता है तथा इनकी राशि से ४था, आठवां, १२वां गुरु हो तो वह मृत्युदायक होने से विवाह और उपनयन में वर्जित है।

व्रतोद्वाहेन्दुखारिस्थो रामे जीवोऽर्चनात्सकृत्।
शुभोऽतिकाले तुर्याष्ट व्ययस्थो द्विगुणार्चनात् ॥४४

उपनयन और विवाह में पहला, तीसरा, छठा और दसवां गुरु एक पूजा से तथा ४था, ८वां और १२वां बृहस्पति द्विगु-

णित पूजा से अतिकाल (अवस्थाधिक होने) में शुभ होता है। मुहूर्त गणपति ८वें गुरु की त्रिगुणित पूजा मानता है।

शुद्धिर्नैव गुरोर्यस्य व्रतं मीनगते रवौ।
कार्यं वसन्ते नैदाघे घनान्ते विप्रपूर्वकम् ॥४५॥

जिसकी राशि से बृहस्पति की शुद्धि नहीं हो ऐसे ब्राह्मण बालक का यज्ञोपवीत वसन्त ऋतु में क्षत्रिय का ग्रीष्म में और वैश्य का शरद ऋतु में अथवा सबका मीन राशि के सूर्य में यज्ञोपवीत होना चाहिए।

कृष्णपक्षे शनौ रात्रौ प्रदोषे वा गलग्रहे।
अनध्यायेऽपराह्णे च न कुर्याद्व्रतबन्धनम् ॥४६॥

कृष्णपक्ष, शनिवार, रात्रि, प्रदोष, गलग्रह, अनध्याय अपराह्ण इतनी चीजें यज्ञोपवीत में वर्जित हैं। इनमें यज्ञोपवीत होने से पुनः यज्ञोपवीत होना चहिए अन्यथा सुफल की जगह कुफल होता है।

गलग्रहाः

कृष्णपक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादि दिनत्रयम्।
त्रयोदशी चतुष्कं च अष्टावेते गलग्रहाः ॥४७॥

कृष्णपक्ष की चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी और त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा ये ८ गलग्रह कहलाते हैं।

पुनर्वसु निषेधः

पुनर्वसौ गते चन्द्रे याजुषां व्रतबन्धनम्।
पुनः संस्कारमर्हन्ति तद्भिन्नाः संस्कृताः यदि:।४८।

पुनर्वसु नक्षत्र में यजुर्वेदियों का उपनयन होता है। अन्य वेद वालों को पुनर्वसु में यज्ञोपवीत कर लेने से पुनः संस्कार करना चाहिए।

विवाह प्रकरणम्

विवाह की आवश्यकता

विहङ्गमः पक्षद्वयेन भूषितः
उड्डीयते व्योम्नि सुखेच्छया यथा।
तथा गृहस्थस्य गृहस्य शोभा
प्रजायते यत्र द्वयोऽस्ति सौहृदः ॥४९॥

जिस प्रकार पक्षी अपने दो पंखों के मेल (सहयोग) से भूषित होने पर ही आकाश में सुखपूर्वक उड़ता है। उसी प्रकार गृहस्थ के घर की शोभा भी स्त्री पुरुष के पारस्परिक मित्र भाव से मिलकर रहने से ही होती है।

विवाह क्या है ?

स्त्री पुंसो मेलनं चात्र द्विजदेवाग्निसन्निधौ।
विवाह इति विख्यातः हीनाङ्ग परिपूर्त्तये ॥५०॥

ब्राह्मण, देवगण और अग्नि की साक्षी में स्त्री और पुरुष का यह विवाद स्नेहपूर्वक सम्मेलन स्त्री और पुरुष दोनों को मिलाकर एकरूप बनाकर गृहसञ्चालन योग्य कार्य की हीनाङ्ग पूर्ति करता है अतः इस कर्म की ही विवाह नाम से प्रसिद्धि है।

चन्द्र एवं लग्न बल की प्रधानता

तत्स्नेहं मनसोऽधीनं चन्द्रमा मनसोऽधिपः।
नूनं लग्नबली चन्द्रस्तमाद्ग्राह्यं बलं द्वयोः ॥५१॥

स्त्री पुरुष का पारस्परिक स्नेह मन के आधीन रहता है

और मन का अधिपति चन्द्रमा है तथा चन्द्रमा जन्म लग्न की परिस्थिति वश बली या निर्बली होता है इसलिए विवाह के पूर्व वर एवं कन्या के चन्द्रमा के नक्षत्रों से नक्षत्रमेलापक और उनके जन्मलग्न तथा चन्द्रराशि से ग्रहमेलापक देखने का विधान तथा दोनों की जन्मराशियों से विवाह मुहूर्त्त देखा जाता है।

वर एवं कन्या के पितादिका कर्त्तव्य

दैवज्ञं पूजयेदादौ दक्षिणा श्रीफलादिभिः।
विज्ञाप्य जन्मपत्रं हि पृच्छेदुद्वाहकं तयोः ॥५२॥

वर एवं कन्या के पितादि रिश्तेदार अच्छे पढ़े लिखे पक्ष पात रहित ज्योतिषी के स्थान पर जाकर काफी उत्तर दक्षिण। (क्योंकि, विवाह का मेलापक एवं मुहूर्त्त विचार कोई साधारण कार्य नहीं है अनन्त काल के लिए दो परिवारों का सुख दुख रूप सम्बन्ध निर्धारण करना ज्योतिषी के ही वश में है अतः कमदक्षिणा में आप ज्योतिषीजी के कितने ही मित्र क्यों न हों काम चलतू ही होगा यह सोचकर) तथा नारियल एवं अच्छे फल फूल के साथ भेंट करते हुए वर एवं कन्या की जन्मपत्रिकाएँ उनके आगे धर कर उनसे मेलापक एवं विवाह मुहूर्त्त पूछे।

प्रशस्त मेलापक लक्षण

ग्रहमेलापके योग्यः न योग्यः भिषजां मते।
धर्मशास्त्र मते हीनः नोद्वाहः तत् प्रशस्यते ॥५३॥

अगर जन्मपत्र से ग्रहमेलापक और नक्षत्रमेलापक बन रहा हो, किन्तु, वैद्यों की दृष्टि में और धर्मशास्त्रों की दृष्टि में वर एवं कन्या दूषित हों तो उनका विवाह कदापि नहीं

करना चाहिए। अर्थात् वर एवं कन्या के पिता एवं माता आदि का कर्तव्य है कि; जिस प्रकार ज्योतिषी की अदृष्ट (भाग्य, स्नेहादि) विषय में सम्मति लेते हैं, उसी प्रकार विवाह के पूर्व दोनों की दृष्ट (शारीरिक बनावट और कुल (खान दान की शुद्धि) विषयों में अच्छे वैद्य, और धर्मशास्त्री की सलाह अवश्य लेवें और इन तीनों का भी कर्त्तव्य है कि निर्भीकता पूर्वक उचित सलाह दें। इन तीनों प्रकार से मेलापक का पूर्ण विवरण मेरी 'वर-वधू परीक्षा' पुस्तक मँगाकर पढ़ें।

ग्रह मेलापक विचार

दोनों को मङ्गल देखने की रीति

दम्पत्यो रैक्य काले व्यय धनहिबुके सप्तमे लग्न रन्ध्रे-
लग्नाच्चन्द्राच्चशुक्राद्यदि खलुनिवसेत् भूमिपुत्रो द्वयोश्च
तत्साम्ये पुत्रमित्र प्रचुरधनयुति दम्पती दीर्घकालम्
तस्मिन्नेवात्र हीने भवति हि मरणमाहुराचार्यमुख्याः

वर एवं कन्या दोनों की जन्म पत्रिकाओं से ग्रह मेलापक विचार करते समय उनके जन्म लग्न, चन्द्रलग्न और शुक्र से १२, २, ४, ७, १, ८वें स्थानों पर मंगल (मंगल पापग्रहों का उपलक्षण मात्र है अतः सूर्य, शनि, राहु, केतु आदि ग्रहों को भी गिनना चाहिए) हो तो उनकी (पापग्रहों की) समता होने पर दोनों का विवाह करने से दम्पति दीर्घकाल तक दीर्घायु, पुत्र, मित्र, प्रचुर धन सम्पत्ति से युक्त रहेंगे। अगर दोनों की पत्रिकाओं में मङ्गल अथवा पापग्रहों की स्थिति वैषम्य होगी तो मृत्यु होती है। ऐसा प्रसिद्ध आचार्यों का कथन है। यह श्लोक मुझे पटम्बी (केरल) के प्रसिद्ध

ज्योतिर्विद् स्वामी रामानन्दजी जिनकी वर्त्तमान में १०० वर्ष से अधिक की आयु है, उनसे प्राप्त हुआ है। उनका कहना है कि यह श्लोक 'विवाहसार' नामक ग्रन्थ का है। अर्थ गाम्भीर्य की दृष्टि से एतद्विषयक प्राप्त श्लोकों में उत्कृष्ट है, अतः यहाँ दिया गया है। इस श्लोक में द्वितीय (धन) स्थान से भी मङ्गली देखना लिखा है। इसका समर्थन 'जातक पारिजात' में भी है।

इस श्लोक में स्त्री पुरुष दोनों की कुण्डली गत शुक्र से उक्त स्थानों में पाप ग्रह (मंगल आदि) विचारने की बात पर दैवज्ञ समुदाय एक मत नहीं है।

वर्तमान काल में काशी के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विंत्तिलक पूज्य श्री पं. यागेश्वरदत्तजी पाठक का कहना है कि शुक्र से पाप ग्रह विचार सिर्फ पुरुष के शुक्र स्थान से ही करना चाहिए और वैसी परिस्थिति में केवल मात्र शुक्र ही पाप गिना जायेगा, नकि; लग्न और चन्द्र से पाप गणना की तरह पाप ग्रहों की संख्या ली जावेगी। क्योंकि; बृहज्जातक, जातक पारिजातादि समस्त जातकग्रन्थों में पुरुष की कुण्डली से फल विचार प्रकरण में ही यह विषय पठित है, स्त्री जातक में कहीं भी इसका विचार नहीं है।

ग्रह मेलापक में वर की कुण्डली मङ्गली हो और कन्या की कुण्डली सादी (मङ्गली नहीं) हो तो विवाह हो जाता है, लेकिन; कन्या की कुण्डली मङ्गली हो और वर की कुण्डली सादी हो तो विवाह नहीं होता हैं।

कन्या की कुण्डली में मङ्गली योग या वैधव्य योग पड़ता हो और लड़का मङ्गली योग वाला न हो अर्थात् मङ्गल से

मङ्गली नहीं हो फिर भी उसकी कुण्डली में दारहा योग बनता हो तो गुणों की अधिकता (नक्षत्र मेलापक विचार से) होने पर विवाह कर देना चाहिए। वर एवं कन्या दोनों की जन्म कुण्डलियों में मङ्गल दोष समान हो तो गुणों के अल्प होने पर भी विवाह कर लेना चाहिए ऐसा मुहूर्त्त गणपति, मुहूर्त्त प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थों का मत है—

गुणाधिक्य या मंगल की समता में व्यवस्था

एवं संख्ये कुजे संस्थे विवाहो न कदाचनः।
कार्यों वा गुण बाहुल्ये कुजे वा सदृशे तयोः ॥५५॥

अर्थात् दम्पत्त्यो रैक्य काले० इस श्लोक में बताए गए १।२।४।७।८।१२ स्थानों में मङ्गलादि पाप ग्रह हों तो विवाह नहीं करें। अगर करना ही अभीष्ट हो तो गुणों की अधिकता रहने पर अथवा दोनों की कुण्डली में कुजादि की समता रहने से करें। इस श्लोक से यह ध्वनित होता है कि गुणों की अधिकता रहने पर दोनों कुण्डलियाँ समान रूप से मङ्गली न हों तो भी विवाह हो जावेगा और दोनों मङ्गली हों तो गुणों की अल्पता रहने पर भी विवाह होगा।

कन्या की कुण्डली में मङ्गलदोष या वैधव्य योग हो और लड़के की कुण्डली में दीर्घायु योग बनता हो तो दारहा योग के अभाव में भी—

वैधव्ययोग की शांति का उपाय

जन्मोत्थं च विलोक्य बाल विधवा
योगं व्विधाय व्रतम्—
स्सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया
दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युत मूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाह स्फुटं
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषो पुनर्भूभवः॥५६॥

कन्या के पिता, माता, भाई आदि अभिभावकगण उस कन्या को चुपचाप सावित्री अथवा पीपलव्रत कराके विवाह करदें या अच्छे विवाहमुहूर्त में एकान्तस्थान में विष्णुभगवान स्वर्णमूर्ति या पीपल या घड़े के साथ अथवा तीनों के साथ ही (पीपल वृक्ष के नीचे कुंभ पर मूर्ति स्थापित करके) विवाह करके फिर प्रकट में दीर्घायु वर के साथ विवाह करें तो पुनर्भू (वैधव्य) दोष नहीं होगा।

कुछ लोग सोने की मूर्ति न बनवाकर शालिग्राम शिला के साथ कन्या का विवाह करते हैं इसका निषेध इसी श्लोक की पीयूषधारा नामक मुहूर्तचिन्तामणि ग्रंथ की टीका में लिखा है।

कन्या की कुण्डली से विचारणीय स्थान

सप्तमात्पतिसौभाग्यं रन्ध्रभाद्भर्तुरायुषम्।
जन्माङ्गाच्चन्द्रलग्नाच्च आत्मनः वपुषो गुणान्॥५७

कन्या के जन्मलग्न और चन्द्रलग्न से कन्या के रूप, रङ्ग, आकृति, स्वभावादि का तथा जन्मलग्न या चन्द्रलग्न के सातवें स्थान से पति का तथा सौभाग्य का और ८ वें स्थान से पति के आयु का विचार करना चाहिए।

शुभाशुभ कहने का प्रकार

स्व स्वामि सौम्यखेटैर्वा वीक्षिताः संयुताऽथवा।
तद्भावानां शुभं वाच्यमन्यथा न शुभं वदेत्॥५८॥

अगर कन्या की कुण्डली में (यहाँ कन्या शब्द वर का भी बोधक समझिये, क्योंकि; कन्या की कुण्डली से ७ वां वर का और वर की कुण्डली से ७ वां कन्या का स्थान और ८ वां आयु का स्थान है) पूर्वश्लोक में पठित ७।८ स्थान

और जन्म लग्न एवं चन्द्रलग्न अपने स्वामी या सौम्य ग्रहों से युक्त और दृष्ट हों तो वे भाव शुभ फलदायक होते हैं।

विष कन्या योग

सूर्य भौमार्किवारेषु तिथि भद्रा शताभिधम्।
आश्लेषा कृत्तिका चेत्स्यात्तत्र जाता विषाङ्गना ॥५६

कन्या के जन्म समय में रवि, मङ्गल और शनिवार को भद्रा अर्थात् द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी इनमें से कोई भी तिथि और शतभिषा, कृत्तिका, आश्लेषा इनमें से कोई एक नक्षत्र हो तो वह कन्या विष कन्या कहलाती है।

विष कन्यादि दोष परिहार

लग्नाद्विधोर्वायदि जन्मकाले—
शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च।
द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं
वैधव्यदोषञ्च विषाङ्गनाख्यम् ॥६०॥

कन्या की जन्म या चन्द्र कुण्डली से ७वें भाव में सप्तमेश अथवा शुभग्रह हो तो उसे अनपत्य (वन्ध्या), वैधव्य और विषकन्या सम्बन्धी दोष नहीं होते हैं।

नक्षत्र मेलापक विचारः

एकस्यापि च दम्पत्त्योरज्ञातेजन्मभे यदा।
जन्मभाद्रवि शुद्ध्यादि मेलनं नामभात्तयोः ॥६१॥

वर या वधू में से किसी एक का जन्म नक्षत्र न मालूम हो तो उनका नक्षत्रमेलन दोनों के पुकारने के नाम के नक्षत्रों से करना चाहिए। किन्तु; विवाह सम्बन्धी मुहूर्त विचार करते समय जिसकी नाम राशि है उसके नाम राशि से और जिसकी जन्म राशि मालुम है उसके जन्म राशि से रवि या

गुरु एवं चन्द्रमा की शुद्धि देखनी चाहिए। आजकल लोग मेलापक की तरह मुहूर्त भी नामराशियों से देखते हैं यह बात शास्त्र के विपरीत है।

संयुक्ताक्षर होने पर राशि विचार

संयुक्ताक्षरनाम्नि वै प्रथमोच्चरितं तु यत्।
आद्याक्षरानुसारेण राश्यादीनि विचारयेत् ॥६२॥

अगर किसी के नाम का प्रथमाक्षर संयुक्त है तो पहले जिस अक्षर का उच्चारण होता है उसी अक्षर के अनुसार उसका नक्षत्र ग्रहण करके राश्यादि विचार करना चाहिए। यथा द्वारका दास में 'द्वा' में प्रथम 'द्' तत्पश्चात् 'वा' का उच्चारण होता है इसलिए 'द्' पूर्वाभाद्रपद ३ रा चरण होगा। इसी प्रकार द्रौपदी में भी यही नक्षत्र होगा, न कि रेवती। क्योंकि; बोलने से पहले द आता है दौ नहीं कहते हैं।

अनेक नाम हाने पर राशि विचार

बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चनः।
तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ॥६३॥

जिस प्राणी के अनेक नाम हों उसका मेलापकादि किस नाम से करना चाहिए? ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होने पर उसका सबसे अन्त में रखा गया प्रचलित नाम स्वर शास्त्र विदों को लेना चाहिए। कुछ लोगों का कहना है कि जिस नाम से सोता हुआ आदमी नींद से जग जाय वह नाम लेना चाहिए।

माता पिता का कर्त्तव्य

कुलञ्च शीलञ्च वयश्च रूपं
विद्यां च वित्तं च सनाथतां च।
एतान् गुणान् सप्त परीक्ष्य देया
कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ॥६४॥

धर्म सिन्धुकार ने लिखा है कि वर एवं कन्या के माता पिता का कर्त्तव्य है, कि; कुण्डली नक्षत्रादि से मेलापक के पूर्व के पहले इन ७ गुणों का विचार अच्छी प्रकार करलें। तब विवाह करें, अन्यथा कुण्डली के ३६ गुण मिलने पर भी व्यवहारिक गुणों के अभाव में वर एवं कन्या का जीवन दुःख मय हो जावेगा। पहला देखने योग्य गुण है—(१) कुल वर एवं कन्या का कुल कलङ्कित न हो फिर अगर कन्या दूषित कुलकी है तो उसका ग्रहण 'स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि' नीति वाक्य से हो सकता है, किन्तु, वर शुद्ध कुल का ही होना चाहिए। दूसरा गुण है (२) शील (स्वभाव-आचरण) वर सदाचारी और शिष्टाचारी हो। तीसरा गुण है (३) वय (अवस्था) अर्थात् अनमेल अवस्थायें न हो। चतुर्थ गुण है (४) रूप (सौन्दर्य)। वर और कन्या दोनों ही आकृति एवं रङ्ग में ठीक २ हों। मेरे विचार में रूप से गोरा काला आदि का ग्रहण न करके सौन्दर्य का बोध होना चाहिए क्योंकि भारतीय शास्त्रों ने 'भार्या रूपवती शत्रु' कहा है दूसरे, कृष्ण भगवान साँवले होते हुए भी सुन्दर थे। महादेव श्वेत हैं और कालीजी कृष्ण वर्ण। किन्तु; सौन्दर्य की दृष्टि से ये बेजोड़ हैं। अतः रूप शब्द से सौन्दर्य का ही ग्रहण करना हमारी परम्परा के अनुकूल है। पाँचवाँ गुण है (५) विद्या। वर एवं कन्या दोनों ही पठित होने चाहिए। इसमें यह ध्यान रखने योग्य है कि लड़के की उपाधि लड़की से अधिक ही हो यह कोई आवश्यक नहीं है। प्रवेशिका (हाई स्कूल) परीक्षा तक पठित होने से ही दोनों पठित हैं। इसके पश्चात् तो ज्ञानार्जन है क्योंकि; एक दूसरे के भाव ग्रहण की सामर्थ्य इतनी शिक्षा से हो जाती है। छठा गुण हैं–(६) वित्त (संपन्नता)। परिवार सम्पन्न हो। सम्पन्न होने का अर्थ रुपयों से धनी होना नहीं

है बल्कि; उनके रहन सहन के ढंग से है। अत्यन्त कृपणता और अत्यन्त खर्चीलेपन से ऋणग्रस्तता दोनों ही सम्पन्नता की दृष्टि से त्याज्य हैं। सातवाँ गुण है (७) सनाथता। इसका भाव यह है कि परिवार या वर में अकेला पन न हो 'परम स्वतंत्र न सिर पर कोऊ' वाली स्थिति रहने पर कभी २ आपसी समस्यायें उत्पन्न होने पर समझाने में बड़ी मुश्किल होती है, इस लिए जाना पहिचाना और जोर दबाव वाली जगह सम्बन्ध करना चाहिए। आठवाँ गुण है-(८) पुंस्त्व वर या कन्या में पौरूष (साहस) भी होना चाहिए। इस गुण के बिना सब गुण बेकार रहते हैं।

गुणों का विचार

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥५५॥

(१) वर्ण, (२) वश्य, (३) तारा, (४) योनि, (५) ग्रहमैत्री, (६) गणमैत्री, (७) भकूट, (८) नाड़ी ये वर्णादि आठकूट विवाह में अवश्य विचारने चाहिऐं। इनमें उत्तरोत्तर एक से एक अधिक गुणवाले होते हैं।

वर्ण विचार

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः।
शूद्रयुग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यकन्यावृषो मृगः ॥६६॥
नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा सदृशो यदि ॥६७॥
विप्रवर्णेषु या नारी शूद्रवर्णेषु यः पतिः।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥६८॥

मीन, वृश्चिक और कर्क इन राशियों का ब्राह्मणवर्ण होता है। मेष, सिंह और धन ये क्षत्रियवर्ण हैं। मिथुन, तुला, कुम्भ इनका शूद्रवर्ण है तथा कन्या, वृष, मकर ये राशियाँ वैश्यवर्ण हैं! वर्ण में श्रेष्ठ कन्या उत्तम नहीं होती है, पति से श्रेष्ठ ब्राह्मणी विशेष वर्जित है। हीनवर्ण वर की मृत्यु होती है, चाहे वह ब्रह्मा के समान दीर्घायु योग में हो। ब्राह्मणवर्ण की कन्या हो और उसका पति यदि शूद्रवर्ण हो तो वह शीघ्र ही विधवा हो जावेगी।

राशि द्वारा वर्ण-विचार-चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२। ।४	१।५।९	६।२।१०	३।७।११

वश्य विचार

मकरस्य पूर्वभागो हि मेषसिंहो धनुर्वृषः।
चतुष्पदाः कीटसंज्ञः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥६९॥
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्धो धनुषस्तथा।
द्विपदाख्याः पश्चिमार्धं मकरस्य तथा पुनः ॥७०॥
कुम्भमीनौ जलचरा राशयः परिकीर्तिताः।

मकरराशि का पूर्वार्द्ध, मेष, सिंह और धनु का दूसरा भाग अर्थात् उत्तरार्द्ध व वृष इन राशियों की चतुष्पदसंज्ञा है। कर्क राशि की कीटसंज्ञा है। वृश्चिक सर्पसंज्ञा की राशि है। तुला, मिथुन, कन्या और धनु राशि का पहला भाग इनकी द्विपदसंज्ञा होती है। मकर का दूसरा भाग, कुम्भ और मीन ये राशियां जलचर होती हैं।

वश्य फल

सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः।
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपः ॥७१॥

द्विपद राशि के सब राशियाँ वश्य होती हैं, केवल एक सिंह वश में नहीं है। द्विपद राशि के जलचर भोजन होते हैं और सर्प से द्विपद राशियों को भय होता है।

वश्य-चक्र

राशियाँ	संज्ञा
मकर का पूर्वार्द्ध' मेष, सिंह, धन का उत्तरार्द्ध, वृष	चतुष्पद
कर्क	कीट
वृश्चिक	सर्प
कन्या, तुला, मिथुन और धन का पूर्वार्द्ध	द्विपद
मकर का परार्ध, कुम्भ और मीन	जलचर

तारा-विचार

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि।
गणयेन्नवहृत् शेषे त्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥७२॥

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों अङ्क पृथक्-पृथक् रखें। उन दोनों संख्याओं में नव का भाग देने पर तीन, पाँच व सात शेष रहें तो अशुभ तारा समझें।

योनि-विचार

अश्विन्याः शतभस्याश्वो, महिषः स्वातिहस्तयोः।
पूभाधनिष्ठयोः सिंहो, भरण्यन्त्यभयोर्गजः ॥७३॥
कृत्तिकापुष्ययोर्मेषः श्रुतिपूषाढ्योः कपिः।
उषाभिजिद्द्वयोर्बभ्रू रोहिणी मृगयोरहिः ॥७४॥

ज्येष्ठानुराधयोरेणः श्वा मूलार्द्राभयोस्तथा ।
पुनराश्लेषयोरौतुराखुः पूषामघर्क्षयोः ॥७५॥
विशाखाचित्रयोर्व्याघ्रो गौरुफोत्तर भाद्रयोः ।
मैत्रीं वैरं विचार्यैवं भानां प्रोक्तास्तु योनयः ॥७६॥

अश्विनी और शतभिषा नक्षत्रों की अश्व योनि है । स्वाती और हस्त इनकी महिष योनि है । पूर्वाभाद्रपद और धनिष्ठा ये सिंहयोनि हैं । भरणी और रेवती नक्षत्रों की गज योनि है । कृत्तिका और पुष्य की मेष योनि है । श्रवण और पूर्वाष इनकी वानर योनि है । उत्तराषाढा व अभिजित् नक्षत्र नकुल योनि है । रोहिणी और मृगशिरा ये सर्प योनि के हैं । ज्येष्ठा और अनुराधा नक्षत्र मृग योनि के हैं । मूल और आर्द्रा कुत्ता (श्वान) योनि के हैं । पुनर्वसु तथा आश्लेषा नक्षत्रों की बिडाल योनि है । पूर्वाफाल्गुनी व मघा मूषक योनि हैं । विशाखा और चित्रा इनकी व्याघ्र योनि है । उत्तराफाल्गुनी तथा उत्तराभाद्र पद इनकी गौ योनि होती है । इसी प्रकार से मैत्र व वैर का विचार कर नक्षत्रों से योनि कही हैं ।

योनिवैर-ज्ञान

गोव्याघ्रं महिषाश्वं च श्वैणं मार्जारमूषकम् ।
सिंहेभ कपिमेषं च वैरं तु नकुलोरगम् ।
त्याज्यं परस्परं वैरं दम्पत्योः स्वामिभृत्ययोः॥७७॥

गौ और व्याघ्र का, महिष व अश्व का; कुत्ता से मृग का, सिंह से गज का, वानर से मेष का और नकुल से सर्प का परस्पर वैर होता है । इसलिये विवाह तथा नौकरी में ये सब त्याज्य हैं ।

योनि चक्र

योनि	नक्षत्र
गौ	उ.भा उ फा.
व्याघ्र	वि. चि.
मूषक	म., पू फा.
मार्जार	पुनर्वसु, श्ले
श्वान	मू., आर्द्रा
हरिण	ज्ये अनु.
सर्प	मृ. रो.
नकुल	उ षा अभि
वानर	श्र पू षा
मेष	पुष्य कृ.
हस्ती	भ. रे.
सिंह	ध० पूर्वा भा
महिष	स्वा ह.
अश्व	अ श.

राशीश विचार

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृषतुलाधिपः ।
कन्यामिथुनयोः सौम्यः कर्कस्याधिपतिःशशी॥७८
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः सौरीमकरकुम्भयोः ।
जीवोमीनधनुः स्वामी कथितः गणकोत्तमैः ॥७९॥

मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है । वृष और तुला का स्वामी शुक्र है । मिथुन और कन्या का स्वामी बुध है । कर्क का स्वामी चन्द्र है । सिंह का स्वामी सूर्य है । शनि मकर और कुम्भ का स्वामी है, बृहस्पति मीन और धनुराशि का स्वामी है ।

ग्रहमैत्री-विचार

मित्राणि द्यु मणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ
सौम्यश्चास्य समो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत्
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः
शत्रुःशुक्रशनी समौ च शशभृत्सूनोः सिताहस्करी८०

मित्रे चास्य रिपुः शशीगुरुशनिक्ष्माजः समा गीष्पते-
र्मित्राण्यर्ककुजेन्दवो बुधसितौ शत्रू समः सूर्यजः।
मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ
मित्रेशुक्रबुधौशनेःरविशशिक्ष्माजाद्विपोऽन्यःसमः८१

सूर्य के मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा मित्र, शुक्र और शनैश्चर शत्रु तथा बुध सम हैं। चन्द्रमा के बुध और सूर्य मित्र और शत्रु कोई नहीं है। मंगल बृहस्पति, शुक्र और शनि चन्द्रमा के सम हैं। मंगल, के चन्द्रमा, बृहस्पति और सूर्य मित्र, बुध शत्रु, शुक्र और शनि सम हैं। बुध के शुक्र और सूर्य मित्र, चन्द्रमा शत्रु, बृहस्पति, शनैश्चर और मंगल सम माने जाते हैं। बृहस्पति के सूर्य, मंगल और चन्द्रमा मित्र, बुध और शुक्र शत्रु तथा शनैश्चर सम होते हैं। शुक्र के बुध, और शनैश्चर मित्र हैं चन्द्रमा सूर्य शत्रु, मंगल और बृहस्पति सम ग्रह हैं। शनैश्चर के शुक्र, एवं बुध मित्र, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल ये शत्रु और बृहस्पति सम माना गया है।

नैसर्गिक ग्रहमैत्री-चक्रम्

सू	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रह
मं.गु. चं.	सू. बु.	चं.गु.सू.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु.श.	बु. शु.	मित्र
बु	मं. गु. शु.श.	शु. श.	मं. बृ.श.	श.	मं. बृ.	बृ.	सम
शु. श.	००	बु	चं.	बु. शु.	चं सू.	सू.चं मं.	शत्रु

गणमैत्री–विचार

रक्षोनरोमरगणाः क्रमतो मघाहि
वस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः ।
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि
मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥८२॥

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा और विशाखा इन नक्षत्रों का गण राक्षस; तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा इन नक्षत्रों का गण मनुष्य; अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती हस्त, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों का देवतागण होता है।

गणों का फल

स्वजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा ।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ॥८३॥

अपने-अपने गण में अत्युत्तम प्रीति होती है। अर्थात् वर-कन्या का जन्म-नक्षत्र एक ही गण में हो तो विवाह होने पर वर-कन्या दोनों में अगाढ़ प्रीति रहती है। वर कन्या इन दोनों में से किसी एक का जन्म-नक्षत्र देवतागण में हो और किसी दूसरे का मनुष्यगण में हो तो मध्यम प्रीति होती है। किसी एक का जन्म-नक्षत्र राक्षसगण में हो और दूसरे का मनुष्यगण में हो तो मृत्यु होती है। यदि वर-कन्या इन दोनों में किसी एक का जन्म-नक्षत्र राक्षसगण में हो और दूसरे का देवतागण में पड़ता हो तो दोनों का परस्पर वैर रहेगा। राक्षस और मनुष्यगण में नाशक बल राक्षस का ही अधिक है।

गणमैत्री-चक्रम्

म०	श्ले०	ध०	ज्ये०	मू०	श०	कृ०	चि०	वि०	राक्षस
पू भा.	पू षा.	पू. फा.	उ. भा	उ. षा.	उ फा.	रो.	भ.	आ.	मनुष्य
अनु	पुन०	मृ०	श्र०	रे०	स्वा०	ह०	अ०	पुष्य	देवता

भकूट का ज्ञान

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥८४॥

कन्या की जन्म-राशि से वर की जन्म-राशि और वर की जन्म-राशि से कन्या की जन्म राशि छठी या आठवीं हो तो षडष्टक होता है। जिसका फल दोनों की मृत्यु; नवीं या पाँचवीं हो तो नवम पंचम जिसका फल सन्तान की हानि; दूसरी या बारहवीं हो तो द्विर्द्वादश जिसका फल दोनों निर्धन होते हैं। इन योगों से अतिरिक्त योग हो तो वह योग दोनों को सुखी करने वाला होता है।

मृत्युषडष्टक-विचार

कन्यामेषे वृषे चापे कामालिघटकर्कटे ।
मृगसिंहे तुलामीने त्यजेन्मृत्युषडष्टके ॥८५॥

षडष्टक के दो भेद हैं, एक मृत्यु और दूसरा प्रीति षडष्टक। कन्या का मेष से, वृष का धन से, मिथुन का वृश्चिक से, कुम्भ का कर्क से, मकर और सिंह से तथा तुला एवं मीन से मृत्यु षडष्टक होता है।

प्रीतिषडष्टक-विचार

मेषालिमकरे युग्मे कन्याकुम्भतुले वृषे ।
सिंहमीने धने कर्के षडष्टं प्रीतिवृद्धिदम् ॥८६॥

मेष और वृश्चिक; मकर और मिथुन; कन्या तथा कुम्भ; तुला एवं वृष; सिंह, व मीन; धनु और कर्क इन राशियों को परस्पर प्रीति वृद्धि कारक प्रीति षडष्टक में जानना चाहिए।

अशुभ नवम पञ्चम योग

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संयुते।
मकरे कन्यका युक्ते न कुर्यान्नव पञ्चके ॥८७॥

कर्क और मीन, कर्क और वृश्चिक, कुम्भ और मिथुन, कन्या और मकर का नवम पञ्चम ग्राह्य नहीं है।

शुभ द्विर्द्वादश

मेषझषौ वृषमिथुनौ कर्कहरी तुलाकन्यके राशी।
अलिधनुषी घटनक्रौ शुभदौ द्विर्द्वादशावेतौ ॥८८॥

मीन और मेष, वृष और मिथुन, कर्क और सिंह, कन्या और तुला, वृश्चिक और धनु, मकर और कुम्भ इन राशियों का पारस्परिक शुभ द्विर्द्वादश योग बनता है।

नाड़ी का विचार

ज्येष्ठा रौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रांतकवसुजलभं योनिबुध्न्येच मध्या
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभंचापरास्या
दंपत्योरेकनाड्यांपरिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः

ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त और अश्विनी इन नक्षत्रों की आदि नाड़ी, होती है। पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपद इनकी मध्य नाड़ी तथा स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और रेवती इनकी अन्त्य नाड़ी होती है।

अ	आर्द्रा	पुन.	उ.फा.	ह.	ज्ये.	मू.	श.	पू. भा	आदि नाड़ी
भ.	मृ.	पुष्प	पू फा.	चि	अनु.	पू.षा	ध	उ.भा	मध्य नाड़ी
कृ.	रो.	श्ले.	म.	स्वा	वि	उ.षा	श्र.	रे	अन्त्य नाड़ी

नक्षत्र नाड़ी-चक्र

वर का निषिद्ध नक्षत्र

भामनिजन्मनक्षत्राद्‌द्वितीयं पतिजन्मभम् ।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ॥६०॥

स्त्री के जन्म नक्षत्र से पति का नक्षत्र दूसरा हो तो विवाह शुभ नहीं है इसमें भर्तृ नाश होता है, ऐसा ब्रह्म यामल में कहा गया है।

वर्ग गुण विचार

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चम वैरिणामष्टौ ॥६१॥

अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग यवर्ग , और शवर्ग ये आठ वर्ग होते हैं। इनमें गरुड़ का अवर्ग, मार्जार का कवर्ग, सिंह का चवर्ग; श्वान का टवर्ग, साँप का तवर्ग सूपक का पवर्ग, हरिण का यवर्ग और मेप का शवर्ग है। इनमें अपने से पाँचवा वर्ग वैरी होता है। जैसे अवर्ग गरुड़ का है उससे पाँचवां साँपका तवर्ग है वह शत्रु होगा इसी प्रकार

मार्जार का मूषक, सिंह के वर्ग का हरिण, श्वान का मेष, साँप का गरुड़, मूषक का बिलाव, हरिण का सिंह और मेष का श्वान (कुत्ता) वैरी होता है।

वर्गचक्र विचार

वर्ण	वर्ग	सं०	वर्ग	वर्ग	सं०
अ इ उ ए ओ १६ स्वर	गरुड़	१	त थ द ध न	सर्प	५
क ख ग घ ङ	मार्जार	२	प फ ब भ म	मूषक	६
च छ ज झ ञ	सिंह	३	य र ल व	मृग	७
ट ठ ड ढ ण	श्वान	४	श ष स ह	मेष	८

अथ युञ्जा प्रीतिः (रज्जुकूटः)

पौष्णादिकं षट्कमुशन्ति पूर्वं
आर्द्रादिकं द्वादश मध्यभागम्।
पौरन्दराद्यं नवकं भचक्रं
परञ्च भागं गणकाः विदग्धाः ॥६२॥

रे. अ. भ. कृ. रो. मृ. ये ६ नक्षत्र पूर्व भाग के हैं। आर्द्रा, पुन., पु., आश्ले. म., पू. फा, ह., चि., स्वा., वि, अनु., ये १२ नक्षत्र मध्य भाग के हैं। ज्ये., मू., पू. षा, उ. षा. श्र., ध., शत.; पू. भा., उ. भा. ये पर भाग के नक्षत्र हैं।

युञ्जा फलम्

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठः मध्यभागे च कन्यका ।
परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिः महीयसी ॥६३॥

यदि पति का नक्षत्र पूर्वभाग में पड़ता हो तो श्रेष्ठ है। कन्या का नक्षत्र मध्यभाग में श्रेष्ठ होता है। परभाग में दोनों के ही नक्षत्र प्रीतिसूचक होते हैं।

दुष्टभकूट का परिहार

प्रोक्ते दुष्टभकूके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभोऽथो-
राशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि।
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखिते नाड्यर्क्षशुद्धौतथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशिताभावे निरुक्तो बुधैः ६४

पहले जो दुष्टभकूट कहा गया है अब उसका परिहार कहते हैं जो इस प्रकार है—यदि वर-कन्या की राशियों का स्वामी एक ही हो तो विवाह शुभ होता है। वर और कन्या दोनों के राशीशों की मैत्री हो तो भी भकूट शुभ माना जाता है। यदि नाड़िशुद्धि और नक्षत्रशुद्धि हो और उक्त राशीश और अंशों के पति की परस्पर में मैत्री बनती हो, बलवान् भी हों, नाड़ीशुद्धि और ताराशुद्धि हो एवं राशिवश्यता भी उचित हो तो राशियों या ग्रहों के शत्रुभाव या समभाव का दोष नहीं होता है। यहाँ षडष्टकादि दुष्ट भकूटों का ग्रहमैत्री एक परिहार और एकाधिपत्य दूसरा परिहार तथा ग्रहों (राशीशों) में वैर होने पर नवांशपतियों की मैत्री तीसरा परिहार और तारा-शुद्धि चौथा परिहार एवं राशिवश्यत्व पाँचवाँ परिहार बताया गया है। इन सब परिहारों में नाडी शुद्धि अवश्य होनी चाहिये। यह मुहूर्त चिन्तामणि पीयूषधारा टीकाकार का मत है।

गणदोष का-परिहार

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ-
द्वन्द्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः ।
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं
खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥९५॥

दोनों वर एवं कन्या की राशियों के स्वामियों में और दोनों राशियों के नवांश के स्वामियों में मित्रता हो तो गणों का दोष नहीं होता है। यदि शुभ भकूट हो तो वर कन्या के जन्मराशि के स्वामियों की शत्रुता का नाश होता है और यदि दोनों के जन्मराशीओं की परस्पर मित्रता हो तो दुष्ट भकूट का नाश होता है।

एक नाडो में शुभ नक्षत्र (ज्योतिनिबन्धे)

रौहिण्याद्री मृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवण पौष्णभम् ।
अहिर्बुन्ध्यर्क्षमेतेषां नाडीवेधो न दोषदः ॥९६॥

अर्थात् रोहिणी, आर्द्रा, मृग. विशाखा, पुष्य. श्र. रे. उ. भा. इन नक्षत्रों में वर कन्या के नक्षत्र हों तो नाड़ीदोष नहीं होता है। मुहूर्तगणपति मृगशिरा की जगह मघा मानता है।

नाडीदोष और गणदोष का परिहार

राश्यैके चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यात्-
नक्षत्रैक्येराशि युग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानां च दोषो
नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥९७॥

अगर वर कन्या की राशि एक ही हो और जन्म-नक्षत्र भिन्न हों अथवा दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि ही भिन्न

हो तो नाड़ीदोष और गण का दोष नहीं होता है। जो दोनों का नक्षत्र एक हो परन्तु चरण का भेद हो तो भी विवाह शुभ होता है।

वर्ण आदि के ४ दोषों का परिहार

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत् ॥९८॥

जब राशियों में अथवा राशिस्वामियों में ग्रह मैत्री हो तो गण दोष, योनिदोष, वर्णदोष और षडष्टक ये चारों दोष नहीं करते हैं।

पुनः परिहार

न वर्गवर्णौ न गणो न योनि-
द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपञ्चमे वा
मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः ॥९९॥

वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, तारा और नव पञ्चक आदि सब दोष से दूषित होने पर भी यदि केवल ग्रहमैत्री मात्र ही बनती हो तो विवाह शुभदायक होता है।

नव-पञ्चक-परिहार

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्यायाः नवमे वरः।
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ॥१००॥

वर की राशि से पञ्चम राशि में कन्या की राशि हो और कन्या की राशि से नवीं राशि वर की हो तो नवपञ्चक शुभ होता है। यह पुत्र-पौत्र का सुख देनेवाला होता है।

इसका अपवाद—(ज्योतिषतत्वे)

पुंसो गृहात् सुतगृहे सुतहा च कन्या
धर्मे स्थिता सुतवती पतिवल्लभा च ।
द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या
रिष्फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च ॥१०१॥

नवम पंचम विचार के समय वर की राशि से ५ वीं राशि कन्या की हो तो पुत्र नाशिनी ९ वीं हो तो पुत्रवती तथा पति वल्लभा और द्विर्द्वादश योग में पति से दूसरी राशि कन्या की हो तो धनहा और १२ वीं राशि हो तो धनवती और पति वल्लभा होगी ।

षडष्टक में विचार

यदिकन्याष्टमे भर्ता भर्तुः षष्ठे च कन्यका ।
षडष्टके विजानीयात् गर्हितं त्रिदशैरपि ॥१०२॥

कन्या की राशि से ८ वीं राशि वर की और वर की राशि से ६ ठी राशि कन्या की हो तो निन्दित षडष्टक होता है ।

नाडी आदि के दोष पर दान का विधान

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम् ।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना ॥१०३॥
हिरण्यमयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके ।
गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वदोषापहारकम् ॥१०४॥

नाड़ी-दोष में मृत्युञ्जय का जप करना चाहिए और ब्राह्मण को सुवर्ण (सोना) देना पड़ता है । वर्णादिकूट में अर्थात् वर्णादि दोष में सुवर्ण (सोना) दान देवे और गो-

दान, अन्न-दान, वस्त्र-दान और सुवर्ण के दान करने से सब प्रकार के दोष नष्ट होते हैं।

मुहूर्त कल्पद्रुम के गुणों की गणना

वर्ण के गुण

साम्ये च वर्णोत्तमजे वरे भू-
र्गुणोऽथ वश्याशनके गुणार्धम्।
एकोऽरिवश्ये द्वितयं सखित्वे
स्याद्वैरभक्षे गुणहानिरेव ॥१०५॥

वर एवं कन्या दोनों का वर्ण एक ही हो अथवा वर का वर्ण उत्तम हो तो एक गुण होता है। वश्य विचार में एक वश्य अगर भक्षक हो तो आधा गुण होता है। दोनों में एक शत्रु वश्य हो तो एक गुण होता है और दोनों मित्र वश्य हों या सम वश्य हों तो वश्य के दो गुणग्रहण होते हैं। दोनों हो वैरी हों तो शून्य गुण वश्य के होंगे।

तारा के गुण

ताराशुभत्वे वरकन्ययोस्तु
त्रयस्तदर्धं सदसद्धसत्वे।

अगर वर तथा कन्या दोनों की तारा शुभ हों तो तीन गुण होते हैं। एक की तारा शुभ और एक की अशुभ हो तो डेढ़ गुण होता है। अन्यथा शून्य गुण जानना चाहिए।

योनि के गुण

महारि वैरे सममित्रताया
खेन्दुत्रिकाम्बुप्रतिमा गुणाः स्युः ॥१०६॥

अगर महावैर योनि के वर कन्या के नक्षत्र हो तो शून्य गुण तथा वैर में एक गुण होता है। सम योनि में तीन गुण होते हैं और मित्रयोनि में पूरे चार गुण होंगे।

ग्रहमैत्री के गुण

वैरेऽरिसाम्येऽरि सुहृत्त्वकेऽपि
द्वयोश्च साम्ये सममित्रतायाम् ।
एकाधिपत्योभयमित्रतायां
खैकद्विवह्न्यम्बुशराः गुणाः स्युः ॥१०७॥

दोनों वर एवं कन्या के राशि पतियों में परस्पर शत्रुता हो तो शून्य गुण होता है। अगर एक शत्रु हो और एक सम हो तो एक गुण होता है। एक शत्रु तथा एक मित्र भाव वाली राशी का स्वामी हो तो दो गुण होते हैं। दोनों ही समग्रह हों तो उनके तीन गुण होते हैं। अगर एक सम हो और दूसरी मित्र हो तो उनके चार गुण होते हैं। वर एवं कन्या दोनों की राशियों का स्वामी एक ही हो अथवा दोनों राशियों के स्वामियों में आपसी मित्रता हो तो पाँच गुण होंगे।

गण-मैत्री के गुण

साम्ये च षट् ना मनुजश्च देवी
पत्नी शराः स्युः विपरीतके षट् ।
दैत्यङ्गना राक्षस नात्र चैको
गुणोऽन्यथा खं त्वथ दुष्टकूटे ॥१०८॥

अगर दोनों वर-कन्या की राशियों का समगण अर्थात् एक ही गुण हो तो ६ गुण होते हैं। यदि वर मनुष्यगण का हो, और कन्या देवतागण की हो तो पाँच गुण होते हैं। इसके विपरीत वर देवतागण और कन्या मनुष्यगण हो तो छः गुण होंगे। इसी प्रकार कन्या देवता और वर राक्षस हो तो एक गुण होगा। यदि अन्यथा अर्थात् विपरीत हो मनुष्य-राक्षसगण हो तो शून्य गुण होगा। इस श्लोक के अन्तिम पद का पाठान्तर 'गुणोऽन्यथा द्वावथ दुष्टकूटे' भी मिलता है।

भकूट के गुण

चेद्योनिमैत्री रमणी सुदूरं
वेदा न चेत्खं त्वनयो यदैकम् ।
भूऋ॑क्ष पादैक्य अभाव इष्टे
चेत् कूटके भानि नृदूरके षट् ॥१०९॥

अगर वर और कन्या की राशियों में षडष्टकादि दुष्टभकूट राशियाँ हों तथा पुरुष की राशि से स्त्री की राशि दूर पड़ती हो और दोनों नक्षत्रों में योनि मैत्री हो अर्थात् योनिगुण में मित्रता मिलती हो तो उनके चार गुण होते हैं। इनके विपरीत हो तो शून्य गुण होगा। अगर वर और कन्या का का नक्षत्र एक ही हो किन्तु चरणभेद हो तो एक गुण होता है नक्षत्र व चरण में उक्त अभाव इष्ट हों तो भी एक गुण होता है। अगर दुष्टकूट हो, और नृदूरता हो तो छः गुण होते हैं। वर एवं कन्या दोनों में परस्पर योनि दोष में एकही पादजन्य हो तो महावैर सूचक है अन्यथा नहीं। (मू. चि.)

नाडी के गुण

भिन्नर्क्षराश्येक इषून्मिताः स्यु-
स्त्वन्यत्र ससाथ च नाडिभेदे ।
गजागुणैक्यं धृतितोऽधिकं चेत्-
स्त्रीकान्तयोः सौख्यकरं प्रदिष्टम् ॥११०॥

नक्षत्र भिन्न हो राशि एक ही हो तो पांच गुण होते हैं। इससे विपरीत हो तो सात गुण होते हैं। दोनों वर और कन्या की नाड़ी भिन्न-भिन्न हों तो आठ गुण होते हैं और एक नाड़ी हो तो शून्य गुण होता है। अगर इन सब गुणों का जोड़ अठारह से अधिक हो तो विवाह शुभ अर्थात् स्त्री पुरुष को सुखदायक होता है।

वर्ण-दोष का परिहार

हीनवर्णो यदा राशी राशीशो वर्णमुत्तमम् ।
तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तस्य राशिं न चिन्तयेत्॥१॥

वर की राशि का वर्ण कन्या की राशि के वर्ण से हीन हो किन्तु वर की राशि के स्वामी का वर्ण (पृ. १५१ श्लो, ४०) उत्तम हो तो विवाह शुभ है इसमें राशि का विचार न कर, स्वामी का ग्रहण करें ।

राशि, स्वामी और वर्ण जानने का चक्र

१ । ८	२ । ७	३ । ६	९ । १२	१० । ११	४	५	राशि
मंगल.	शुक्र	बु.	बृ.	श.	चं	सू.	स्वामी
क्षत्रिय	ब्राह्मण	शूद्र	ब्राह्मण	अन्त्यज	वैश्य	क्षत्रिय	वर्ण

गुण बोधक चक्र

(१) वर्णगुणचक्र

		वर के गुण			
		ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
कन्या के गुण	ब्रा.	१	०	०	०
	क्ष.	१	१	०	०
	वै.	१	१	१	०
	शू.	१	१	१	१

(१) मार्त्तण्ड मतेन वश्यगुणचक्र

वर

वधू	चतु.	मान	ज, च	व. च	कीट
चतु.	२	॥	१	०	२
मान	॥	२	॥	०	०
च, ज,	१	०	२	२	२
व. च.	०	०	२	२	०
कीट	१	०	१	०	२

(३) तारागुणचक्र

वर

वधू — तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

(४) योनिगुणचक्र

वर

वधू

नाम	अ.	ग.	मे.	स.	श्व.	मा.	मू.	गौ.	म.	व्या.	ह.	वा.	न.	सिं.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	३	३	३	०	१	२	१	२	२	१	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	१	१	३	२	२	२	२	४

(५) ग्रहमैत्री चक्र

वर

वधू	र.	चं	मं.	बु.	गु	शु.	श.
रवि	५	५	५	४	५	०	०
चंद्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	२	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	।·	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
श॰	०	॥	॥	४	३	५	५

(६) गणगुणचक्र

वर

वधू	[illegible]	[illegible]य	देव
देव	१	५	६
मनुष्य	०	६	६
राक्षस	६	०	०

(७) राशिकूटगुणचक्र

वर

वधू राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृषभ	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	७	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

(८) नाडीगुण चक्र

वर के गुण

अन्त्य	मध्य	आद्य		
८	८	०	आद्य	वधू के गुण
८	०	८	मध्य	
०	८	८	अन्त्य	

गुणसंख्या विचार

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमाविंशतिस्तथा ।
श्रेष्ठंत्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमः ॥११२॥

वर एवं कन्या के जन्म या नाम नक्षत्रों से गुण मेलापक करने पर गुणों की संख्या १६ तक आवे तो मेलापक निन्दित है तथा २० गुणों तक मध्यम है। इसके बाद ३० गुणों तक श्रेष्ठ है। तदुपरान्त सर्वोत्तम मेलापक बनता है। कुछ लोगों के मत से कम से कम १८ गुण मिलने पर ही विवाह उत्तम होता है जैसा कि पूर्व श्लोक सं० ११८ में आया है। नक्षत्र मेलापक करते समय गुणों की संख्या कभी भी एक नहीं हो सकती है क्योंकि, वश्य विचार में बड़ा बखेड़ा है—(१) वश्य और भक्ष्य का निर्णय, (२) फिर शूद्र वर्ण के लिये नृप भक्ष्य है ऐसा विचार और (३) वधू और वर के लिये वश्य में अलग-अलग दृष्टिकोण रखना होगा आदि अनेक बातें ऐसी हैं जिनके कारण गुणों की संख्या का सूक्ष्म निर्धारण कठिन है। आज-कल लोग पञ्चाङ्गों की सारणियों से गुणैक्य चक्र से गुण मिलाते हैं। यह एक भूल है जिसे त्यागना चाहिये। इसमें प्रेस की गड़बड़ी से बड़ी २ त्रुटियाँ हो जाती है।

विचारणीय अनुरोध—

नक्षत्र मेलापक में यह भी देखा गया है कि लोग २०।२५ गुण मिलते हुए भी कन्या राक्षस गण की है या 'दोनों की नाड़ी एक है' आदि बातें कहकर 'कुण्डलियाँ नहीं मिलती हैं' ऐसा निर्णय दे बैठते हैं। उनसे मेरा निवेदन है कि पूरा मेलापक ३६ गुण का होता है और ३६ में ३६ गुण कहीं भी नहीं बनते हैं, कहीं न कहीं तो कसर रह ही जायगी। जिस प्रकार परीक्षा में उत्तीर्णता के लिए पूर्णाङ्क में से विशिष्ट अङ्क निर्धारित रहते हैं, उसी प्रकार मेलापक में भी सफलता के लिए पूर्वोक्त (गुणैर्षोडशभिर्निन्द्यः०) श्लोक में अङ्क निर्धारित हैं जिन्हें प्राप्त कर लेने पर उत्तीर्ण बालक की तरह मेलापक भी सफल समझना चाहिए। ऐसा कहीं भी नहीं होता है कि इस बालक ने सब प्रश्न तो कर दिये लेकिन अमुक प्रश्न नहीं किया इसलिए अनुत्तीर्ण है। फिर ज्योतिष शास्त्र के फलित भाग में स्थान-स्थान पर कहा गया है—

असंख्याताः स्मृताः दोषाः तारका सप्तविंशतिः।
दोषैस्तु विततं सर्वं दुर्लभं दोषवर्जितम् ॥११३॥
दोषान् सर्वान् परित्यक्तुं न शक्यं परिवत्सरैः।
तस्मात् परीक्ष्यकुर्वीत स्वल्पदोषे गुणाधिके ॥११४॥

(काल प्रकाशिका)

दोष असंख्य हैं और नक्षत्र सत्ताईस ही हैं। सब कुछ दोषों से ही तो परिपूर्ण है दोष रहितता दुर्लभ है, अनेक वर्षों में भी दोष रहितता प्राप्त होना अशक्य है। इसलिए गुणों की अधिकता और स्वल्प दोष युक्तता को ग्रहण करना चाहिए।

अतः नक्षत्र मेलापक में आठों प्रकार के वर्णादि विचार में जब अधिकांश मिल रहे हों और गुणों की संख्या भी

करने योग्य हो तो मेलापक मिलता है। इसे स्पष्ट स्वीकार कर लेना चाहिए।

पहले नक्षत्र मेलापक में गुणों का संख्या विचार नहीं था और आठकूटों के स्थान पर दस कूट मिलाये जाते थे। ब्राह्मणों के दस कूट, क्षत्रियों के आठ कूट, वैश्यों के छः कूट और शूद्रों के चार कूट मिलाए जाते थे यह बात बृहद्वैवज्ञ रञ्जन ग्रन्थ के पृ० २०१ पर लिखी है। मुहूर्त्त कल्पद्रुम, मुहूर्त मार्त्तण्ड, मुहूर्त्त गण-पति आदि ग्रन्थों में इस विषय पर एक वाक्यता नहीं है।

निषद्ध मेलापक में शास्त्रविहित दान और शान्ति करके विवाह कर लेना शौनकादि ऋषि सम्मत है। (बृहद्वैवज्ञरंजन)

इनमें मेलापक आवश्यक नहीं

जो कन्या अचानक सम्पर्क में आ गयी हो। जिसे सन्धि में प्राप्त किया गया हो। जिसे खरीदा गया हो या जो स्नेह पूर्वक उपहार में अर्पित हो। जो स्वयं ही आ गयी हो। जिससे आसुर, पैशाच, राक्षस, गान्धर्व विधि से विवाह करना हो। जो अधिक अङ्गवाली या अङ्गहीन हो। काफी बड़ी अवस्था की हो। भाग्य हीना हो या विधवा हो।

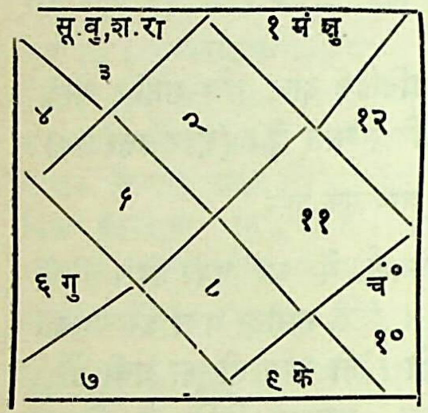
जहाँ एक जाति की अनेक कन्यायें हों और उनसे विवाह करना हो तो सिर्फ बड़ी कन्या के साथ मेलापक विचार करके सभी से विना मेलापक देखे ही विवाह होगा।

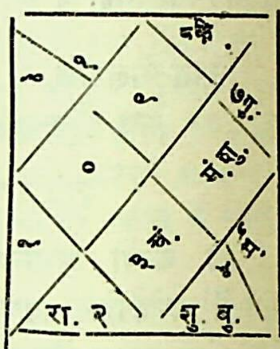
इन आसुरादि विवाह और पूर्वोक्त गुणवती कन्याओं के साथ विवाह करने में गुरु सूर्य चन्द्रादि शुद्धि भी विवाह मुहूर्त्त में नहीं देखी जाती है। (बृहद्वैवरंजन)

मेलापक का तरीका

ग्रह मेलापक

वर	कन्या
संवत् २००२ आषाढ कृष्ण तृयीया गुरुवासरे इष्टम् ५६।३३ धनिष्ठा भस्य प्रथम चरणे जन्म	संवत् २००३ भाद्रकृष्ण १० तिथौ गुरौवासरे इष्टम् २०।५० आर्द्राभस्य प्रथम चरणे जन्म ॥
स्पष्टलग्नम् १।२६ सूर्यः २।१३	लग्नम् ८।१
जन्माङ्गम्	सूर्यः ४।५





वर	कन्या
वरस्य जन्माङ्गात् क्रूरग्रह संख्या (२ स्थाने सू श. रा ८ स्थाने केतु १२ स्थाने भौमः)=५	कन्या। जन्माङ्गात् क्रूरग्रह संख्या (८ स्थाने श. १२ स्थाने केतुः)=२
चन्द्रात् क्रूर ग्रह संख्या (४ स्थाने भौ. १२ स्थाने केतुः) = २	चन्द्रात् क्रूर संख्या (२ स्थाने श. ४ स्थाने भौमः १२ स्थाने रा.)=३
शुक्रात् (१ स्थाने भौमः) = १	शुक्रात् क्रूर संख्या (१स्थाने भौमः १२स्थाने सूर्य.)=२
मतान्तरेण पापः शुक्रः	सम्पूर्ण ग्रहाः=७
सम्पूर्ण ग्रहाः=८	अन्य मतेन शुक्ररहितत्वात् सम्पूर्ण ग्रहा;=५

नक्षत्र मेलापक

वर	गुणाः	कन्या
धनिष्ठा १ चरण		आर्द्रा १ चरण
वर्ण—वैश्य	१	वर्ण—शूद्र
वश्य—जलचर	०	वश्य-द्विपद
तारा—२	३	तारा-९
योनि—सिंह	१	योनि-श्वान
ग्रहमैत्री—शनि (राशीश)	४	ग्रहमैत्री—बुध (राशीश)
गण—राक्षस	०	गण-मनुष्य
भकूट—मकर (राशि)	०	भकूट-मिथुन (राशि)
नाड़ी—मध्य	८	नाड़ी-आदि

संपूर्ण १७ गुणाः

चूंकि; ग्रह मेलापक में इस ग्रन्थ गत प्रकरण के अनुसार वर की कुण्डली में क्रूर ग्रहों की संख्या कन्या की राशि एवं लग्न से अधिक है अतः मेलापक उत्तम बनता है।

नक्षत्र मेलापक में १७ गुण आते हैं अतः नक्षत्र मेलापक मध्यम कोटिका बनता है।

आजकल पण्डित लोग

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
कन्याभर्तुःविनाशाय भर्त्ताकन्याविनाशकृत्॥११५॥

इस श्लोक से कुण्डली मिलाते हैं। इस श्लोक का भाव यह है कि लग्न (१ स्थान), व्यय (१२ स्थान), पाताल (४था स्थान), जामित्र (७वां स्थान), अष्टम (८वां स्थान)

इनमें मंगल (पाप ग्रह) बैठा हो तो वर की कुण्डली में पत्नी नाशक और कन्या की कुण्डली में वैधव्य योग होता है। इस श्लोक में धन स्थान का ग्रहण नहीं है। अतः लड़के की कुण्डली में धन स्थान के ३ ग्रहों को छोड़ देने से कुल ५ ग्रह मङ्गली योगकारक रहेंगे। कन्या की कुण्डली में भी शुक्र से पापग्रहों की संख्या छोड़ देने पर (क्योंकि; कन्या कुण्डली में शुक्र विचार की प्रक्रिया काशी में प्रचलित नहीं है।) कुल ५ ग्रह रहेंगे : अतः—

भौमेन सदृशो भौमः पापो वा तादृशो भवेत्।
विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः ॥११६॥

इस श्लोक के अनुसार वर की कुण्डली के समान ही कन्या की कुण्डली में भी पूर्वोक्त (१, ४, ७, ८, १२) स्थानों में मङ्गल या पाप ग्रह होने से दोनों का परस्पर विवाह करना शुभ रहेगा।

नक्षत्र मेलापक में आजकल जैसे नक्षत्र मेलापक प्रचलित है उससे तो १७ गुण ही आते हैं। लेकिन सूक्ष्म विचार से गुणों की संख्या बढ़ जावेगी। यथा—वश्य विचार में पुरुष का जलचर वश्य मकर है। द्विपद राशि का भक्ष्य जलचर होता है, यह एक सामान्य धारणा है. किन्तु; मकर नामक जलचर का भक्ष्य मनुष्य होता है। यह लोक विदित है। अतः यहाँ वर का (मकर राशि) भक्ष्य कन्या) मिथुन) होने से वश्य 'भक्ष्ये गुणार्धकम्' इस नियम से आधा गुण तथा (मैत्र्यां राशिस्वामि०) (पृ. १७५ श्लो. ८१) इस वचन के अनुसार ग्रह मैत्री होने से भकूट और गण का दोष का भी परिहार हो गया अतः 'अपदोषतैव विगुणस्य गुणः' अर्थात् दोषी का दोष मुक्त

होना ही गुण है। इस न्याय से ६+७=१३ गुण कुल मिलाकर १३॥ गुण और बढ़ने से ३०॥ गुण का परमोत्तम मेलापक होगा।

कन्या वरण मुहूर्त्त

विश्व स्वाती वैष्णव पूर्वात्रय मैत्रे-
र्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचित ऋक्षैः।
वस्त्रालंकारादि समेतैः फल पुष्पैः
सन्तोष्यादौ स्यादनु कन्या वरणं हि ॥११७॥

उत्तराषाढ़ा, स्वा०, श्र०, तीनों पूर्वा; अनु; ध०, कृ० अथवा विवाह योग्य अन्य नक्षत्रों (मूल, मृगशिरा, रेवती, हस्त, तीनों उत्तरा, मघा रोहिणी) के कुल के वृद्धजन ('जातीय' पंचादि) व ब्राह्मण (पुरोहित, ज्योतिषी आदि) सहित वर के अभिभावक कन्या के घर जाकर उसको सुन्दर बहु मूल्य वस्त्र और आभूषण, पुष्पमाला, फल, मेवा, मिष्ठान्न, दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करें और तत्पश्चात् कन्या के अभिभावक को कन्या वरण की स्वीकृति देकर वर वरण के लिये आने को कहें। कश्यपऋषि के मतानुसार इसमें मंगलवार रिक्ता, अमावस्या अष्टमी और नवमी तिथि छोड़नी चाहिये।

वर वरण मुहूर्त्त

धरणिदेवोऽथवा कन्यका सोदरः
शुभ दिने गीत वाद्यादिभिः संयुतः।
वर वृतिं वस्त्र यज्ञोपवीतादिना
ध्रुवसुतैर्वह्नि पूर्वात्रयैराचरेत् ॥११८॥

कोई ब्राह्मण पुरोहितादि अथवा कन्या का भाई शुभ दिन में बाजे गाजे के साथ वस्त्र यज्ञोपवीत आदि से वर

वरण करे। वर वरण मुहूर्त में तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका और तीनों पूर्वा (इसमें भी विवाहोक्त नक्षत्र ग्रहण हैं) शुभ दिन शुभ तिथि में करें।

विवाहाङ्ग कृत्य मुहूर्त्त

विवाहकृत्यं सकलं विवाहभे
विलोकयेन्नैव बलं हिमद्युतेः ॥
नवत्रिषष्ठेऽह्नि विवाह पूर्वतो
न वर्णको मंडपतैलमंगलम् ॥११९॥

विवाह से सम्बन्धित गृहमार्जन, सामग्री संचयन मण्डपोत्थापन हरिद्रालेपन, तैललेपनादि जितने भी माङ्गलिक कार्य हैं, उनमें वर या कन्या की राशि से चन्द्र शुद्धि का विचार किये विना ही केवल मात्र विवाह नक्षत्र जिस दिन मिलता हो उस दिन कर लेना चाहिये। विवाह दिन से ३ रे, ६ ठे और नवें दिन पूर्व नहीं होना चाहिये।

विवाहाङ्ग कृत्यों में त्याज्य नक्षत्र

विशाखां भरणीं चित्रां ज्येष्ठाख्यामश्विनींशतम्।
आर्द्राचतुष्टयं हित्वा कुर्याद्वैवाहिक विधिम्॥१२०॥

विशाखा, भरणी, चित्रा, ज्येष्ठा, अश्विनी, शतभिषा, आर्द्रा; पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, इन नक्षत्रों को छोड़कर अन्य नक्षत्रों में वैवाहिक कार्य करने चाहियें।

गुरु सूर्य-चन्द्र बल विचार

गुरौर्विशुद्धौ खलु कन्यकायः।
पाणिग्रहः सूर्यबले वरस्य ॥
चान्द्रे बले सत्यनयोस्तु गौडाः
सूर्ये तथार्यें बलवत्यवाक्स्था १२१॥

कन्या की राशि से गुरू का बल [पृ०१५२] देखकर तथा वर की राशि से सूर्य का बल विचार करके तथा वर और कन्या दोनों की राशियों से उत्तम चन्द्रबल देखकर विवाह करना चाहिए यह गौड़ मत (उत्तर भारतीयों का मत) है तथा केवल सूर्य और बृहस्पति के बल को ही देखना चाहिए ऐसा दाक्षिणात्यों (दक्षिणी भारतवासियों) का मत है।

यह मत आजकल अमान्य है। उत्तर और दक्षिण सर्वत्र गुरु सूर्य और चन्द्रबल का विचार करते हैं।

वर का सूर्यबल

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥१२२॥

वर की राशि से ११, वां, ३ रा, ६ ठा, १० वां सूर्य विवाह में श्रेष्ठ माना जाता है।

पूज्य सूर्य

जन्मन्यथ द्वितीये च पंचमे सप्तमेऽपि वा ॥
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीड़नम् ॥१२३॥

वर की राशि से जन्म (पहला), दूसरा, ५ वां ७ वां, ९ वां सूर्य हो तो वह पूज्य होता है।

निन्दित सूर्य

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशस्थे दिवाकरे।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥१२४॥

वर की राशि से ४, ८, १२ वें स्थानों की राशि का सूर्य विवाह मास में हो तो वर की मृत्यु का सूचक होता है।

मृत्यु से तात्पर्य अपमान, शोक, भय, घृणा, निन्दा, धन नाश, चिन्ता, दुर्घटना आदि से है।

अत्यावश्यकता में

स्वोच्चे मैत्रे विरुद्धोऽपि शस्यते दिननायकः।
द्विरर्च्यो द्वादशे तुर्ये चाष्टमे त्रिगुणार्चनात्॥१२५॥

अगर सूर्य वर की राशि से ४, ८, १२ वें स्थान में अपनी उच्च या मित्र राशि में हो तो ४ था एवं १२ वां सूर्य द्विगुणित पूजा से अर्थात् जितने वजन की सूर्य मूर्ति पूजा में विहित है, उससे दुगुने वजन की स्वर्ण मूर्ति और जितना जप और दान विहित है, उससे दुगुना जप व दान कराने के पश्चात् शुभ होता है तथा ८ वां सूर्य त्रिगुणित अर्थात् तीन गुनी पूजा से शुभ होता है।

श्रेष्ठ चन्द्रबल

आद्यः तृतीय षट् सप्त दशैकादश द्वादशे।
चन्द्रः फलं शुभं दद्यात् विवाहे वरकन्ययोः ॥१२६

वर और कन्या की राशि से पहला, तीसरा, ६ ठा, ७वां, १० वां, ११ वां, १२ वां चन्द्रमा विवाह मुहूर्त के समय हो तो दोनों शुक्ल और कृष्ण पक्षों में शुभ फलदायक है।

अशुभ चन्द्र

द्वितीये पञ्चमे नवमे पूजया कृष्ण पक्षके।
शुक्लपक्षे शुभस्तत्र निन्द्यस्तुर्याष्टमे स्थितः ॥१२७॥

कृष्ण पक्ष में २ रा, ५ वां नौवां चन्द्रमा पूजा करने से शुभ तथा शुक्ल पक्ष में बिना पूजा किये ही शुभ होता है तथा ४ था और ८ वां चन्द्रमा शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों में ही निन्दित होता है।

आजकल लोग 'आद्यश्चन्द्र श्रियं कुर्यात् मनस्तोषं द्वितीयके' इत्यादि श्लोकों से वैवाहिक चन्द्रबल देखते हैं वह प्रकरण केवल गोचर फल सूचक है, न कि; विवाह में चन्द्रबल सूचक अतः विवाह सम्बन्धी चन्द्रबल विचार में वह त्याज्य है।

रजस्वला होने के बाद

रजस्वला यदा कन्या षोडशी वा रजो विना।
तस्यातारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः १२८॥

अगर सोलह वर्ष के पूर्व कन्या रजस्वला हो गयी हो अथवा १६ वर्ष के ऊपर रजस्वला न हो तो भी उसका विवाह गुरु शुद्धि न रहने पर भी केवल तारा, चन्द्र और लग्नबल देखकर करना चाहिए।

स्त्रियां दो प्रकार की रजोवती होती हैं, एक बाह्यस्त्रवा जिनको मासिक धर्म में रक्त बाहर निकलता है और दूसरी अन्तः स्रवा अर्थात् जिनका रक्त बाहर दिखलाई नहीं पड़ता है कई बार ठण्डे प्रदेशों में अथवा सादगीपूर्ण रहन-सहन वाले परिवारों में सोलह के बाद भी रजोदर्शन होता है, लेकिन; सोलह वर्ष में नारी उपभोग्य हो जाती है। अतः १६ वें वर्ष से (गर्भ धारण क्षमता काल के पश्चात्) कन्या की राशि से गुरु शुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

वर एवं कन्या दोनों के ग्रह पूज्य होने पर (परिहार)

यत्रार्कगुर्वोरपि नैधनांत्ये
जन्मादिदुस्थानगयो र्द्वयोर्वा।
एकस्य पूजामपि तत्र कृत्वा
पाणिग्रहं कार्यमतः कदाचित्॥१२९॥

जब वर की राशि से सूर्य और कन्या की राशि से बृहस्पति भी ये दोनों ग्रह ८वें या १२वें अथवा जन्मादि दुष्ट (पूज्य) स्थानों में हों तो इनमें से किसी एक की भी पूजा करके विवाह कर लेना चाहिए।

बारहवाँ चन्द्र कहाँ निन्दित नहीं है ?

आधाने सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रहे ।
शुभे कार्ये च यात्रायां चन्द्रोद्वादशगः शुभः १३०॥

गर्भाधान, दानकर्म, विवाह, राजकीय विग्रह (युद्ध, मुकदमे बाजी) शुभ कर्म तथा यात्रा में १२ वाँ चन्द्रमा भी शुभ होता है ।

वक्री ग्रह विचार

वक्रातिचारगो वापि यस्मिन् राशौ समागतः ।
तद्राशिजं फलं धत्ते जीवो नो पूर्वराशिगः ॥१३१॥

बृहस्पति वक्री या अतिचारी होकर जिस राशि में उपस्थित है, उसी का फल देता है, न कि, पूर्वराशि का फल देता है । जैसे—बृहस्पति मीन राशि में है और वह वक्री होकर कुंभ में आ गया है तो वह मीन का फल न देकर कुंभ का ही फल दायक होगा ।

विवाह में ग्राह्यमास

विचैत्र माघादिक पंचमासे
मासेयुगेऽर्केभगवच्छयान्तम् ।
पाणिग्रहोऽजालिमृगस्थसूर्ये
चैत्रोर्जपौषेष्वपि कन्यकानाम् ॥१३२॥

चैत को छोड़कर माघ से लेकर पाँच महीनों में तथा देव शयनी एकादशी से देवोत्थायिनी एकादशी तक आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक चार मास छोड़कर, मेष वृश्चिक और मकर के सूर्य में चैत्र, कार्तिक और पौष के मास में कन्याओं का विवाह शुभ होता है ।

विवाह के नक्षत्र

मूल मैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवैंदवैः ।
एतैर्निर्दोषभैः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः ॥१३३

दोष रहित मूल, अनुराधा, हस्त, स्वाती, मघा, रेवती' तीनों उत्तरा, मृगशिरा नक्षत्रों में कन्याओं का विवाह करना शुभ कहा गया है। विवाहः सार्वकालिकः इत्येके, इस पारस्कर गृह्य सूत्र के अनुसार कुछ आचार्यों के मत से विवाह हर महीनों में (त्याज्य सूर्य मास छोड़कर) विवाहोक्त नक्षत्र शुद्ध काल में हो सकता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार पारस्कर गृह्य सूत्रोक्त (त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु०) वचन के अनुसार चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, अश्विनी नक्षत्र भी विवाह में गृहीत हैं। कुछ लोगों का मत है कि 'विवाहः सर्वकालिकः यह मत गान्धर्व, पैशाच, राक्षस, आसुर विधिके विवाहों में या अति प्रौढ़ा कन्या और पुनर्विवाह में ही लेने योग्य है।

विवाह में वर्जित समय

नाषाढभमृतिचतुष्टये विवाहो
नो पौषे न च मधुसंज्ञके विधेयः ।
नैवास्तंगतवति भार्गवे च जीवे
वृद्धत्वे न खलु तयोर्न बाल भावे ।
गीर्वाणमन्त्रिणि मृगेन्द्रमधिष्ठिते न
मासेधिके त्रिदिनसंस्पृशि नावमे च ॥१३४॥

अषाढ़ से लेकर चार मास (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष चैत्र, गुरू, शुक्र का अस्त और बाल्य औरवृद्धत्व, सिंहस्थगुरु, अधिकमास व क्षयमास, त्रिद्युस्पृक् वक्षयतिथि ये विवाह में वर्जित हैं।

वापीकूपतडागयज्ञगमनं चौरंप्रतिष्ठाव्रतं
विद्यामन्दिरकर्णवेधनमहादानं गुरोः सेवनम् ।
तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मन्त्रोपदेशः शुभो
दूरेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ वै भृगोः १३५

जिनको दीर्घकाल तक जीने की इच्छा हो उन्हें गुरु शुक्र के अस्त में बावड़ी, कुवाँ, तालाब यज्ञ, और यात्रा, चूड़ाकर्म देवप्रतिष्ठा, व्रत, विद्यारम्भ नूतन गृह में प्रवेश, कर्णवेध, महादान गुरुसेवा, तीर्थकास्नान, विवाह, काम्यहवन, मन्त्रदीक्षा, ये काम नहीं करने चाहिए ।

गुरु और शुक्र के बाल्य तथा वार्धक्य का प्रमाण

प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितः स्यात्
पश्चाद्दशाहमिह पंचदिनानि वृद्धः ।
प्राक् पक्षमेव गदितोऽत्र वसिष्ठमुख्यैः
जीवस्तु पक्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः ॥१३६॥

जब पूर्व दिशा में शुक्र का उदय होता है, तब तीन दिन बाल्य का और जब पूर्व में अस्त होता है तब १५ दिन वृद्ध अवस्था का दोष वर्जित करना चाहिये और पश्चिम में उदय हो तो ५ दिन तक शिशुत्व का और १० दिन तक वृद्धत्व का दोष त्याज्य है । गुरु के अस्त उदय में पन्द्रह २ दिन विवाहादि में वर्जित करना चाहिए ।

अस्तोदयका लक्षण

यमशर भुजवासरवज्रिणो
दिशि द्विससितास्तमनं तथा ।

गगनबाणयमैर्दिशिपश्चिमे
नवदिनास्तमनं तु भृगोर्बुधैः ॥१३७॥

शुक्र पूर्व में २५२ दिन उदय रहता है और उसके बाद ७२ दिन तक पूर्व में अस्त रहकर फिर पश्चिम में उदय होकर २५० दिन उदित रह कर ९ दिन तक पश्चिम में अस्त रहेगा। ऐसा पंडितोंने कहा है।

विवाह में जन्म-मास आदि का निषेध

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयो-
र्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते
चेद् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥१३८॥

सबसे बड़ी सन्तान पुत्र या कन्या हों तो जन्म-मास व जन्म नक्षत्र व जन्म-तिथि विवाह में वर्जित है। यदि उसके बाद दूसरे-दूसरे गर्भ के लड़के लड़की हों तो जन्ममास आदि पुत्रप्रद हैं अर्थात् तब जन्ममास आदि में विवाह होने से पुत्र उत्पन्न होगा।

त्रि ज्येष्ठ का निषेध

ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं
त्रिज्येष्ठं स्यान्नैव युक्तं कदापि ।
केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्यमाहु-
र्नैवाऽन्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥१३९॥

वर और कन्या में से कोई भी एक पहले गर्भ से उत्पन्न हो और ज्येष्ठ का महीना भी हो तो उसे दो ज्येष्ठ कहते हैं। दो ज्येष्ठों में विवाह मध्यम है। तीन ज्येष्ठ में विवाह

वर्जित है, अर्थात् वर और कन्या दोनों ही ज्येष्ठ हों और ज्येष्ठ का महीना भी हो, तो इसको तीन ज्येष्ठ कहते हैं। किसी का यह भी मत है कि कृत्तिका नक्षत्र गत सूर्य हों तो ज्येष्ठ में विवाह शुभ नहीं है और किसी आचार्य के मत से वर और कन्या दोनों ज्येष्ठ हों तो विवाह उत्तम नहीं है। कृत्तिकास्थ सूर्य में १० दिन छोड़ना भरद्वाज का मत है। पूरा कृत्तिकास्थ रवि वर्जित है, यह पराशर का मत है। सौर ज्येष्ठ के १० दिन गर्ग के मत से और १२ दिन बृहस्पति के मत से त्याज्य हैं। मार्गशीर्ष मास में भी ज्येष्ठ पुत्र का विवाह निन्दित है यह वात्स्य का मत है।

विवाह के बाद अन्य संस्कारों का निषेध

सुतपरिणयात्षण्मासान्तःसुताकरपीडनं
न च निजकुले तदूढ्वा मण्डनादपि मुण्डनम्।
न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके
न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धे शुभे न पितृक्रिया ॥१४०॥

अपने वंश में पुत्र के विवाह से छः महीने तक लड़की का विवाह निषिद्ध है। उसी प्रकार विवाह से छः महीने तक मुण्डन भी नहीं करना चाहिए। सगे दो भाइयों के साथ सगी दो बहिनों का विवाह नहीं होता है तथा छः मास के भीतर ही सहोदर दो भाइयों का विवाह अथवा सगी दो बहिनों का विवाह करना समीचीन नहीं है। विवाह आदि शुभकार्यों में पितृकर्म श्राद्ध आदि क्रियाओं का करना भी उचित नहीं है।

चूडा व्रतं चापि विवाहतो व्रता-
च्चूडा च नेष्टा पुरुषत्रयान्तरे।
वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः
षण्मासतो वा ऽब्दविभेदतः शुभः ॥१४१॥

बाप, दादा, परदादा इन पीढ़ियों में किसी के यहाँ विवाह होने के अनन्तर उस कुल में किसी का मुण्डन तथा यज्ञोपवीत और यज्ञोपवीत के अनन्तर छः मास के भीतर ही किसी का चूड़ाकर्म, (मुण्डन) तथा वधूप्रवेश होने के अनन्तर छः मास तक लड़की का पति के घर भेजना शुभ नहीं है। यदि आवश्यक हो तो छः महीना के भीतर भी संवत्सर के भेद से शुभ होता है। जैसे पौष में किसी का विवाह हुआ हो तो संवत्सर के भेद से चैत्र शुक्ल पक्ष के आरम्भ होने पर वैशाखादि में मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि पूर्वोक्त कार्य करने शुभ होंगे। आज कल इन नियमों की उपेक्षा अर्थ एवं काल की परिस्थिति वश होने लगी है।

विवाह में वर्ज्य १० दोष

वेध पातो युतिर्लता जामित्रं बुधपंचकम्।
एकार्गलोपग्रहश्चैव क्रान्तिः साम्यं तथा परम् १४२
दग्धातिथिश्च विज्ञेयाः दशदोषाः महाबलाः।
एतान् दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः॥१४३

(१) वेध (२) पात (३) युति (४) लत्ता (५) जामित्र (६) बुधपंचक (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) क्रान्ति साम्य (१०) दग्धा तिथि ये दश दोष विवाह में अत्यन्त बली होते हैं। इनको छोडकर तब अच्छी प्रकार शुद्ध करके विवाह लग्न ग्रहण करना चाहिए।

पञ्चशलाकावेधचक्र और उसका फल

अपि तिर्यग्गतोर्ध्वपञ्चरेखाः
प्रतिकोणं द्वयमग्निमीशकोणे।
इतराणि लिखेत्क्रमेण भानि
प्रथितं पञ्चशलाकचक्रमुक्तम्॥१४४॥

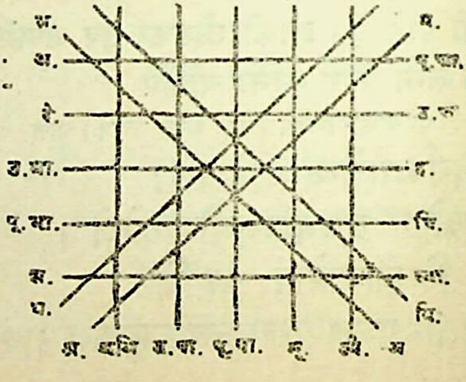
यद्दलगो यः खचरः स तत्र
प्रलेखनीयो गणकैस्तु पूर्वैः ।
विवर्जनीयः खलु पापविद्धः
पूर्णां तु सौम्यैः खलु पादमात्रम् ॥१४५॥

पाँच रेखा बेड़ी तिरछी करे, पाँच खड़ी रेखा करके पञ्चशलाकाचक्र बनावे, उसके कोणों में दो-दो रेखा लिखे । उसमें ईशान दिशा से कृत्तिका आदि से अभिजित् सहित अट्ठाइसों नक्षत्र लिखें तथा गोचर में उस दिन जो ग्रह जिस नक्षत्र में हो वह लिखे । अगर विवाह नक्षत्र के सीध वाली रेखा के दूसरे छोर पर ग्रह बैठा रहे तो विवाह नक्षत्र विद्ध कहलावेगा । वेधक ग्रह पापी है तो पूरा नक्षत्र ही त्याज्य है अगर वेधक ग्रह सौम्य है तो केवल उसका विद्ध चरणमात्र ही त्याज्य है । एवं विपरीत वेध जानना चाहिए ।

पञ्चशलाका चक्र-न्यास

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासान्ते न जीवति कदाचन ॥१४६॥

एक रेखा में परस्पर सीध में विवाह का नक्षत्र और सूर्यादि कोई पाप ग्रह हो तो वेध होता है । उसमें विवाह हो तो एक महीना के बाद अशुभ फल होता है ।



लत्ता-दोष का विचार

सूर्यो द्वादशमष्टमं रविसुतः षष्ठं गुरुर्भूमिज-
स्तार्तीयैकमथो निहन्ति पुरतो नक्षत्रकं लत्तया।
द्वाविंशं तुहिनांशुकश्च नवमं राहुर्बुधः सप्तमं
शुक्रः पञ्चमकं तु पृष्ठत इह प्रायेण लत्तां त्यजेत् १४७

सूर्य अपने नक्षत्र से बारहवें नक्षत्र को, शनैश्चर आठवें नक्षत्र को तथा बृहस्पति छठे नक्षत्र को और मङ्गल तीसरे नक्षत्र को लात मारता है। ये ग्रह अपने से आगेवाले नक्षत्रों को लात मारते हैं। चन्द्रमा अपने नक्षत्र से बाईसवें नक्षत्र को, राहु अपने नक्षत्र से नवें नक्षत्र को, बुध सातवें तथा शुक्र पाँचवें नक्षत्र को लात मारता है। ये ग्रह अपने से पीछेवाले नक्षत्र को लात मारते हैं। ये लत्ता युक्त विवाह नक्षत्र विवाह में वर्जित होते हैं।

पात-दोष का विचार

शूलस्य गण्डस्य च वैधृतेश्च
साध्यव्यतीपातकहर्षणानाम्।
यत्तारकं स्यादवसानसंस्थं
तत्पातितं वङ्गकलिङ्गदुष्टम् ॥१४८॥

शूल, गण्ड, वैधृति, साध्य, व्यतीपात और हर्षण इन योगों का जिस नक्षत्र में अन्त हो उस नक्षत्र में पात दोष लगता है। यह पातदोष बङ्गाल तथा कलिङ्ग (उड़ीसा) में वर्जित है।

युति-दोष का विचार

यत्र गेहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत्।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥१४९॥

रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधनं शशी ।
करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ॥१५०॥

जिस घर (राशि) में चन्द्रमा हो उस राशि में कोई और ग्रह भी हो तो युतिदोष होता है। परन्तु, इसमें शुक्र को छोड़कर अन्य ग्रह अशुभ हैं; अर्थात् शुक्र की युति शुभ है। चन्द्रमा सूर्य संयुक्त हो तो हानि, मङ्गलयुक्त हों तो समूल नाश कारक होता है।

युति-दोष का परिहार

वर्गोत्तमगते चन्द्रे स्वोच्चे मित्रर्क्षगे तथा ।
युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ॥१५१॥

अगर चन्द्रमा वर्गोत्तम का हो अर्थात् जिस राशि में हो उसी राशि का नवांश हो अथवा उच्च का हो या मित्र के घर में हो तो ऐसी परिस्थिति में युतिदोष नहीं होता है। तब स्त्री और पुरुष को यह योग कल्याणकारी होता है।

जामित्र-दोष का विचार

पाणिग्रहस्य शीतांशोर्नक्षत्रं यच्चतुर्दशम् ।
नक्षत्रं खेटयुक्तं चेज्जामित्रं स्याद्विगर्हितम् ॥१५२॥

विवाह के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो जामित्र दोष होता है यह यामित्र दोष निन्द्य है।

पञ्चक-दोष-विचार

रविक्रान्तियातांशयुक्ताश्च तिथ्यो
रविर्दिग्गजाः सिन्धवः खेटभक्ताः ।
भवेत्पञ्चकं रोगवह्नीशचौर-
मृतिर्दोषमेनं प्रजह्याद्विवाहे ॥१५३॥

सूर्य के गतांश को पाँच जगह रखकर उसमें क्रमशः पन्द्रह व बारह व दस व आठ व चार इनको अलग-अलग रखकर जोड़ना चाहिए तथा उस योगफल के अङ्कों में नव का भाग देना चाहिए अगर शेष पाँच बचे तो क्रम से पाँचो स्थान में पाँच पञ्चक-रोग १, अग्नि २, राज ३, चौर ४, और मृत्यु ५, संज्ञक होते हैं। ये पञ्चक व ण भी कहलाते हैं और विवाह में वर्जित हैं।

वाण या पञ्चक- दोष का परिहार

रात्रौ चौरुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययो-
र्मृत्युश्चाथशनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ
रोगोऽथ व्रत गेह गोप नृपसेवा यान पाणिग्रहे
वर्ज्याश्च क्रमतो वुधैरुगनलक्ष्मापालचौरामृतिः १५४

रात्रि में चौर व रोग पञ्चक (वाण) वर्जित हैं दिन में नृप वाण और अग्निपञ्चक हमेशा दिन और रात्रि दोनों में ही तथा मृत्युपञ्चक दोनों संध्याओं में वर्जित माना गया है।

शनिवार को राजवाण, बुधवार को मृत्युवाण, मङ्गल को अग्नि, व चौरपञ्चक और रविवारको रोग पञ्चक वर्जित हैं।

जनेऊ में रोगपञ्चक, मकान बनाने में अग्निवाण, राजसेवा में नृपपञ्चक, यात्रा में चौरवाण, तथा विवाह में मृत्युवाण त्याज्य है।

एकार्गल-दोष-विचार

विष्कुम्भ वज्र परिघ व्यतिपात शूल
व्याघातवैधृतिषु गण्ड इहातिगण्डे।
एकार्गलो भवति चेत्किल साभिजित्कः
पीयूषकान्तिरसमर्क्षगयो रवेर्भात् १५५

विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, व्यतीपात, शूल, व्याघात, वैधृति, गण्ड और अतिगण्ड इन योगों में एकार्गल दोष होता है, अर्थात् इन योगों के आस पास सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र (विवाह नक्षत्र) तक अभिजित् सहित गिनें। अगर वह नक्षत्र संख्या विषम आती हो और पूर्वोक्तयोग भी विवाह के दिन हों या समाप्त हुए हों तो एकार्गल नामक दोष होता है। यह एकार्गल दोष विवाह में वर्जित मानते हैं।

उपग्रह-दोष विचार

शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्य-
स्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पञ्च।
उपग्रहःसूर्यभतोऽब्जतारा
शुभा न देशो कुरुबाह्लिकानाम् १५६

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र (विवाह नक्षत्र) तक गिनने पर अगर पाँच, आठ, दश, चौदह, सात, उन्नीस; पन्द्रह, अठारह, इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस और पचीस, इतनी नक्षत्र संख्या हो तो उपग्रह दोष होता है। यह दोष कुरु (कुरुक्षेत्र) व बाह्लीक (काबुल गांधार) देश में शुभ नहीं होता है।

क्रांति-दोष-विचार

पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ
कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे।
तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं
क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु १५७

सिंह और मेष इन दोनों में से किसी एक में चन्द्रमा और दूसरे में सूर्य स्थित हो तो क्रान्तिसाम्य योग होता है। ऐसे

ही वृष-मकर, तुला-कुम्भ, कन्या-मीन, कर्क-वृश्चिक और धनु मिथुन इन दो-दो राशियों में से किसी एक में सूर्य और दूसरी राशि में चन्द्रमा हो तो क्रांतिसाम्य नामक दोष होता है। यह विवाहादि शुभ कार्यों में ग्रहण नहीं होता है ॥

दग्धातिथि

मीने चापे द्वितीयार्के चतुर्थीवृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी ॥१५८॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः१५९

मीन व धनु के सूर्यों में द्वितीया तिथि, वृष व कुम्भ के सूर्यों में चतुर्थी, मेष व कर्क के सूर्यों में षष्टी तथा कन्या व मिथुन के सूर्यों में अष्टमी, वृश्चिक और सिंह के सूर्यों में दशमी और मकर व तुला के सूर्यों में द्वादशी तिथि दग्धा होती है। ये तिथियाँ शुभकर्म में वर्जित मानी गयी हैं ॥

विवाह में लग्न भंगद ग्रहों का विचार

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये
भृगुस्तनौ चन्द्रखलाः न शस्ताः ।
लग्नेट् कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौ-
लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे॥१६०॥

विवाह लग्न से बारहवें, शनैश्चर, दशवें मंगल, तीसरे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा व क्रूरग्रह शुभ नहीं हैं। लग्नेश अथवा शुक्र या चन्द्रमा छठे स्थान में शुभ नहीं होते हैं। आठवें स्थान में चन्द्रमा या लग्नेश या शुभग्रह अथवा मंगल इनमें से कोई भी शुभ नहीं होते हैं। सातवें स्थान में सभी ग्रह अशुभ होते हैं।

परिहार

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्ति च केसरी ॥१६१॥

यदि बृहस्पति विवाह के लग्न से सप्तम स्थान को छोड़कर केन्द्र में हो तो अन्य ग्रह क्या कर सकते हैं ? जिस तरह मदोन्मत्त हाथियों के समूह को एक ही सिंह नाश कर देता है उसी तरह गुरु भी सर्वदोषनाशक होता है ।

केन्द्र त्रिकोण गत शुभ ग्रह का फल

शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च ।
लक्षमेकं तु वा जीवः केन्द्रकोणे व्यपोहति ॥१६२

केन्द्र में शुक्र हो तो दश हजार दोष, बुध केन्द्र में हो तो एकहजार दोष और जो बृहस्पति केन्द्र में हो तो एक लाख दोषों को नाश कर देता है ।

इष्ट ग्रह विचार

त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्रा-
स्त्र्यायारिगाः क्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः ।
सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरु सितोऽष्ट
त्रिद्यूनषड्व्ययगृहान् परिहृत्य शस्तः ॥१६३॥

तीसरे, ग्यारहवें, आठवें, छठे, सूर्य, केतु, राहु, शनैश्वर हो तथा मंगल तीसरे, ग्यारहवें, छठे हो । दूसरे, तीसरे, ग्यारहवें चन्द्रमा हो एवं सातवें, बारहवें, आठवें, बुध और बृहस्पति न हों शुक्र आठवें, तीसरे, सातवें, छठे, बारहवें स्थान को छोड़कर हो तो शुभ होता है अर्थात् अपने स्थान में रेखा प्रद होते हैं तथा इष्ट होते हैं ।

लत्ता आदि दोषों का परिहार

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥१६३॥

मालवा देश में लत्तादोष और कुरुजाङ्गल (हरियाणा, राजस्थान) देश में पातदोष तथा काश्मीरदेश में एकार्गल नामक और सब देशों में वेध दोष वर्जित होता है।

अन्धादि-लग्न-विचार

दिने सदान्धा वृषमेषसिंहाः
रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः।
मृगस्तुलालिर्बधिरोऽपराह्णे
सन्ध्यासु कुब्जाः घटधन्विमीनाः ॥१६४॥

दिन के समय में वृष, मेष और सिंह लग्न अन्धे होते हैं। रात्रि में कन्या, मिथुन और कर्क अन्धे हो जाते हैं। अपराह्ण में मकर, तुला, और वृश्चिक ये लग्न बहिरे होते हैं तथा कुम्भ, धन और मीन ये लग्न सन्ध्या के समय में कुबड़े होते हैं।

अन्ध आदि लग्नों का फल

दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवान्धलग्ने
वैधव्यं शिशुमरणं निशान्धलग्ने।
पङ्ग्वङ्गे निखिलधनानि नाशमीयुः
सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ॥१६५॥

बहिरे लग्न में विवाह होने से दारिद्र्य सम्बन्धी दोष आता है। दिन में अन्धलग्न कन्या को वैधव्यकारक होता है। रात्रि में अन्धलग्न बालकों के लिए मृत्युकारक होते हैं। लँगड़े लग्न में सभी प्रकार के धन का नाश होता है। विवाह

लग्न पर लग्नेश तथा बृहस्पति की दृष्टि हो तो अन्ध बधिर पंगु आदि दोष नहीं होते हैं।

अन्य प्रकार से लग्नों के फल

घस्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ
रात्रौ च सिंहाजवृषाः दिवान्धाः।
कन्यानृयुक्कर्कटकाः निशान्धाः
दिने घटोऽन्त्ये निशि पंगु संज्ञः॥१६६॥

तुला और वृश्चिक ये दोनों लग्न दिन में तथा धन और मकर लग्न रात्रि में बधिर कहलाते हैं। सिंह, मेष और वृष लग्न दिन में तथा कन्या, मिथुन और कर्क ये रात्रि में अन्धे कहलाते हैं। कुम्भ लग्न दिन के समय में तथा मीन लग्न रात्रि में लँगड़े होते हैं।

पंग्वादि लग्नों का फल।

दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः।
दुःखदो बधिरो लग्नः कुब्जवंशविनाशकृत्॥१६७॥

दिन के समय में जो लग्न अन्धे हैं, उनमें यदि विवाह करेंगे तो कन्या विधवा हो जाती हैं। जो लग्न रात्रि में अन्धे हैं अगर उनमें विवाह होगा तो धन का नाश होता है। बधिर लग्न में विवाह ो तो वह दुःखदायक होता है। कुबड़े लग्न में विवाह करने से वंश का नाश होता है

कर्तरीदोष-विचार।

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा।
कर्तरीनाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा॥१६८॥

पापग्रह मार्गी होकर विवाह लग्न से बारहवें स्थान में हों और पापग्रह वक्री होकर लग्न के दूसरे घर में हों तो कर्तरीनाम का योग होता है। यह कर्तरी नामक दुष्ट योग मृत्यु, दारिद्र्य और शोक को देनेवाला होता है।

कुलिकयोग-विचार

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पञ्चमी।
बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥१६९॥
द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे।
कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते १७०॥

रविवार को सप्तमी, सोमवार को षष्ठी तिथि, मंगल को पञ्चमी, बुध को चतुर्थी, गुरुवार को तृतीया तिथि, शुक्र को द्वितीया, शनि को प्रतिपद् हो तो कुलिकयोग होता है। यह विवाहादि कार्यों में शुभ नहीं है।

नवांश-विचार

मेषसिंहधनुर्लग्ने नवांशाः मेषतः स्मृताः।
वृषकन्या मृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः ॥१७१॥
कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतः स्मृताः।
नृयुग्मतौलिकुम्भेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः १७२॥

मेष, सिंह और धन राशि का नवांश मेष राशि से, वृष, कन्या और मकर लग्न का नवांश मकर से, कर्क, वृश्चिक, और मीन का नवांश कर्क से तथा मिथुन, तुला और कुम्भ नवांश तुला से प्रारम्भ होता है। एक राशि में ३० अंश तथा नौ नवांश होती हैं। एक नवांश (३० ÷ ९) ३ अंश २० कला

का होता है अर्थात् प्रत्येक राशि में ३ अं. २० क० तक प्रथम, ६ अं. ४० क० तक द्वितीय, १० अं. तक तीसरा, १३ अं. २० क. तक चौथा १६.४० तक पाँचवा २० अं. तक छठवां २३ अं. २० क. तक सातवां २६ अ. ४० क. तक आठवां और ३० अंश तक नौवां नवांश रहता है उपरोक्त तरीके से मेष में प्रथम नवांश ३'२० तक मेष का नवांश फिर दूसरा नवांश ६.४० तक वृष का नवांश, १० अंश तक मिथुन का नवांश इसी प्रकार नवें नवांश तक क्रम चलता रहेगा।

नवांश-चक्र

अंश कला	मे.	वृ	मि	क	सिं	कं	तु.	वृ	ध.	म.	कु.	मी
३।२०'	मे.	म.	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क.
६।४०'	वृ.	कु	वृ.	सिं	वृ.	कुं	वृ.	सिं	वृ.	कुं.	वृ.	सिं
१०।०	मि.	मी	ध	कं.	मि	मी.	ध.	कं.	मि	मी	ध.	कं
१३।२०'	क.	मे.	म.	तु	क.	मे.	म.	तु	क.	मे	म.	तु
१६।४०'	सिं.	वृ.	कुं.	वृ	सिं	वृ	कु	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ.
२०।०	कं	मि.	मी	ध.	कं.	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध.
२३।२०'	तु	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे	म.	तु	कं	मे.	म
२६।४०'	वृ	सिं.	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं.	वृ.	सिं	वृ.	कुं.
३०।०	ध.	कं.	मि.	मी	ध.	कं.	मि.	मी	ध.	कं	मि.	मी

गान्धर्व (प्रेम) का विवाह का मुहूर्त्त

गान्धर्वादिविवाहेऽर्काद्धेदनेत्रगुणेन्दवः ।
कुयुगांगानि भूरामत्रिपद्यामशुभाः शुभाः ॥१७३॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर त्रिपदी अर्थात् गान्धर्वादि विवाह (गान्धर्व, पैशाच, आसुर, राक्षस) का विचार किया जाता है उक्त प्रकार से गिनने पर चार, दो, तीन, एक, एक, चार, छः, एक, तीन, फिर तीन इस क्रम से नक्षत्र समूह में प्रथम अशुभ और फिर शुभ समझना चाहिए। जैसे सूर्य नक्षत्र से विवाह नक्षत्र प्रथम चार नक्षत्रों में हो तो अशुभ है आदि ।

सूर्यमात् गान्धर्व-विवाह-चक्र

४	२	३	१	१	४	६	१	३	३
अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शू.	अ.	शु.	अ०	शु.

कन्या को स्वयंवर का भी विधान है

पिता पितामहो भ्राता माता बन्धुर्यदा न हि ।
ऋतौ वर्षत्रयादूर्ध्वं कन्या कुर्यात्स्वयंवरम् ॥१७४॥

कन्या का पिता या दादा या भाई व माता व कुटुम्बी, इनमें से कोई भी जीवित न हों तो कन्या रजस्वला होने पर तीन वर्ष के अनन्तर अपने मन से पति कर लेवे तो कोई दोष नहीं है ।

गोधूलि विचार

यदा नास्तं गतो भानुर्गोधूल्याः पूरितं नभः ।
सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिः शस्यते सदा ॥१७५॥

जब सूर्य अस्त होने पर हो किन्तु अस्त न हुआ हो और जिस समय गौओं की चरण धूलि से आकाश पूरित हो, वह समय मंगलकार्यों के लिए शुभ है। (विशेष बातें पृष्ठ ६२ और ६३ पर देखें)।

मुख्य गोधूलि लक्षणम्

यत्रैकादशश्चन्द्रः द्वितीयो वा तृतीयगः।
गोधूलिः स विज्ञेयः शेषाः धूलिमुखाः स्मृताः १७६॥

सायंकाल विवाह लग्न से ११ वें, २ रे, तीसरे, स्थान में चन्द्रमा हो तो वह गोधूलि लग्न कहलाता है अगर चन्द्रमा इन स्थानों पर नहीं हो तो वह धूलिमुख कहलावेगा।

अन्य गोधूलि लक्षणम्

शिवे सहजे धने धर्मे दशमे वेद बाणयोः।
अन्य गोधूलिकं चन्द्रे शेषे धूलिमुखाः स्मृताः १७७॥

अन्य कतिपय आचार्यों के मत से सायंकालिक लग्न से ११ वें, ३ रे, २ रे; ९ वें, १० वें, ४ थे, ५ वें, स्थानों पर चन्द्रमा हो तो वह गोधूलि लग्न कहलावेगा। इसके अतिरिक्त स्थानों में चन्द्रमा हो तो धूलिमुख होगा। यह अन्य गोधूलि लग्न काशी के विश्व एवं हृषीकेश पञ्चाङ्ग वाले अपने पञ्चांग में भी देते हैं।

वर्जित गोधूलि

गोधूलियोगे परिणीयमाना
मार्गेऽपि बाला यदि वाथ माघे।
उद्वाहवस्त्रेण समाहिताङ्गी
श्मशानभूमिं प्रमदा प्रयाति ॥१७८॥

मार्गशीर्ष अथवा माघमास में गोधूलिलग्न में विवाहिता कन्या विवाह के वस्त्रों को पहिने हुए ही श्मशान भूमि को प्रयाण करती है यह भोजदेव का मत है। ज्योतिष तत्त्वसुधार्णव, मुहूर्त्तप्रकाश आदि ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख हुआ है।

गोधूलि में अन्य त्याज्य बातें—

❁ गोधूलिलग्न से ६ठे व ८ वें मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, तथा १।६।८ स्थानों में चन्द्रमा नहीं होना चाहिए।

❁❁ १।७।६ में भी मंगल वर्जित है।

❁❁❁ कुलिक और क्रांन्ति साम्य भी वर्जित है।

❁❁❁❁ रात्रि में दूसरा शुभ लग्न मिलता हो तो गोधूलि त्याज्य है।

वधूप्रवेश मुहूर्त्तः

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्केबुधे परैः ॥१७६॥

ध्रुवसंज्ञक (पृ. ९९-१००) क्षिप्रसंज्ञक और मृदुसंज्ञक नक्षत्र, तथा श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाती इन नक्षत्रों में वधू-प्रवेश शुभ होता है। चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी इन तिथियों में; रविवार, मंगलवार और बुधवार इन दिनों में वधूप्रवेश अशुभ होता है।

वधू प्रवेश के सम्बन्ध में विशेष बातें :—

१—विवाह दिन से १६ दिन के भीतर सम दिन तथा विषम दिनों में भी ७।५।९ वां दिन शुभ होता है।

२—वधू प्रवेश के लग्न से चौथा स्थान शुभ रहना चाहिए।

३—वधू प्रवेश का नियतकाल होने से १६ दिन के भीतर

सम्मुख शुक्र अथवा शुक्रास्तादि का विचार भी नहीं करना चाहिए। १६ दिन से अधिक होने पर शुक्रविचार होना चाहिए।

४—पति गृह से पिता के घर जाने में शुक्रादि का विचार नहीं करना चाहिए।

५—बिल्कुल नवीन बने हुए मकान में नई दुलहिन का वधू प्रवेश नहीं करना चाहिए, क्योंकि; वास्तुशान्ति एवं गृह प्रवेश में कुछ भी त्रुटि रहजाने से वधू पर कलंक लगने का भय रहता है।

६—विवाह के बाद पहले ज्येष्ठ, अधिक मास, आषाढ़, पौष और चैत्र महीने में पति के घर नहीं रहना चाहिए।

द्विरागमन-मुहूर्त

विवाहाद्विषमे वर्षे कुम्भमेषालिगे रवौ।
बलिन्यर्के विधौ जीवे शुभाहे चाश्विनीमृगे॥१८०॥
रेवतीरोहिणी पुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये।
हस्तत्रये पुनर्वस्वौ तथा मूलानुराधयोः॥१८१॥
कन्यामीनतुले युग्मे वृषे प्रोक्तबलान्विते।
लग्ने पद्मदलाक्षीणां द्विरागमनमिष्यते॥१८२॥
संमुखे दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत्तु कदाचन।
गर्भिणी तु विगर्भा स्यान्नवोढा वन्ध्यतामियात्।
बालकश्चेद्विपद्येत विगेहादपि चेद् व्रजेत्॥१८३॥

विवाह के वर्ष से विषम वर्ष में द्विरागमन करना शुभ है। द्विरागमन में कुम्भ, मेष और वृश्चिक राशि के सूर्य हों;

तथा लग्न से सूर्य चन्द्रमा और बृहस्पति बली हों और शुभ दिन हों, अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, पुष्य तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, तथा मूल और अनुराधा ये नक्षत्र हों तो शुभ होता है। कन्या, मीन, तुला, मिथुन तथा वृष ये लग्न द्विरागमन में शुभ होते हैं। संमुख और दक्षिण शुक्र में कभी द्विरागमन में न जाये। यदि गर्भिणी स्त्री इस प्रकार के शुक्र में जाये तो वह विना गर्भ की हो जाये ऐसा भय रहता है। और जो नवोढ़ा अर्थात् विना गर्भवाली जावे तो वह वन्ध्या बांझ होगी। यदि गोदी में बालकको साथ लेकर जावे तो उस बालक की मृत्यु होने का भय हो जायगा।

शुक्र का परिहार

एकग्रामे चतुष्कोणे दुर्भिक्षे राजविग्रहे।
विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रा न विद्यते ॥१८४॥

एक ही ग्राम में, चारो कोणों में तथा दुर्भिक्ष (अकाल) में, राजा से वैर होने में और विवाह में तीर्थयात्रा आदि में शुक्र के संमुख तथा दक्षिण होने का दोष नहीं होता है।

पुनः शुक्र का परिहार

पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः
स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः।
भृग्वंगिरावत्सवशिष्ठकश्यपा
ऽत्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥१८५॥

अगर कन्या पिता के घर में ही रजस्वला तथा कुचवती (उसकी चूचियाँ उभर जाय) हो जाय अथवा कन्या भृगु,

अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भरद्वाज गोत्र की हो तो उसके आवागमन (द्विरागमादि) में शुक्र के सम्मुख व दक्षिण रहने का दोष नहीं होता है।

शुक्रान्ध-विचार

यावच्चन्द्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये
पादे शुक्रोऽन्धो न दुष्टोग्रदक्षे।
मध्ये मार्गं भार्गवास्तेऽपि राजा
तावत्तिष्ठेत्सम्मुखत्वेऽपि तस्य ॥१७६॥

रेवती नक्षत्र से कृत्तिका के पहले चरण तक चन्द्र नक्षत्रों में शुक्र अन्धा रहता है। उसमें यात्रा करने से स्त्री पुरुषों को सम्मुख और दहिने शुक्र का दोष नहीं होता है। राजा की यात्रा के समय में यदि मध्यमार्ग में ही शुक्र अस्त हो जाय तो जब तक शुक्र उदय न हो राजा ठहर जाय अर्थात् तब तक निवास करे अथवा सम्मुख रहे तब तक निवास करे। कहीं २ मृगशिरा तक शुक्र के अन्धे होने का वचन भी मिलता है।

दान द्वारा शुक्र का परिहार

सितमश्वं सितं छत्रं हेममौक्तिकसंयुतम्।
ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशान्तये ॥१८७॥

सफेद घोड़ा, सफेद छाता, मोतीसंयुक्त सोना ब्राह्मण को देने से सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष शान्त हो जाता है। मत्स्यपुराण में कांसी की थाली में चाँदी या सोने की गोल मूर्ति बनाकर शुक्र पूजा करने से दोष दूर होना लिखा है।

त्रिरागमन-मुहूर्त

आदित्यहस्तेऽन्त्यमृगाश्विमैत्रे
तथा श्रविष्ठास्वपि वातपित्र्ये ।
वध्वास्तृतीयं गमनं प्रशस्तं
स्याद्योगिनीशूलतमोविशुद्धौ ॥१८८॥

पुनर्वसु, हस्त, रेवती, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, धनिष्ठा, स्वाती और मघा इन नक्षत्रों में वधू का त्रिरागमन (द्विरागमन के बाद तृतीय बार ससुराल जाना) शुभ है । इस यात्रा में योगिनी, दिशाशूल और राहु की शुद्धि होनी आवश्यक होती है ।

त्रिरागमन में मासिक राहु का विचार

आद्येऽर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादिक्चतुष्टये ।
सम्मुखे दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयगमने स्त्रियाः॥१८९॥

जैसे यात्रा में चन्द्रमा मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे इत्यादि प्रकार से चारों दिशाओं में रहता है । वैसे ही राहु भी मेष-राशि के सूर्य से पूर्वादि चारों दिशाओं में भ्रमण करता है। वह सम्मुख और दाहिने वर्जित है ।

राहु वास चक्र

गोचर में सूर्य की राशि	राहु के वास की दिशा
मेष, सिंह, धन हो तो	राहु पूर्व दिशा में होगा
वृष, कन्या, मकर ,,	,, ,, दक्षिण ,,
मिथुन, तुला, कुम्भ ,,	,, पश्चिम ,,
कर्क, वृश्चिक, मीन ,,	,, उत्तर ,,

राहु का फल

अग्रे राहौ च वैधव्यं दक्षिणे दुःखदो भवेत्।
पृष्ठे पुत्रवती नारी वामे सौभाग्यशालिनी॥१६०॥

जिस दिशा में जाना हो तो उस ओर सम्मुख राहु हो तो वैधव्य का फल करेगा, दाहिने हो तो दुःख देगा पीठ पीछे हो तो स्त्री पुत्रवती होगी और बायें राहु हों तो सौभाग्यशालिनी होगी।

त्रैमासिक राहु-विचार

गमोक्ततिथ्यादिषु कारयेद्बुधो
वध्वस्तृतीयः पतिवेश्मनो गमः।
तत्रालितस्त्रित्रिभसंस्थिते रवौ
प्रागादि राहुर्न शुभोऽग्रदक्षे॥१६१॥

यात्रा की साईत में कही गई तिथ्यादिकों में पति के घर में तीसरी बार वधू-प्रवेश अर्थात् दोंगा करावे वृश्चिकादि से तीन-तीन राशियों के सूर्यों में राहु पूर्वादि चारों दिशाओं में तीन महीने तक वास करता है। वह राहु सम्मुख और दाहिने वर्जित होता है।

त्रैमासिक राहु का चक्र

पूर्व में राहु	दक्षिण में राहु	पश्चिम में राहु	उत्तर में राहु
वृश्चिक, धन, मकर का सूर्य	कुम्भ, मीन, मेष का सूर्य	वृष, मिथुन कर्क का सूर्य	सिंह, कन्या तुला का सूर्य

निर्धन की कन्या के विवाह का फल

वैवाहिकं तु कन्यानां दरिद्राणां च ये नराः।
कारयन्ति च कुर्वन्ति ते नराः स्वर्गगामिनः १६२

वृद्धगौतमस्मृति अ २०

जो व्यक्ति गरीबों की कन्याओं का विवाह कराने में मदद करते हैं या स्वयं उनका विवाह अपना द्रव्य खर्च करके करते हैं उनको स्वर्ग मिलता है।

विवाह और यज्ञ में विघ्न करने का फल

विघ्नमाचरते यस्तु यज्ञस्योद्वाहकस्य च।
स नरः नरकं याति यावत्कल्प चतुर्दशः ॥१६३॥

जो व्यक्ति यज्ञ और विवाह कार्य में विघ्न डालते हैं वे चौदह कल्प तक नरक में पड़ते हैं। एक कल्प में ४३२०००० × ७१ × १४ = ४२९४०८०००० इतने सौर वर्ष होते हैं।

विवाह मुहूर्त्त निकालने की विधि

मेलापक विचार में उद्धृत् कुण्डलियों में वर की राशि मकर है और कन्या की राशि मिथुन है। वैक्रमाब्द संवत् २०२८ में दोनों का विवाह मुहूर्त्त निकालना है। अतः सर्व प्रथम वर की राशि से (पृष्ठ १९३ श्लो. १८ से २०) के अनुसार गोचर में सूर्य का बल देखा तो मीन, मिथुन, तुला, वृश्चिक राशि के सूर्य बल दायक होते हैं। इनमें मीन और तुला राशि सूर्य वाले महीने विवाह में गृहीत नहीं है अतः मिथुन और वृश्चिक राशिगत सूर्य के मासों का विवाह के लिए ग्रहण किया। कन्या की राशि मिथुन से बृहस्पतिका पृ. १५२ श्लो. ३९ से ४१ के अनुसार बल विचार किया गया तो सौर मिथुन और वृश्चिक

मास में वृश्चिक राशि का बृहस्पति गोचर में रहता है वह कन्या की मिथुन राशि से छठवां गुरु पूज्य है चूंकि; कन्या की अवस्था २४ वर्ष की है अतः गुरु की पूज्य स्थिति उपेक्षणीय है। अब दोनों की राशियों से चन्द्रबल देखने के लिए श्री विश्व पञ्चाङ्ग या धर्मसंघ पञ्चाङ्ग में इन महीनों के विवाह मुहूर्त्त देखे तो निम्न मुहूर्त्त लिखे हुए मिले :—

आषाढ़ शुक्ल ६ भौमे उ. फा. कन्या राशि में चन्द्र
आषाढ़ शुक्ला ८ गुरौ हस्तभे ,, ,,
आषाढ़ शुक्ला ९ शुक्रे स्वातीभे तुला राशि में चन्द्र
आषाढ़ शुक्ला १० शनौ स्वातीभे ,, ,,
मार्गशीर्ष शुक्ला २ शनौ मूलभे धनुराशि में चन्द्र

वर की मकर राशि से कन्या का ९ वां, तुला का १०वाँ और धनु का १२ वाँ चन्द्रमा तथा वधू की मिथुन राशि से कन्या का ४ था, तुला का ५ वां और धनु का ७ वां चन्द्र होता है। इनमें वर के लिए तो सभी मुहूर्त्तों में चन्द्र बल मिलता है, लेकिन, कन्या की राशि से प्रथम दो मुहूर्त्तों में चौथा चन्द्रमा नेष्ट है अतः इनको छोड़कर बाकी के मुहूर्त्तों में विवाह होसकेगा।

अब हमें विवाह लग्न समय की शुद्धि का विचार करना है। पहले बतलाया गया है कि विवाह में १० प्रकार के दोष त्याज्य होते हैं उनमें पहला दोष होता है वेध।

वेधदोष—विवाह में पञ्चशलाका वेध तथा अन्यत्र सप्तशलाका वेध चक्र से विचार किया जाता है। पूर्वोक्त पृ० २०२ श्लोक ४० से ४२ में कहे गये पञ्चशलाका चक्र को बनाकर विवाह दिन आषाढ़ शुक्ल ६ भौमवार सं० २०२८ के गोचरस्थ ग्रहों को वर्तमान नक्षत्रों में चक्र के अन्तर्गत लिखा गया।

यहाँ चन्द्रमा के नक्षत्र (विवाह नक्षत्र) उ०फा० से सीधी रेखा में रेवतीनक्षत्र है उसमें कोई भी ग्रह गोचरकाल में नहीं है अतः वेधसंज्ञक दोष से रहित यह मुहूर्त्त है।

पात दोष—पृ० २३ श्लो. ४४ के अनुसार व्यतीपात योग का अन्त उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र (विवाह नक्षत्र) में होता है अतः इस (आषाढ़ शुक्ल ६ भौम) मुहूर्त्त में पात संज्ञक दोष है।

युति दोष :—कन्या राशि गत चन्द्र किसी अन्य ग्रह से युक्त न होने से पृ० २०३ श्लो० ४५ के अनुसार इसमें युति दोष भी नहीं है।

लत्ता दोष :—पृ० २०३ श्लोक ४३ के अनुसार इसमें लत्ता दोष भी नहीं है।

जामित्र दोष :—पृ० २०४ श्लोक ४८ के अनुसार इसमें जामित्र दोष भी नहीं है। क्योंकि, उ० फा० से १४ वाँ नक्षत्र या ७ वीं राशि ग्रह शून्य है।

बुध पञ्चकदोष :—विवाह के दिन सूर्य के गतांश १३ हैं इसको पाँच जगह रखा — १३ १३ १३ १३ १३
तथा इनमें = +१५ +१२ +१० + ८ + ४
इनको जोड़ा तो योग फल २८ २५ २३ २१ १७
इतने हुए इनमें अलग २ नौ का भाग दिया गया तो शेष १, ७, ५, ३, ८, संख्या बचीं। इनमें तीसरे स्थान में शेष पाँच बचे हैं, अतः तीसरा राजबाण हुआ अतः बाण संज्ञक दोष मुहूर्त्त में हुआ चूँकि, विवाह में मृत्यु बाण ही विशेष वर्जित है अतः यह दोष भी सामान्य ही है।

एकार्गल दोष :—पृ. २०५ श्लो. ५१ के अनुसार सूर्य के नक्षत्र आर्द्रा से विवाह नक्षत्र उ. फा. तक गिनने पर ७ संख्या

हुई यह विषम संख्या है तथा व्यतीपात योग भी इस नक्षत्र में समाप्त हुआ है अतः एकार्गल दोष है।

उपग्रह दोष—पृ. २०६ श्लो. ५२ के अनुसार सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक की संख्या ७ होने से उपग्रह दोष है।

क्रान्तिसाम्य दोष—पृ. २०६ श्लो. ५३ के अनुसार चन्द्रमा की कन्याराशि से दोष सूचक मीनराशि में सूर्य के नहीं रहने से क्रान्तिसाम्य नामक दोष नहीं है।

दग्धातिथि दोष—पृ. २०७ श्लो. ५४ से ५५ के अनुसार मिथुन राशि गत सूर्य में अष्टमीतिथि दग्धा होती है यहाँ तो षष्ठी का विवाह है अतः दग्धा तिथि भी नहीं है।

मुहूर्त रेखा

पञ्चाङ्गों में अक्सर विवाह मुहूर्त में सामने रेखा लिखी हुई रहती हैं ये रेखायें इन्हीं वेधादि १० दोषों की सूचक होती हैं। दोष की सूचना ऐसी s टेढ़ी रेखा से और दोषों के अभाव की सूचना सरल। रेखा से मिलती है।

जैसे—आषाढ़ शुक्ला ६ मंगलवार सं० २०२८ को उ० फा० नक्षत्र में—

वेध	पात	युति	लता	जामित्र	पंचक	एकार्ग०	उपग्रह
।	s	।	।	।	s	s	s

क्रान्तिसाम्य	दग्धातिथि	ये दोष व गुण हैं।
।	।	

चूंकि सरल रेखा गुण (शुभत्व) की सूचक हैं अतः हम कहेंगे कि यह मुहूर्त्त ६ रेखा का है। ६ रेखा से १० रेखा तक के मुहूर्त्त उत्तरोत्तर शुभ रहते हैं।

विवाह लग्न का निश्चय

पञ्चाङ्गशुद्धि एवं दशदोष सुविचारित विवाह नक्षत्र के योग काल में रहने वाले लग्नों में से विवाह योग्य लग्न

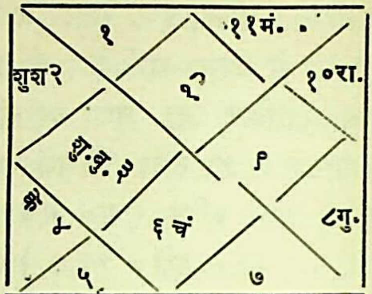
छाँटकर निश्चित किया जाता है। विवाह लग्न निर्धारण में सर्वप्रथम पृ. २०७ श्लो. १६० के अनुसार लग्न भंगद ग्रहों का विचार करना चाहिए। फिर, इष्ट रेखा प्रद ग्रहों का विचार पृ. २०८ श्लो. १६३ से करना चाहिए। जो लग्न पञ्चेष्ट ग्रहों से युक्त और शुभावलोकित हो तथा वर की जन्म राशि एवं जन्म लग्न से अष्टम न हो तथा जिसमें भंगद ग्रह न हों, अन्ध, काण, कुब्ज, पंगु, बधिर (पृ० २०९ श्लो० १६४ से १६७) कर्त्तरी (पृ० २१० श्लो० १६८) दोष से रहित हो वह लग्न विवाह में अच्छा माना गया है। अष्टम लग्न का दोष राशीशों की मैत्री अथवा एकाधिपत्य योग से दूर हो जाता है। अंध काणादि दोष लग्न अथवा लग्नेश गुर्वादि शुभग्रहों से दृष्ट या युक्त रहने पर दूर होते हैं। कर्त्तरी योग कारक ग्रह अपने शत्रु या नीच राशियों में हों अथवा अस्तङ्गत हों तो उनका दोष दूर हो जाता है। इसी प्रकार छठे शुक्र, ८ वें भौम ६, ८, १२ वें भावस्थ चन्द्र भी अस्त हों नीच या शत्रु राशि में हों तो दोषकारक नहीं रह जाते हैं।

चूंकि; आषाढ़ शुक्ल ६ भौमवार को रात्रि में ११ घं. १० मि. तक व्यतिपात योग है अतः तत्पश्चात् आने वाले मीन, मेष और वृष लग्नों की स्थिति पर विचार किया तो मीन लग्न रात्रि में बधिर होते हुए तथा सातवें चन्द्रमा रहते हुए भी गुरु दृष्ट होने से शुभ है अतः इसमें इष्ट ग्रहों का पृ० २०८ श्लो० १६३ के अनुसार विचार किया तो इष्टा ४ हुए।

मेष लग्न में ५ इष्टाः तो हैं, लेकिन; ६ ठा चन्द्र और ८ वां गुरु भंगद ग्रहों में होते हैं तथा लग्न शुभदृष्ट नहीं है अतः इससे कम इष्टाः होते हुए भी मीन लग्न ही श्रेष्ठ है। वृष लग्न में ३ इष्टाः हैं तथा मङ्गल और शनि भंगद ग्रह है । अतः इससे भी मीन लग्न ही उत्तम है

अतः मीन लग्न में इन दोनों वर कन्या का विवाह होगा यह निर्णीत हुआ ।

विवाह लग्नम्



वेदी के चारों ओर स्तम्भ (खूंटी) लगाने का विचार

सूर्येङ्गनासिंहघटेषु शैवे—
स्तंभोऽलिकोदंडमृगेषु वायौ ।
मीनाजकुंभे निऋतौ विवाहे
स्थाप्योऽग्निकोणे वृषयुग्मकर्के ॥१६४॥

अगर सूर्य सिंह, कन्या, तुलाराशि में हो तो पहली खूंटी (स्तम्भ) ईशानकोण में, वृश्चिक, धनु और मकर राशि के सूर्य में वायव्यकोण में, तथा कुम्भ, मीन, मेषराशि में सूर्य हो तो नैऋत्यकोण में तथा वृष, मिथुन, कर्क राशि के सूर्य में अग्निकोण में खूंटी लगायें ।

नई बहू से भोजन बनवाने का मुहूर्त्त

मृगोत्तरातिष्य कृशानु शाक्र
श्रुतित्रये ब्रह्म द्विदैव पौष्णे ।
शुभे तिथौ व्यारवौ प्रकुर्यान्नवा-
वधू नूतन पाक कर्म ॥१६५॥

मृगशिरा, तीनों उत्तरा, पुष्य, कृत्तिका ज्येष्ठ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी. विशाखा रेवती इन नक्षत्रों में शुभ तिथि में मंगल और रवि को छोड़कर शेष वारों में नई बहू से पहले पहल उसके ससुराल में भोजन बनवाना चाहिए ।

इति विवाह प्रकरणम् ।

अथ मुहूर्त्त परिच्छेदः

तत्रादौ मुहूर्त्त प्रयोजनम्

अवसर पठिता वाणी सुकाले च कृता कृषिः ।
शुभं भवति वै लोके न काले वितथं श्रमः ॥१॥

संसार में हम देखते हैं, कि; अवसर पर कही हुई बात और शुभमुहूर्त्त में (समय देखकर) की हुई खेती सफल होती है और असमय में करने पर ये दोनों ही व्यर्थ हो जाते हैं ।

ग्राह्य मुहूर्त्तः

तस्मात् परीक्ष्य कर्त्तव्यं मुहूर्त्तमुत्तरोत्तरम् ।
स्थूलात् सूक्ष्मो बली ज्ञेयः सुयोगः कुविनाशकः २

इसलिए मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है, कि; मुहूर्त्तकाल को परख कर (मुहूर्त्त विचार कर) कार्य करे । मुहूर्त्त उत्तरोत्तर बली होते हैं । स्थूल से सूक्ष्म वर्ष से मास, मास से पक्ष और पक्ष से दिन तिथि, नक्षत्रादि, दिनादि से मुहूर्त्त और मुहूर्त्त से लग्न विशेष बली होता है तथा सुयोग पड़जाने से कुयोग का नाश होता है ।

मुहूर्त्त मानम्

पलैः षष्टिर्घटी प्रोक्ता मुहूर्तो घटिकाद्वयन् ।
तत् त्रिंशता त्वहोरात्रमानं विज्ञैः प्रकीर्तितम् ॥३॥

साठ पल की १ घड़ी होती है । और २ घड़ी का एक मुहूर्त्त होता है तथा ३० मुहूर्त्त का एक अहोरात्र होता है ऐसा विज्ञजनों ने कहा है ।

मुहूर्त्तों के नाम

रौद्रः कुंडलिमित्र पित्र्य वसुवार्विश्वेऽभिजित्कस्वराट्
द्वीशा राक्षस नीरपार्यमभगाः प्रोक्ताःमुहूर्ताः दिने।
रौद्रोऽजांघ्रिभतोऽष्ट चादिति गुरु विष्णूरविस्त्वष्ट्रको
वायू रात्रिषु प्रोक्तमेषु च मितिस्तिथ्यंशकोऽहर्निशोः

१-शिव २-सार्प ३-मित्र ४-पित्र्य ५-वसु ६-अम्बु ७—विश्वेदेव ८—अभिजित् ९—ब्रह्मा १०—इन्द्र ११—इन्द्राग्नी १२—निशाचर १३—जलाधीश १४—अर्यमा १५—भग। ये दिन में १५ मुहूर्त्त क्रमशः होते हैं। रात्रि में १-शिव २-अजैकपाद ३-अहिर्बुध्न्य ४-पूषा ५-दस्र ६-यम ७-वह्नि, ८-ब्रह्म ९-चन्द्र १०-अदिति ११-गुरु १२-विष्णु १३- सूर्य १४-त्वष्टा १५-वायु क्रमशः होते हैं।

मुहूर्त्त क्या है ?

मुहूर्त्त विचार में जैसे एक अहोरात्र में चन्द्रमा सभी दिशाओं में वास करता है और एक अहोरात्र में सभी ग्रहों की काल होराएँ बीतती हैं उसी प्रकार एक अहोरात्र में अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों का चक्र तथा आर्द्रा और रोहिणी नक्षत्र का चक्र और अधिक मानकर ३० मुहूर्त्त माने गये हैं।

चूंकि; दिनों के हिसाब से नक्षत्र २७ वें या २८ वें दिन पड़ेगा तब तक किसी शीघ्र (आवश्यक) कार्य के लिए विशेष नक्षत्र की प्रतीक्षा न करनी पड़े इसी उद्देश्य से यह मुहूर्त्त कल्पना चली है।

(दिन में)

सं०	मुहूर्तनाम	नक्षत्र
१	शिव	आर्द्रा
२	सार्प	आश्लेषा
३	मित्र	अनुराधा
४	पितृ	मघा
५	वसु	धनिष्ठा
६	अम्बु	पू. षा.
७	विश्वेदेव	उ. षा.
८	अभिजित्	अभिजित्
९	ब्रह्मा	रोहिणी
१०	इन्द्र	ज्येष्ठा
११	इन्द्राग्नी	विशाखा
१२	निशाचर	मूल
१३	जलाधीश	शततारका
१४	अर्यमा	उ. फा.
१५	भग	पू. फा.

मुहूर्त-देवता-नक्षत्र संज्ञा चक्रम्

(रात्रि में)

सं०	मुहूर्त्त नाम	नक्षत्र
१	शिव	आर्द्रा
२	अजैकपाद	पूर्वाभाद्रपद
३	अहिर्बुध्न्य	उत्तराभाद्रपद
४	पूषा	रेवती
५	दस्र	अश्विनी
६	यम	भरणी

७	वह्नि	कृत्तिका
८	ब्रह्मा	रोहिणी
९	चन्द्र	मृगशिरा
१०	अदिति	पुनर्वसु
११	गुरु	पुष्य
१२	विष्णु	श्रवण
१३	सूर्य	हस्त
१४	त्वष्टा	चित्रा
१५	वायु	स्वाती

मुहुर्त प्रयोजनम्

यस्मिन् ऋक्षे हि यत्कर्म कथितं निखिलं च तत्।
तद्दैवत्ये तन्मुहूर्त्ते कार्यं यात्रादिकं सदा ॥५॥

जिस नक्षत्र में जो भी यात्रादि कार्य करने योग्य (पृ. ९९ श्लो. १४ से पृ. १०२ श्लो. २६ तक या अन्य ग्रन्थों में भी) बतलाये गये हैं वे सब कार्य उन नक्षत्रों के अधीन मुहुर्त्तों में भी करना चाहिए। जैसे किसी को दिन नक्षत्र कृत्तिका में हाथी पर चढ़ना है, चूँकि, गजारोहण में चर (स्वा. पुनः श्र. ध. श.) और तिर्यङ् मुख (पुन. अनु. ज्ये. ह; चित्रा; स्वा; मृग, रे; अ;) नक्षत्र गृहीत हैं अतः वह व्यक्ति उस दिन दिनमें मित्र, शिव, इन्द्र, वसु जलाधीश इन मुहूर्त्तों में गजारोहण कर सकता है।

निषिद्ध मुहूर्त

मनुं, रवि खगोन्मितं, श्रुतिमितं, त्वणं चाष्टमं
तथा रविरसोन्मितं, श्रुतिखगौ, द्विचन्द्रोन्मितौ।
रविप्रभृति वासरे त्वथ सितेन्दु रात्र्यष्टमं
कुजस्य निशिसप्तमं परिहरेच्छुभार्थी बुधः ॥६॥

राव प्रभृति वारों में क्रमशः रविवार को १४वाँ, व सोम को १२ वाँ और नवाँ, मंगलको ४था, बुधको ८वाँ गुरू को १२ वां और छठवां, शुक्रवारको ४था और नौवां तथा शनिवारको २रा और १ पहला मुहूर्त्त वर्ज्य है तथा सोम और शुक्र को रात्रि में ८ वां तथा मंगल की रात्रि में ७ वां मुहूर्त भी शुभार्थी त्याग देवें।

वारेषु वर्जित मुहूर्त चक्रम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
१४	१२ ९	४	८	१२ ६	४ ९	२ १	दिवा
+	८	७	+	+	८	+	रात्रि

अभिजित्प्रशंसा

दिनमध्येऽभिजित्संज्ञे दोषमध्येषु सत्यपि।
सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥७॥

अनेक दोषों के रहते हुए भी दिन के मध्य में होने वाले अभिजित् संज्ञक मुहूर्त्त में सभी शुभकार्य कर लेने चाहिए। केवल दक्षिणदिशा की यात्रा अभिजित् मुहूर्त्त में नहीं होती है।

अभिजिन्मुहूर्त के शुभत्व का रहस्य

अभिजित् मुहूर्त्त के समय भगवान् सूर्य मध्याकाश में अपने पूर्ण तेज से चमकते रहते हैं। उनके प्रबल होने से 'सर्व दोषान् रवि र्हन्ति' नियमानुसार सभी ग्रहों का दोष नष्ट हो जाता है। दूसरे, अभिजित् मुहूर्त्त के पूर्व विश्वेदेव और

बाद में (आने वाला) ब्रह्म मुहूर्त है, जो कि शुभ है अगर अभिजित् मुहूर्त काल साधन में कुछ गड़बड़ी हो भी जाय तो भी कोई कुफल नहीं होता है। सूर्य के काल बली होने के कारण ही कार्तिक मास में अभिजित् मुहूर्त में होने वाले बालक तेजहीन न होकर तेजस्वी होते हैं।

वृक्षारोपण-मुहूर्त

शतद्वीशमूलान्त्यचित्रानुराधा-
मृगत्र्युत्तराधातृहस्ताश्विपुष्ये ।
भवेद्वृक्षवल्ल्यादिरोपः प्रशस्तः
सिते शीतगौ सौम्यशुक्रे सुरेज्ये॥८॥

वैशाखे श्रावणे मार्गे कार्तिके फाल्गुने तथा ।
एते साधारणाः मासाः वृक्षस्यारोपणे शुभाः ॥९॥

शतभिषा, विशाखा, मूल, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, और पुष्य नामक नक्षत्रों में सुदी पक्ष तथा शुक्र, चन्द्र, बुध और बृहस्पतिवार तथा वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, कार्तिक फाल्गुन ये मास वृक्ष-लता आदि लगाने में शुभ हैं। अब ब्रह्मयामलोक्त वृक्ष चक्र कहते हैं।

वृक्ष-चक्र विचार

सूर्यभाद्दिनभं यावद् वृक्षचक्रं विचारयेत् ।
त्रीणि मूले भवेद्रोगस्त्वचि त्रीणि धनागमः ॥१०॥
शाखायां वेदनाशः स्यात्पत्रे युग्मं दरिद्रता ।
शीर्षे त्रीणि शुभं प्रोक्तं पूर्वमेकं तु मृत्युदम् ॥११॥

यम्ये पञ्च सुतो नाशः पश्चिमे द्वे धनप्रदे ।
उत्तरे वेदलाभः स्यात्तदुक्तं ब्रह्मयामले ॥१२॥

गोचरगत सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनने में तीन नक्षत्र वृक्ष की जड़ में रखें, वे रोगप्रद होते हैं। उसके बाद के तीन नक्षत्र त्वचा में रक्खें, वे धन प्राप्ति कराते हैं। पुनः चार नक्षत्र शाखा में नाशप्रद, फिर दो नक्षत्र पत्र में दरिद्रता कारक, उससे अग्रिम तीन नक्षत्र शिर में रखें वे शुभ-प्रद होते हैं। फिर एक नक्षत्र पूर्व में मृत्युसूचक, दक्षिण में पाँच नक्षत्र पुत्रनाशक और दो नक्षत्र पश्चिम में धनदायक हैं, तथा चार नक्षत्र उत्तरदिशा में रखें, वे लाभप्रद हैं।

सूर्य के नक्षत्र से सफल वृक्ष चक्र

मूल	त्वचा	शाखा	प.	शीष	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	स्थान
३	३	४	२	३	१	५	२	४	नक्षत्र
रोग-प्रद	धना-गम	नाश-प्रद	दरि-द्रता	शुभ-प्रद	मृत्यु-प्रद	पुत्र-नाश	धन-प्रद	लाभ-प्रद	फल

गौओं का क्रय विक्रय मुहूर्त

शक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ।
अश्विपूषभयुतेषुविधेयोविक्रयःक्रयविधिःसुरभीणाम्१३

गौओं के लेने और बेचने में ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शतभिषा, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती, ये नक्षत्र शुभ होते हैं।

पशुओं के लेनदेन व प्रवेश तथा यात्रा में वर्ज्य

न रिक्ताष्टमीदर्शभौमेषु चित्रा
श्रुतित्र्युत्तरे रोहिणीषु प्रकामम् ।
पशूनां प्रवेश प्रयाणस्थितिञ्च
प्रकुर्वन्ति धीराः कथंचित् कदाचित् ॥१४॥

रिक्ता (४।९।१४) अष्टमी, अमावस्या, मङ्गलवार, चित्रा, श्रवण, तीनों उत्तरा और रोहिणी नक्षत्र में कभी भी और किसी भी प्रकार से विद्वान लोग पशुओं का लेन देन प्रवेश तथा यात्रा सम्बन्धी कोई भी कार्य नहीं करते हैं ।

पशु-क्रय-विक्रय-मुहूर्त

पूर्वामैत्रद्वयं मूलं वासवं रेवती करः ।
पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥१५॥

तीनों पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, पुनर्वसु और पुष्य ये नक्षत्र गौ आदि सभी किस्म के पशु बेचने तथा खरीदने में ग्राह्य हैं ।

हल-प्रवाह-मुहूर्त

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले ।
लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे
कर्काजैणधटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा १६

मूल, विशाखा, मघा, एवं चर, ध्रुव, मृदु और क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में हल-प्रवाह करना शुभ है । रविवार और शनिवार इसमें वर्जित हैं । पापग्रह निर्बल और चन्द्रमा जलराशि के

नवांश में हो तथा शुक्र, और चन्द्रमा सबल हों एवं लग्न में बृहस्पति हो तो शुभ है। हल चलाने में सिंह, कुम्भ, कर्क मेष, मकर और तुला, ये लग्न तथा रिक्ता (४।६।१४) और षष्ठी तिथि न हों, क्योंकि, ये नाशक होती हैं।

बीजोप्ति-मुहूर्त

एष्वेव श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना
बीजोप्तिर्गदिता शुभा त्वशुभतोष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः।
रामेन्द्वग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युप्तौ हलेऽर्कोज्झिता-
द्भाद्रामाष्टनवाष्टभानि मुनिभिःप्रोक्तान्यसत्सन्तिच १७

हलप्रवाह मुहूर्त में जो नक्षत्रादि पहले बतलाये गये हैं उनमें श्रवण, शतभिष, पुनर्वसु और विशाखा इन नक्षत्रों एवं मङ्गलवार को छोड़कर बीजोप्ति (बीज बोना) करना चाहिए। अब बीजोप्ति चक्र कहते हैं :—

गोचर में राहु के नक्षत्र से अभीष्ट दिन के नक्षत्र तक गिन कर बीजवपन चक्र विचारें पहले आठ नक्षत्र अशुभ हैं, फिर तीन शुभ हैं, इसके बाद का एक अशुभ है, फिर तीन शुभ हैं, पुनः एक अशुभ है, तत्पश्चात् तीन शुभ हैं, फिर एक अशुभ है, फिर तीन शुभ और चार नक्षत्र अशुभ होते हैं।

राहुभात् बीजाप्ति-चक्र

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अ.	श.	अ	श.	अ.	श.	अ.	श.	अ	फल

भूमि के रजोदिन

रवौ रौद्राद्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्र बीजवापं परित्यजेत् ॥१८॥

जिस प्रकार स्त्रियाँ गर्भ धारण के पूर्व मासिक धर्म में रजस्वला होती हैं उसी प्रकार पृथ्वी, नदी गवादि पशु भी रजोयुक्त हैं पृथ्वी का रजो दर्शन काल जब आर्द्रानक्षत्र में सूर्य का प्रवेश होता है तब से तीन दिन तक होता है उसमें बीजोप्ति (बीज बोना) शास्त्रों ने वर्जित किया है।

धान्य-छेदन-(धान काटने का) मुहूर्त

तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दु-
स्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये ।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने १९

धान की कटाई में शनि और मङ्गलवार तथा रिक्तातिथि को छोड़कर तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तथा पूर्वाभाद्रपद, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़ा भरणी, चित्रा और पुष्य नक्षत्र और स्थिर लग्न शुभ हैं।

हल-चक्र-विचार

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्च त्रिभिः पञ्च त्रिभिर्द्वयम् ।
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिवृद्धी हले क्रमात् ॥२०॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनकर हल-चक्र का विचार करें। अगर सूर्य के नक्षत्र से ३ नक्षत्रों के भीतर दिन नक्षत्र हों तो हानि, उससे आगे वाले ३ नक्षत्रों में वृद्धि, पुनः ३ नक्षत्रों में हानि, पुनः ५ में वृद्धि पुनः ३ में हानि पुनः ५ में वृद्धि फिर ३ में हानि, फिर २ में वृद्धि होती है। हल चलाने में इसको विचारें।

३	३	३	५	ः	५	३	२	नक्षत्र
हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	फल

अन्य मतेन धान्य-छेदन-मुहूर्त

पूर्वोत्तरामघाश्लेषाज्येष्ठार्द्राश्रवणद्वये ।
भरणीद्वितये मूले मृगे पुष्ये करत्रये ॥
धान्यच्छेदः शुभो रिक्तां हित्वा भौमशनैश्चरौ ।२१।

तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, मघा, आश्ले, ज्ये०, आर्द्रा, श्रवण, ध०, भ०, कृ०, मू०, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चि, और स्वा, इन नक्षत्रों में रिक्त ४ । ९ । १४ तिथि, मङ्गल और शनिवार को छोड़कर धान्यच्छेदन शुभ है

सस्य-रोपण (धान की रोपनी का) मुहूर्त्त

हस्तत्रयोत्तरामूले धनिष्ठारोहिणीमृगे ।
पुष्याश्विन्यनुराधायां मघायां शुभवासरे ।
त्यक्त्वा रिक्तां शनिं भौमं सस्यस्याङ्कुररोपणम् ।२२

ह, चि, स्वाती, तीनों उत्तरा, मू, धनिष्ठा, रोहिणी, मृग, पुष्य, अश्विनी, अनु, और मघा इन नक्षत्रों में तथा शुभ वारों में धान का लगाना शुभ है । रिक्तातिथि, शनिवार और मङ्गलवार धान लगाने में त्याज्य हैं ।

धान, वृक्ष, लता आदि के सींचने का मुहूर्त्त

सस्यारोपोदिते काले हित्वा ज्ञार्कं मघा करम् ।
वृक्षसस्यलतादीनां प्रशस्तं जलसेचनम् ॥२३॥

धान लगाने में जो नक्षत्र आदि कहे गये हैं, उनमें बुध इतवार तथा मघा और हस्त नक्षत्रों को छोड़कर के वृक्ष लता आदि को सींचना शुभ है।

कण मर्दन- मुहूर्त्त

अनुराधाश्रवे मूले रेवत्यां च मघात्रिभे ।
ज्येष्ठायां चैब रोहिण्यां शुभं स्यात्कणमर्दनम् ।२४।

अनुराधा, श्रवण, मूल, रेवती, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा और रोहिणी इन नक्षत्रों में कण-मर्दन (अन्न गाःना) शुभ है।

अन्न को खत्ती या कोठे में रखने का मुहूर्त्त

पुनर्भे मृगशीर्षेऽन्त्येऽनुराधा श्रवणत्रये ।
हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥
गुरौ शुक्ररवीन्द्वोः सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणम्॥२५॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, रोहिणी और तीनों उत्तरा नक्षत्रों में गुरु, शुक्र, रविवार और सोमवार इन दिनों में बखारी, खत्ती, कोठी, डहरा आदि में धान्य या अन्न को रखना शुभ होता है।

नवान्न भक्षण का मुहूर्त्त

नवान्नं स्याच्चर क्षिप्र मृदुभे सत्तनौ शुभम् ।
विनानन्दाविषघटी मधुपौषार्कि भूमिजान् ॥२६॥

नन्दा (१।६।११) तिथि, विष घटी (पृ. १९,६१,१०३ चैत्र और पौष मास तथा शनि और मङ्गलवार छोड़कर चर (पृ. ९९) मृदु (पृ. १००) क्षिप्र (पृ १००) नक्षत्रों

में शुभ ग्रह युक्त शुभ लग्नों में नवीन अन्न का भक्षण (नया अनाज खाने का) मूहूर्त्त शुभ होता है। इसमें केवल मात्र विष घटी पाठ होने से तिथि, वार नक्षत्र सबकी विषघटी त्यागनी चाहिए, ऐसा भी कुछ लोगों का मत है एवं बहुत से टीकाकार केवल तिथियों की ही विष घटी त्याज्य बतलाते है। मेरे मत में यथा शक्य त्याग करना चाहिए, न कर सकें; तो केवल तिथिगत विष घटी का त्याग तो अवश्य करें।

नवान्नचक्र विचार

बुधर्क्षात्पुत्रपुत्रेषु पुत्रवेदद्वयेन्दुकैः ।
सच्छुभं शुभमर्थघ्नं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात् ॥
नवान्नचक्रं ज्ञातव्यं कथितं गणकोत्तमैः ॥२७॥

गोचर में बुध जिस नक्षत्र में बैठा हो वहाँ से दिन के नक्षत्र तक पहले ५ नक्षत्र शुभ, पुनः ५ नक्षत्र शुभ, तत्पश्चात् पुनः ५ नक्षत्र शुभ, इसके बाद ५ नक्षत्र अथनाशक, पुनः ४ नक्षत्र शुभ तथा २ नक्षत्र अशुभ और १ नक्षत्र शुभ फल दायक होता है ऐसा श्रेष्ठ ज्योतिषियों द्वारा कथित 'नबान्न चक्र है।

बुधभात् नवान्न चक्रम्

नक्षत्र	५	५	५	५	४	२	१	२७ नक्षत्र
फल	शुभ	शुभ	शुभ	धननाश	शुभ	अशुभ	श्रेष्ठ	कुलसंख्या

काष्ठादि-स्थापन (वटोड़े) का विचार

सूर्य र्क्षाद्रसभैरधः स्थलगतैः पाको रसैः संयुतः
शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैः सर्पभीः ।

प्रागाशादिषु वेदभै स्वसुहृदां स्यात्सङ्गमो रोगभीः
क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने२८

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनकर छः नक्षत्र काष्ठ के नीचे धरातल पर स्थापित करे। उसका फल भोजन (पाक) रसों से संयुक्त होता है। फिर दो नक्षत्र शिरके स्थान में रखे। इसका फल संचित काष्ठ मुर्दा के दाह में काम आयेगा, पुनः काष्ठ मध्य में चार नक्षत्र देवे उसका फल संग्रह कर्ता को सर्प का भय होगा। तत्पश्चात् पूर्व आदि चारों दिशाओं में चार-चार नक्षत्र रखे, उसका फल निम्न है-पूर्व में मित्रों से मिलन और दक्षिण में रोग, पश्चिम में भी रोग निमित्त दवा में उसका इंधन लगता है। उत्तर में हो तो सुख भिलेगा। पञ्चक में काष्ठ संग्रह नहीं होता है अतः पञ्चक रहित दिन नक्षत्र होना चाहिए।

काष्ठादि स्थापन चक्रम्

अधो-भाग	शिरो-भाग	मध्य भाग	पूर्व-दिक्	दक्षिण-दिक्	पश्चिम दिक्	उत्तर-दिक्	स्थान
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
रसपाक	शवदाहक	सर्पो का भय	मित्र मिलन	रोग भीति	दवाय करण	सुख प्राप्ति	फल
शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभाशुभ

ईख पेरने का मूहूर्त्त

वेदद्विनेत्र भूभूतबाणहस्तरसाः क्रमात् ।
प्रथमे च भवेल्लक्ष्मीर्द्वितीये हानिरेव च ॥२६॥
तृतीये सर्वलाभश्च चतुर्थे च क्षयस्तथा ।
पञ्चमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभं स्मृतम् ॥३०॥
सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यदः ।
सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षुयन्त्रेण योजयेत् ॥३१॥

इक्षु-पीड़न यन्त्र चक्रम्

भागाः	नक्षत्र संख्या	फलानि
प्रथमभागे	४	लक्ष्मी प्रदानि
द्वितीयभागे	२	हानिदौ
तृतीयभागे	२	सर्वलाभ कारकौ
चतुर्थभागे	१	क्षय कारकः
पञ्चमभागे	५	मृत्यु कारकाः
षष्ठभागे	५	शुभ कारकाः
सप्तमभागे	२	पीडा प्रदौ
अष्टमभागे	६	धन-धान्य सूचकाः

चीनी की मिल शुरू करने में या गन्ना पेराई करते समय

इसका विचार करें। गोचर में सूर्य-नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनकर फल आठ भाग में जानना चाहिए। प्रथम भाग में चार नक्षत्रों का फल लक्ष्मी प्राप्ति है। दूसरे भाग में दो नक्षत्रों का फल हानि है। तीसरे भाग में दो नत्रत्र लाभकारी हैं। चौथे भाग में एक नक्षत्र क्षयसूचक है। पाँचवें भागके पाँच नक्षत्र मृत्युके कारक हैं। छठे भाग में पाँच नक्षत्र शुभकारक होते हैं। सातवें भाग में दो नक्षत्र पीड़ाकारक हैं। अष्टम भाग में छः नक्षत्र धनधान्यप्रद होते हैं।

तैल के कोल्हू चलाने का मुहूर्त्त

सूर्यनक्षत्रमारभ्य गणयेद्दिनभावधिम्।
त्रयं मूलेऽधरे पञ्च दक्षे पञ्च विधीयते ॥३२॥
शीर्षे त्रयं त्रयं शैले शेषं कर्तरि उच्यते।
शुभं मूलेऽधरे धान्यं दक्षे पीडा विधीयते ॥३३॥
शीर्षे नाशश्च शैलेऽपि चर्चरा कर्तरिस्तथा ॥३४॥

गोचर में सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर कोल्हू चक्र का विचार किया जाता है। शुरू के तीन नक्षत्र जड़ के स्थान में रखें। फिर पाँच नक्षत्र मध्य भाग में देवे पुनः पाँच नक्षत्र दाहिनी तरफ धरें। फिर तीन नक्षत्र सिर पर रखें तथा तीन नक्षत्र शैल पर धरें और आठ बचे हुए नक्षत्रों को कर्तरी में रखमा चाहिए अगर आप का दिन नक्षत्र मूल में पड़ता है तो शुभ, अधर में पड़ता है तो धान्य मिलेगा। दक्षिण हिस्से में पड़ेगा तो पीड़ा होगी, सिर पर पड़ेगा तो नाश करेगा। इसी प्रकार शैल प भी नाशक होता है और कर्तरी में पड़ेगा तो कोल्हू में चर्चराहट ज्यादा रहती है। यह मुहूर्त्त तैल मिल बैठाने में भी विचारें

तैल की घानी (कोल्हू) चक्र

मूल (जड़	अधर (मध्य)	दक्षिण भाग	शीर्ष स्थान	शैल	कर्तरी	स्थान
३	१	५	३	३	८	नक्षत्र
शुभ	धान्य	पीड़ा	नाश	नाश	चर्चराहट	फल

अन्य मतेन घूर्णा चक्रम्

घूर्णचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चान्द्रमेव च ।
त्रीणि त्रीणि त्रयः त्रीणि त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा ३५
त्रीणि त्रीणि तु भान्यत्र योजयेद् घूर्णचक्रके ।
हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशो द्रव्यमेव च ॥३६॥
स्वामिघातोऽपि निर्धनता मृत्युरेव सुखं क्रमात् ।

गोचर गत सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र (चन्द्र नक्षत्र) तक गणना करके तीन तीन के समूह में नक्षत्रों को नौ भागों में रखें और फल का विचार करें । अगर दिन का नक्षत्र सूर्य नक्षत्र से तीन नक्षत्र के भीतर पड़ता होतो हानि, बाद वाले तीन नक्षत्र में पड़ता हो तो ऐश्वर्य, पुनः ३ नक्षत्र आरोग्यता, तत्पश्चात् ३ नक्षत्र विनाश के सूचक, फिर ३ नक्षत्र द्रव्य दायक, पुनः ३ स्वामिघात, फिर ३ नक्षत्र निर्धनता, इसके आगेवाले ३ नक्षत्र मृत्यु (कष्ट) फिर ३ नक्षत्र सुख के सूचक होते हैं ।

घर की सफाई कराने का मुहूर्त्त

सूर्यभाद्राम रामाङ्ग राम तर्काङ्गिभेषु च।
असच्छुभं क्रमाज्ज्ञेयं मार्जनी चक्र संज्ञके ॥३७॥
हरिः सूर्यचित्रादिति मंत्रपुष्ये
मृगे धातृदस्रे विरिक्ते च भौमे।
त्यजेत्कुम्भमीनौ ह्यलिं गेहशुद्धौ
पवित्रार्थमेतद्रवेर्यामलोक्तिम् ॥ ३८ ॥

पञ्चाङ्ग में दिए हुए सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनकर देखें कि चन्द्रमा का नक्षत्र अगर प्रथम तीन नक्षत्रों में है तो वह अशुभ है। फिर तीन नक्षत्र शुभ हैं, फिर छः नक्षत्र अशुभ हैं, फिर तीन नक्षत्र शुभदायक हैं। फिर छः नक्षत्र अशुभकारक हैं, फिर छः नक्षत्र शुभप्रद हैं। यह मार्जनी नामक चक्र गृह के मार्जनी अर्थात् झाड़ू का चक्र है जिसका विचार होली, दिवाली, शादी में घर की सफाई कराते समय करना चाहिए घर की सफाई पुताई में श्रवण, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अनुराधा, पुष्य, मृगशिरा, रोहिणी, अश्विनी ये नक्षत्र ग्राह्य हैं तथा रिक्ता तिथि, मङ्गलवार और कुम्भ, मीन, वृश्चिक लग्न छोड़कर अन्य तिथि और वार लग्न श्रेष्ठ होते हैं। झाड़ू खरीदते समय भी विचारें।

सूर्यभात् मार्जनी-चक्रम्

३	३	६	३	६	६	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फल

सूर्य भात् चुल्ली-चक्र विचार

सूर्यभाद्वेदनाशाय वेदसंख्या सुखाय च ।
रससंख्या च दारिद्र्यं वेदसंख्या पुनः सुखम् ॥३९॥
बाणसंख्या स्त्रियाः नाशः पुत्रलाभश्च शेषके ।
चुल्लिचक्रं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं गर्गभाषितम् ॥४०॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनकर चुल्ली-चक्र का विचार करना चाहिए। सूर्य से प्रथम चार नक्षत्रों में दिन नक्षत्र हों तो वह नाशप्रद है, फिर चार नक्षत्रों में सुखप्रद है। पुनः छः नक्षत्रों में पड़ता हो तो दारिद्र्य सूचक है, तत्पश्चात् चार नक्षत्रों में सुखद है, इसके बाद पाँच नक्षत्र स्त्रीनाश के हैं, शेष चार नक्षत्रों में पुत्र-लाभफल कहा गया है। चुल्ली स्थापन में वह्निवास देखना चाहिए ऐसा भी कुछ ग्रंथकार मानते हैं, किन्तुः अधिकांश ग्रन्थों को यह मत अमान्य है।

चुल्ली-चक्रम्

४	४	६	४	५	४	नक्षत्र
नाश	सुख	दारिद्र्य	सुख	स्त्रीनाश	पुत्रलाभ	फल

मतान्तरेण चुल्ली चक्रम्

सूर्यभादङ्गवेदाष्ट राम शत्रु शुभाशुभम् ।
चुल्ही चक्रे क्रमाज्ज्ञेयं शुभा शुभ विचक्षणैः ॥४१॥

मुहूर्त विचारते समय पञ्चाङ्ग में जिस नक्षत्र में सूर्य दिया गया है उससे दिन नक्षत्र तक गिनकर नक्षत्रों को

६ । ४ । ८ । ३ । ६ के समूह में बाँटकर रखे और उसका फल शुभ और अशुभ क्रमशः समझें जैसे सूर्य से प्रथम छः नक्षत्र शुभ फिर ४ अशुभ इसके बाद फिर ८ शुभ ३ नक्षत्र अशुभ और तत्पश्चात् ६ नक्षत्र शुभ होते हैं।

वारानुसारेण चुल्ली स्थापन फलम्

रविवारे भवेद्रोगः सोमे धनक्षयं भवेत् ।
भौमवारे मृतेर्भीतिः बुधे लाभो सदा भवेत् ॥४२॥
गुरुवारे भवेल्लक्ष्मीं शुक्रे धान्यादिकं बहु ।
शनिवारे दरिद्रत्वं चुल्ली स्थापनजं फलम् ॥४३॥

रविवार को रोग, सोमवार धन नाशक, मंगल को भय बुधवार को लाभ, गुरू को भी लाभ, शुक्र को बहु धान्य शनि को दरिद्रता यह नया चुल्ला बनाने का फल है।

शय्या निर्माण मुहूर्त्त

रोहिणी चोत्तरा ज्ञेया हस्तपुष्यपुनर्वसुः ।
अनुराधाश्विनी शस्ता खट्वानिर्माणकर्मणि ॥४४॥
शुभे योगे शुभे वारे विदध्यात्खट्वकां नरः ।
मृताशौचे पञ्चकेषु रिक्तामा विष्टिवैधृतौ ॥४५॥
पितृपक्षे श्रावणे च भाद्रे मास्यशुभेऽहनि ।
वर्जयेद्भौममन्दे च खट्वानिर्माणकं सदा ॥४६॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, ह० पुष्य० पुन० अनु० अश्विनी ये नक्षत्र शुभ योग और शुभ वार खट्वानिर्माण में शुभ है। तथा मृत्युकालिक सूतक, रिक्तातिथि (४ । ९ । १४) अमावस्या भद्रा, वैधृति, पितृपक्ष, श्रावण और भाद्रपद, एवं

अशुभ दिन (जिस दिन कोई उत्पात हुआ हो, वह दिन) मङ्गल और शनिवार शय्या-निर्माण में वर्जित हैं।

खट्वा चक्र विचार

सूर्यर्क्षाच्चतुष्कं हि देयं धिष्ण्यं तु मस्तके।
कोणयोरष्ट नक्षत्रं शाखायामष्ट संख्यकम् ॥४७॥
खट्वा मध्ये त्रिकं चैव वेद संख्या च पादयोः।
इत्थं खट्वा फलं चक्रे ज्ञेयं तत्र शुभा शुभम् ॥४८॥
मस्तके च शुभं ज्ञेयं कोणयोरष्ट मृत्युदम्।
शाखाष्टर्क्षंशुभं प्रोक्तं त्रिकं मध्येसुखप्रदम् ॥
खट्वायां सौरमासेषु धनुं मीनं विवर्जयेत्।
पादेषु वेद नक्षत्रं हानिः मृत्यु भयप्रदम् ॥५०॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनकर खट्वाचक्र विचारना चाहिए। सूर्य नक्षत्र से मस्तक में चार नक्षत्र धर देवे, उसका फल शुभ है। फिर कोणों में इसके आठ नक्षत्र देवे उसका फल मृत्यु भय कारक होता है। पुनः शाखा में उससे आगे वाले आठ नक्षत्र शुभ हैं। फिर मध्य में तीन नक्षत्र शुभ होते हैं। पाद में चार नक्षत्र हानि, मृत्यु और महाभय देनेवाले हैं। खाट बनाने में सौर महीनों में धनु और मीन वर्जित हैं।

खट्वा-चक्रम्

मस्तक	कोहू	शाखा	मध्य	पाद	अङ्ग
४	८	८	३	४	नक्षत्र
शुभ	मृत्यु	शुभ प्रद	शुभ	हानि, मृत्यु, महाभय	फल

पशुओं के लिए चरणी (चरही) बनाने का मुहूर्त

स्वामि हस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम् ।
वसुभिश्च हरेद्भागं शेषाङ्के फलमादिशेत् ॥५१॥
पशुहानिः पशोर्नाशः पशुलाभः पशुक्षयः ।
पशुरोगः पशोर्वृद्धिः पशुभेदः पशोश्चयः ॥५२॥

पशु के स्वामी के हस्त प्रमाण से पशुओं के चारे के निमित्त बनने वाली चरणी की लम्बाई-चौड़ाई का जोड़ कर आठ का भाग देने से जो शेष अङ्क बचे उसके अनुसार फल जानना चाहिए। अगर शेष एक बचे तो पशुहानि दो शेष बचें तो पशुनाश, तीन बचें तो पशुलाभ, चार बचें तो पशुक्षय, पाँच बचें तो पशुरोग, छः शेष बचे तो पशुओं की बढ़ोतरी होगी। सात शेष रहने पर पशुओं में भेद होगा और शून्य शेष बचने पर पशुओं का संग्रह होगा।

मोटर रथादि का मुहूर्त

रथकर्मशुभं क्षिप्रमृदुब्राह्मेन्द्रभैश्चरैः ।
सौम्योदये शुभे वारे रविवारे विशेषतः ॥५३॥

क्षिप्र (पृ० १०० श्लो० १७) मृदु (पृ० १०० श्लो० १९) रोहिणी, ज्येष्ठा, एवं चर (पृ० ९९ श्लो० १५) संज्ञक नक्षत्रों एवं शुभ लग्न तथा शुभ वार विशेषतः रविवार में मोटर, रिक्सा, आदि का चलाधा शुभ है।

रहट कर्म मुहूर्त

अदिति क्षिप्र मृदु ध्रुव संज्ञके
भृगुज वाक्पति पूर्ण जयातिथौ ।
शकट नाव सुखासन शिल्पकं
भ्रमण कार्यरहंटक सिद्धिदम् ॥५४॥

पुनर्वसु, क्षिप्र, (पृ० १०० श्लो० १७ मृदु, (पृ० १०० श्लो० १८) ध्रुव, (पृ० ९९ श्लो० १४) संज्ञक नक्षत्र शुक्र और गुरुवार, पूर्णा (५।१०।१५) और जया (३ ८ १३) तिथियों में गाड़ी (बैल, घोड़ा, मोटर, गाडी आदि) नाव, चौकी, कुर्सी सिंहासनादि शिल्पकर्म की वस्तु और यात्रा अथवा चल कार्य (प्रेस की रिपोर्टरी, डाक सम्बन्धी, याता-यात, निर्यात सम्बन्धी) तथा रहंट चलाना शुभ है ।

ईंटे के भट्टे का मुहूर्त

उत्तराश्विश्रवे पुष्ये ज्येष्ठान्त्ये रोहिणी करे ।
स्थिरेऽङ्गेऽर्के गुरौ मन्दे इष्टिका करणं शुभम् ५५॥

तीनों उत्तरा, अश्विनी, श्रवण, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी और हस्त नक्षत्रों में, स्थिर लग्न, रवि, गुरु और शनि-वार के दिन ईंट पाथना या ईंटों के भट्टे का काम चालू करना शुभ होता है ।

नौका (जलयान) सम्बन्धी मुहूर्त

शुभाहे विष्णु युग्मेन्द्र मृगमैत्राश्विपाणिषु ।
चालनं घट्टनं स्थानान्नावं शुभ तिथीन्दुषु ॥५६॥

सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार तथा श्रवण, धनिष्ठा, ज्येष्ठा मृगशिरा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त नक्षत्र, तथा शुभ

तिथि (रक्ता, अमा पर्व दिन छोड़कर) और चंद्रमा के बली रहने पर नावों का (सभी प्रकार के जलयानों का) बनाना और चलाना शुभ होता है। मुहूर्त्तकल्पद्रुम में नौका घटन, संचालन और प्रयाण के पृथक्-पृथक् मुहूर्त्त दिये गये हैं।

कुम्हारी (मिट्टी के बर्तन सम्बन्धी) का मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रयेऽन्त्ये रोहिणी मृगे।
अनुराधा श्रवो ज्येष्ठा स सूर्य सौम्य वासरे।
तथा चरोदये प्रोक्ताः कुंभकारक्रिया बुधैः ॥५७॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, ज्येष्ठा ये नक्षत्र और रवि तथा बुधवार और चर लग्न, कुम्हार के कार्य (मिट्टी सम्बन्धी काम) लिए श्रेष्ठ हैं।

लोहारी कार्य (लोह सम्बन्धी) का मुहूर्त्त

स्वातौ ज्येष्ठाद्वये मूले चित्रार्द्रा भरणीत्रये।
मणिलौहाश्मनां कृत्यं पापेचान्हि स्थिरोदये ५८॥

स्वाती, ज्येष्ठा, मूल, चित्रा, आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, इन नक्षत्रों में तथा मंगल, शनि और रविवार को और स्थिर लग्न में मणि (जवाहिरात) लोहा, पत्थर आदि का कार्य करना श्रेष्ठ है।

शामियाना तम्बू आदि खड़ा करने का मुहूर्त्त

कुर्याद्वस्त्रोदिते धिष्ण्ये तूलिकामुपधानकम्।
वितानाद्यं च बध्नीयादूर्ध्वमूर्ध्वमुखोडुषु ॥५९॥

जो नक्षत्र वस्त्र सम्बन्धी कार्य में गिनाये गये हैं उनमें तोशक तकिया रजाई आदि तथा उर्ध्वमुख नक्षत्रों में तम्बू, शामियाना, तिरपाल इत्यादि खड़ा करना शुभ होता है।

पैरों में नया जूता पहनने का मुहूर्त

चित्रा पूर्वानुराधा च ज्येष्ठाश्लेषामघामृगे ।
विशाखाकृत्तिकामूले रेवत्यां ज्ञार्कसूर्यजे ॥
उपानत्परिधानं च चर्मकर्मणि शस्यते ॥६०॥

चित्रा, तीनों पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्लेषा, मघा, मृगशिरा, विशाखा, कृत्तिका, मूल, रेवती तथा बुध, रवि और शनिवार इनमें जूता पहिनना एवं सब प्रकार का चर्म-कृत्य (चमड़े सम्बन्धी काम) शुभ हैं ।

जेवर बनवाने का मुहूर्त्त

त्रिपुष्कराभिधे योगे त्र्युत्तरे रेवतीद्वये ।
श्रुतित्रये मृगे पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥
हस्तत्रयेऽथ रोहिण्यां भूषा कार्या शुभेऽहनि ६१॥

त्रिपुष्कर योग (पृ० १०२ श्लो. २७) तीनों उत्तरा (उ. फा., उ. षा., उ. भा.) रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती और रोहिणी इन नक्षत्रों तथा शुभ वारों में आभूषण बनवाना शुभ होता है ।

आभूषण घट्टन मुहूर्त्त

हित्वा शनैश्चरबुधौ सुतिथौ च लग्ने
श्रुतित्रये हस्तचतुष्टये मृगे ।
हये च पुष्ये रविभे च वह्निभे
हेम्नः क्रिया शिल्पविदां हिताय ॥६२॥

श्र., ध., शत., ह., चि., स्वा., वि., मृग., अश्वि., पुष्य, हस्त, कृत्तिका इन नक्षत्रों में तथा शनि और बुध को

छोड़ अन्यवारों में तथा शुभ तिथि और लग्नों में स्वर्ण सम्बन्धी कर्म शिल्पविदों के लिए श्रेष्ठ है।

वस्त्र और आभूषण धारण का मुहूर्त्त

वस्त्राभूषण धारणेऽदितियुगं हस्तादि पञ्चाश्विनो
रेवत्युत्तररोहिणीवसुपभं पुंसां बुधादित्रयं।
मध्योऽर्को ऽयदितिभ्रुवेज्यमितिसत्स्त्रीणां च रक्तेकुजौ
रिक्तामार्कि कुजेन्दु योगरहितं तद्वच्च तन्निर्मितौ ६३

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त चित्रा स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, धनिष्टा और बुध वृहस्पति तथा शुक्रवार पुरुषों के लिए वस्त्र और आभूषण में धारण योग्य हैं। रविवार मध्यम अर्थात् सम हैं। पुनर्वसु रोहिणी तीनों उत्तरा और पुष्य को छोड़कर अन्य पूर्वोक्त नक्षत्र वारादि स्त्रियों के वस्त्र और आभूषण धारण में श्रेष्ठ है। लाल कपड़ों को छोड़कर अन्य रङ्ग के वस्त्र और लाल रङ्ग की चीजें मूंगा, चूड़ा आदि मङ्गलवार को भी पहना जा सकता है। रिक्त अमावस्या सोम, मङ्गल, शनि और दुर्योगों को छोड़कर निर्माण के नक्षत्रों में भी वस्त्र और आभूषण धारण होते हैं।

मद्यारम्भ का मुहूर्त्त

रौद्रे पैत्र्ये वारुणे पौरहूते,
यास्ये सार्पे नैऋते चैव धिष्ण्ये।
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो
मद्यारंभः कालविद्भिः पुराणैः ॥६४॥

प्रथमवार शराब की भट्टी (कारखाना) या दुकान चालू करने में प्राचीन ज्योतिर्विदों ने आर्द्रा, मघा, शतभिषा, ज्येष्ठा भरणी, आश्लेषा, मूल, तीनों पूर्वा (पूर्वाफा; पू. षा. पूभा.)

नक्षत्रों को शुभ बतलाया है। मुहूर्त्तगणपतिकार क्रूर वारों को भी ग्राह्य मानता है।

लवण बनाने का मुहूर्त्त

लवणारंभकृत्यं तु भरणी रोहिणीश्रवे।
शनिवारे दिवाश्रेष्ठं जन्मराशेः शनेर्बले ॥६५॥

भरणी, रोहिणी, श्रवणनक्षत्र, तथा शनिवार एवं दिन के समय में नमक का कारबार शुरू करना चाहिए इसमें अपनी जन्म राशि से शनि का गोचर बल जरूर देखना चाहिए। बली शनि में लवण बनाने का काम आरम्भ करे।

मल्लक्रीड़ा मुहूर्त्त

ज्येष्ठार्द्रा भरणी पूर्वा मूलाश्लेषा मघाभिधे।
जया पूर्णासु सद्वारे सार्के शीर्षोदयेऽङ्गके।
सत्खेटैः केन्द्रगैः सार्के मल्लक्रीड़ा शुभावहा ॥६६॥

ज्ये., आर्द्रा, भ., तीनों पूर्वा, मूल, आश्लेषा, मघा नक्षत्र जया और पूर्णा तिथि, सूर्य सहित शुभवार तथा मुहूर्त्त, लग्नचक्र में शीर्षोदयी राशि (३, ६, ७, ८, ११ राशियाँ) लग्न में हों तथा सूर्य सहित शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो दंगल या अखाड़े का श्री गणेश करें।

लौह दाह चिकित्सा मुहूर्त्त

शतचित्राश्विनी मूले विशाखा कृत्तिकेशभे।
ज्येष्ठाश्लेषाकुजाऽर्केऽङ्गे क्रूरेलौहाग्निभेषजम् ॥६७॥

शतभिषा, चित्रा, अश्विनी, मूल, विशाखा, कृत्तिका, आर्द्रा ज्येष्ठा, आश्लेषा नक्षत्र मङ्गल और रविवार तथा क्रूर लग्नों में लौह दाह (गर्म लोहे से दागना, सेंकना आदि द्वारा होने वाली) चिकित्सा करनी चाहिए।

भूमि में धन गाडने का मुहूर्त्त

धनिष्ठोफा विशाखाख्ये पूर्वाषाढाभिधेऽन्त्यभे।
रोहिण्यां च निधेर्भूमौ स्थापनं शुभमीरितम् ॥६८॥

वैंक के लॉकर में अथवा जमीन में धन को गाड़कर रखने में धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, रेवती, और रोहिणीनक्षत्र ग्राह्य हैं।

विपणि कर्म मुहूर्त्त

यत्क्रीतं येषु धिष्ण्येषु विक्रेतव्यं न तेषु तत्।
विक्रीतं येषु यद्वस्तु न क्रेतव्यं च तेषु तत् ॥६९॥

जो माल जिस नक्षत्र में खरीदे उसको उसी नक्षत्र में पुनः नहीं वेचना चाहिए और जिस माल को जिस नक्षत्र में बेचे पुनः उस नक्षत्र में उसे नहीं खरीदना चाहिए।

नई दुकान गद्दी का मुहूर्त्त

विपणि ध्रुवमैत्रर्क्षक्षिप्रभेऽब्जे सिते तनौ।
शुद्ध स्वान्त्यमृतौ सौम्यैः कोशव्यापार लाभगैः।७०।

किसी खरीदी हुई वस्तु को अथवा उत्पादित वस्तु को पहले पहल बाजार में लाभ की इच्छा से ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी) अनु; रे., चि. और क्षिप्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित) इन नक्षत्रों में तथा लग्नस्थचन्द्र और शुक्र हो एवं लग्न से द्वितीय, अष्टम और द्वादश स्थान शुद्ध (पाप योग एवं दृष्टि रहित) हों तथा द्वितीय, दशम और लाभ (११ वें) में जब शुभ ग्रह हों तब उसे नई दुकान या गद्दी में वेचना शुरू करें। मुहूर्त्त चिन्तामणिकार नवीन व्यापार (गद्दी या दुकान आदि) में रिक्तातिथि, मगलवार और कुम्भ लग्न को वर्जित मानते हैं। यही मुहूर्त्त व्यापार और व्यावसायिक प्रतिष्ठान आरम्भ करने का है

क्रय विक्रय का मुहूर्त्त

पुष्यो भाद्रपदा युग्मं स्वाती च श्रवणोऽश्विनी।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाऽश्लेषा च रेवती ॥७१॥
ग्राह्यमेतानि वै भानि क्रयविक्रयणे बुधैः।
चन्द्रेज्यशुक्रवारेषु लब्ध्वा शकुनमुत्तमम् ॥७२॥

पुष्य, पू. भा., उ. भा., स्वा., श्र. अश्वि., ह., तीनों उत्तरा, मृग.; अनु., आश्ले., रेवती इन नक्षत्रों में सोम, गुरु और शुक्रवार में उत्तम शकुन देखकर क्रय-विक्रय करना चाहिए।

सेवा मुहूर्त्त

सेवाविधिर्लघुभमैत्रभवित्सितार्क—
जीवाह्विशस्तभ तनौ सुतिथौ सुयोगे।
स्व स्वामिनोः शशिभयोर्गणयोनिमैत्र्यां
नाड़ी भशुद्धि सहिते किल सेवकस्य ॥७३॥

पहले पहल नौकरी पर जाने वाले व्यक्तिको क्षिप्र (पृ० १०० और मृदु (पृ० १००) नक्षत्र, बुध, शुक्र और गुरु, रविवार शुभग्रहों से सम्बन्धित लग्न, रिक्ता और अमा-रहित शुभ तिथियाँ और शुभ योग ग्रहण करने चाहिए। नौकरी शुरू करने से पहिले अपनी (सेवक और स्वामी की) नाम राशियों (कुछ ग्रंथ ज्योतिषचन्द्रार्कशिकाटीकादि के मत से जन्म राशि) के स्वामियों की मैत्री, गण और योनिमैत्री नाड़ी और भकूट शुद्धि देखकर नौकरी करनी चाहिए। इसमें एक नाड़ी होना शुभ माना जाता है। यदि ऐसा विचार करके नौकरी की जावेगी तो स्थायी रहेगी। चूँकि; आजकल सरकारी नौकरियों में लोकतन्त्र प्रणाली होने से स्वामी सेवक विचार होना असम्भव है अतः केवल मुहूर्त्त विचार मात्र ही पर्याप्त है।

हाँ, राष्ट्रपति या उस विभाग के मुखिया की राशि से सेवाचक्र विचार सकते हैं लेकिन उनका भी बराबर चुनाव जल्दी होता रहता है उनमें भी स्थायित्व नहीं है अतः सेवा में मुहूर्त मात्र विचार ही उपयोगी है। उत्तरकालामृत में दासी चक्र एवं अन्य ग्रन्थों में सेवा चक्र या दास चक्र के विचार का उल्लेख मिलता है जिनका हम आगे उल्लेख करेंगे।

ऋणदान व ग्रहण मुहूर्त्त

स्वात्यादित्यमृदुद्धिदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्विचरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्य प्रयोगः शुभः।
वारेग्राह्यमृणं तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽह्रिय-
त्तद्वंशेषु भवेद्दृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ॥७४॥

स्वाती, पुन; मृग; रेवती, चित्रा, अनु., विशाखा, पुष्य श्रवण, धनि., शत., अश्वि., ये नक्षत्र चर लग्न तथा ९।८।५ ये स्थान शुद्ध हों तो द्रव्य प्रयोग अर्थात् ऋणदान व ग्रहण में श्रेष्ठ हैं। संक्रान्ति, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्र मंगल और रविवार को ऋण नहीं लेना चाहिए। क्योंकि, फिर कर्जा पीढ़ियों के लिए स्थायी हो जाता है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए।

तीक्ष्णमिश्र ध्रुवोग्रै यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम्।
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्टयां पाते न चाऽऽप्यते ॥७५॥

तीक्ष्ण, मिश्र, ध्रुव और उग्र संज्ञक नक्षत्रों में तथा भद्रा करण और व्यतिपात संज्ञक योग में जो द्रव्य दिया और रखा काम में लिया गया या नष्ट हो चुका हो तो उसके पुनः हस्त गत होने की उम्मीद नहीं रहती है। यह श्लोक प्रश्न विचार में भी काम में लेते हैं।

दुकान व दर्जी के (सिलाई सम्बन्धी) कार्य का मुहूर्त्त

स्याद्रोहिणीत्र्युत्तरहस्तपुष्ये
चित्रान्त्यमित्रैर्विपणि मृगाश्वे ।
पुनर्वसौ मित्रद्वये धनिष्ठा
चित्रासु सौम्येऽहनि कर्मसूच्याः ॥७६॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त पुष्य, चित्रा, रेवती, अनुराधा मृगशिरा, पुनर्वसु, धनिष्ठा इनमें दुकान या सूची कर्म (दर्जी का कारबार या वस्त्रों की सिलाई) शुभ है मुहूर्त्त गणपति कार ने रविवार सहित शुभ वारों को भी ग्रहण किया है ।

अभिनय नाट्य का मुहूर्त्त

हस्तात्तिस्रो वासवं चानुराधा
ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ।
पूर्वाचार्यैः कीर्तिताः केन्द्रवर्ती
नृत्यारम्भे शोभनस्त्वृत्तवर्गः ॥७७॥
चित्रार्द्रा रोहिणी पुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये ।
ससूर्य सौम्यवारे च नटविद्या प्रशस्यते ॥७८॥

ह., चि., स्वा., धनिष्ठा, अनु; ज्ये; रेवती, शत. तीनों उत्तरा, तथा अन्य शुभग्रह जिससमय लग्न से केन्द्र में हों हों नृत्यारम्भ करना चाहिए । चि., आर्द्रा, रो., पुष्य, तीनों उत्तरा, श्र. ध. श. रवि और बुधवार नटविद्या (अभिनय, कौतुकक्रीड़ा) में ग्रहण किये गये हैं ।

सेतुबन्ध (पुलनिर्माण) मुहूर्त्त

त्र्युत्तरारोहिणीस्वातीमृगेऽर्के मंगले गुरौ ॥
सेतुनां बन्धनं शस्तं शुभे लग्ने शुभेक्षिते ॥७९॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, स्वाती, मृगशिरा ये नक्षत्र, रवि, मंगल और गुरुवार, तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट शुभ लग्न पुल, बाँध, मेंड़ आदि बनाने में श्रेष्ठ होते हैं।

लिङ्गांड छेदन मुहूर्त्त

अर्कारेज्यांत्य पुष्यार्क स्वातीन्दु श्रुति वासवैः।
नराश्व वृषभादीनां लिङ्गाण्डछेदनं मतम् ॥८०॥

रवि, मंगल और गुरुवार तथा रेवती, पुष्य, हस्त, स्वाती, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में मनुष्य, घोड़े, बैल आदि का लिङ्ग एवं अण्डकोष को कटाना, आपरेशन कराना, छिदाना आदि शुभ हैं।

रत्न परीक्षा

पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवे ज्येष्ठे परीक्षणम्।
रत्नानामष्टमीं भूतं हित्वा भौमशनैश्चरम् ॥८१॥

पुन०, शत०, ह,० श्र,० ज्ये० ये नक्षत्र रत्नपरीक्षा में ग्राह्य हैं। अष्टमी, चतुर्दशीतिथि, शनि और मंगलवार त्याज्य हैं।

सितार, दुन्दुभि, मृदङ्गादि करवाद्य मुहूर्त्त

हस्त त्रयेऽनुराधान्त्ये पुनर्वसु युगेऽग्निभे।
श्रवत्रये मृगेऽर्केऽह्नि शुभ पूर्णाजयासुच ॥८२॥
शुभे दुन्दुभिभेर्यादि करवाद्यं समीरितम्।
वंश्यादि मुख वाद्यानि भेस्वेष्वेव निगद्यते ॥८३॥

ह., चि. स्वा. अनु; रे., पुन., पुष्य, अश्विनी, श्र. ध., श. और मृगशिरा नक्षत्र, रविवार तथा जया और पूर्णा [illegible] तिथियों में दुन्दुभि भेरी बाँसुरी, मृदङ्गादि [illegible] अथवा

हाथ से बजाये जानेवाले नये सितार, तबले आदि वाद्ययन्त्रों का प्रथम प्रयोग शुभ हैं।

सुगन्ध कृत्य मुहूर्त्त

कर्णत्रयेऽन्त्ये मृगभे पुनर्वसौ
करत्रये मैत्रहये च पुष्ये।
विलेपनं तोयपभे प्रशस्तं
कस्तूरिकाचन्दनगन्धकृत्ये ॥८४॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, मृगशिरा पुनर्वसु, ह., चि. स्वा., अनु. अश्विनी, पुष्य, शतभिषा ये नक्षत्र, नयी कस्तूरी, केशर, इत्र, चन्दन आदि का सेवन और इनके कार-बार आरम्भ करने में शुभ हैं।

सोने चाँदी के वर्तन में खाने का मुहूर्त्त

रोहिणीयुगले हस्तत्रितये रेवतीद्वये।
श्रवणत्रितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥८५॥
त्र्युत्तरे बुधशुक्रेज्यवारे चामृतयोगके।
सुवर्णे रौप्यपात्रेषु भोजनादि शुभप्रदम् ॥८६॥

रो., मृग., ह., चि., स्वा., रे., अश्विनी., श्र., ध., श., पुष्य, पुन., अनु., तीनों उत्तरा, बुध, शुक्र और गुरुवार अमृत नामक योग सोने चांदी के नये बर्तनों में प्रथम भोजन के लिए शुभ हैं।

समुद्र स्नान मुहूर्त्त

समुद्रे पर्वसु स्नायादमायां च विशेषतः।
भृगौ भौमदिने स्नानं नित्यमेव विवर्जयेत् ॥८७॥

समुद्र में स्नान पर्व काल (विशिष्ट त्यौहार एवं तिथियों पर ही) में खास करके अमावस्या को करना चाहिए। शुक्रवार और मंगलवार समुद्र स्नान में वर्जित हैं किन्तु; न काल-नियमौ सेतौ समुद्रःस्नानकर्मणि इस वचन के अनुसार सेतु बन्ध रामेश्वर में सर्वदा स्नान किया जाता है वहाँ सदा पुण्यकाल रहता है।

ताम्बूल कृत्य मुहूर्त

अनुराधात्रये हस्तत्रितये रेवतीद्वये।
उत्तरासु च रोहिण्यां श्रवणद्वितये मृगे ॥८८॥
पुनर्वसौ तथा पुष्ये रिक्तां भौमशनिंविना।
चरोदयः प्रशंसन्ति सदा ताम्बूलकर्मणि ॥८९॥

अनु, ज्ये., मू; ह; चि, स्वा; रे, अ; तीनों उत्तरा, रो; श्र; ध; मृग; पुनर्वसु, पुष्य ये नक्षत्र और चर लग्न ताम्बूल (पान सम्बन्धी) कार्यों में ग्राह्य है। रिक्ता तिथि, शनि और मंगलवार वर्जित हैं।

दत्तकपुत्र ग्रहण

हस्तादि पंचर्क्षभिषग्वसु पुष्यभेषु
सूर्यक्षमाजगुरुभार्गव वासरेषु।
रिक्ताविवर्जित तिथिस्वलिकुम्भलग्ने
सिंहे वृषे भवति दत्त परिग्रहोयम् ॥९०॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, शतभिषा, धनिष्ठा और पुष्य नक्षत्र, रवि, मंगल, गुरु और शुक्रवार, रिक्ता तिथि रहित अन्य तिथियाँ, वृश्चिक, कुम्भ, सिंह और वृष लग्न दत्तक सन्तान ग्रहण करने में शुभ माने गये हैं।

उत्तर कालामृत के अनुसार दत्तक ग्रहण पूर्वाण्ह और उत्तरायण सूर्य में ही होना चाहिए।

दास-सेवा-चक्र-विचार

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थे भृत्यसंग्रहे।
शीर्षे त्रीण्यर्थलाभःस्यान्मुखे त्रीणि विनाशनम् ६१
हृदि पञ्च धनं धान्यं पादे षट्कं दरिद्रता।
पृष्ठे द्वे प्राणसंदेहो नाभौ वेदाः शुभावहाः ॥६२॥
गुदे द्वे भयपीडा च दक्षहस्तैकमर्थदम्।
एकं वामे नाशकरं भृत्यभात्स्वामिभान्तकम् ॥६३॥
प्रथमं सेव्यनक्षत्रं द्वितीयं सेवकस्य च।
न सेवा सुस्थिरा तस्य यतः प्राणार्थनाशदा ॥६४॥

नौकरी में कैसा रहेगा? इस विचार से सेवक के नाम नक्षत्र से स्वामी के नाम नक्षत्र तक गिनना चाहिए और सेवक के नक्षत्र से ३ नक्षत्रों को शिर स्थान में रखे। इनमें अगर स्वामी का नक्षत्र हो तो वह अर्थलाभप्रद हैं। मुख में ३ नक्षत्र रखे वहाँ स्वामी नक्षत्र हो तो विनाशकारक हैं। ५ नक्षत्र हृदय में दे अगर इनमें पड़े तो धान्य को देनेवाला है। फिर चरणों में छः नक्षत्र दे इनमें पड़े तो वह दरिद्रता को देनेवाला है। फिर २ नक्षत्र पीठ के स्थान में रख दें जिसका फल प्राण संदेहकारक है। पुनः नाभि में चार नक्षत्र स्थापित करें अगर इनमें वह (स्वामी नक्षत्र) हो तो शुभकारी हैं। इसके बाद २ नक्षत्र गुदा की जगह में धरे वहाँ वह हो तो भयपीड़ाकारक है। तत्पश्चात् एक नक्षत्र दाहिने हाथ की जगह में दे यह अर्थदाता है। शेष एक नक्षत्र बाए

हाथ की जगह में रख दे वह नाशकारी होता है। स्वामी के नक्षत्र से दूसरा नक्षत्र सेवक का हो तो सेवा स्थिर नहीं रहेगी प्राण तथा धन दोनों का नाश करेगी।

सेवकभात् दास चक्र मिदम्

शिरशि	मुखे	हृदये	चरणे	पृष्ठे	नाभौ	गुह्ये	दक्षिण करे	वाम करे	अङ्गानि
३	३	५	६	२	४	२	१	१	नक्षत्राणि
अर्थ-लाभ.	नि-नाशः	धन-धान्य	दारिद्र्यम्	प्राण-संदेहः	शुभः	भय-पीड़ाकारकः	अर्थदाता	नाश-कारकः	फलानि

आसन-पादुका आदि के उपभोग का मुहूर्त

मैत्रेऽन्त्यचन्द्रयमभादितिवाजिचित्रा-
हस्तोत्तरात्रयहरीज्यविधातृभानि।
एतेष्वतीवशयनासनपादुकानां
संभोगकार्यमुदितं मुनिभिः शुभाहे ॥६५॥

अनु; रे०, मृग; भरणी, पुनः; अश्विनी, चि; ह; तीनों उत्तरा; श्र; पुष्य, रो; इन नक्षत्रों में और शुभ तिथि और वारों में शय्या, आसन व खड़ाऊँ धारण करना शुभ है।

नवीव पात्र चक्र

पात्रचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं शक्तियामले।
सूर्यभाच्चन्द्रपर्यन्तं गणनीयं सदा बुधैः ॥६६॥
दिक्षु दिक्षु द्वयं न्यस्य मध्ये चैकादशं न्यसेत्।
वर्तुलाकारचक्रस्य भोक्तृपात्रस्य निर्णयः ॥६७॥

फल विचार

बन्धनं सौख्यहानी च लाभसौख्यं मृतिस्तथा।
पुत्रमातुश्शोकवृद्धी पूर्वादिक्रमतो भवेत्।
रिक्तानष्टेन्दुषष्ठीश्च विष्णोः सुप्तं विवर्जयेत् ॥६५॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने और पूर्वादि आठ दिशाओं में दो-दो नक्षत्र धरें तथा ग्यारह नक्षत्र बीच में रखकर गोल-चक्र बनाकर भोजन-पात्र खरीदने के समय का विचार करना चाहिए। अगर दिन का नक्षत्र पूर्व में पड़े तो बन्धन होगा। आग्नेयकोण में हो सुख मिलेगा। दक्षिणदिशा में पड़े तो हानिकारक, नैर्ऋत्यकोण में लाभ, पश्चिम में सुख, वायव्यकोण में मृत्यु, उत्तर दिशा में हो तो पुत्र का लाभ, ईशानकोण में शोकप्रद तथा मध्य भाग में पड़े तो वृद्धि को करने वाला हो। रिक्तातिथि, अमावस्या, छठ और देवशयन ये सब भोजन-पात्र खरीदने में वर्जित हैं। नवीन पात्र धनतेरस को खरीदने की प्रथा काशी में है।

नवीनपात्र क्रय काल में चक्र विचार

पूर्वे	आ०	दक्षिणे	नै०	पश्चिमे	वा०	उत्तरे	ई०	मध्ये	दिशा
२	२	२	२	२	२	२	२	११	नक्षत्राणि
अ०	शु०	अ०	शु०	शु०	अ०	शु०	अ०	शुभ	फलानि

उखल मूसल लाने का मुहूर्त

भू दिगब्धि दिग्दीणि शनिभादिनभं क्रमात्।
अशुभं च शुभं ज्ञेयं क्रमादूखलमूसले ॥६६॥

ऊखल और मूसल (भामदस्ता और मूसली) खरीदने में इस चक्र का विचार होता है। शनि के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने यदि वह (दिन नक्षत्र) उनमें पहला नक्षत्र हो तो अशुभ है पुनः १० नक्षत्रों में से हो तो शुभ फिर ४ अशुभ पुनः १० शुभ और फिर २ नक्षत्र अशुभ कारक होंगे।

सूर्प-चक्र विचार

सूर्पभात् पञ्च त्र्यष्टाब्धि मुनिभेषु शुभाशुभम्।
क्रमात् सूर्पाभिधे चक्रे विज्ञेयं कोविदैः सदा ।१००।

सूप खरीदने में गोचर गत सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनकर ५ । ३ । ८ । ४ । ७ के क्रमशः हिस्से कर लेवे। अगर आप का दिन नक्षत्र प्रथम ५ नक्षत्रों के हिस्से में है तो शुभ है। पुनः ३ में हो तो अशुभ, फिर ८ नक्षत्रों में शुभ और ४ नक्षत्रों में अशुभ तथा फिर ८ नक्षत्रों में शुभ होगा।

सर्व प्रकार वस्त्र धारण-नक्षत्र-फल

वस्त्रप्राप्तिरथाश्विन्यां भरण्यर्थापहारिणी।
कृत्तिकायां दहत्यग्नि रोहिण्यांसर्वसंपदः ।।१०१।।
मृगे मूषकभीतिः स्यादार्द्रायां निधनं भवेत्।
धान्यं पुनर्वसौ वस्त्रं पुष्यः सर्वार्थसाधकः ।।१०२।।
श्लेषाभे तु भवेच्छोको मघायां मरणं ध्रुवम्।
राज्ञो भयं तु पूफायामुफायां तु धनागमः ।।१०३।।
कर्मसिद्धिस्तु हस्तर्क्षे चित्रायामिष्टसम्पदः।
मिष्टभोजनदा स्वाती विशाखाऽनन्ददायिनी ।१०४।

मित्राप्तिरनुराधायां ज्येष्ठायां वाससां हृतिः ॥
जलप्लुतिश्च मूलर्क्षे पूर्वाषाढातिरोगदा ॥१०५॥
मिष्ठान्नदोत्तराषाढः श्रवणो नयनार्तिकृत् ।
धान्यागमो धनिष्ठायां विषभीतिः शताभिधे १०६॥
पूर्वाभाद्रे जलाद्भीतिरुत्तरायां धनं लभेत् ।
रत्नप्राप्तिस्तु रेवत्यां भवेद्वस्त्रस्य धारणात् ॥१०७॥
शुभग्रहाः फलं दद्युः पञ्चाशद्दिवसेषु च ।
षष्ट्यहस्त्वथवा सर्वे पापाः नवदिवान्तरम् १०८॥

अगर कोई प्राणी अश्विनी नक्षत्र में वस्त्र धारण करे तो उसे वस्त्रप्राप्ति होगा। भरणी में धारण करे तो विनाश, कृत्तिका में अग्निभय, और रोहिणी में सर्वसम्पदा प्राप्त होगी। मृगशिरा में मूषक का भय, आर्द्रा में मृत्यु, पुनर्वसु में धान्य और पुष्य में धन, धर्म तथा महोत्सव, आश्लेषा में शोक, मघा में मृत्यु पूर्वाफाल्गुनी में राजभय, और उत्तराफाल्गुनी में धनागम होता है। हस्त नक्षत्र में कर्म की सिद्धि, चित्रा में श्रेष्ठ सम्पदा, स्वाती में उत्तम भोजन और विशाखा में कपड़े धारण करने से आनन्द-प्राप्ति होगी। अनुराधा नक्षत्र में मित्र-प्राप्ति, ज्येष्ठा में चोरी का भय, मूल में नये कपड़े धारण करे तो जल में डूबने का भय और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में महारोग ग्रस्त होना पड़ता है। उत्तराषाढ़ा में मिष्ठान्नप्राप्ति, श्रवण में नवीन वस्त्र पहिनने से नेत्ररोग, धनिष्ठा में धान्यागम, शतभिषा में विष का भय, पूर्वाभाद्रपदा में जल से भय, उत्तराभाद्रपदा में धनागम, रेवती में वस्त्र धारण करने से रत्नों की प्राप्ति होती है। शुभ ग्रहों का फल ५० या ६० दिन में और पाप ग्रहों का फल नौ दिन के भीतर मिलता है।

रेशमी वस्त्र मुहूर्त

जीवेऽर्के च बुधे शुक्रे वस्त्रोक्तर्दों श्रवान्विते ।
स्थिरेऽङ्गे सद्ग्रहैर्युक्ते पट्टकूलस्य धारणम् ॥१०९॥

गुरुवार, रविवार, बुधवार, शुक्रवार तथा श्रवण नक्षत्र सहित सब वस्त्रोक्त नक्षत्र शुभ ग्रहयुक्त स्थिर लग्नों में रेशमी वस्त्र का धारण करना शुभ है ।

ऊनी वस्त्र-धारण मुहूर्त

नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि ।
शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥११०॥

नीलवस्त्र धारण करने में जो नक्षत्र ग्राह्य हैं वे और रेवती व पुष्य नक्षत्र, शुक्र, शनैश्चर और रविवार इनमें ऊनी वस्त्र धारण करना शुभ है ।

नील, कृष्ण-वस्त्र-धारण मुहूर्त्त

पुनर्वसुधनिष्ठाख्येऽश्विभे हस्ताच्चतुष्टये ।
पूर्वोत्तरे शनौ सूर्ये नीलकृष्णाम्बरं शुभम् ॥१११॥

पुनर्वसु, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त सहित चार नक्षत्र (हस्त-चित्रा, स्वाती, विशाखा) तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा ये नक्षत्र तथा शनैश्चर, और रविवार नीले व काले वस्त्र धारण करने में शुभ हैं ।

बिना मुहूर्त्त वस्त्र-धारण

राज्ञा प्रीत्यार्पितं वस्त्रं विवाहे चोत्सवादिषु ।
तथा विप्राज्ञया धार्यं निन्द्ये धिष्ण्येऽपि वासरे ।११२॥

जो वस्त्र राजा या राज्यसरकार से प्राप्त हो तथा विवाह में या उत्सवादि के अवसर पर मिले तो निन्दित नक्षत्रादि में और ब्राह्मण की आज्ञा से बिना मुहूर्त्त भी पहन लेना चाहिए।

शुभा शुभं वीक्ष्य तु यो ग्रहाणां
गृही सुवस्त्र व्यवहार कारी।
समोदये वाप्य समस्त भोगान्
निरस्तरोगो व्यसनैः विमुक्तः॥११३॥

जो गृहस्थ ग्रहों का शुभाशुभ देखकर वस्त्र पहनता है वह नीरोग और व्यसनरहित होकर सब प्रकार के ऐश्वर्य को भोगता है।

वस्त्रों के धुलाने का मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यां धनिष्ठाहस्तपञ्चके।
हित्वार्कार्किबुधान् रिक्तां षष्ठीं श्राद्धदिनं तथा।
व्रतं पर्व च वस्त्राणि चालयेद्रजकादिना॥११४॥

अश्विनी, पुन; पुष्य, ध, ह; चि; स्वा, वि; अनु; ये नक्षत्र धोबी से कपड़े धुवाने में श्रेष्ट है। रवि, शनि, बुधवार रिक्ता, षष्ठी, व्रत और पर्व तथा श्राद्ध का दिन वर्जित है।

स्त्रियों को वस्त्र आभूषणादि धारण में निषिद्ध काल

चित्राचतुष्टयेऽश्विन्यां धनिष्ठारेवतीमृगे।
शुक्रेऽर्केऽह्नि शनौ स्त्रीणां दर्पणाञ्जनयोर्धृतिः ११५

चित्रा चतुष्टय अर्थात् चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, मृगशिरा ये नक्षत्र तथा शुक्र, रवि और शनिवार इनमें स्त्रियों को नवीन अञ्जन या सुरमा लगाना और नया दर्पण देखना चाहिए।

अस्तङ्गते भृगुसुते शयने च विष्णौ
जन्माद्य चाप झषगे दिनपे न दध्यात्।
रक्तेन्दु भानु दिवसेंशक वर्जिते च
शंखं च रक्तपटकं युवतिः कथंचित् ॥११६॥

शुक्रास्त एवं देवशयन तथा जन्ममास दिनादि, धनु और मीन की संक्रान्ति में, रवि, सोम और मंगलवार तथा इन ग्रहों के नवांश में कभी स्त्रियों को शंख के आभूषण और सम्पूण लाल वस्त्र नहीं पहनने चाहिए।

वस्त्र दग्धादि फल

कर्दमकज्जलगोमयलिप्ते
वाससि दग्धवति स्फुटिते वा।
चिन्त्यमिदं नवधाभिहितेऽस्मि
न्निष्टमनिष्टफलं च सुधीभिः ॥११७॥

विद्वानों को पहनने वाले वस्त्र के कीचड़, कालिख या गोबर लगजाने अथवा जल और फट जाने पर उस वस्त्र को नौ हिस्सों में बाँटकर उसका शुभ और अशुभ फल विचारना चाहिए।

वस्त्र के नव भागों का फल

नवांशुकं समं कृत्वा चिन्तयेच्च शुभाशुभम्।
वसन्ति देवताः कोणे चान्त्यमध्यद्वये नराः ॥११६॥
मध्यांशत्रितये दैत्याश्चैवं शय्यासनादिषु।
अर्थप्राप्तिर्देवतांशे पुत्रवृद्धिर्नरंशके।
हानिः पीडा पिशाचांशे सर्वप्रान्तेविशोभनम् १२०

वस्त्र के चारों कोनों में देवता का निवास एवं आदि और अन्त्य भाग इन दो भागों में मनुष्य तथा वस्त्र के बीचों बीच भाग के तीन भागों में राक्षसों का निवास होता है यह बात वस्त्र की तरह बिछावन, आसन और जूते खड़ाऊँ आदि में भी विचरणीय होती है। देवतांश में अर्थ प्राप्ति, नरांश में पुत्र वृद्धि और दैत्यांश में हानि व पीड़ा होती है। वह सब जगह निन्दित है

इस उपर के श्लोक में बताए गए तरीके के अनुसार वस्त्र चक्र निम्न प्रकार विभाजित है:—

सफल वस्त्र चक्रम्

देवतांश अर्थ प्राप्त	नरांश पुत्र वृद्धि	देवता अर्थ प्राप्ति
दैत्यांश हानि	दैत्यांश हानि	दैत्यांश का हानि
देवता अर्थ प्राप्त	नरांश पुत्र वृद्धि	देवता अर्थ प्राप्ति

छिन्न वस्त्र की आकृति और फल

शंखचक्राम्बुजच्छत्रध्वजतोरणसन्निभाः ।
श्रीवत्ससर्वतोभद्रनंद्यावर्तगृहोपमाः ॥१२१॥
वर्द्धमान स्वस्तिकेन भृंगकूर्मझषाकृतिः ।
छेदाकृतिर्दैत्यभागेऽप्यायुरर्थप्रदानृणाम् ॥१२२॥
खरोष्ट्रजूककामाहिजंबुकरलूकोपमाः ।
त्रिकोणसूर्पाकृतयो देवभागेऽप्यशोभना ॥१२३॥
निन्दितं वसनं दद्यात् द्विजेभ्यः स्वर्णसंयुतम् ।
आशिषो वाचनं कृत्वा त्वन्य द्वस्त्रं तु धारयेत्॥१२४॥

नवीन वस्त्र में ही किसी कारण वश या अचानक फटने जलने या कटने का निशान देखने में शंख, चक्र, कमल, छत्र, ध्वज, तोरण, श्रीवत्स, सर्वतोभद्र, नद्यावर्त, गृह, वर्द्धमान, स्वस्तिक, मृग (हरिण) कच्छप, मछली इनमें से किसी की भी आकृति से मिलता जुलता चिन्ह अगर दैत्य भाग में भी हो तो मनुष्यों को आयु और अर्थदायक होता है। इसी प्रकार गदहा, ऊँट, जूं अथवा तुला, कौआ, सर्प, गीदड़ कुत्ता भेड़िया, त्रिकोण और स्तूप के समान आकृतियाँ अगर देवता के अंश में भी हों तो खराब फलदायिनी होंगी। निन्दितवस्त्र स्वर्ण (सोने की) दक्षिणा के साथ ब्राह्मणों को देकर आशीर्वाद ल और स्वयं नवीन वस्त्र धारण करें।

सफेद, पीला और छींट के वस्त्रों का मुहूर्त

शुक्लं वस्त्रोक्तभे धार्यं रवौ शुक्रे गुरौ बुधे।
विशुक्रे कर्बुरं पीतं सभौमे रक्तमम्बरम् ॥१२५॥

सफेद रङ्ग के कपडे वस्त्र पहिनने के नक्षत्रों में, रवि, बुध, गुरू और शुक्रवार के दिन पहनें, चित्रित (छींट) वस्त्र शुक्रवार को छोड़ और लाल वस्त्र मङ्गलवार के सहित पूर्वोक्त वारों में धारण करें।

(बनारसी जरी वस्त्र का मुहुर्त

पुष्योत्तरानुराधान्त्ये धनिष्ठाश्विकरत्रये।
सुवर्णतंतुसम्मिश्रं वासो धार्यो रवौ कुजे।
राजतं तद्धि शुक्रेऽब्जे वस्त्रधारणभे शुभम् ॥१२६॥

पुष्य, तीनों उत्तरा (उ. फा; उ. षा; उ. भा;) अनुराधा, रेवती, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती इन नक्षत्र में तथा रवि और मंगल के दि ने की जरी (स्वर्ण तंतु

मिश्रित) वस्त्र एवं उन्हीं नक्षत्रों तथा शुक्र, और सोमवार में चाँदी की जरी (रजततंतु) के वस्त्र पहिनना शुभ होता है।

वस्त्र रंगने के कारखाने या रंगाई का मुहुर्त

पुनर्वसुद्वये हस्तात्पंचके श्रवणद्वये।
अश्विभेऽर्कैकवीज्यारे वाससां रंजनं शुभम् ॥१२७॥

पुनर्वसु पुष्य, हस्त, चि; स्वा; वि; अनु; श्रवण, धनि, अश्वि; इन नक्षत्रों में रवि, शुक्र गुरू और मङ्गलवार में वस्त्रों की रंगाई आरम्भ करनी चाहिए।

चक्रिका (आटा चक्की) चक्र विचार

शनेर्भतो युगाब्ध्यष्टरामवेदत्रिभं क्रमात्।
असच्छुभं क्रमाश्चक्रे चक्रिकाख्ये मनोहरे ॥१२८॥

शनि के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर ४। ४।८। ३। ४। ३ इस क्रम से नक्षत्रों को क्रमशः अशुभ और शुभ समझे। शुभ नक्षत्रों में नवीन चक्की बैठावे।

रजस्वला स्नान मुहूर्त्त

ज्येष्ठानुराधाकररोहिणीषु
स्वाती धनिष्ठासु मृगोत्तरासु।
रजोवती स्नाविधिं प्रकुर्याच्छु–
भस्यवारे च शुभे तिथौ च ॥१२९॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, रो., स्वा., मृग., तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों और शुभ ग्रह के वार और शुभ तिथियों में रजस्वला को शुद्धि स्नान करना चाहिए। यह मुहूर्त्त प्रथम

रजस्वला के लिए समझना चाहिए। क्योंकि; चतुर्थ दिन स्त्री शुद्ध होती है, यह स्मृति मत है।

गणितारम्भ मुहूर्त

शतद्वयेऽनुराधार्द्रे रोहिणीरेवतीकरे।
पुष्ये जीवे बुधे कुर्यात्प्रारम्भं गणितादिषु ॥१३०॥

शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, हस्त और पुष्य ये नक्षत्र बृहस्पति एवं बुधवार ये गणित सम्बन्धी कार्य करने में शुभ हैं।

व्याकरणारम्भ का मुहूर्त

रोहिणीपञ्चके हस्तात्पुनर्भे मृगभेऽश्विभे।
पुष्ये शक्रेज्यविद्वारे शब्दशास्त्रं पठेत्सुधीः ॥१३१॥

रोहिणी तथा हस्त से लेकर ५ नक्षत्र अर्थात् हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, और पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी और पुष्य, ये तथा बुधवार इनमें व्याकरणशास्त्र का पढ़ना शुभ है।

न्यायादि (कानून सम्बन्धी) शास्त्र के शुरू करने का मुहूर्त

त्र्युत्तरे रोहिणी पुष्यपुनर्भे श्रवणे करे।
अश्विन्यां शतभे स्वातौ न्यायशास्त्रादिकं पठेत्।१३२

तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, अश्विनी, शतभिषा और स्वाती ये नक्षत्र न्यायशास्त्र (कानून) आदि से सम्बन्धित विषय पढ़ने एवं तत् सम्बन्धी काम करने में शुभदायक है।

धर्मशास्त्र तथा पुराणारम्भ-मुहूर्त

हस्तादिपञ्चके पुष्ये रेवतीद्वितये मृगे।
श्रवत्रये शुभारम्भो धर्मशास्त्रपुराणयोः ॥१३३॥

ह., चि., स्वाती, वि., अनु, पुष्य, रे., अश्विनी, मृग, श्र., धनि., और शत., इन नक्षत्रों में धर्मशास्त्र और पुराण सम्बन्धी पढ़ाई या कार्य करना शुभ है।

डाक्टरी (वैद्य) विद्या तथा गारुडी (विष सम्बन्धी विद्या का मुहूर्त

हस्तत्रयेऽनुराधायां पुनर्भे श्रवणत्रये।
मूले चान्त्येऽश्विनीपुष्येज्येष्ठाश्लेषार्द्रभे मृगे॥
वैद्यविद्या कुजेऽब्जऽर्के ज्येष्ठाहीनेऽत्र गारुड़ी॥१३४

ह., चि., स्वा., अनु., पुन., श्र., धनि., शत, मू., रे, अश्विनी, पुष्य, ज्ये., आश्लेषा आर्द्रा और मृग., इन नक्षत्रों में तथा मङ्गल, सोम और रविवार, के दिनों में वैद्यविद्या (डाक्टरी,) का काम करना या इस विषय को पढ़ना शुभ है तथा ज्येष्ठा रहित इन्हीं नक्षत्रों में गारुड़ी विद्या पढ़ना या कार्य भी शुभ है।

जैनों की विद्या का मुहूर्त

श्रवत्रये मघापूर्वाऽनुराधारेवतीत्रये।
पुनर्भे स्वातिभे सूर्ये शुक्रे जैनागमं पठेत्॥१३५॥

श्र, धनि., शत, मघा, तीनों पूर्वा, अनु., रे., अश्विनी, भ., पुन., और स्वाती इतने नक्षत्रों में रवि एवं शुक्रवार के दिन जैन-विद्या को पढ़ना चाहिए।

अरबी, उर्दू, फारसी पढ़ने का मुहूर्त

ज्येष्ठाऽश्लेषा तथा पूर्वा रेवतीभरणीद्वये।
विशाखार्द्रोत्तराषाढाशतभे पापवासरे॥१३६॥

पाप वार (मंगल, रवि, शनिवार) तथा ज्ये., आश्लेषा तीनों पूर्वा, रेवती, भरणी, कृत्तिका, वि., आर्द्रा, उ. षा., शत., में यवन विद्या पढ़नी चाहिए।

दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

आर्द्राचित्रात्र्युत्तरे रेवतीन्दु-
ब्राह्मे मित्रे वा धनिष्ठासु दीक्षा ।
ग्राह्या मार्गे फाल्गुने श्रावणोर्जे
माघे वारे मन्दमाहेयहीने ॥१३७॥

आर्द्रा. चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, मृगशिरा, रोहिणी अनुराधा और धनिष्ठा, नक्षत्रों में तथा अगहन, फाल्गुन, श्रावण, कार्तिक और माघ ये महीने तथा शनि और मंगलवार को छोड़कर बाकी दिनों में दीक्षा लेना शुभ है। गुरु की कृपा हो जाने पर तथा अभीष्ट देवता के दिन पर बिना मुहूर्त्त भी दीक्षा होती है।

दीक्षा-मास-फल

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम् ।
वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥१३८॥
आषाढे बन्धुनाशः स्याच्छ्रावणे च शुभावहम् ।
प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥१३९॥
कार्त्तिके धनवृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदम् ।
पौषे तु ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्द्धनम् ॥१४०॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्त्तितम् ॥१४१॥

चैत्र में दीक्षा लेने पर बहुत दुःख, वैशाख में रत्नलाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में बन्धुनाश, श्रावण में शुभ, भाद्रपद में पुत्रहानि, आश्विन में सर्वविध सुख प्राप्ति, कार्तिक मास में धन की वृद्धि, मंगसिर में शुभ, पौष में ज्ञानहानि, माघ में बुद्धि की वृद्धि और फाल्गुन में सुख एव सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

अन्य मत से वापी मुहूर्त्त

स्वात्यश्विपुष्यहस्तेषु मैत्रे चैव पुनर्वसौ ।
रेवत्यां वारुणे चैव वापीकर्म प्रशस्यते ॥१४२॥

स्वाती, अश्विनी, पुष्य, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु रेवती और शतभिषा इन नक्षत्रों में बावली का कृत्य शुभ है ।

जलाशय मुहूर्त्त

अनुराधा मघा हस्त रेवतीषूत्तरात्रये ।
रोहिणीयुगले पुष्ये धनिष्ठाद्वितये तथा ॥१४३॥
पूर्वाषाढाभिधेचैव शुभे मासि शुभे दिने ।
वापीकूपतडागानामारम्भः कथितो बुधैः ॥१४४॥

पंडितों ने अनुराधा, मघा हस्त, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य धनिष्ठा, शतभिषा, और पूर्वाषाढ़ा ये नक्षत्र तथा शुभ मास व शुभ वारों में वापी, कूप, तालाब, बाँध नहर आदि से सम्बन्धित कार्य प्रारम्भ करने शुभ बताये हैं ।

धर्म-क्रिया-मुहूर्त्त

धर्मक्रिया मित्रमृगान्त्यचित्रा-
श्रुतित्रयस्वात्यदितौ कराश्वे ।
पुष्ये च सौम्येषु दिनेषु शस्ते-
त्याहुर्मुहूर्तागमकोविदेन्द्राः ॥१४५॥

अनु, मृग, रेवती, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, स्वाती, पुनर्वसु हस्त अश्विनी और पुष्य ये नक्षत्र तथा शुभवार धार्मिक कृत्य करने में पण्डितों की दृष्टि में शुभ है ।

कथाप्रारम्भचक्रम्

वेदाब्धिवेदश्रुतिवेदवेद
फलं गुरोर्भाद्गुणमेव गण्यम् ।
अर्थश्च लाभश्च तथा च सिद्धि-
र्लाभो मृतीराजभयं च मोक्षः ॥१४६॥
कथारम्भं प्रकुर्वीत प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभि।
फलं च प्राप्यते ह्येवंश्रोत्रा वक्त्रा न संशयः १४७॥

बृहस्पति के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक प्रथम ४ नक्षत्र अर्थ के देने वाले, पुनः ४ नक्षत्र लाभप्रद; फिर ४ नक्षत्र सिद्धिकर्त्ता पुनः ४ नक्षत्र लाभप्रद तत्पश्चात् ४ नक्षत्र मृत्यु सूचक, फिर ४ नक्षत्र राज्यभय कारक और उसके बाद वाले अर्थात् अन्तिम ३ नक्षत्र मोक्ष के सूचक हैं। कथाचक्र के अनुसार यह फल श्रोता और वक्ता को मिलता है ऐसा प्राचीन मुनियों ने कहा है।

निमन्त्रण पत्र लिखने का मुहूर्त

पूर्णेन्दोरखलेन्दुजस्य च गुरोः शुक्रस्यवारे तथा-
भद्रापूर्ण तिथौ जयाह्वयतिथौ ऋक्षे चरे क्षिप्रभे।
लग्ने विद्गुरुशुक्र वीक्षितयुते शुद्धे सुते तल्लिखे-
दाह्वानार्थमिदं मृदूक्तिघटितं माङ्गल्यपत्रं शुभम् १४८॥

पूर्णबली चन्द्रमा की तिथियों में, पापरहित बुध जिस समय हो उसके वार में गुरु और शुक्रवार तथा भद्रा (२.७.१२) और पूर्णा (५।१०।१५) तथा जया (३।८।१३) तिथियाँ चर (स्वाती, पुनर्वसु श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा)

और क्षिप्र (अश्विनी, हस्त और पुष्य) नक्षत्र तथा बुध, गुरु और शुक्र से दृष्ट और युक्त लग्न, तथा लग्न से ५ वाँ स्थान ग्रहरहित हो ऐसे समय में सुघटित कोमल शब्दों में निमन्त्रणपत्र लिखना चाहिये।

श्रीमद्भागवत सप्ताह मुहूर्त्त

नभस्य आश्विनोर्जौ च मार्गशीर्षः शुचिर्नभाः।
एते मासाः कथारम्भे श्रोतृणां मोक्षसूचकाः ।१४९।
मलमासं च शुक्रास्तं तथास्तं गुरुचन्द्रयोः।
गुर्वादित्यं क्षयतिथिं सर्वथा परिवर्जयेत् ॥१५०॥
भौमार्किवर्जिताः वाराः भानि ध्रुवमृदूनिच।
शुभयोगेतिथौ लग्ने कथारम्भः प्रशस्यते ॥१५१॥
नित्यायां च कथायां च पुराणानां मुनीश्वर !
द्वादशीं वर्जयेत्प्राज्ञः सूत सूतक सम्भवात् ॥१५२॥
सप्ताहे न निषेधोऽस्ति प्राहुरेवं पुराविदः।
श्रीमद्भागवतं भक्त्या श्रोतव्यं पुरुषोत्तमे ॥१५३॥
तत्फलं वचसा वक्तुं धातारपि न शक्यते।

भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, आषाढ़ और श्रावण ये महीने कथारम्भ कालिक श्रोताओं के लिए मोक्ष सूचक है। मलमास, शुक्रास्त, गुर्वस्त, चन्द्रास्त (अमावस्या अथवा रात्रि)गुर्वादित्य(धनु, और मीन के सूर्य की संक्रान्ति, सिंहस्थ गुरू, गुरू व सूर्य की एक राशि गत स्थिति ये सब गुर्वादित्य में आ सकते हैं और सभी शुभ कर्म से वर्ज्य माने गये हैं देखिये (मु० चि०की पीयषधारा टीका शुभाशुभ प्रक-

रण श्लोक ४८) किन्तु; जिस राशि में सूर्य हो और वहीं गुरु भी रहे यही गुर्वादित्य प्रसिद्ध हैं। क्षय तिथि, मंगल और शनिवार सर्वथा वर्जित हैं। शुभ योग, शुभ तिथि, शुभ लग्न और ध्रुव (पृ० ६९) मृदु (पृ० १००) नक्षत्र कथारम्भ में श्रेयस्कर हैं। नित्यकथा होती हो तो 'सूत मृत्यु दिवस' होने से द्वादशी तिथि को कथा बन्द रखें। सप्ताह श्रवण में इसका निषेध नहीं है। भक्ति भावना से (निष्काम भगवत्प्रीत्यर्थं) पुरुषोत्तम (अधिकमास) मास में भी श्रीमद्भागवत श्रवण का अनन्त फलप्रद है। मोक्ष सूचक मासों के अतिरिक्त मास में मोक्षातिरिक्त कामना वाले सप्ताह श्रवण शुभमुहूर्त में कर सकते हैं। ऐसा मेरा मत है।

श्री हरिवंश नवाह पाठ मुहूर्त

वैशाखे माघ ऊर्जे च अन्यस्मिञ्छुभ मासके।
शुक्लपक्षे तिथौ नन्दा पूर्णा भद्राजयासु च ॥१५४॥
वारे गुरौ तथा शुक्रे चन्द्रे चन्द्रात्मजे तथा।
नक्षत्रे श्रवणे हस्ते पुष्ये मूले पुनर्वसौ ॥१५५॥
वासवे तुहिनांशौ च पौष्णे च हयतारके।
सौभाग्यादिषु योगेषु करणे विष्टिवर्जिते ॥१५६॥
श्रोतुश्चाथापि वक्तुश्च चन्द्रे च बलशालिनी।
हरिवंशकथारम्भे प्रशस्ताः रात्रिवर्जितः ॥१५७॥

वैशाख, माघ कार्तिक ये मास या इनसे अतिरिक्त कोई भी शुभमास, शुक्लपक्ष, नंदा पूर्णा, भद्रा और जया तिथियाँ, गुरू, शुक्र, सोम और बुधवार, श्रवण, हस्त, पुष्य मूल, पुनर्वसु, धनिष्ठा, मृगशिरा, रेवती, अश्विनी ये नक्षत्र

सौभाग्यादि योग, विष्टि (भद्रा) को छोड़कर बाकी करणों में श्रोता और वक्ता का चन्द्रबल देखकर हरिवंशपुराण की कथाप्रारम्भ करनी चाहिए। रात्रि में कथा नहीं होती है।

शान्तिक-पौष्टिक कर्म का मुहूर्त

पुनर्वसुद्वये स्वातीत्र्युत्तरे श्रवणत्रये।
रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये ॥१५८॥
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पुण्याहे कातितं बुधैः।

पुनर्वसु पुष्य, स्वाती, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, रोहिणी और मृगशिरा इन नक्षत्रों में तथा पुराण दिन (शुभ पर्वादि) में शान्तिकर्म और पुष्टिकर्म करना शुभ है।

वीर वेताल आदि के साधन का मुहूर्त

मघार्द्राभरणीमूले मृगेऽङ्गे सद्बुधे गते।
शुद्धाष्टमे भृगौ तूर्यं वीरवेतालसाधनम् ॥१५९॥

वीर, वेताल आदि के साधन में मघा, आर्द्रा, भरणी, मूल और मृगशिरा ये नक्षत्र तथा शुभग्रहों के राशि का लग्न और शुभ राशि में बुध का योग तथा आठवां स्थान शुद्ध हो और शुक्र हो तो शुभ है।

मन्त्र, यंत्र, व्रत आदि का मुहूर्त

उफाहस्ताश्विनीकर्णविशाखामृगभेऽहनि।
शुभे सूर्ययुते शस्तं मन्त्रयन्त्रव्रतादिजम् ॥१६०॥

उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा और मृगशिरा नामक नक्षत्र तथा रविवार के सहित शुभ दिनों में मन्त्र, यन्त्र और व्रत आदि कार्यों का आरम्भ श्रेष्ठ है।

हवन-चक्र-विचार

सूर्य भात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥१६१॥

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने और तीन-तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रह लिखकर उनमें स्थापित करें। उसका फल चक्र में लिखे मुताबिक समझें। क्रूरग्रह में पड़ने वाले नक्षत्र की आहुति का अशुभ फल तथा शुभग्रह की आहुति का शभ फल होता है ऐसा समझें।

हवन-चक्र

सू.	बु	शु.	श	चं	मं	गु	रा	के	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
अ.	शु	शु	अ	शु.	अ	शु	अ	अ	फल

अग्नि-वास-विचार

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥१६२॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपद् से गिनकर जो तिथि संख्या हों उनमें रविवार आदि की वार संख्या जोड़कर उसमें एक और जोड़ देना चाहिए। फिर चार से भाग देने पर अगर शेष तीन अथवा शून्य बचे तो अग्निकावास पृथ्वी पर

रहता है। उसमें हवन करने से सुख प्राप्त होता है। एक बचे तो अग्नि-वास आकाश में उसका फल प्राण-नाशक है। जो दो बचे तो पाताल में अग्नि का वास होता है जिसका फल अर्थनाश है।

अग्नि-विचार का परिहार,

विवाहयात्राव्रतगोत्ररेषु
चूडोपनीते ग्रहणे युगाद्यैः ॥
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ
नैवाग्निचक्र परिचिन्तनोयम् ॥१६३॥

विवाह, यात्रा, गोचर, व्रत, ग्रहण युगादि तिथियों तथा बालक के जन्मप्रसूति का होम अर्थात् मूलादिशान्ति इन कार्यों में अग्निचक्र का विचार नहीं करना चाहिए।

व्रतबन्धे विवाहे च नवरात्रे च नित्यके।
कुल देवार्चने धीमान्नो कुर्यादग्नि चिन्तनम् ।१६४।
संस्कारेषु विचारोऽस्य न कार्यो नापि वैष्णवे।
नित्ये नैमित्तिके कार्ये न चाब्दे मुनिभिः स्मृतः ।१६५।

यज्ञोपवीत विवाहादि सभी संस्कार, नवरात्र, नित्य-होम, कुलदेव पूजा, विष्णुयज्ञ (पूजन) नित्य और नैमित्तिक कार्यों में अग्नि चक्र (वह्निवास) का विचार नहीं है। ग्रह शान्ति में होता है। यहां पूर्वपठित गोचर होम का विरोध होता है।

ग्रह शयन

अर्कश्चन्द्रादष्टमे ज्ञाच्चतुर्थे
मन्दः शुक्रादष्टमेऽङ्गारकश्च ।

राहु धर्मे जीवतः खेट सुप्ते-
होमे नाशः पुत्रदाराधनानाम् ॥१६६॥

चन्द्रमा से ८ वें स्थान में सूर्य, बुध से ४थे शनि, शुक्र से ८ वें मङ्गल, गुरु से नौवें राहु हो तो ग्रहशयन नाशक दोष होता है। इस काल में होम की पूर्णाहुति करने से पुत्र, स्त्री और धन का नाश होता है।

यज्ञारम्भ मुहूर्त्त

अस्थिराणि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।
इति सञ्चिन्त्य मनसि सर्वदा धर्ममाचरेत् ॥१६७॥
यदेव जायते श्रद्धा पात्रं संप्राप्यते यदा।
तदेव पुण्यकालः स्यादिति पूर्वैं प्रकीर्तितम् ॥१६८॥
यस्य देवस्य यद्वारः नक्षत्रं वा तिथिस्तथा।
पञ्चाङ्ग शुद्धि पूर्वं हि प्रशस्तः यज्ञ कर्मणि ॥१६९॥
रिक्तायां सर्वपूर्वं हि प्रायश्चितं समाचरेत्।
नित्यं नैमित्तिकं कर्म वर्ज्यकालेऽपि नो चरेत् ॥१७०॥
काम्यं यज्ञादिकं सर्वं शुभकाले भविष्यति।
निष्कामः सर्वदा कुर्याद्ब्रह्मणेऽर्पणपूर्वकम् ॥१७१॥

मनुष्य का शरीर और धन हमेशा कायम नहीं रहते हैं ऐसा मन में सोचकर सर्वदा धर्माचरण करना चाहिए। जब मन में श्रद्धा उत्पन्न हो और योग्य सत्पात्र सन्मुख हो वही शुभ मुहूर्त्त है, ऐसा पूर्वजों ने कहा है। जिस देवता का जो

विभिन्न यज्ञ सम्बन्धी मुहूर्त्तादि की जानकारी के लिए महा याज्ञिक श्री पं० वेणीराम जी गौड़ वेदाचार्य विरचित 'यज्ञ मीमांसा' नामक ग्रन्थ देखें।

वार तिथि या नक्षत्र पञ्चांगीय दोष रहित हो, उसमें उस देव विशेष से सम्बन्धि यज्ञादि करने चाहिए। सबसे पहिले रिक्तातिथि में सर्वप्रायश्चित्त करना चाहिए। नित्य (अग्नि-होत्रादि कार्य) और नैमित्तिक (जैसे नवरात्र में होने वाले शतचण्डी आदि) कर्म वर्ज्य काल में भी होते हैं, किन्तु; कामनापरक होने वाले (काम्य) प्रयोग (यज्ञानुष्ठानादि) शुभमुहूर्त्त में ही होंगे। निष्काम कर्म ब्रह्मार्पण बुद्धि से सर्वदा करना चाहिए। उसका कोई मुहूर्त्त नही है।

औषधि सेवन मुहूर्त्त

अर्काश्वि पुष्ये श्रवणत्रये च
मूलादिति स्वाति मृगे सपौष्णे।
चित्रासुमित्रे च शुभेऽह्निसार्के
भैषज्य कर्म प्रचरेद्विरिक्ते ॥१७२॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, मूल, पुनर्वसु, स्वाती, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा इन नक्षत्रों में रवि सहित शुभ वारों और रिक्ता रहित तिथियों में औषधि सेवन हितकर होता है। कुछ आचार्यों के मत से अमावस्या, जन्म नक्षत्र और भद्रा में भी औषधि सेवन करना चाहिए। द्विस्वभाव लग्न होना चाहिए तथा लग्न से ७।८।१२ शुद्ध होना चाहिए।

विरेचन वमन मुहूर्त्त

गुरुभौमार्कवारेषु कार्यं शुभ तिथौ तथा।
विरेको वमनं शुक्रे चन्द्रे चैवोक्तभादिषु ॥१७३॥

विरेचन में गुरु, मंगल रविवार और शुभ तिथियाँ तथा वमन में सोम तथा गुरुवार एवं औषधि सेवनोक्त नक्षत्र ग्राह्य हैं।

रक्त मोक्ष (आपरेशन) मुहूर्त्त

हस्तत्रयेऽश्विनी पुष्ये शतभे रोहिणीद्वये ।
श्रवणे चानुराधायां ज्येष्ठायां रक्तमोक्षणम् ॥१७४॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, शतभिषा, रोहिणी मृगशिरा, श्रवण, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र में रक्त या चीर फाड़ (आपरेशन) कराना श्रेष्ठ होता है ।

रस-सेवन मुहूर्त्त

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधाऽन्त्ये श्रुतित्रये ।
पुनर्भे मृगशीर्षेऽर्के भौमेज्ये रसभक्षणम् ॥१७५॥

हस्त, चित्रा स्वाती, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, मृगशिरा, इन नक्षत्रों में तथा रविवार, मंगल और बृहस्पति वारों में रस सेवन शुभ कहा गया है ।

रोग-मुक्त व्यक्ति के स्नान का मुहूर्त्त

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु
सार्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ।
पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचि-
न्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्तोः ॥१७६

सोमवार, शुक्रवार, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र, आश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाती, मघा और रेवती इतने नक्षत्र और वार रोगी के स्नान में वर्जित हैं ।

लग्ने चरे सूर्यकुजेज्यवारे
रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने ।
केन्द्रत्रिकोणार्थ गते च पापे
स्नानं हितं रोगविमुक्तकानाम् ॥१७७॥

चरलग्न, रवि, मंगल और बृहस्पतिवार तथा रिक्ता तिथि, पर्व चन्द्रमा बल से हीन हो और केन्द्र तथा त्रिकोण और द्वितीय भाव में पापग्रह हो तो रोग से मुक्त को स्नान कराना श्रेष्ठ होता है ।

रोगोत्पत्ति में शुभाशुभविचार

स्वातिश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु
शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे ।
नन्दा रिक्ता यस्य रोगस्य प्राप्ति–
मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षिताऽपि ॥१७८॥

मंगल, शनैश्चर और इतवार को स्वाती आश्लेषा, आर्द्रा तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा नक्षत्र हो तथा नन्दा और रिक्ता तिथि हो तो इनमें बीमार पड़ने पर उस रोगी की यदि महादेवजी भी रक्षा करें, तो भी वह नहीं जीवेगा ।

रोगोत्पत्ति में नक्षत्र फल

रोगे पित्र्येनखाहं हयशिखिनिॠतौगोदिनंयाम्यकर्ण
चित्राब्जे शिवाहं द्विपवसुरविभे पक्षमात्र हिपीड़ा ।
ब्रह्मादित्येज्यबुध्नार्यमभ इहनगान्सौम्यविश्वेचमास
मैत्रे पौष्णे स्थिरा स्यादनिल
फणि इरेन्द्रत्रिपूर्वासु मृत्युः ॥१७९॥

मघा नक्षत्र में रोगी हो तो २० दिन अश्विनी, कृत्तिका, मूल में ९ दिन, श्रवण, भरणी, चित्रा, शतभिषा में ११ दिन विशाखा, धनिष्ठा, हस्त में १५ दिन रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उ; भा; उ. फा. (ब्राह्मर्क्ष होने से अभिजित् अनुक्त होने पर भी ग्राह्य है) इन नक्षत्रों में ७ दिन मृगशिरा और उत्तराषाढ़ा में १ मास पीड़ा भोगनी पड़ती है । अनुराधा

और रेवती में रोग स्थायी (टिकाऊ) हो जाता है। स्वाती, आश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और तीनों पूर्वा नक्षत्रों में रोग उत्पन्न हो तो उस रोगी की मृत्यु होने की संभावना रहती है।

काल चक्र विचार

ज्वरितवासरभाच्छरशक्रभ
त्रिकरभं मुखमंकधृतिद्वये।
यमरदद्वयमर्दित नाम भे
मुखरदे मृतिरन्यभगे सुखम् ॥८०॥

रोगोत्पत्ति नक्षत्र के समय से यदि नाम नक्षत्र ५ वां, १४ वां और २३ वां नक्षत्र हो तो वे नक्षत्र काल के मुख हैं। ९ वां और १०वां नक्षत्र १८ वां और १९ वां नक्षत्र यम (काल) की दंष्ट्रा (दाढ़ें) हैं अगर रोगी के नाम का नक्षत्र इनमें पड़ता हो तो रोगी की मृत्यु होती है इसी प्रकार मरणासन्न रोगी की प्रतिदिन की हालत दिन नक्षत्र और रोगी के नाम नक्षत्र से विचार कर शुभाशुभ सोच सकते हैं।

सर्प ग्रहण मुहूर्त्त

भरण्यामार्द्रा मघा श्लेषा पूर्वा ज्येष्ठाख्यमूलके।
क्रूरेह्निन्द्रगः पापैः हित्वा कालमहिग्रहः ॥१८१॥

भरणी, आर्द्रा, मघा, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्रों में रवि, मंगल और शनिवार को छोड़कर तथा तत्कालीन लग्न से केन्द्र स्थानों में पापग्रह नहीं हो ऐसे समय में साँप पकड़ने का काम प्रारम्भ करना चाहिए।

सर्पदंशे मृत्यु योगः

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखा
सार्पान्तकाद्रासु भुजङ्गदष्टः।

स वैनतेयेन सुरक्षितोऽपि
प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ॥१८२॥

जिस किसी को भी कृत्तिका, मूल, मघा, विशाखा, अश्लेषा, भरणी, आर्द्रा, नक्षत्रों में सांप काट लेता है, अगर उसकी रक्षा साक्षात् गरूड़जी करें, तो भी वह मृत्यु को प्राप्त होता है अर्थात् उसकी रक्षा असंभव है।

रोगमुक्तस्य वहिर्गमन मुहूर्त

सद्वारे गमनोक्तर्क्षे सत्तिथौ शोभने विधौ।
सल्लग्ने रोगमुक्तस्य वहिर्निस्सरणं शुभम् ॥१८३॥

शुभवार, यात्रोक्त नक्षत्र, शुभ तिथि और शुभ चंद्रमा एवं शुभ लग्न में रोग मुक्त व्यक्ति को अपने घर से बाहर निकलना चाहिए।

अज्ञात वा कालातीत होने पर प्रेत कर्म का मुहूर्त

शुक्रारार्किषु दर्श भूतमदने नन्दासु तीक्ष्णोग्रभे
पौष्णं वारुणभे त्रिपुष्करदिनेन्यूनाधिमासेऽयने।
याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतिकेशवप्रतिकृतेर्दाहो न पक्षे सिते ॥१८४॥
जन्मप्रत्यरितारयोर्मृति सुखान्त्येऽब्जे च कतनुं स
न्मध्योमित्रभगादितिध्रुवविशाखाद्वयङ्घ्रिभेऽपि च।
श्रेष्ठोऽर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यशिवपुष्ये तथा
त्वाशौचात्परतो विचार्यमखिलं सध्यो यथासम्भवम् ॥

शुक्र, मंगलवार और शनिवार तथा अमावस्या, चतुर्दशी, त्रयोदशी, नंदा १।६।११ तिथि, तीक्ष्णसंज्ञक, उपसंज्ञक तथा रेवती और शतभिषा ये नक्षत्र एवं त्रिपुष्कर दिन तथा क्षयमास

और मलमास इनमें मरणोपरान्त कालातीत अवस्था में वर्ष के उपरांत दक्षिणायन सूर्य, पात व परिघयोग व बृहस्पति और शुक्र का अस्त तथा भद्रा और वैधृतियोग तथा शुक्लपक्ष कर्त्ता की जन्म और पाँचवीं तारा चौथा, आठवाँ बारहवाँ चंद्रमा इनमें मरणोपरांत कालातीत अवस्था में प्रेत क्रिया वर्जित हैं अनुराधा; पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक विशाखा, मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में तथा बुधवारको उक्त कर्म मध्यम हैं। रवि, बृहस्पति, सोमवार तथा श्रवण, हस्त, स्वाती, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों में उक्त क्रिया पर्णशरदाह आदि नारायण-बलि शुभ होते हैं।

जलाशय, बाग, देवताआदि की प्रतिष्ठा का मुहूर्त

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा
सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरे ध्रुवे स्या-
त्पक्षे सितस्वर्क्षतिथिक्षणे वा ॥१८६॥
रिक्तारवर्ज्ये दिवसेऽतिशस्ता
शशाङ्कपातेस्त्रिभवाङ्गसंस्थैः :
व्यष्टान्त्यगः सत्खचरैर्मृगेन्द्रे
सूर्यो घटे कौ युवतौ च विष्णुः ॥१८७॥
शिवौ नृयुग्मे द्वितनौ च देव्याः
क्षुद्रास्चरे सर्व इमे स्थिरर्क्षे।
पुष्ये ग्रहाः विघ्नप यक्षसर्प
भूतादयोऽन्त्ये श्रवणे जिनश्च ॥१८८॥

जलाशय (बाँध, नहर, कुँवा, तालाब, बावड़ी, बन्दरगाह, झील आदि) और बगीचा (खेल का मैदान आदि का जन-कार्य हेतु परित्याग (उत्सर्ग) और देव-प्रतिष्ठा इन कार्यों में उत्तरायण सूर्य तथा गुरु; चन्द्र और शुक्र का उदित रहना, मृदु, क्षिप्र और ध्रुव-नक्षत्र, शुक्लपक्ष और स्थाप्य देवताओं के नक्षत्र, तिथि, मुहूर्त्तादि अथवा अगर ये शुद्ध न मिलते हों तो पूर्वोक्त मृदुक्षिप्रादि में ही रिक्ता और मङ्गल रहित तिथि और वारों में प्रतिष्ठा कार्य अत्यन्त प्रशस्त होते हैं। चंद्रमा और पापग्रह ३; ६; ११ स्थानों में, शुभग्रह ८, १२ स्थानों को छोड़कर अन्य स्थानों में हों तो उक्त कर्म शुभ होते हैं। सिंहलग्न में सूर्य, कुम्भलग्न में ब्रह्मा, कन्यालग्न में विष्णु, मिथुनलग्न में शिव, द्विस्वभाव लग्न में देवियाँ, चरलग्नों में क्षुद्र देवता तथा स्थिरलग्न में सभी देवी देवता स्थापित होते हैं। पुष्यनक्षत्र में ग्रह; रेवती में गणेश, यक्ष, सूर्य और भूतगण तथा श्रवण नक्षत्र में जिन देवता (जैनों के देवता) स्थापित होते हैं।

चार्वाकजिनक्रिया मुहूर्त

उषाश्विन्यां मृगे स्वातौ पुनर्भे श्रवणत्रये।
जया पूर्णासु शुक्रेऽब्जे बुधेऽह्निचचरोदये।
चार्वाकजिनबौद्धानां मण्डलीकरणं शुभम् ॥१६०॥

उ. पा., अश्विनी, मृगशिरा, स्वाती, पुनर्वसु, श्र., ध, शत; इन नक्षत्रों में जया तथा पूर्ण तिथियों में शुक्र, सोम और बुधवार को चरलग्न में चार्वाक, जैन, बौद्धादि के उत्सव शुभ होते हैं।

काष्ठशिल्प कृत्य

हस्तषट्केऽश्विनीपुष्ये रेवत्यां श्रवणत्रये।
पुनर्भे रोहिणी युग्मे सूत्रधार क्रियोत्तमा ॥१६१॥

ह., चि., स्वा., त्रि., अनु, ज्ये, अश्विनी, पुष्य, रेवती, श्र, ध, शत, पुनर्वसु, रोहिणी, मृगशिरा इन नक्षत्रों में काष्ठ अथवा पत्थर के शिल्पी (सूत्रधार) के कार्य आरम्भ का शुभ समय है।

नापित कृत्य

ज्येष्ठाहस्तत्रये कर्णत्रितयेऽश्वि मृगेऽन्त्यभे ।
पुनर्वसुद्वये हित्वा रिक्ता षष्ठ्यष्टमी तिथिम् ॥
सद्वारे नापितानां च क्षुरादि सकला क्रिया: १९२॥

ज्येष्ठा, हस्त, चि, स्वा, श्रवण, ध, शत, अश्वि, मृग, रेवती, इन नक्षत्रों में तथा रिक्ता, षष्ठी अष्टमी इनको छोड़-कर अच्छे वारों में नाइयों के समस्त कर्म प्रथमबार हजामत शुरू करना, सैलून खोलना आदि शुभ होते हैं।

आभीर कृत्य

विशाखायां पुनर्भेऽन्त्ये ज्येष्ठा हस्ताश्विनी मृगे ।
पूभा कर्णत्रये पुष्येज्ञेऽर्केऽब्जे वल्लव क्रिया: १९३॥

विशाखा, पुन, रेवती, ज्ये., हस्त, अश्विनी, मृग, पू. भा., श्रवण, धनिष्ठा, शत, पुष्य इन नक्षत्रों में तथा सूर्य, सोम और बुधवारों में दूध, दही, घृत आदि से सम्बन्धित (डेयरीफार्म का) काम शुरू करना चाहिए।

चौरकृत्य

विशाखा कृत्तिका पूर्वा मूलार्द्रा भरणीमघे ।
आश्लेषाज्येष्ठयोर्मन्द भौमयो: शाकुने बले ॥
लग्ने वा दशमे भौमे चौर्यं सद्द्रव्यलब्धये ॥१९४॥

विशाखा, कृत्तिका, तीनों पूर्वा, मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में तथा शनि और मङ्गल-वार के दिन अच्छा शकुन देखकर चोरी, डाका, अपहरण तथा तस्कर व्यापार (स्मगलिङ्गका धन्धा) करना चाहिए। चोरी आदि के समय लग्न या १० वें घर में मंगल प्रभूत धन दायक होता है। दुष्ट शकुन हों तो चौर्य कर्म नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसमें शकुन की ही प्रधानता अन्य ग्रन्थकारों ने दी है। चोरों को यात्रा-प्रकरणोक्त टेलक मुहूर्त्त भी लाभ-प्रद कहा गया है जिसे मुहूर्त चिन्तामणि-मुहूर्त्त-गणपति आदि ने लिखा है।

राज्याभिषेक समयः

राज्ञां स्यादभिषेचनं दिनमणौ सौम्यायने चास्फुजि-
जीवाब्जैरुदितैर्दशेन्दुजनिपार्कैः सुवीर्यान्वितैः।
क्षिप्रश्रोत्रमृदुध्रुवेन्द्रसहिते वारे विभौमे शुभं
रिक्तामाचय वृद्धिमासरजनीचैत्रान्कुयोगांस्त्यजेत्॥

राजगद्दी पर बैठने के मुहूर्त्त में उत्तरायणसूर्य, बृहस्पति, चन्द्रमा, और शुक्र का उदित रहना, तथा मङ्गल, सूर्य और जन्मलग्नपति महादशादिकों के स्वामी एवं जन्मराशिपति ग्रहों का बलान्वित होना व ज्येष्ठा, श्रवण, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं। क्षय और वृद्धिमास चैत्रमास तथा रिक्ता अमातिथि मङ्गलवार, रात्रि समय और कुयोग ये वर्जित हैं।

अभिषेक लग्न गत शुभ योग

लग्नेंशके स्याद् ध्रुवमिश्र संज्ञिते
शीर्षोदये स्वोपचयेसुदृग्युते।

केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिगैः शुभैः
वीर्यान्वितै-र्लाभरिपु-त्रिगैः खलैः ॥१९६॥

अभिषेक-लग्न और नवांशलग्न में ध्रुव (स्थिर) और मिश्र द्विस्वभाव) संज्ञक राशियाँ हो, शीर्पोदयी राशि एवं द्वितीयस्थानसहित उपचयस्थान शुभदृष्ट हों, केन्द्र, त्रिकोण, लाभ, द्वितीय, तृतीयस्थान में शुभग्रह एवं ३, ६, ११ में बली पापग्रह हों तो शुभ होता है।

पापैस्तनौ रुङ् निधने मृतिः सुते
पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ।
स्यात्खेऽलसो भ्रष्टपदो द्युनाम्बुगैः
सर्वं शुभं केन्द्रगतैः शुभग्रहैः १९७॥

अभिषेक लग्न में पापग्रह हो तो राजा के रोग, आठवें पापग्रह हो तो मृत्यु, पांचवें में पापग्रह हो तो पुत्रपीडा और दूसरे, बारहवें पापग्रह हों तो दरिद्रता हो, दशवें स्थान का पापग्रह आलसी, चौथे व सातवें पापग्रह हो तो ऐश्वर्य से भ्रष्ट करेंगे मगर शुभग्रह केन्द्र में होंगे तो सब ग्रह शुभकारी हो जावेंगे ।

गुरुर्लग्नकोणे कुजारौ सितःखे
स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ।
तृतीयायगौ सौरिसूर्यौ खबन्ध्वो-
र्गुरुश्चेद्धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य १९८

बृहस्पति अभिषेकलग्न तथा त्रिकोण (९।५) में, मंगल छठे तथा शुक्र दशवें हो तो वह राजा हमेशा राजलक्ष्मी के साथ

आनन्दोपभोग करेगा। ३, ६ स्थानों में शनि और सूर्य, १०, ४ स्थान में गुरु हो तो उसका राज्य स्थिर रहेगा।

राजा की मृत्यु होने पर सद्यः अभिषेक

मृते राज्ञि न कालस्य नियमोऽत्र विधीयते।
नृपाभिषेकः कर्तव्यः दैवज्ञेन पुरोधसा ॥१९९॥

राजा की मृत्यु हो जाने पर राज्याभिषेक के लिए कोई समय का बन्धन नहीं है। पुरोहित और दैवज्ञ तत्काल राज्याभिषेक कर दें।

शस्त्र-घट्टन-मुहूर्त्त

कृत्तिकासु विशाखायां भौमार्कशनिवासरे।
सल्लग्ने घट्टितं शस्त्रं नृपाणां जयदायकम् ।२००

कृत्तिका, विशाखा नक्षत्र, भौम रवि और शनिवार एवं शुभग्रहों के लग्नों में बनाया हुआ हथियार राजाओं को जयकारी होता है।

भाला, तलवार शस्त्र धारण का मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वये हस्ते चित्रायां रोहिणीद्वये।
विशाखादित्रये कुर्यात्त्र्युत्तरे रेवतीद्वये ॥२०१॥
रिक्तां विना तिथौ सूर्यशुक्रजीवदिने तथा।
सन्नाहच्छुरिकाखड्गकुन्तशस्त्रादिधारणम् ॥२०२॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, रोहिणी, मृगशिरा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, तीनों उत्तरा, (उ. फा, उ. षा, उ. भा,) रेवती और अश्विनी ये नक्षत्र और रिक्ता तिथि को छोड़कर रविवार, शुक्रवार और गुरुवार को छुरी तलवार, भाला इत्यादि शस्त्रों को धारण करना शुभ है।

आग्नेय-शस्त्र घट्टन और धारण का मुहूर्त्त

विशाखाकृत्तिकापूर्वा मघाश्लेषाश्विनीमृगे ।
मूलार्द्राभरणीज्येष्ठा सजीवे क्रूरवासरे ॥
घट्टनं धारणं प्रोक्तं वह्निशस्त्रस्य शोभनम् ॥२०३॥

विशाखा, कृत्तिका, ३ पूर्वा, मघा, आश्लेषा, मृगशिरा, मूल, आर्द्रा, भरणी और ज्येष्ठा ये नक्षत्र और बृहस्पति सहित क्रूरवार आग्नेयास्त्र बनाने और धारण करने में शुभदायक होते हैं ।

शिकार खेलने का मुहूर्त्त

आश्लेषाभरणीज्येष्ठापूर्वार्द्रास्वातिमूलकैः ।
विशाखायां च पापेऽह्नियायादाखेटकं नृपः २०४॥

आश्लेषा, भरणी, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, (पू. फा. पू. षा., पू. भा.) आर्द्रा, स्वाती, मूल और विशाखा ये नक्षत्र और पाप-वार राजा को शिकार खेलने में शुभदायक होते हैं ।

सन्धि मुहुर्त्त

अनुराधा मघा पुष्ये तिथ्यर्द्धे तैतिलाभिधे ।
लग्ने सद्दृष्टिगेऽष्टम्यां द्वादश्यां सन्धिरिष्यते २०५

अनुराधा, मघा और पुष्य नामक नक्षत्र तथा तैतिल करण शुभ युक्त या दृष्ट लग्न एवं अष्टमी और द्वादशी तिथि सन्धि कार्य में गृहीत हैं ।

हाथी और घोड़े पर चढ़ने अथवा उनसे सम्बन्धित कार्य

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशा-
दित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ।

स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं
कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ॥२०६॥

अश्व सम्बन्धी कृत्य क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र (पृ० १००) तथा रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाती, शतभिषा और पुनर्वसु इन नक्षत्रों में शुभ हैं तथा हाथी सम्बन्धी कृत्य मृदु और क्षिप्रसंज्ञक तथा चरसंज्ञक नक्षत्रों में श्रेयस्कर होता है। इनमें रिक्ता और भौमवार वर्जित हैं।

अश्व-चक्र विचार

अश्वाकारं लिखेच्चक्रं साभिजिद्भानि विन्यसेत् ॥
स्कन्धे च सूर्यभात्पञ्च पृष्ठे च दश भानि च २०७
पुच्छे द्वे स्थापयेद्धीरश्चतुष्पादे चतुष्टयम् ।
उदरे विन्यसेत्पञ्च मुखे द्वे तुरगस्य च ॥२०८॥
अश्वलाभो मुखे सम्यग् वाजी नश्यति चोदरे ।
चरणस्थे रणे भङ्गः पुच्छे पत्नी विनश्यति २०९॥
अर्थसिद्धिर्भवेत्पृष्ठे स्कन्धे स्कन्धपतिर्भवेत् ।
अश्वाकारमिदं चक्रं विचार्य गणकोत्तमैः ॥२१०॥

सूर्य के नक्षत्र से अभिजित्सहित चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर उसमें अश्वचक्र स्थापित करें उसमें प्रथम पाँच नक्षत्र स्कन्ध (कंधे) पर, फिर दश नक्षत्र पृष्ठ भाग (पीठ) में तत्पश्चात् दो नक्षत्र पुच्छ की जगह पर, पुनः चार नक्षत्र चारों पैरों में, फिर पाँच नक्षत्र पेट और पुनः दो नक्षत्र मुँह के स्थान पर धरें और निम्न फल जानें :—

अगर दिन (चन्द्र) नक्षत्र मुख में पड़े तो अर्थलाभ कारक, पेट में पड़े तो अश्व नाशक, चरणों में हो तो युद्ध में मृत्यु, पुच्छ में पड़े तो स्त्री का नाश, पीठ में हो तो अर्थसिद्धि स्कन्ध में पड़े तो स्कन्धपति होगा ।

गज-चक्र विचार

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभान्तं च सूर्यभात् ।
कर्णौ शीर्षे रदे पुच्छे द्वयं सर्वत्र योजयेत् ॥२११॥
शुण्डायां तु द्वयं योज्यं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे ।
षड् वै चतुर्षु पादेषु साभिजिद्विन्यसेत्क्रमात् २१२
कर्णे चैव महालाभो मस्तके लाभ एव च ।
दन्ते चैव भवेल्लाभो पुच्छे हानिः प्रजायते २११
शुण्डायां तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखसंपदा ।
उदरे रोगसंभूतिर्मुखे तु मध्यमं स्मृतम् ॥२१४॥
पादयोश्च भवेल्लाभो गजे चैवं विनिर्दिशेत् ॥

सूर्य के नक्षत्र से अभिजित् सहित जन्म के नक्षत्र तक गिनें तब गजाकार चक्र बनावें । दो नक्षत्र गज के कानों में, दो सिर पर, दो दाँत पर और दो पूँछ के स्थान पर रक्खें तथा दो सूँड में, चार पीठ पर, चार पेट में, चार मुख में और छ नक्षत्र चरणों में रक्खें । अगर अपना जन्म नक्षत्र (इसके अभाव में नाम नक्षत्र भी काम में लिया जा सकता है) इस कल्पित हाथी के चक्र के कानों में पड़े तो महालाभ, मस्तक, और दन्त में भी लाभ तथा पुच्छ में हानि, शुण्ड में शुभप्रद पृष्ठ में सुख संपदा, पेट में रोग, मुख में मध्यम और चरणों में पड़े तो लाभकारक होगा ।

नवीन चापे (राकेट यन्त्र वा) धनुश्चक्र-विचारः

सूर्यभाज्जन्मभान्तं च कार्मुके चैव योजयेत् ।
चापाग्रे बाणसंख्याकं शराग्रे पञ्च दीयते ॥२१५॥
शरमूले तथा पञ्च पञ्च सन्धौ प्रकीर्तितम् ।
दण्डे द्वयं तु दद्याद्वै धनुषश्चक्रमुत्तमम् ॥२१६॥
अग्रे हानिः शरे लाभो शरमूले जयस्तथा ।
चापसन्धौ तु शौर्यं स्याद्दण्डभङ्गः प्रजायते ।२१७।

गोचर में सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनकर धनुष के अग्र-भाग में पाँच नक्षत्र रक्खे, पाँच नक्षत्र बाण के अग्रभाग में, पाँच नक्षत्र बाण के मूल में, धनुष की दोनों संधियों पर पाँच-पाँच नक्षत्र, धनुष के दण्ड में दो नक्षत्र रखें और फल विचारें धनुष का अग्रभाग हानि, बाण का अग्रभाग लाभ, मूल में लाभ, सन्धि में शूरता, दण्ड में जन्मनक्षत्र हो तो युद्ध में नाश, फल भोगना होगा ।

धनुर्विद्या-मुहूर्त

अनुराधामघापुष्यमृगशीर्षेऽष्टमीतिथौ ।
धनुर्विद्यादिकं कार्यं द्वादश्यां शुभवासरे ॥२१८॥

अनुराधा, मघा, पुष्य, मृगशिरा नामक नक्षत्र तथा अष्टमी और द्वादशी तिथि तथा शुभवारों में धनुष चलाना सीखना शुभ है ।

दोलारोहण (झूले पर झूलने का) मुहूर्त

पौष्णब्रजेशादितिभद्वयानि
हस्तादि षट्के श्रवणोत्तराणि ।

दोलादिमातंगतुरङ्गमाणा
मारोहणेऽभीष्ट फलप्रदानि ॥२१९॥

रेवती, शतभिषा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में झूलेपर (हाथी और घोड़े पर भी) चढ़ने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

हाथी दाँत तोड़ने का मुहूर्त

भौमशनैश्चरदिवसे दिवसपतौ गुरुगृहे हरौ सुप्ते।
पक्षे सिते निशायां करिणी रदकृत्तनं नेष्टम् ।२२०।

मंगल और शनिवार, पौष (धनु संक्रान्ति) और चैत्र (मीन संक्रान्ति) के महीने तथा विष्णुशयनकाल तथा शुक्लपक्ष की रात्रि में हाथियों के दाँत नहीं तोड़ने चाहिए।

राष्ट्रपति पद का मुहूर्त

लोकतन्त्रेऽपि कर्त्तव्यः राष्ट्राध्यक्षाभिषेचनम्।
पापाविद्धे दिनर्क्षे च कर्तरीयोगवर्जिते ॥२२१॥
सुखास्तौ पापहीनौ हि पूर्वार्द्धेऽङ्गे शुभस्थिते।
रवेर्बलिष्ठे मुख्यस्य चन्द्रताराबलान्विते ॥२२२॥

जिस प्रकार प्राचीन राजतंत्र में राजाओं का अभिषेक शुभ मुहूर्त विचार करके होता था। वैसे ही लोकतन्त्रीय व्यवस्थाओं में भी राष्ट्रपति निर्वाचन के बाद उसका पद ग्रहण भी शुभ मुहूर्त में होना चाहिए। इसमें अभिषेक दिन का नक्षत्र पापग्रहों के वेध से रहित तथा लग्न कर्त्तरीयोग से रहित एवं सुख (४) और अस्त (७) स्थान पाप ग्रहों से रहित होने चाहिएँ। लग्नकुण्डलीचक्र के पूर्वार्द्ध में

शुभग्रह हों तथा राष्ट्रप्रमुख के पदग्रहण कर्त्ता को रवि, चन्द्र और तारा का श्रेष्ठ बल प्राप्त होना उसके लिए शुभ है।

मन्त्रीमण्डल की नियुक्ति

यदा बहूनामेकस्मिन् दिवसे स्युः नियुक्तयः ।
मुहूर्त्तबलमात्रं हि प्रधानः परिचिन्तयेत्॥२२३॥

जब अनेक मंत्रियों की एक ही दिन में नियुक्ति करनी हो तो केवलमात्र मुहूर्त बल (दिन मुहूर्त, चौघड़िया, दुघड़िया आदि) देखकर नियुक्त करनी चाहिए।

स्थिर राज्य योगः

त्रिलाभस्थौ शनिसूर्यौ चतुर्थेचाम्बरे गुरुः ।
यस्याभिषेकः क्रियते तत्र तस्य मही स्थिराः॥२२४॥

टिकाऊ सत्ता के लिए शपथ मुहूर्त के लग्न से तीसरे छठे स्थानों में शनि या सूर्य, चौथे या दशवें स्थान में वृहस्पति का होना श्रेष्ठ माना जाता है। ऐसे ग्रह योगमें पदारूढ़ होने वाले व्यक्ति की सत्ता स्थिर रहती है।

मन्त्रिमण्डल शपथ ग्रहण काल में अशुभ योग

पापग्रहाः स्वान्त्य विलग्नसप्तम
सुखस्थिताः सौम्यग्रहैर्विवर्जिताः ।
पदच्युतिः स्यान्मरणं च भीतिः
प्रचिन्तिताः संसदि राजमान्याः।२२५।

शपथ ग्रहण काल में शुभ ग्रहों से रहित पाप ग्रह २, १२, १, ७, ४ स्थानों में हों तो शीघ्र ही पदच्युति, मृत्य और भय तथा संसद या विधानसभा आदि में सरकारी पक्ष को चिन्तित करने वाला होता है।

देवमूर्तिघटन मुहूर्त.

ध्रुवलघुमृदुवर्गे वारुणे विष्णु दैवे
मरुददिति धनिष्ठे शोभने वासरे च ।
त्रिदशमदनजन्मैकादशे शीतरश्मौ
विबुधकृतिरभीष्टा नाडीनक्षत्र हीने॥२२६॥

ध्रुव, लघु, और मृदु वर्ग के तथा शतभिषा श्रवण, स्वाती पुनर्वसु, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में शुभवार में जब लग्न से ३, १०, ७, १, ११ स्थानों में चन्द्रमा हो तब मूर्ति बनाना शुभ होता है । मूर्ति घड़ने या बनाने के काम में जन्म नक्षत्र वर्ज्य हैं ।

अग्निहोत्र मुहूर्त

पञ्जाङ्गशुद्धि दिवसे चन्द्रताराबलान्विते ।
चक्रशुद्धियुते लग्ने चाष्टमोदयवर्जिते ॥२२७॥
अग्न्याधानं दारकाले विधेयं
कैश्चित्प्रोक्तं तच्च दायादकाले ।
सौम्ये सूर्ये स्याद्वसन्ते च ग्रीष्मे
वार्षेशारद्येव वर्षाक्रमेण ॥२२८॥
प्राजापत्ये पूषभे सद्विदैवे
पुष्ये ज्येष्ठास्वैन्दवे कृत्तिकासु ।
अग्न्याधानं ह्युत्तराणां त्रयेऽपि
श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राग्जनैःविप्रमुख्यैः॥२२९॥

अग्निहोत्र ग्रहण करने वाले को अपने अनुकूल चन्द्र एवं ताराबल मिलने पर पञ्चाङ्ग (तिथिवारदि) शुद्धि

वाले दिन में जब लग्न से भी चन्द्रमा शुद्ध स्थानों में हो तथा अपने जन्मलग्न या चन्द्रलग्न से ८ वां लग्न अग्नि होत्र ग्रहण के समय नहीं हो ये बातें विचार कर अग्निहोत्र ग्रहण करना चाहिए। कुछ लोग विवाह के समय और कुछ लोग पारिवारिक पैतृक सम्पत्ति के बँटवारे के समय अग्न्याधान करना बतलाते हैं। कुछ लोग उत्तरायणसूर्य श्रेष्ठ मानते हैं। कुछ कहते हैं, कि, ब्राह्मण बसन्त ऋतु में, क्षत्रिय ग्रीष्म में, वैश्य वर्षा काल में और शूद्र शरद काल में अग्न्याधान करें। रोहिणी, रेवती, विशाखा, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, कृत्तिका और तीनों उत्तराओं (उ. फा. उ. षा. उ. भा) का ग्रहण अग्निहोत्र ग्रहण में होता है। अग्न्याधान लग्न में सजल राशियोंका नवांश तथा आधान लग्न में चन्द्र एवं शुक्र वर्जित हैं।

दीपिका चक्र

दीपिकायां मुखे पञ्च लाभसन्मानदायकाः।
कण्ठे नव धनप्राप्ति र्मध्येऽष्टौ स्वामिमृत्युदाः।२३०
दण्डे पञ्च भवेद्राज्यमग्निऋचाद्वदीपकम्।

मकान में बिजली फिट कराते समय अथवा लालटेन या चिराग खरीदते समय और प्रथम बार इनका प्रयोग करते समय इस चक्र को विचार कर देखना चाहिए। कृत्तिका नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनकर उसमें से ५ नक्षत्र दीपक के मुख में रखे, ये नक्षत्र लाभ और सम्मान को देने वाले होते हैं। पुनः ९ नक्षत्र कण्ठ में रखें, ये धन दायक होंगे। ८ नक्षत्र मध्य भाग में रखें जो स्वामी का नाश करने वाले होते हैं। ५ नक्षत्र दण्ड स्थान में रखें जो राज्य दायक होते हैं। इसमें अभिजित् गृहीत नहीं है।

ज्वालामुखी योग

पड़वा, मूल, पंचमी, भरणी, आठैं कृत्तिका।
नवें रोहिणी, दश आश्लेषा, ज्वालामुखी जन्में।
जीवे तो बसै नहीं, बसै तौ उजड़ होय।
कामिनी पहिरै चूड़ियां निश्चय विधवा होय।
कुवैं नीर झांकै नहीं, खाट पड़ो न उठन्त।
ज्योतिषी जो जाने नहीं, ज्योतिष कहता ग्रन्थ
॥२३१॥

प्रतिपदा तिथि में मूल नक्षत्र, पञ्चमी तिथि में भरणी, अष्टमी में कृत्तिका, नवमी में रोहिणी, दशमी में आश्लेषा नक्षत्र पड़ता हो तो ज्वालामुखी योग होता है। इस ज्वाला मुखी योग में पैदा होने वाला किसी निश्चित् स्थान में नहीं बसता है। इस योग में गृहप्रवेश या ग्रामवास का मुहूर्त्त हो जाय तो वह बसता नहीं, उजड़ हो जावेगा। स्त्री चूड़ी धारण करले तो वह विधवा होती है। इस समय कूपपूजन नहीं करना चाहिए। इस योग में बीमार पड़नेवाला फिर खटिया से नहीं उठता है। यह ऐसी गूढ़ बात है कि जिसे ज्योतिषी तो जानते नहीं हैं, किन्तु; ज्योतिष के ग्रन्थ बतलाते हैं।

वातरोगादि में तैल चिकित्सा

हित्वाश्लेषामघामूलं द्वीशार्द्राभरणीद्वयम्।
मंदेब्जे ज्ञे स्थितिस्तैले तृतीयादि त्रिके तिथौ।२३२।

आश्लेषा, मघा, मूल, विशाखा, आर्द्रा, भरणी और कृत्तिका को छोड़कर शेष नक्षत्रों और शनि सोम और बुधवार

में तथा तृतीयादि (जया) तिथियों में पापुजन्य रोग के चिकित्सार्थ तैलमालिस करना श्रेष्ठ है।

नोट छापने सिक्के अथवा मुद्राचिह्न का मुहूर्त्त

त्र्युत्तरे चानुराधायां श्रवणत्रितये तथा।
पुनर्वसुद्वये हस्तत्रितये रेवतीयुगे ॥२३२॥
मृगशीर्षे च रोहिण्यामष्टमी पंचमी दिने।
तृतीयायां त्रयोदश्यां दशम्यां पूर्णिमा-तिथौ।
त्यक्तवा शनैश्चरं सोमं मुद्राकार्यं प्रशस्यते ॥२३४॥

तीनों उत्तरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, रोहिणी, इन नक्षत्रों में अष्टमी, पंचमी, तृतीया त्रयोदशी, दशमी, पूर्णिमा इन तिथियों में शनि और सोमवार को छोड़कर मुद्रा सम्बन्धी कार्य शुभ होते हैं।

मुहूर्त्त काल के भेद

विभजन्ति मुहूर्त्तकं त्रिधा उत्तम
मध्यम-गर्हितो बुधाः।
निर्दोषो गणकै—स्तुरुच्यते
श्रेष्ठःमध्यमजोऽपवादतः २३५॥

विद्वानों ने मुहूर्त्त (शुभ कृत्योपयोगी काल) के तीन भेद बतलाये हैं १–उत्तम २–मध्यम ३–गर्हित। जो मुहूर्त्त सब प्रकार से दोपरहित हो वह उत्तम मुहूर्त्त कहलाता है। जिसमें गुणों की अधिकता होते हुए भी स्वल्प दोष हों और उनके अपवाद वाक्य हों वह मध्यम मुहूर्त्तकाल है।

अपि वादैः यो न भिद्यते तत्कालो
गदितस्तु गर्हितः ।
शान्त्या स्वस्त्ययनादि कर्मभिः
कर्मार्हः सद्भिः प्रकीर्तितः ॥२३६॥

जिस मुहूर्त्त में दोषों की अधिकता हो और अपवाद वचन नहीं मिलते हों वह गर्हित अथवा वर्जित वा दुष्ट मुहूर्त्त-काल कहलाता है, उसमें शान्ति, पूजा-पाठ दानादि करके कार्य कर लेना चाहिए ऐसी विद्वानों की आज्ञा है ।

अनापद्युत्तमः कार्यो मध्यमापदि मध्यमः ।
सत्या-मत्यापदि ग्राह्यो दुष्टोऽपि स्वापवादतः २३७

विद्या माधवीय ग्रन्थकार के मत से आपत्ति रहित काल में उत्तम मुहूर्त्त में ही कार्य होना चाहिए । अगर मध्यम प्रकार की आपत्ति हो तो मध्यम श्रेणी के मुहूर्त्तकाल में शुभ कर्म कर लेवें । अत्यन्त विवशता जनक आपत्तिकाल हो तो दुष्ट मुहूर्त्त काल में अपवाद-विचार पूर्वक कार्य करने चाहिए ।

अतिपातिषु कार्येषु ग्रहान् संपूज्य शास्त्रतः ।
दक्षिणां बहुलां दत्त्वा दैवज्ञं सम्यगर्च्य च २३८॥

अत्यन्त आवश्यक कार्यों में शास्त्र-विधि में ग्रह पूजन और प्रचुर दक्षिणादि देकर दैवज्ञ ज्योतिर्वित् का सम्मान कर उनका आशीर्वाद लेकर दोष युक्त मुहूर्त्त काल में भी शुभ कर्म कर लेना चाहिए ।

गुरु और शुक्रास्त में शुभ कर्म हो सकते हैं
जातिपरक परिहार

गुरु-भार्गवयोरस्ते दोषानाति चतुष्टये ।
नैव संकर-जातीनां न शिशुत्वं न वार्धकम् २३९॥

ज्योतिश्चन्द्रार्क काशिकाटीका हेयोपादेयाध्याय के प्रथम श्लोक की टीका में यह गर्गऋषि का वचन है कि गुरु और शुक्र के अस्तकाल में वर्णचतुष्टय को दोष प्राप्त है किन्तु, सङ्कीर्ण जातियों को न अस्त दोष है और न शिशुत्व और वार्द्धक्य दोष ही प्राप्त होता है ।

ग्रह स्थिति वशेन परिहार ।

एकोमूढो भवेदन्यः स्वोच्चमित्रांशगो यदि ।
स्वराशि मूर्तिगश्चैव मूढ़दोषोविनश्यति ।।२४०।।

तत्रैव)

यः कुरुते यं दोषं ग्रहस्स्वतुङ्ग स्थितस्ववर्गे वा ।
सौम्यग्रहेण दृष्टस्स एव तद्दोषपहाति ।।२४१।।

विद्यामाधवीये पृ. २३५

गुरोरस्तमये दोषो नास्ति शुक्रोदयो यदि ।
द्वयोरस्तमयः स्याच्चेदपवादैर्नभिद्यते ।।२४२।।

—काल प्रकाशिका

यद्येकस्यापिमूढ़त्वे शुभकर्म न दोषकृत् ।
द्वयोर्मूढ़त्वमेवोक्तं दोषत्वं गुरु शुक्रयोः ।।२४३।।

प्रयोगपारिजाते लल्लः

देश भेद जन्य परिहारः

देशाचारस्य प्राधान्यादाप्तोक्तेरपि शास्त्रतः ।
मगधाख्ये विवाहादौ गुर्वस्तो नैवदोषकृत् ।।२४४।।

—व्यवहार चिन्तामणि

अंगे वंगे न शुक्रास्तो गुर्वस्तो नैव मागधे ।
कोंकणे नैव भौमास्तः शुभकर्मसु गर्हितः २४५।।

—व्यवहार चण्डेश्वरः

श्रीशैल ग्रहणायनेषु विषुवे संकीर्णजातावुपा-
कृत्युत्सर्ग वधूप्रवेशन गया गोदासु नित्याब्दिके

—मुहूर्त्त मार्त्तण्डः

न ग्रहास्तोदयकृतो दोषो विश्वेश्वरालये ।

काशीखण्ड

आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञांतत्कर्मकारिणाम् ।
विवाहादीनि कुर्वीतमौढ्येऽपिगुरु शुक्रयोः॥२४७॥

बृहद्दैवज्ञरञ्जने—गुरुः पृ. १३२

ग्रह स्थिति वश से परिहार

यदि एक ग्रह अस्त हो और दूसरा ग्रह अपनी (स्वराशि) या उच्चस्थान की अथवा अपनी राशि में ही लग्नगत हो तो मूढ़ (अस्तङ्गत) ग्रह के दोष को दूर कर देता है ।

जो ग्रह जिस दोष को करता है वही ग्रह स्ववर्गगत या उच्चस्थ हो अथवा शुभप्रकृति के ग्रह से दृष्ट हो तो अपने दोष को स्वयं ही हर लेता है ।

अगर शुक्र उदित है और गुर्वस्त हो गया है तो गुरु के अस्त का दोष नहीं होगा । इसी प्रकार शुक्र अस्त है और गुरू का उदय है तो शुक्रास्तजन्य दोष नहीं होगा । अगर दोनों ही अस्त हों तो अत्यन्त वर्जित दोष काल होता है जिसका कोई भी अपवाद नहीं है ।

गुरू और शुक्र दोनों में एक ही अस्त हो तो शुभ कर्म करने में कोई दोष नहीं है, जब दोनों ही अस्तङ्गत हों तभी गुरू एवं शुक्रास्त में दोष होता है ।

देशाचार की प्रधानता एवं आप्तवचन तथा शास्त्र से भी मगध संज्ञक देश में विवाहादि शुभकृत्यों में गुर्वस्त दोष-कारक नहीं है ।

अंग और वंग देश में शुक्रास्त तथा मगध देश में गुर्वस्त कोंकण देश में भौमास्त शुभकर्मों में वर्जित नहीं है।

श्रीशैल (मल्लिकार्जुन), गया और गोदावरी प्रदेश में ग्रहण, अयन परिवर्तन, विषुव संक्रमण, संकीर्ण जाति, उपाकर्म वधू-प्रवेश, नित्य वार्षिक कृत्यों में ग्रहास्तजन्य दोष नहीं लगता है। काशी में भी ग्रहास्तोदय दोष नहीं होता है।

राजा और उनके कर्मचारियों को अत्यावश्यक विवाहादि कार्यों में गुरू और शुक्रास्तजन्य दोष नहीं लगता है।

धन और मीन की संक्रांति में राजस्थान की मान्यता

वर्जयन्ति सदाचारात् विद्वांसो मरूदेशजाः।
पक्षमात्रं हि सततं संक्रान्त्योः चापमीनयोः २४८॥

राजस्थानी विद्वान् अपने सदाचार (देश की रीति परम्परा) को मान कर धनु (पौष) और मीन की संक्रान्तियों में केवल प्रारम्भ से १५ दिन ही शुभकर्म में वर्जित करते हैं।

समय अथवा संक्रांति वास विचार

दिनंषष्टिघटी प्रोक्तं द्विदलं तस्य कारयेत्।
चतुर्यामे चतुर्जातौ वासः संक्रमणं भवेत् ॥२४६॥
प्रथमे मालिकागारः द्वितीये रजकस्तथा।
वणिक् गेहे तृतीये च कुम्भकारस्य तुर्यगे ॥२५०॥

मकर संक्रान्ति के अहोरात्र मान ६० घटी को २ भाग करके प्रत्येक भाग को ४ से भाग दें। प्रथम भाग की घड़ियों में संक्रांति हो तो माली के घर, द्वितीय भाग में धोबी के घर तृतीय भाग में बनिये के घर और ४ भाग में कुम्हार के घर संक्रांति होगी।

मकर संक्रान्ति वास फलम्

मालाकारगृहे यदा निवसति
कालस्तदा सज्जनाः ।
सर्वसौख्यसमन्विताश्च
धरणी रम्योत्सवैः भूषित ।
कूपाद्याः सरितश्च पूरितजलाः
गेहे च निर्णेजके ।
मेघैर्वर्जितभूः प्रजापति गृहे
वैश्यस्य पीड़ायुता ॥२५१॥

यह संक्रान्तिवास राजस्थानी समाज के पञ्चाङ्गों में समय निवास के नाम से दिया रहता है यदि समय (संक्रांति) वास माली के घर है तो सभी लोग सुखी होकर महोत्सवादि में रत रहते हैं। धोबी के घर संक्रान्तिवास में प्रचुर वृष्टि होगी। कुम्भकार के घर वास होने से अनावृष्टि तथा वैश्य (बनिया) के घर रहने से पीड़ा होती है।

× × ×

यात्रा मुहूर्त परिच्छेदः

यात्रा ३ प्रकार की होती हैं। १—अर्थ यात्रा, २—युद्धयात्रा ३—तीर्थयात्रा। संग्रहशिरोमणिकार सामान्य और जय नामक दो ही यात्रा मानते हैं।

अर्थ यात्रा

अर्थयात्रा के दो भेद हैं १—नित्य यात्रा २—काम्य यात्रा।

सभी प्रकार की यात्राओं में यथासम्भव शकुन, चन्द्र या तारा का विचार अवश्य करना चाहिए।

नित्य यात्रा

जो व्यक्ति नौकरी अथवा व्यापार के उद्देश्य से प्रति दिन जाते रहते हैं, उनके लिए दिशाशूलादि मुहूर्त विचारने की आवश्यकता नहीं है। वे केवल शुभ और अशुभ शकुनों का विचार अवश्य करें या चौघड़िया अथवा दुघड़िया (द्विघटि का मुहूर्त) तथा अपने दाहिने स्वर में दाहिना पैर पहले आगे बढ़ाकर यात्रा करें, सदा सफल होंगे।

शुभ शकुन

सुमनः सुभगाऽऽदर्शं नकुलश्चाषोऽथमत्स्यकः।
गोमयश्च सवत्सागौः विप्रस्तिलकभूषितः ॥१॥
क्षेमङ्करी सोदकं पात्रं फलं दधिः सुदर्शनः।
नीलकण्ठस्तथा ऋक्षः प्रज्वलन् हव्यवाहनः ॥२॥
वाराङ्गनाश्च रजकः शवो रोदनवर्जितः।
इक्षवः मदिरा पर्णं फलं दुग्धं घृतं मधुः ॥३॥
गजो वाजी ध्वजः कन्या छत्रं रत्नं गुरुः नृपः।
दर्भो हंसो मयूरश्च चित्तोत्साहकरं वचः ॥४॥
छागः मित्रस्तथा वाद्यः शुभान्येतानि दर्शनात्।
खरोलूक शृगालानां वामे पृष्ठे शुभः स्वनः ॥५॥

फूल, सुहागिनस्त्री, दर्पण, न्यौला (नकुल), चाष पक्षी, मछली, गोबर, बछड़े सहित गाय, तिलक युक्त ब्राह्मण, क्षेमकरी (सोन चिड़ी अथवा सफेद चील) जलसे भरा घड़ा या कोई पात्र, फल, दही, सुदर्शन पक्षी, नीलकण्ठ पक्षी, ऋक्ष (भालू) जलती हुई धूमरहित अग्नि, वेश्या, धोबी, रूदन से रहित मुर्दा, ईख शराब, पान, दूध, घी, शहद, हाथी, घोड़ा, ध्वजा,

कन्या, रत्न गुरु, नृप (राजा), कुशा, हंस, मयूर, चित्त प्रसन्न करने वाली वाणी, बकरी, मित्र, बाजा, इनके दर्शन यात्रा में शुभ होते हैं। गदहा, उल्लू और सियार की आवाज वायें हाथ की ओर शुभ रहती है।

अपशकुनानि

छिक्का विडालसर्पाभ्यां मार्गरोधो मृतेर्वचः।
मार्जारं माहिषं युद्धं शुनः कर्ण प्रकम्पनम् ॥६॥
अतिधूमान्वितो वन्हिः तैलाभ्यक्तोऽथगर्भिणी।
काषाय वस्त्रधारी च मुक्तकेशोऽथ पाशभृत् ॥७॥
लौहतैलसुवर्णानां व्यवसायपरायणाः।
कृपण महिषः व्यङ्गः रोगी मलिन वस्त्रधृक् ॥८॥
उपानत्कर्दमाङ्गी च पाषाणेन्धन मुण्डितः।
भस्मास्थिलवणं तक्रं मत्तः हिंस्रो बुभुक्षितः ॥९॥
मण्डूकः पुरीषं च स्वकुले च तथा कलिः।
वामे काकः शुभं नैव झंझावातश्च सम्मुखे ॥१०॥

छींक, बिल्ली और साँप के द्वारा रास्ते का रोका जाना, अशुभ वचन (कातर स्वर) बिल्ली और भैंसों की लड़ाई कुत्ते का कान फड़फड़ाना, धुँवे से युक्त अग्नि, तैल मालिश किए हुए आदमी का मिलना, गर्भिणी, सन्यासी और खुले केश के स्त्री या पुरुष, जाल लिए हुए अथवा डोरी लिए हुए पुरुष लुहार, तेली और सुनार तथा कृपण (कंजूस), भैंसा अंगहीन, लंगड़ा, लूला और काना, रोगी, मैला कुचैला, कीचड में भरी जूतियाँ, भस्म, हड्डी, नमक, छाछ (मठ्टा) पागल, हिंसक जीव, भूखा, मेढ़क, विष्टा, अपने कुल में कलह का होना, बाईं ओर कौवा तथा सम्मुख दिशा की आँधी ये अपशकुन माने जाते हैं।

काम्ययात्रा

जो व्यक्ति किसी कार्य या व्यापार में लाभ अथवा दैहिक एवं गैहिक कुशलता के उद्देश्य से समय के सङ्कोच की परवाह किये बिना यात्रा करते हैं, वह काम्य यात्रा होती है। इस यात्रा में सभी प्रकार के विधि निषेधों का विचार होता है।

दिक्शूल विचार

शनिवार और सोमवार को पूर्व दिशा, रवि और शुक्र वार को पश्चिम तथा बुध और मंगलवार को उत्तर दिशा तथा गुरूवार के दिन दक्षिण दिशा की यात्रा न करे।

योगिनी विचार

शनौ सोमे त्यजेत्पूर्वां रवौ शुक्रे च पश्चिमाम्।
बुधे भौमे चोत्तरस्यां न गच्छेत् दक्षिणे गुरौ ॥११॥
पू उ आ नै द प वा ई प्रतिपदमारभ्य योगिनी दिक्षु।
योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी।
दक्षिणे सुखहन्त्री च सन्मुखे मरणप्रदा ॥१२॥

प्रतिपदा से आरम्भ कर योगिनी पूर्व, उत्तर, आग्नेय, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य और ईशान इस क्रम से रहती है अर्थात् प्रतिपद को पूर्व, द्वितीया को उत्तर, तृतीया को आग्नेय कोण आदि। योगिनी बांयी ओर शुभ, पीठ की ओर मनोकामना पूर्ण करने वाली, दाहिनीतरफ में सुखनाशक और सम्मुख योगिनी मरण तुल्य कष्ट प्रद होती है।

चन्द्रवास विचार

मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे
वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।

युग्मे तुला कुम्भगते प्रतीच्यां
कर्कालिमीने दिशिचोत्तरायाम् ॥१३॥

मेष, सिंह, धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व दिशा में, वृष, कन्या और मकर का चन्द्र दक्षिण दिशा में, मिथुन, तुला और कुंभ का चन्द्र पश्चिम दिशा में, कर्क, वृश्चिक और मीन का चन्द्र उत्तर दिशा में रहता है। सम्मुख चन्द्र अर्थ लाभ, दक्षिण चन्द्र सुख और सम्पत्तिदायक, वाम भाग में धन नाशक, पृष्ठभाग गत चन्द्र मृत्यु का सूचक है।

काल राहु विचार

उत्तरस्यां रवेर्वारे वायौ चन्द्रदिने भवेत्।
भौमवारे प्रतीच्यां तु नैऋत्यां बुध वासरे ॥१४॥
यमाशायां गुरौवारे वन्हेर्दिशि भृगोर्दिने।
प्राच्यां दिशि शनेर्वारेकालराहुःप्रकीर्त्तितः ॥१५॥

रवि को उत्तर में, सोम को वायव्य कोण में मंगल को पश्चिम और बुध को नैऋत्य, गुरूवार को दक्षिण, शुक्रवार को अग्नि कोण में शनिवार को पूर्व में कालराहु रहता है। ईशान में भी रवि को जानें। यह सम्मुख दिशा में त्याज्य, पीठ पीछे और बायें व दाहिने शुभ होता है।

दिक्कोण विचार

आग्नेयी पूर्वदिग्ज्ञेया दक्षिणादिक्च नैऋती।
वायवी पश्चिमादिक् स्यादैशानी च तथोत्तरा॥१६॥

अग्नि कोण का पूर्व दिशा में, नैऋत्य कोण का दक्षिण दिशा में, वायव्य कोण का पश्चिम दिशा में तथा उत्तर दिशा में ईशान कोणका अन्तर्भाव होता है।

प्रस्थान विचार

कार्यादिना चेत्स्वगमो नहि स्यात्
तदा द्विजादिः सफलोपवीतम् ।
शस्त्रं मधु स्वादु फलं तथान्यत्-
अभीष्टवस्त्राद्यपि चालयेद्वा ॥१७॥

अगर किसी कार्यवश शुभमुहूर्त्त में स्वय न जासके तो उस मुहूर्त्त में प्र थान रखकर यात्रा की जाती है। प्रस्थान में ब्राह्मण सुपारी व जनेऊ, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु, शूद्र मीठा फल रक्खे अथवा सभी व्यक्ति अपने अभीष्ट वस्त्रादि कोई भी चीज प्रस्थान में रख सकते हैं। पूर्व की यात्रा में ७ दिन पूर्व, दक्षिण दिशा में ५ दिन, पश्चिम में ३ दिन और उत्तर में २ दिन पूर्व प्रस्थान रखा जासकता है।

प्रस्थान कहाँ से और कितनी दूर रखना चाहिये

स्वमंदिरादेव गृहाग्निहोत्रगेहात्
महिष्या अपि मंदिराच्च ।
सीमान्तरं वाथ गृहान्तरं वा
ग्रामाद्बहिश्चाप शतं प्रयायात् ॥१८॥

प्रस्थान अपने घर, मंदिर, अग्निहोत्रशाला, प्रधानपत्नी के निवासगृह इनमें से किसी भी स्थान से रखा जा सकता है। प्रस्थान रखने के बारे में कुछ लोगों का मत सीमान्तर में (छोटे गाँव में दूसरे गाँव की सीमा में और बड़े शहरों में अपने मुहाल से दूसरे मुहल्ले में) से कुछ विद्वानों के मत से दूसरे घर में, कुछ का मत अपने गाँव के बाहर और कई विद्वान् १०० धनुष की दूरी पर प्रस्थान रखने को कहते हैं। प्रस्थान जिस दिशा में यात्रा करनी हो उसी दिशा में रखा जाता है और फिर यात्रा के पहले उसका उल्लंघन नहीं करते हैं।

यात्रा में दोष निवृत्ति के लिए ग्राह्य पदार्थं

रसालां पायसं चैव काञ्जिकं शृतदुग्धकम् ।
दधि घृतं पयोऽप्यद्यात् कृसरान्तं रवेर्दिनात् ॥१९॥

रविवार को शक्कर, (मतान्तर से सज्जी), सोमवार को पायस (खीर) मंगलवार को कांजी, बुधवार को पक्का दूध, गुरुवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को खिचड़ी (मतान्तर से तिलान्न), चखकर यात्रा करने से वार (दिग्शूलादि) दोष दूर होते हैं।

प्रत्येक नक्षत्र और तिथि के दोष निवृत्यर्थ विभिन्न भक्ष्य वस्तुएँ मुहूर्तकल्पद्रुमकार ने बतलाई हैं। जिन्हें प्रायः काशी के सभी पञ्चाङ्गकार यात्रा मुहूर्तों के साथ देते हैं। विस्तार भय से यहाँ नहीं दिया है। आवश्यकता होने पर चिन्ताहरण जन्त्री, ज्ञानमण्डल सौर पञ्चाङ्ग, विश्व पञ्चाङ्ग, बापूदेव पञ्चाङ्ग, हृषीकेश पञ्चाङ्ग, गणेश आपाजी का पञ्चाङ्ग, धर्मसंघ पञ्चाङ्ग, शंकर पञ्चाङ्गादि किसी में भी देखलें।

यात्रा काल में वर्ज्य

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासव
क्षाराभ्यंगभयासिताम्बरवमिस्तैलं कटूज्झेद् गमे ।
क्षीरः क्षौररतीः क्रमात्त्रिशरसप्ताहं परं तद्दिने
रोगंस्त्र्यार्तवकं सितान्यतिलकंप्रस्थानकेऽपीतिच२०

यात्रा के प्रारम्भ में क्रोध करना, हजामत बनवाना, मैथुन, श्रम, मांस एवं गुड़ भक्षण, जूआ खेलना, अश्रुपात (आँसू गिराना) करना, दूध या शराब का सेवन, खार का भक्षण, तैल मालिस करना, भय भीत अवस्था, वर्जित है। काला कपड़ा धारण कर के, वमन कर के, यात्रा न करें, तैल,

मिर्च इत्यादि उस दिन छोड़ देनी चाहिए। दूध यात्रा के ३ दिन पहले, हजामत ५ दिन पहले, मैथुन ७ दिन पहले, छोड़ देना चाहिए। मुहूर्त्त ग्रन्थों का मत है कि स्त्री रजोदर्शन के बाद शुद्ध हुई तो मैथुन करके भी यात्रा करनी चाहिए।

युद्ध यात्रा

यह चुनाव, प्रत्यक्ष युद्ध, शास्त्रार्थ, मुकदमे बाजी, जूआ, स्त्री भोग, प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में विचारी जाती है।

इस यात्रा में स्वरशास्त्रोक्त बल एव कुलाकुल नक्षत्र तथा घात चन्द्रादि का पूर्ण विचार करते हैं। 'समर सार' 'युद्धजयोत्सव' 'नरपतिजय चर्या' 'प्रश्न प्रकाश' आदि ग्रंथ क्रमशः बल विचार में काम में लेने लायक हैं। संक्षेप में यहाँ दिग्दर्शन कराते हैं।

तिथि परक स्वर विचारः

आदौ चन्द्रस्सिते पक्षे भास्करस्तु सितेतरे।
प्रतिपद्युदितोऽहानि त्रीणि त्रीणि क्रमोदयः ॥२१॥

स्वर फलम्

चन्द्रोदये यदा सूर्यः चन्द्रः सूर्योदये यदा।
अशुभं हानिरुद्वेगः शुभं सर्वं निजोदये ॥२२॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से तीन तीन दिन चन्द्र (नाक के बाँयें छिद्र से वायु का निकलना) तथा सूर्य के स्वर (नाक के दाँये छिद्र से वायु का बहना) सूर्योदय के समय से २ घंटे तक चला करते हैं। यदि ये स्वर इन तिथियों में नियमित चलें तो वह दिन अपने अनुकूल होता है।

अगर उदयकालिक चन्द्र स्वर की जगह सूर्य स्वर और सूर्य स्वर की जगह चन्द्र स्वर चलता हो तो हानि और उद्वेग कारक होता है।

चन्द्र स्वर और सूर्य स्वर में कार्य

चन्द्रे वहे नृपविलोकनगेहवेश-
पट्टाभिषेक मुख कर्म भवेच्छुभं यत्।
सौरे तु मज्जन वधूरति भुक्ति युद्ध-
मुख्यं भवेदशुभ कर्म फलाय सत्यम् ॥२३॥

चन्द्र स्वर में राज दर्शन (बड़े आदमियों से मिलना), गृह प्रवेश और राज्याभिषेक आदि शुभ तथा सूर्य स्वर में स्नान, स्त्री संभोग, भोजन और युद्ध सम्बन्धी अशुभ कर्म सिद्ध होते हैं।

ग्रन्थान्तरों में— सामान्य यात्रा, विवाह, विद्या, हवन, औषधि, वस्त्र और अलङ्कार, संधि, मैत्र, मृदु आदि कार्य भी चन्द्र (वाम) स्वर में तथा विग्रह, जूआ, युद्ध, स्नान, भोजन, मैथुन, व्यवहार (व्यापार) भयोत्पादन, प्रहार, तोड़ फोड़, मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, और क्षुब्ध कारक कार्य सूर्य (दक्षिण) स्वर में करना बताया गया है।

रति काल में स्त्री का वाम स्वर और पुरुष का दक्षिण स्वर चलना चाहिए।

द्यूत (जूआ) में विशेष विचार

स्वरच्छायानिलार्केन्दुयोगिनी राहु भूबलैः।
अन्यैश्च द्यूतमाबध्नञ्जयत्येव धनं बहुः ॥२४॥

बाल और कुमार संज्ञक वर्ण स्वर (देखिये समरसार १० श्लोक) छाया (वही श्लोक २१) वायु (वही २३) सूर्य (वहीं श्लोक १८) चन्द्र (वही श्लोक १९, २२) योगिनी (वही श्लोक २५, २६, २७) राहु वही श्लोक

२४) और भू बल (वही श्लोक १६) की अनुकूलता विचार कर जो व्यक्ति जुआ, सट्टा, लाटरी, रेस, शास्त्रार्थ, युद्धादि करता है उसकी निश्चित विजय और प्रचुर धन लाभ होता है।

इस युद्धयात्रा (युद्ध, शास्त्रार्थ स्त्रीप्रसङ्ग, जूआ, मुकद्मे बाजी, चुनाव आदि) में ॐ ह्री रण हूँ फट् स्वाहा इस मन्त्र का विधि पूर्वक जप करने से अथवा ब्राह्मणों के द्वारा कराने से विशिष्ट सफलता मिलती है।

कुलाऽऽकुल गण विचार

मूलार्द्राभिजिदम्बुपोडु दशमी षष्ठी द्वितीया बुधो
राज्ञोःसन्धिकरःकुलाकुलगणः स्थास्नोर्जयार्थंकुलः।
मासाख्यास्थितभानि शेषतिथयो युग्माः कुजोभार्गवः
संघोन्योकुलसंज्ञको विजयतेतस्मिन्प्रयातो ध्रुवम्२५

मूल, आर्द्रा, अभिजित्, शतभिषा ये नक्षत्र, दशमी, षष्ठी, द्वितीया ये तिथियाँ और बुधवार इनकी कुलाकुल संज्ञा है। इनमें युद्धयात्रा प्रारम्भ हो तो आक्रामक और आक्रान्त दोनों में परस्पर संधि हो जाती है। चैत्रादि महीनों के नाम वाले चित्रा विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा और श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एवं पूर्वकथित तिथियों के अतिरिक्त शेष सम तिथियाँ (४। ८।१२।१४) और मंगल तथा शुक्रवार की कुल संज्ञा है। इसमें स्थायी (मुद्दालेह=आक्रान्त) व्यक्ति की विजय होती है। कुलाकुल गण और कुल गण में पठित नक्षत्रों को छोड़शेष भरणी रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी और प्रतिपदा, तृतीया, पंचमी, सप्तमी नवमी, एकादशी,

पूर्णिमा और अमावस्या ये तिथियाँ और सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनिवार इनकी अकुल संज्ञा होती है। इसमें युद्ध आरम्भ होने से मुद्दई (आक्रामक) की विजय होती है।

घात चन्द्र विचार

भूपञ्चाङ्क द्व्यङ्ग दिग्वन्हि सप्त
वेदाष्टे शार्काश्च घाताख्य चन्द्रः।
मेषादीनां राजसेवा विवादे
वर्ज्यो युद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः ॥२६॥

मेषादि राशियों को क्रमशः पहला पाँचवां, दूसरा, छठवां, दशवां, तीसरा, सातवां, चौथा, आठवां, ग्यारहवां, बारहवां, चन्द्रमा घातचन्द्र कहलाता है इस घातचन्द्र में राजकीय नौकरी, वादविवाद, युद्धादि वर्जित हैं। अन्य शुभ कार्य (संस्कार, यज्ञादि) वर्जित नहीं है।

घात चन्द्र में विहित कार्य

उद्वाहयात्राव्रतबंधदीक्षा
राज्याभिषेके ग्रहपूजने च।
सीमन्तजाताध्वररौद्रपूज्ये
नो चिन्तनीयं खलु घातचंद्रः ॥२७॥

विवाह, यात्रा, (कुछ ग्रंथकार यात्रा में भी घातचन्द्र वर्जित मानते हैं) जनेऊ, दीक्षा, राज्याभिषेक, ग्रहपूजन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्मादि, यज्ञ, रूद्रपूजन (अभिषेक) आदि में घातचन्द्र वर्जित नहीं है।

वार घात विचारः

मेषे रविः बुधः कर्के मिथुने चन्द्र एव च।
कन्यावृषभसिंहेषु शनिः स्यान्मकरे कुजः ॥२८॥

मेषराशि वाले को रविवार, कर्कराशि वाले को बुधवार मिथुनराशि वाले को सोमवार, कन्या, वृष और सिंहराशिवाले को शनिवार तथा मकरराशिवाले को मंगलवार घात वार है।

घात वार में वर्ज्य कर्म

यात्रा युद्धे गृहारम्भे प्रवेशे च पशूदमे।
वर्जयेत् घातवारं च अन्य कार्ये शुभावहः ॥२९॥

यात्रा, युद्ध, गृहारम्भ और गृह प्रवेश, पशुओं का दमन आदि कार्यों में घात वार वर्जित है, अन्य कार्यों में शुभप्रद है।

भूबल विचार

चैत्रादिगत मासश्च नेत्रघ्नं तिथिमिश्रितम्।
वेद भक्तं भूबलं स्यात् शेषेऽत्र पृथिवी दले ॥३०॥
प्राच्यामब्धौ द्वयं याम्ये उत्तरे त्रीणि पश्चिमे।
चन्द्रे च भूबलं तत्र द्यूते पृष्ठे शुभप्रदः ॥३१॥

जिस दिन जुआ खेलना हो उस दिन तक गत मास संख्या को २ से गुना करके उसमें वर्तमान तिथि संख्या जोड़ दें पुनः चार का भाग देने पर ० शेष रहने पर पूर्व में, दो शेष रहने पर दक्षिण में, तीन शेष रहने पर उत्तर में और एक शेष रहने पर पश्चिम में भूबल रहता है। पीठ की ओर भूबल रहने से जुये में जीत होती है।

जय पराजय सूचक दिन

जन्मभाद् दिनभं यावत् गणनीयं यथाक्रमात्।
तिथियुक्तं च वेदघ्नं त्रिभिर्भागोविधीयते ॥३२॥
एके मृत्युःद्वये घातं शून्ये सुखसमन्वितम्।
कालज्ञानमिति प्रोक्तं युद्धे द्यूते च चिन्तयेत् ।३३।

जन्मनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनकर वर्तमान तिथि संख्या जोड़कर ३ से भाग देने पर यदि १ शेष रहे तो उस दिन मृत्युभय, दो शेष रहने पर घातभय तथा शून्य शेष रहने से उस दिन सुख मिलेगा।

तीर्थयात्रा

तीर्थयात्रा के विभिन्न उद्देश्य होते हैं :—१—संस्कार हेतु २—श्राद्ध हेतु ३—पर्व स्नान हेतु।

बच्चों का मुण्डन, जनेऊ या मनौती के रूप में अपने कुलदेवता पूजन करने के लिए अथवा कोई काम्यप्रयोग करने के लिए तीर्थस्थान की जो यात्रा होती है, वह संस्कार हेतु तीर्थयात्रा है।

यदि यह यात्रा देवता के विशिष्ट पर्व दिन (जैसे नवरात्र में विन्ध्याचलादि शक्तिस्थान एवं श्रावण में काशी वैद्यनाथादि शैवतीर्थ) पर संस्कार हेतु हो तो निषिद्ध मासादि (प्रति शुक्रादि) में भी होती है।

अगर विशिष्टपर्व के अतिरिक्त समय में हो और प्रथम वार ही देवदर्शन होनेवाला हो तो यह संस्कार निमित्तक यात्रा गुरु शुक्रास्त, बाल्य, वृद्धत्व, मलमासादि (पृ. १८८ श्लो. १३६ के अनुसार), दुष्ट समय को त्यागकर अनुकूल शुभ समय में ही करनी चाहिए।

प्रत्येक धार्मिकक्षेत्र किसी न किसी पुण्य नदी या सरोवर पर होता है। इसी से उसकी 'तीर्थ' (जिसके द्वारा तैर कर पार हुआ जाता है ऐसा स्थान) संज्ञा है। हर तीर्थ में श्राद्ध करने का विधान धर्म शास्त्रों ने कहा है। श्राद्ध हेतु गया यात्रा किसी भी समय कर सकते हैं। इसी प्रकार गोदावरी तीर्थ श्रीशैल की यात्रा (मल्लिकार्जुन तीर्थ) में

भी मुहूर्त विचार नहीं होता है। त्रिस्थलीसेतु में लल्लाचार्य का वचन है कि—

गुरु एवं शुक्रास्त में भी तीर्थ यात्रा सम्भव है

उपप्लव शीतलभानु भान्वो,
रर्धोदये वा कपिलाख्य षष्ठ्याम्।
सुरासुरेज्यास्तमयेऽपि तीर्थ-
यात्राविधि:संक्रमणेऽपि शस्त: ॥३४॥

चन्द्र और सूर्य ग्रहण, अर्धोदय योग कपिला षष्ठी और सभी संक्रान्ति के पर्व कालों पर गुरु और शुक्रास्तादि (मलमास सिंहस्थगुर्वादि) में भी तीर्थ की यात्रा प्रशस्त हैं।

पर्वस्नान या देव दर्शन हेतु भी बहुत से लोग तीर्थ यात्रा करते हैं। यह यात्रा दो प्रकार की होती है १—प्रथम यात्रा २—नित्ययात्रा। प्रथमयात्रा में गुरु शुक्रास्त, मलादि मास, सिंहस्थ गुरू आदि सभी वर्जित विषयों का विचार किया जाता है। किन्तु जो व्यक्ति नियम पूर्वक प्रतिवर्ष तीर्थ विशेष की यात्रा करते हैं, उनके लिए कोई भी निषेध लागू नहीं होता है।

यात्रा मुहूर्त्त के दोष

अयनर्क्षमासतिथिकालवासरो-
द्भवशूलसंमुखसितज्ञदिक्कपा:।
भृगुवक्रतादि परिघाख्यदण्डको
युवति रजोऽप्यशुचितोत्सवादिकम् ॥३५॥

मृतपञ्चरिक्तरवितर्कसंख्यकाः
तिथयश्च सौरिरविभौमवासराः।
अपि वामपृष्ठगविधुस्तथाऽग्लो
वसुपंचकाभिजिदथापि दक्षिणे ॥३६॥

लग्ने जन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहमहितर्क्षाच्चषष्ठं तदीशा
वा लग्ने कुंभमीनर्क्षनवलवतनू चापि पृष्ठोदयं च
पृष्ठाशासंस्थमृक्षं दशमशनिरथो सप्तमे चापि काव्यः
केंद्रेवक्राश्च वक्रिग्रहदिवस विवाहोक्तदोषाश्चनेष्टाः ३७

यात्रा में अयन शूल (मुहूर्त चिन्तामणि प्र. ११ श्लो. ३६) दोनों प्रकार के मास शूलः—

प्रथम-यत्र त्रयो वृषाद्याश्च पूर्वाशादि बुधैः क्रमात्।
राशयो द्वादशैवं तु मेषांताः सृष्टि मार्गगाः ३८॥
यत्र पूर्वादि काष्ठायां वृष राश्यादिगो रविः।
सादिशाऽस्तमिता ज्ञेयां तिस्रः शेषाः सदोदिताः ३६

द्वितीय मास शूल कपाट कंटक योग यथा—

कपाटं पूर्वतो ज्ञेयं कार्तिकादि त्रयं तथा।
नभस्यतो वास्तु मध्ये मधोरेकेन कण्टकः ॥४०।

नक्षत्र और वारशूल, तिथिशूल, संमुखशुक्र; संमुख बुध, सम्मुखदिशापति (लालाटिकयोग) भृगु (शुक्र) की वक्रता,

अस्तनीचादि, परिघ, दण्डयाग, स्त्री का रजोदर्शन, जनना-शौच व मरणाशौच, मांगलिकउत्सव, त्यौहारादि, मृतपक्ष (मु. चि. प्र. ११ श्लो. १२), रिक्ता (४ ८।१४ तिथि), द्वादशी और षष्ठी तिथि, शनि, रवि और मंगलवार (ये केवल दिक्शूल में वर्जित हैं) वाम और पृष्ठगत चन्द्रमा, आडल योग, धनिष्ठापञ्चक और अभिजिन्मुहूर्त्त, (ये दोनों सिर्फ दक्षिणदिशा की यात्रा में वर्जित हैं), यात्रा लग्न के समय, जन्मनक्षत्र, जन्मराशि और जन्मलग्न तथा इनसे ८ वें स्थान का लग्न, शत्रु स्थान से छटे स्थान की राशि, अपनी जन्मराशि से अष्टमेश और षष्ठेश ये यात्रालग्न में हो. कुम्भलग्न और मीनलग्न अथवा इनका नवांश, पृष्टोदय राशियाँ; यात्रा लग्न से दशवाँ शनि, सातवाँ शुक्र, केन्द्र में वक्री ग्रह अथवा वक्री ग्रहों का वार ये दोष यात्रा में अवश्य वर्ज्य हैं। विवाहप्रकरणोक्त २१ महादोष भी यात्राकाल में वर्जित हैं।

दासी सेवा चक्र विचार

दासी चक्रमपीह तद्ददिति तच्छीर्षेत्रयं लाभदं—
हानिस्त्रोणिमुखे द्वयं प्रभुमृतिः स्कन्धे च पुष्टि शराः
हृत्पृष्ठे च नगाश्च हानिरिति भूयोनो तिरस्कारता।
त्रीणि श्रोण्यथपादयोश्च भवतिस्याद्दक्षिणे वामके
तद्द्रव्यक्षयमादिशेदितिविभोर्भृत्यस्ययोज्यंसदा ४१

नई नौकरानी रखते समय इस चक्र का विचार करना चाहिए। दासी के नक्षत्र से स्वामी के नक्षत्र तक गिनकर उसमें से ३ नक्षत्र दासी-चक्र के शिर पर रखें। अगर इनमें से स्वामी का नक्षत्र पड़े तो ये नक्षत्र लाभप्रद हैं। उससे आगे वाले ३ नक्षत्र मुख पर रखें। इनका फल हानि होता है। इससे आगे वाले २ नक्षत्र कन्धों पर रखें। जिनका फल स्वामी की मृत्यु है। तदनन्तर ५ नक्षत्र पीठ पर रखें। जिनका फल उन्नतिसूचक हैं। फिर ७ नक्षत्र हृदय पर रखें जिनका फल 'हानि' हैं। पुनः १ नक्षत्र योनि स्थान पर धरे जिसका फल तिरस्कार प्राप्ति है। फिर ३ नक्षत्र दाहिने और ३ बाएँ पैर पर धरे, जिनका फल धननाशक होता है।

दासी-भातृ-सेवा चक्रम्

शिर	मुख	स्कन्ध	पीठ	हृदय	योनि	पैर	स्थान
३	३	२	५	७	१	६	नक्षत्र सं०
लाभप्रद	हानि	मृत्यु	पुष्टि	हानि	तिरस्कार	धननाश	फल

॥ श्री ॥

वास्तु—परिच्छेद:

वास्तुविद्या की जानकारी में भारतवर्ष संसार में गौरव पूर्ण स्थान रखता है। हमारे यहाँ वास्तुशास्त्र ३ प्रकरणों में विभाजित है (१) भवन (गृह) वास्तु (२) प्रासाद वास्तु (३) जलाशय वास्तु ।

भवन वास्तु के ग्रन्थों में नगर और दुर्गों का निर्माण तथा राजपुरुष और साधारणजनों के निवास योग्य मकानों के निर्माण प्रकार तथा उनके आयादि के द्वारा होने वाला शुभाशुभ फल एवं तदुपयोगी मुहूर्त्तादि का विवेचन समाविष्ट रहता है।

प्रासाद वास्तु के ग्रन्थों में बड़े २ देव मन्दिरों के निर्माण का प्रकार तथा यज्ञमण्डपादि तथा कुण्डों के निर्माण का विषय एवं मूर्ति निर्माण विषयक सामग्री वर्णित होती है।

जलाशय वास्तु सम्बन्धी ग्रन्थों में तड़ाग, कूप, वापी, कृत्रिम झील, बाँध, बन्दरगाह, प्रपात, बाग बगीचे आदि के निर्माण प्रकार और तत्सम्बन्धी मुहूर्त्तादि का विषय रहता है।

गृह वास्तु सम्बन्धी ग्रन्थों में मण्डन सूत्रधार का वास्तु राजवल्लभ, विश्वकर्मप्रकाश, बृहद्वास्तुमाला, वास्तुरत्नावली वास्तुरत्नाकर आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

प्रासाद वास्तु सम्बन्धी ग्रंथों को प्रकाश में लाने का श्रेय आधुनिक भारत के विश्वकर्मा सुप्रसिद्ध शिल्पीसम्राट् पण्डित प्रभाशङ्कर ओघड़भाई सोमपुराजी को है। आपने वर्षों तपस्या करके प्रासाद मञ्जरी, दीपार्णव, क्षीरार्णव, वृक्षार्णव नामक बृहद्ग्रन्थों का सम्पादन व प्रकाशन तथा वेध वास्तु प्रभाकर नामक मौलिक ग्रंथ लिखा है तथा भारत की शिल्पी जातियों

का शोधपूर्ण इतिहास भी लिख रहे हैं। सुप्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर का पुनः निर्माण आपने किया है तथा मथुरा में कृष्ण जन्म भूमि मन्दिर एवं श्री बिड़ला बन्धुओं द्वारा बनने वाले अनेक मन्दिरों के शिल्प कार्य आपके द्वारा सञ्चालित हैं। मन्दिर बनवाने में अभिरुचि रखने वाले सज्जन इनसे सम्पर्क कर सकते हैं।

कुण्डमण्डपादि का वर्णन कुण्डमण्डपसिद्धि, कुण्डार्क, कुण्डरत्नावली आदि ग्रन्थों में है। जलाशय वास्तु सम्बन्धी स्वतंत्र ग्रन्थों का अभाव है। प्राचीन सभी ग्रंथों में इसका फुटकर वर्णन मिलता है। बृहत्संहिता, ज्योतिः प्रकाश, तथा मत्स्यादि पुराणों में इसके विषयों का वर्णन है पुरातत्त्व-विदों को एतद्विषयक ग्रंथों का पुनरुद्धार करना चाहिए।

कर्मकान्ड साहित्य में वास्तुशान्ति कर्म से सम्बन्धित बहुत से ग्रन्थ हैं, जिनमें म. म. श्री विद्याधर शास्त्री गौड़ की शिलान्यास एवं वास्तुशान्तिपद्धति तथा उनके सुपुत्र श्री पण्डित दौलतरामजी गौड़ वेदाचार्य की 'प्रभुविद्याप्रतिष्ठार्णव, तथा सिद्धपुरस्थ श्री दुर्गाशङ्कर नागर कृत 'वास्तुशांतिप्रयोग' सुन्दर ग्रंथ हैं।

ये बातें जिज्ञासुओं के हितार्थ लिखी हैं। अब संक्षेप से वास्तु सम्बन्धी विषयों को यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ।

गृहवास्तु प्रकरण

कहीं भी रहने योग्य मकान बनाने के पहिले मनुष्यों को निम्न सुविधाओं पर ध्यान देना चाहिए।

१—आजीविका की सुविधा २—चिकित्सा की सुविधा ३—जल की सुविधा ४ – शिक्षा की सुविधा ५—आत्मरक्षा

की सुविधा ६—ऋण की सुविधा ७—ज्योतिषी और वैदिक ब्राह्मण का सान्निध्य। इसके पश्चात् सुयोग्य ज्योतिर्विद् की सहायता से गाँव की और अपनी नाम राशि एवं नाम नक्षत्र से शुभाशुभ का विचार निम्न प्रकार से करावे।

ग्राम चक्र से वास विचार

शुभाशुभविचारार्थे ग्रामचक्रं नराकृतिः।
गणयेत् नामनक्षत्रं ग्रामनक्षत्रतःसदा ॥१॥
मस्तके पंच लाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः।
कुक्षौ पंच धनं धान्यं षट्पादे स्त्रीदरिता ॥२॥
पृष्ठे चैकं पादहानि र्नाभौ चत्वारि सम्पदः।
गुह्ये चैकं भयं पीड़ा हस्ते चैकं तु क्रन्दनम् ॥३॥
वामे चैकं करे भेदो ग्रामे वासफलं सदा।
चिन्तयेद्वास्तुकार्यादौ व्यापारादौ च सर्वदा ॥४॥

सभी प्रकार के वास्तु कार्य और व्यापारिक कार्यों के प्रारम्भ से पूर्व नराकार ग्राम चक्र से शुभाशुभ विचार करना चाहिए। गाँव के नाम नक्षत्र से गिनने पर अपना नाम नक्षत्र ५ नक्षत्रों में पड़ता हो तो ये नक्षत्र गाँव के मस्तक पर होने से लाभ प्रद हैं। उसके बाद वाले ३ नक्षत्र मुख पर रक्खे। इनमें अगर अपना नाम नक्षत्र पड़ता हो तो धनहानि कारक है। तत्पश्चात् ५ नक्षत्र कोख में रक्खे। ये धन धान्य के सूचक हैं तदनन्तर पैरों के स्थान पर ६ नक्षत्र स्त्री दरिद्रता के सूचक हैं। फिर एक नक्षत्र पीठ पर पैर की हानि और इसके बाद वाले ४ नक्षत्र नाभिस्थान में सम्पत्तिसूचक हैं। पुनः १ नक्षत्र गुह्यभाग में भय और पीड़ा सूचक, फिर १ नक्षत्र दाहिने हाथ पर रक्खे जो क्रन्दन कारक है। शेष १ नक्षत्र बाँयें हाथपर

रक्खा जाता है जो परस्पर भेद पैदा करने वाला होता है। बृहदास्तुमालाकार ग्रामवास चक्र में जन्म नक्षत्र का ग्रहण करते हैं। किन्तु, (पृ. ११०) के अनुसार नाम राशि का ग्रहण गृह और ग्राम सम्बन्धी विचार में किया जाता है और यही उचित है। कुछ ग्रन्थों में ग्राम के नक्षत्र से ७ नक्षत्र मस्तक पर धनी कारक, पुनः ७ पीठ पर हानिकारक, पुनः ७ हृदय पर सम्पत्तिसूचक, पुनः ७ चरणों पर पर्यटन कारक ऐसी साभिजिद्गणना की है। पर यह मत विद्वत्समुदाय में अप्रचलित है।

ग्राम अनुकूल है या नहीं ?

नामर्क्षाद्द्विसुताङ्कदिग्भवगतोग्रामःशुभोऽन्योऽन्यथा
तत्कोणेऽन्त्यभुवां शुभं निवसतां दोषः परेषामलम्।
कन्याकर्किधनुस्तुलाक्रियघटाःकौर्प्याण्डजौ याम्यतो
मध्येऽन्येन्थवसन्त्यथेन्द्रककुभोवर्गाः स्युरोजस्विनः॥५॥

जिस गाँव में घर बनाना है उस गाँव के नाम की राशि यदि मकान बनवाने वाले की नाम राशि से दूसरी, पाँचवी, नौवी, दशवीं और ग्यारहवीं हो तो उस गाँव में मकान बनाने वाले को लाभ होता है। इससे अतिरिक्त हो तो नेष्ट फल होता है। गाँव के चारों कोणों (आग्नेयादि) में अन्त्यज (धोबी चमारादि) जातियों को मकान बनवाना चाहिए। उनके लिए ये दिशायें शुभ हैं। गाँव की जमीन के नक्शे को वर्गाकार रूप में ९ भागों में विभाजित करने की कल्पना करो, उसके मध्यभाग से दक्षिण में कन्याराशि, नैऋत्य में कर्कराशि, पश्चिम में धनुराशि, वायव्य में तुलाराशि, उत्तर में मेषराशि, ईशान में कुम्भराशि, पूर्व में वृश्चिकराशि, अग्निकोण

में मीनराशि, शेष बची हुई वृष, मिथुन और सिंह तथा मकर राशि वाले लोगों को गाँव के मध्य भाग में निवास नहीं करना चाहिए। अवर्ग पूर्व दिशा में, कवर्ग अग्निकोण में, चवर्ग दक्षिणदिशा में, टवर्ग नैऋत्यकोण में, तवर्ग पश्चिम में, पवर्ग वायव्य में, यवर्ग उत्तर में और शवर्ग ईशान कोण में बली रहते हैं। अर्थात् इन वर्ग के नाम वालों के लिए बली दिशा शुभ होती है।

काकिणी विचार

अपने नाम के प्रथम अक्षर वाले वर्ग सख्या को दो से गुणा करके दूसरे (नगरादि) की वर्गसंख्या को जोड़ दें। पुनः योगफल में ८ का भाग देने पर शेष काकिणी होती है। इसी प्रकार नगरादि के वर्ग को भी दो से गुणा कर उसमें नाम का वर्ग जोड़कर योगफल में ८ का भाग देकर काकिणी बनावें। इसमें जिसकी (नाम या नगर की) काकिणी ज्यादा होगी, वही धन देने वाला होगा। अगर गाँव की काकिणी ज्यादा है तो बसने वाले को गाँव शुभ होगा।

भूमि परीक्षा

ग्राम का शुभाशुभ विचार करके फिर निवास योग्य भूमि का विचार किया जाता है—

१—जिस भूमि को देखकर मन और नेत्र प्रफुल्लित हो उठे और जो प्रत्यक्ष लाभ दे रही हो उसके विषय में किसी प्रकार के शुभाशुभ विचार की जरूरत नहीं है।

२—भूमि के शुभाशुभ विचार का अनेक विधि हैं :—पहली विधि मिट्टी के रंग, गन्ध, स्वाद और उस पर की उपज तथा समीपवर्ती पेड़ पौधों से जानकारी करनी है।

३—दूसरी विधि भूमि के धरातल की बनावट, ढालूपन आदि से सम्बन्धित है।

४—गर्तखनन और शल्य द्रव्य से ज्ञान करना तीसरी विधि है।

५—स्वप्न और शिवा बलि द्वारा भूमि परीक्षा करना चौथी विधि है।

ब्राह्मणादि भूमि (प्रथमविधि)

श्वेता ब्राह्मणभूमिका च घृतवद्गन्धा शुभा स्वादिनी
रक्ता शोणितगन्धिनी नृपतिभूः स्वादेकषाया च सा।
स्वादेऽम्ला तिलतैलगन्धिरुदिता पीता च वैश्यामही
कृष्णा मत्स्यसुगन्धिनी च कटुका शूद्रेति भूलक्षणम्।

जो भूमि श्वेत वर्ण की हो, घृत के समान गन्ध वाली हो, मधुर स्वाद की हो, वह भूमि ब्राह्मणी होती है। जो भूमि रक्तवर्ण की हो, रक्तगन्धा और स्वाद में कषाय (कसैली) हो तो वह क्षत्रिया होती है। जो भूमि स्वाद में खट्टी, तिलके तैल की गन्धवाली और पीले रङ्ग की मिट्टी वाली हो वह वैश्यवर्ण की भूमि होती है। जो भूमि कृष्ण वर्ण की हो, मछली की तरह गन्ध वाली हो और स्वाद में कड़वी हो तो शूद्रवर्ण की होती है। ये भूमि अपने वर्ण के अनुसार गुणकर्मयुक्त व्यक्ति अथवा वर्णवालों को शुभप्रद होती हैं।

सर्वजातिहितकारी भूमि

स्वादे भवेद्या मधुरा सिताभा-
सर्वेषु वर्णेषु मही प्रशस्ता।

स्नेहान्विता वभ्रु भुजङ्गयोर्या-
सौहार्दसत्याखुविडालयोर्या ॥७॥

जिस भूमि की मिट्टीका स्वाद मीठा हो तथा रङ्ग सफेदी पर हो और जिस भूमि में साँप और न्यौला (नकुल) अथवा चूहे और बिल्ली अथवा अन्य स्वाभाविक वैर वाले प्राणी वैर भाव भुलाकर स्नेहपूर्वक रहते हों। उस जगह सभी वर्ण जातियों के व्यक्ति बस सकते हैं। वह भूमि सभी के लिए सुख दायिनी होती है।

भूमि का प्लव (ढालूपन) विचार (द्वितीयविधि)

भूमेः प्राक्प्लवनं च शङ्करककुब्सौम्याश्रितं सौख्यकृत्
वन्हौ वन्हिभयं यमे च मरणं चौराद्भयं राक्षसे।
वायव्यं प्लवनं च धान्यहरणं स्याच्छोकदं वारुणे
विप्रादेरनुवर्णतश्च सुखदं सृष्टः क्रमात्सौम्यतः ॥८॥

जिस भूमि पर मकान बनाने की इच्छा हो वह ईशान और उत्तर दिशा की ओर ढालू (नीची) हो तो शुभ करने वाली होती है। अग्नि कोण में नीची हो तो अग्नि का भय, दक्षिण में मृत्यु, नैऋत्य में चोर भय, वायव्य में धान्यनाश और पश्चिम में शोकदायक होती है। उत्तर दिशा में नत भूमि ब्राह्मण को, पूर्व में नत क्षत्रिय को तथा दक्षिण में नत वैश्य को और पश्चिम में नत भूमि शूद्र को शुभ रहती है। ऐसा भी कुछ लोगों का मत है।

गर्त्त द्वारा शुभाशुभ विचार (तृतीयविधि)

खातं भूमिपरीक्षणे करमितं तत्पूरयेत्तन्मृदा
हीने हीनफलं समे समफलं लाभो रजोवृद्धितः।

तत्कृत्वा जलपूर्णमाशतपदं गत्वा परोद्यं ततः
पादार्धेन विहीनकेऽथ निभृते मध्याधमेष्टं फलम् ।६।

जमीन की परीक्षा करने के लिए एक हाथ लम्बा चौड़ा और गहरा गड्ढा खोदकर उसको उसी मिट्टी से पुनः भरना चाहिए। अगर मिट्टी कम पड़ जाय तो भूमि अशुभ है। बराबर हो तो सम है। अगर मिट्टी बढ़ जाय तो उत्तम होती है अथवा उस गड्ढे को जल से भरकर सौ पैर चलकर फिर लौटना चाहिए। लौटने पर यदि जल सूख जाय तो अशुभ, थोड़ा जल रहे तो मध्यम, अगर जल पूरा रहे तो शुभ है। यह खात करते समय राहु मुख का विचार करना चाहिये ऐसा वास्तुराज वल्लभ की टीका में स्वर्गीय अनूपमिश्र ने लिखा है।

शल्योद्धार

प्रश्नत्रयं वापि गृहाधिपेन
देवस्य वृक्षस्य फलस्य चापि।
वाच्यं हि कोष्ठाक्षरसंस्थितेन
शल्यं विलोक्यं भवनेषु सृष्ट्या ॥१०॥

मकान बनाने के पहले भूमि में गड़े हुए शल्य का शोधन करना चाहिए। जिसका तरीका यह है कि भूमि के स्वामी के मुख से किसी देवता का, वृक्ष या फूल इनमें से किसी एक का नाम पूछें। इसके बाद नीचे श्लोक में आगे बताये हुये कोष्ठक में वह अक्षर जिस खाने में पड़ा हो भूमि के भी उस भाग में शल्य कहना चाहिये।

शल्य चक्र

आ का चा टा ए त शा पा य वर्गाः
प्राच्यादिस्थे कोष्ठके शल्यमुक्तम्।

केशाङ्गाराः काष्ठलोहास्थिकाद्यं
इस्मात्कार्यं शोधनं भूमिकायाः ॥११॥

नौ कोष्टक का एक चक्र बनाकर उसके पूर्व भाग में अवर्ग तथा अग्निकोण में कवर्ग, दक्षिण में चवर्ग, नैऋत्य में टवर्ग तथा पश्चिम में ए वर्ग, वायव्य कोण में तवर्ग, उत्तर दिशा में शवर्ग और ईशानकोण में पवर्ग तथा मध्य में यवर्ग रक्खें। प्रश्न के अक्षर जिस दिशा के कोष्ठक में पड़े भूमि के उसी भाग में शल्य, केश, कोयला, काष्ठ, लोहा, हड्डी आदि होते हैं।

शल्य चक्र

पूर्व

	प फ ब भ म	अ इ उ ऋ ऌ	क ख ग घ ङ	
उत्तर	श ष स ह	य र ल व	च छ ज झ ञ	दक्षिण
	त थ द ध न	ए ऐ ओ औ	ट ठ ड ढ ण	

पश्चिम

शिवाबलि

निशीथे चैकान्ते गहनविपिने वाप्युपवने
शिवां ध्यात्वा मांसौदनदधिसदीपं शुभबलिम्।
विदध्यात् वै गत्वा कियदपि सुदूरं शिव रवं
फलं श्रेष्ठं नेष्टं भवति श्रवणेनाष्ट दिशिजम् ॥१२॥

अर्ध रात्रि के समय एकान्त में पड़ने वाले जंगल अथवा किसी बगीचे में जाकर शिवा का ध्यान करना चाहिए और मांस अथवा उड़द को दही और भात के साथ दीपक के सहित इस

बलि को रखना चाहिए। तत्पश्चात् कुछ दूर जाकर एकान्त में स्थिर होकर शिवा (लोमड़ी) का शब्द सुनना चाहिये। शिवा का आठों दिशा परक शुभ और अशुभ फल होता है।

शिवा शब्द विचार

ऐन्द्र्यामुच्चाटभीतिः भवति च भयं वह्निकोणे च पुंसां
कल्याणंयाम्यभागेनिर्ऋतिभवनजे नैव वासः सुखार्थं।
आनन्दःवारूणे स्याद्भवति च भयं वायवीये रवेऽपि
वासःसौभाग्यदःस्याद्धनददिशिशिवारौतिमृत्युश्चरौद्रे

अगर पूर्व दिशा में लोमड़ी बोले तो उच्चाटन, अग्निकोण में बोले तो भय, दक्षिण में बोले तो कल्याणकारी नैर्ऋत्य कोण में तकलीफ देह, पश्चिम में आनन्ददायक, वायव्य कोण में भयदायक तथा उत्तर दिशा में धनदायक तथा ईशान कोण में मृत्युदायक होती है।

स्वप्न द्वारा भूमि परीक्षा

सन्ध्यायां स्नानपूर्वं धृतसितवसनःनैत्यिकं कर्म कृत्वा
चीरान्नं चाररहितं मृदुफलमशनं मौनपूर्वं विधाय।
दीपं कृत्वा तथाग्रे नवकुसुमदलैरर्चयित्वा च देवीम्
स्वप्नेशीं भक्तिपूर्वां जपतियदिनरःसत्यस्वप्नंहिपश्येत्

जिस दिन रात्रि में स्वप्न द्वारा भूमि परीक्षा करनी हो उसदिन सायंकाल स्नान करके शुद्ध श्वेतवस्त्र धारण कर सायंकालिक नित्य (सन्ध्यापूजादि) कर्म करके क्षार (समुद्री नमक) रहित खीरादि मृदु व मीठी चीज अथवा मधुर कोमल फल खावे। भोजन के समय मौन रखें। पुनः रात्रि में पूर्व या उत्तरमुख होकर दीपस्थापन करके ताजा फूलों

से भक्तिपूर्वक स्वप्नेश्वरी देवी का पूजन करके जबतक निद्रा न आजाय निम्नमंत्र का जप करता रहे तो निश्चित् रूप से सत्य स्वप्न देखता है। मंत्रः—ह्रीं स्वप्नेश्वर्यै नमः स्वाहा। इस मन्त्र को भोजपत्र में लिखकर सिरहाने तकिये के नीचे रखकर भी सोना चाहिए।

देवेष्टाः पितरो विप्राः भाषन्ते स्वप्नमध्यके।
सत्यं तद्विजानीयात् स्वप्नाध्यायं च चिन्तयेत्॥
शुभाशुभं फलं सम्यक् वास्तुचिन्ताविनाशकृत्।
पूर्वं महर्षिभिः प्रोक्तं ज्योतिःशास्त्रविशारदैः॥१५॥

स्वप्न में देवता, इष्टमित्र, पितृगण, ब्राह्मण आदि व्यक्ति जो कुछ भी कहें तो उसे सत्य समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त वास्तु सम्बन्धी चिन्तानाश के लिए ज्योतिशास्त्र-विशारद प्रमुख ऋषियों ने अपने ग्रन्थों (वृहत्संहिता, भद्र बाहुसंहिता आदि) में स्वप्नाध्याय लिखे हैं उनसे भी शुभाशुभ फल समझें।

पिण्ड (क्षेत्र फल) साधनम्

भूमि के शुभ और अशुभ का ज्ञान होने के पश्चात् शुभ फल दायिनी भूमि का पिण्ड साधन करे।

व्येकेष्टर्क्षहता द्विबाणशशिनोऽत्यष्ट्यायुतास्तेऽपिच
व्येकेष्टायहतैक नागसहिताः षण्मूर्छनाभिर्हताः।
शेषं क्षेत्रफलं भवेदभिमतः स्वेष्टायनत्तत्रजं
स्याद्दैर्घ्यं तदभीष्ट विस्तृति हतं दैर्घ्योद्धृतं विस्तृतिः॥

पिण्ड साधन में मकान बनानेवाले (गृहपति) के नाम नक्षत्र के साथ जिस नक्षत्र से विवाह प्रकरणोक्त नक्षत्र मेलापक

प्रकार से गुणाधिक्य आता हो वह 'इष्ट नक्षत्र' कहलाता है। परन्तु गृहनक्षत्र और नामनक्षत्र एक नहीं होना चाहिए एवं विवाह में वर वधू नक्षत्र का एक नाड़ी में होना अशुभ माना गया है। किन्तु, गृह निर्माण योग्य पिण्ड में एक नाडी के नक्षत्र भी ग्राह्य हैं। उस इष्ट नक्षत्र की अश्विन्यादि क्रम से गिनने पर जो सख्या आती हो उसमें से १ घटाकर शेष को १५२ से गुणा करदें। गुणनफल को १. ध्वज २. धूम ३. सिंह ४. श्वान ५. वृष ६. खर ७. गज ८. काक इन आठ आयों में से एक इष्ट आय जिसकी संख्या विषम हो (क्योंकि; पिण्ड में विषम आय शुभ होता है) उस आय संख्या में से १ को घटाकर ८ः से गुणा करने पर जो गुणनफल आवे, उसमें जोड़दें तथा उसमें १७ और जोड़कर योगफल में २१६ से भागदेने पर पिण्ड 'क्षेत्रफल' (अपने लिए शुभ) होगा। इसमें लम्बाई (दैर्घ्य) से भाग देने पर इष्ट चौड़ाई (विस्तार) होता है तथा पिण्ड क्षेत्रफल में विस्तार (चौड़ाइ) से भाग देने पर दैर्घ्य (लम्बाई) होती है। यदि दैर्घ्य से भाग देने पर इष्ट विस्तार न आवे तो उसमें एकादि से गुणित २१६ जोड़ना चाहिए। अगर इष्ट पिण्ड से पिण्ड अधिक आता हो तो पिण्ड में २१६ से भाग देकर शेष को पिण्ड मानना चाहिए—

जैसे नित्यानन्द नामक कोई व्यक्ति अपनी जमीन में मकान बनवाना चाहता है। सर्व प्रथम हमने उसके नाम नक्षत्र अनुराधा से नाड़ी विचार (पृ० १७ श्लो. ८९) किया इनमें से सर्वाधिक २४॥ गुणवाले पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र को इष्ट नक्षत्र या वास्तु नक्षत्र के रूप में ग्रहण किया। अब हमें यह देखना होगा कि हमारे आय की संख्या हमारे व्यय के अंक से न्यून न हो, उसके लिए व्यय का साधन किया

दैर्घ्य विस्तार पिण्ड सारिणी

दीर्घ	१५	१७	१७	१९	१९	२१	२१	२३	२३	२३	२५	२५	२५	२७	२७	२७	२९	२९	२९	३१
विस्तार	१३	१३	१५	१५	१७	१९	२१	१९	२१	२३	२१	२३	२५	२३	२५	२७	२५	२७	२९	२५
पिण्ड	१९५	२२१	२५५	२८५	३२३	३९९	४४१	४३७	४८३	५२९	५२५	५७५	६२५	६२१	६७५	७२९	७२५	७८३	८४१	७७५
आय	३	५	७	५	३	७	१	५	३		५	७	१	५	३	[illegible]	५	७	१	७
वार	५	१	६	३	२	७	७	६	७	१	७	२	४	३	६	२	१	५	२	३
अंश	९	३	९	९	३	९	९	३	९	६	९	३	६	९	९	९	३	९	६	६
द्रव्य	१२	४	१२	१२	४	१२	१२	४	१२	८	१२	४	८	१२	१२	१२	४	१२	८	८
ऋण	१	७	५	७	१	५	३	७	१	३	७	५	३	७	१	३	७	५	३	५
ऋक्ष	२१	१३	१५	१२	१९	६	१८	१३	३	२०	१५	१०	५	२७	२७	२	२२	७	५	१७
तिथि	१५	१३	१५	१५	४	१२	३	१	९	२	१५	१०	५	३	१५	१२	१०	९	८	५
योग	२४	२०	२१	६	२३	३	९	२०	१५	१०	२१	५	१६	२७	२७	२७	२१	२७	१६	२२
आयु:	१२०	८८	१२०	१२०	६४	७२	४८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	४८	१२०	७२	४०	२४	८	८०
दीर्घ	३१	३१	३१	३३	३३	३३	३३	३५	३५	३५	३५	३७	३७	३७	३४	३९	३९	३९	३९	४१
विस्तार	२७	२९	३१	२७	२९	३१	३३	२९	३१	३३	३५	३१	३३	३५	३७	३३	३५	३७	३९	३३
पिण्ड	८३७	८९९	९६१	८९१	९५७	१०२३	१०८९	१०१५	१०८५	११५५	१२८५	११४७	१२२१	१२९५	१३६९	१२८७	१३६५	१४०३	१५२१	१३५३
आय	५	३	१	३	५	७	१	७	५	३	१	३	५	७	१	७	५	३	१	१
वार	१	६	४	४	३	२	१	७	७	७	७	५	६	७	१	५	७	२	४	४
अंश	९	३	६	९	९	९	९	६	३	९	६	६	९	३	६	९	९	९	९	९
द्रव्य	१२	४	८	१२	१२	२	१२	८	४	१२	८	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२
ऋण	७	१	३	१	७	५	३	५	७	१	३	१	७	५	३	५	७	१	३	३
ऋक्ष	२७	१०	१०	२७	१५	३	१८	२०	१३	६	२६	२३	२१	१९	१७	९	१२	१५	१८	२४
तिथि	६	७	८	३	६	९	१२	५	१०	१५	५	१०	३	१०	२	६	१५	९	३	९
योग	२७	५	१०	२७	२१	१५	९	१०	२०	३	१३	३५	२४	२३	२२	१८	६	२१	९	१२
आयु:	९६	१२	८	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०	८०	५६	४८	४०	३२	१६	१२०	२४	४८	२४

दैर्ध्यविस्तार पिण्ड सारिणी

दीर्घ	४१	४१	४१	४१	४३	४३	४३	४३	४३	४५	४५	४५	४५	४५	४७	४७	४७	४७	४७	४९
विस्तार	३५	३७	३९	४१	३५	३७	३९	४१	४३	३७	३९	४१	४३	४५	३९	४१	४३	४५	४७	४१
पिण्ड	१४३५	१५१७	१५९९	१६८१	१५०५	१५८१	१६७७	१७६३	१८४९	१६६५	१७५५	१८४५	१९३५	२०२५	१८३३	१९४७	२०२१	२११५	२२०९	१००९
आय	३	५	७	१	१	७	५	३	१	१	३	५	७	१	१	७	५	३	१	१
वार	७	३	६	१	७	४	१	५	२	५	३	१	६	४	५	४	३	२	१	७
अंश	६	३	९	६	३	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	६	३	९	६	३
द्रव्य	८	४	१२	८	४	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४
ऋण	१	७	५	३	३	५	७	१	३	३	१	७	५	३	३	५	७	१	३	३
ऋक्ष	५	१३	२१	२	२५	११	२४	१०	२३	९	२७	२८	९	२७	३	२६	२२	१८	१४	७
तिथि	५	१	१२	८	१०	८	६	४	२	१५	१५	१५	१५	१५	९	११	१३	१५	२	७
योग	१६	२०	२४	१	२६	११	१२	५	२५	१८	१७	९	१८	२७	१५	१३	११	९	७	१७
आयुः	८०	१६	७२	८	४०	८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	२४	५६	८८	२०	३२	११२
दीर्घ	४९	४९	४९	४९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५५	५५	५५	५५
विस्तार	४३	४५	४७	४९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	४५	४७	४९	५१
पिण्ड	२१३७	२२·५	२३०३	२४०१	२०११	२१९३	२२९५	२३९७	२४९९	२६०१	२·७९	२३८५	२४९०	२५९७	२७०३	२८०९	२४७५	२५८५	२६९५	२८०५
आय	३	५	७	१	३	१	७	५	३	१	७	१	३	५	७	१	३	१	७	५
वार	७	७	७	७	३	४	५	६	७	१	१	३	५	७	२	४	१	४	७	३
अंश	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	३	९	६	३	९	६	९	३	६	९
द्रव्य	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२	८	४	१२	८	१२	४	८	१२
ऋण	१	७	५	३	१	३	५	७	१	३	५	३	१	७	५	३	१	३	५	७
ऋक्ष	८	९	१०	११	१५	२१	२०	६	१२	१८	७	१८	२	१३	२४	८	९	२५	२४	३
तिथि	११	१५	४	८	३	९	१५	६	१२	३	७	१५	८	१	९	२	१५	१०	५	१५
योग	४	१८	५	१९	२१	२४	२७	३	६	९	७	९	१	२०	१२	४	१८	२६	७	१५
आयु	५६	१२०	६४	८	४८	२४	१२०	९६	७२	४८	११२	१२०	८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	१२०

दीर्घ	५५	५५	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६१	६१	६१	६१	६१	६१
विस्तार	५३	५५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	४९	५१	५३	५५	५७	५९
पिण्ड	२९१५	३०२५	२६७९	२७९३	२९०७	३०२१	३१३५	३२४९	२८९१	३००९	३१२७	३२४५	३३६३	३४८१	२९८९	३१११	३२३३	३३५५	३४७७	३५९९
आय	३	१	७	१	३	५	७	१	३	१	७	५	३	१	५	७	१	३	५	७
वार	६	३	३	७	४	१	५	२	७	५	३	१	६	४	७	६	५	४	३	२
अंश	३	६	९	९	९	९	९	९	३	९	६	३	९	६	६	९	३	६	९	३
द्रव्य	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	१	८	४	१२	८	८	१२	०	८	१०	४
ऋण	१	३	५	३	१	७	५	३	१	३	५	७	१	३	७	५	३	१	७	५
नक्षत्र	१९	८	२१	१५	९	३	२४	१८	१६	१५	१४	१३	१२	११	१७	२१	२५	२	६	१०
तिथि	१०	५	१२	९	६	३	१५	१२	१३	१२	११	१०	९	८	२	३	४	५	६	७
योग	२३	४	२४	२१	१८	१५	१२	९	८	२१	७	२०	६	१९	२२	४	२६	१	३	५
आयुः	४०	८०	७२	२४	९६	४८	१२०	७२	८८	६४	५६	४०	२४	८	३२	४८	६४	८०	९६	११२

दीर्घ	६१	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६७	६७	६७	६७	६७
विस्तार	६१	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	५३	५५	५७	५९	६१	६३	६५	५५	५७	५९	६०	६३
पिण्ड	३७२१	३२१३	३३३९	३४६५	३५९१	३७१७	३८४३	३९६९	३४४५	३५७५	३७०५	३८३५	३९६५	४०९५	४२२५	३६८५	३८१९	३९५३	४०८७	४२२१
आय	१	५	३	१	७	५	३	१	५	७	१	३	५	७	१	५	३	१	७	५
वार	१	७	७	७	७	७	७	७	२	३	४	५	६	७	५	६	१	३	५	७
अंश	६	९	९	९	९	९	९	९	६	३	९	६	३	९	६	६	९	३	६	९
द्रव्य	८	१२	१२	१२	१	२	१२	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	८	१२	४	८	१२
ऋण	३	७	१	३	५	७	१	३	७	५	३	१	७	५	३	७	१	३	५	७
नक्षत्र	१४	२७	९	१८	२७	९	१८	२७	२०	७	२१	८	२२	९	२३	२३	१५	७	२६	१८
तिथि	८	६	१२	१५	३	६	९	१२	५	१०	१५	५	१०	१५	५	५	१२	४	११	३
योग	७	२७	१८	९	२७	१८	९	२७	१०	१७	२४	४	११	१८	२५	२५	२१	१७	१३	९
आयु	८	२४	७२	१२०	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०	८०	४०	१२०	८०	८०	७२	६४	५६	४८

दैर्घ्योविस्तार पिण्ड सारिणी

दीर्घ	६७	६७	६९	६९	६९	६९	६९	६९	६९	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७३	७३	७३
विस्तार	६५	६७	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	५९	६१	६३
पिण्ड	४३५५	४४८९	३९२३	४०७१	४२०९	४३४७	४४८५	४६२३	४७६१	४०४७	४१८९	४३३१	४४७३	४६१५	४७५७	४८९९	५०४१	४३०७	४४५३	४५९९
आय	३	१	५	७	१	३	५	७	१	७	५	३	१	७	५	३	१	३	५	७
वार	२	४	५	१	४	७	३	६	२	२	२	३	७	४	१	५	२	४	२	७
अंश	३	६	९	९	९	९	९	९	६	९	६	३	९	६	३	९	६	३	६	९
द्रव्य	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	८	१२
ऋण	१	३	७	५	३	१	७	५	३	५	७	१	३	५	७	१	३	१	७	५
ऋक्ष	१०	२	९	६	३	२७	२४	२१	१८	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	४	११	१८
तिथि	१०	२	९	३	१५	६	१५	९	३	६	२	१३	९	५	१	१२	८	१	१४	१२
योग	५	१	१८	३	१५	२७	२१	२४	९	१५	१६	१७	१८	१९	२०	१	२२	२	१९	९
आयु:	४०	३२	२४	४८	७२	९६	१२०	२४	४८	९६	३२	८८	६४	८०	६	७२	४८	१६	१०४	७२

दीर्घ	७३	७३	७३	७३	७३	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७७	७७	७७	७७	७७	७७	७७
विस्तार	६५	६७	६९	७१	७३	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	७	६५	६७	६९	७१	७३	७५	७७
पिण्ड	४७४५	४८९१	५०३७	५१८३	५३२९	४५७५	४७२५	४८७५	५०२५	५१७५	५३२५	५४७५	५६२५	५००५	५१५९	५३१३	५४६७	५६२१	५७७५	५९२९
आय	१	३	५	७	१	७	५	३	१	७	५	३	१	५	७	१	३	५	७	१
वार	५	३	१	६	४	१	७	६	५	४	३	३	१	७	७	७	७	७	७	७
अंश	३	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	९	९	६	३	९	६	३	९	६
द्रव्य	४	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४	१२	८
ऋण	३	१	७	५	२	५	७	१	३	५	७	१	३	७	५	३	१	७	५	३
ऋक्ष	२५	५	१२	१९	२६	१५	२७	१२	२४	९	२१	६	८	२६	१६	६	२३	१३	३	२०
तिथि	१०	८	६	४	२	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	५	७	९	११	१३	१५	२
योग	२६	१६	६	२३	१३	२१	२७	६	१२	१८	२४	३	९	१३	८	३	२५	२०	१५	१०
आयु:	४०	८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	८०	११२	२४	५६	८८	१२०	३२

अश्विन्यादि गणना से इष्ट नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी संख्या ११ में ८ का भाग देने पर शेष ३ बचा। यह व्ययांक हुआ। इससे अधिक ५ वां या ७ वां आय अधिक होने से शुभ होता है। अतः अत्र इष्ट नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी संख्या ११ में से १ घटाया १० बचे इसको १५२ से गुणा किया गुणनफल १५२० हुए अब इष्ट आय ५ माना इसमें से १ घटाने पर ४ बचे इसको ८१ से गुणा करने पर गुणनफल ३२४ हुआ। इसको पूर्व गुणन फल १५२० में जोड़ा तो १५२०+३२४=१८४४ हुए। इसमें १७ और जोड़े तो १८६१ हुए इसमें २१६ का भाग दिया तो शेष १३३ पिण्ड हुआ।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि तत्त्वान्वेषक विद्वान् इस पिण्डानयन प्रकार को सदोष मानते हैं। विशेष विवरण श्री पं० सीताराम झा कृत 'कृत्य विवेक' में देखें।

सरल प्रकार

भूमि की लम्बाई चौड़ाई को गुणा करने से क्षेत्रफल (पिण्ड) आवेगा। उसको क्रमशः ९ जगह स्थापित करके क्रमशः ९।९।६।८।३।८।=।४।८ से अलग २ गुणा करके प्रत्येक गुणनफल में ८।६।९।८। १२।२७।१५।२७।१२० से अलग-अलग भाग देने पर क्रमशः जो शेष बचेगा। वह उस भूमि का आय, वार, अंश, द्रव्य, व्यय, नक्षत्र, तिथि, योग और आयु होगा। अगर वे (आयादि) अशुभ आते हों, तो, लम्बाई चौड़ाई में कमी के द्वारा क्षेत्र फल में कमी करके जिस पिण्ड पर आयादि शुभ बन रहा हो उसे ग्रहण करलें।

जिज्ञासुओं के सहायतार्थ दैर्घ्य विस्तार पिण्डसारिणी पृ. ३३७ से ३४० दी जा रही है इसका उपयोग अपनी भवन

योग्य जमीन की लम्बाई (दैर्घ्य) और चौड़ाई (विस्तार) के आसन्नसारणीगत लम्बाई चौड़ाई (दैर्घ्य व विस्तार) के पिण्ड को इष्ट नक्षत्र विचार पूर्वक ग्रहण करें। कुछ लोग अंश से जन्मादि द्वारा ग्रहण करते हैं, वह भ्रम है :—

मुहूर्त्त गणपत्यादि कुछ ग्रन्थकारों ने आयादि के द्वारा पिण्ड साधन ११ जौ से अधिक और ३२ हाथ तक के क्षेत्र के लिए ही कहा है इसमें कम वेशी होने पर आयादि का विचार न करने की सलाह दी है।

चबूतरे बनाने में, काठ या फूस की झोपड़ी में और चार द्वार के मकान में भी आयादि का विचार ग्रहण नहीं किया है।

गृह नक्षत्र मेलापक में अश्विनी, भरणी और कृत्तिका तीनों नक्षत्रों की मेषराशि, मघा, पू. फा., उ. फा., की सिंह राशि तथा मूल, पू. षा. उ. षा. की धन राशि है शेष २-२ नक्षत्रों की १ राशि होगी।

गृहारम्भ प्रकरण

नवीन भूमि में गृह मंदिर या जलाशयादि बनाने में प्रारम्भ में नींव खोदनी पड़ती है। इसमें वास्तु (राहु) के मुख और पुच्छ का विचार, चन्द्रलोकवासविचार, वास्तुपुरुष वास विचार, भूमिशयन विचार तथा कहीं २ भौम वार का विचार पंडित लोग करते हैं।

घर की लम्बाई, चौड़ाई की सवागुनी चतुर्थांश तुल्य अधिक तथा घर की उँचाई चौड़ाई के १६ वें भाग के जो हाथ हों उसमें ४ हाथ और जोड़कर होती है।

घर के मुख्य द्वार के सामने कीचड़, खम्भा, वृक्ष, देवालय, कुँआ, दीवार आदि अशुभ होता है। अगर घर की ऊँचाई के दूने से अधिक अन्तर पर हों तो शुभ होते हैं।

राहु (वास्तु) मुख पुच्छ विचार—

देवालये गेहविधौ जलाशये
राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।
मीनार्क सिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे
खाते मुखात् पृष्ठ विदिक्शुभा भवेत् ॥१७॥

देवालय बनाने में मीन के सूर्य से ३-३ राशि, गृहारम्भ में सिंह के सूर्य से ३-३ राशि और जलाशयारम्भ में मकर के सूर्य से ३-३ राशियों में सूर्य, ईशान, वायव्य, नैऋत्य और आग्नेय इन चारों कोणों में मुख किये हुए घूमता है अर्थात् इन दिशाओं में राहु का मुख रहता है अतः इससे विपरीत दिशा में नींव खोदनी शुभ रहती है। मुख के विपरीत कोण में पुच्छ रहता है। अर्थात् ईशान में मुख हो तो आग्नेय कोण में पुच्छ रहेगा वहाँ नींव खोदे।

वास्तुपुरुष वास विचार

सवेदास्तिथयो द्विघ्नाः नामाक्षरसमन्वितम्।
त्रिभिश्च हरेद्भागं शेषं पुरुष उच्यते ॥१८॥
एके च वसते स्वर्गे द्वाभ्यां पातालमेव च।
शून्ये तु मृत्युलोके स्यादिति पाराशरोऽब्रवीत् १९॥
स्वर्गवासे भवेल्लाभं पातालेषु श्रियः सदा।
मृत्युलोके भवेन्मृत्युरिति चिन्त्य गृहारभेत् ॥२०॥

गृहारम्भ की तिथि में ४ जोड़कर २ से गुणा करें और उसमें गृहेश के नाम के अक्षरों को जोड़कर तीन से भाग देने पर जो संख्या शेष बचे उसके अनुसार १ शेष बचने पर वास्तुपुरुष का स्वर्ग में निवास, २ शेष बचने पर पाताल में निवास और ० शून्य शेष बचने पर मृत्यु लोक में वास्तु पुरुष का निवास रहता है। ऐसा पाराशर मुनि का मत है। गृहारम्भ में स्वर्गस्थ वास्तु-पुरुष लाभकारक, पातालस्थ लक्ष्मी दायक तथा मृत्युलोकस्थ वास्तुपुरुष मृत्युकारक होता है। अतः वास्तुपुरुष-निवास का विचार करके गृहारम्भ करना चाहिए।

चन्द्र-वास-विचार

तिथिं पञ्चगुणी कृत्य एकेन च समन्वितम्।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषे चन्द्रमसः स्थितिः ॥२१॥
एकेन वसते स्वर्गे द्विके पातालमेव च।
तृतीये वसते मृत्यौ सर्व कर्माणि साधयेत् ॥२२॥
पातालस्थो यदा चन्द्रः षट् कर्माणि साधयेत्।
गृहहोमकृषियात्रातडागाः कूपकर्मणि ॥२३॥

वर्तमान तिथि (मुहूर्त दिन की तिथि) को पाँच गुणा करके उसमें १ जोड़ करके तीन से भाग देने पर १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में, ० शेष बचे तो मृत्युलोक में चन्द्रमा रहता है। जब चन्द्रमा पाताल में हो तो गृह, होम, कृषि, यात्रा, तड़ाग, कूप सम्बन्धी कार्य करने शुभ होते हैं।

शिलान्यास और स्तम्भारोपण

खात (नींव) में शिलान्यास और स्तम्भारोपण, हमेशा अग्निकोण में करना चाहिए अधिकांश विद्वानों का आज कल यही मत है।

भूमि-सुप्त-विचार

प्रद्योतनात्पञ्चनगाङ्कसूर्यनवेन्दुषड्विंशमितानिभानि।
शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापीखननं न शस्तम्

अगर सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ९, १२, १९, और २६ वें नक्षत्र पर होवे तो भूमि सुप्तावस्था में रहती है। इसमें पुल बाँधना, पृथ्वी खोदना, खेती, गृहारम्भ, तालाब आदि जलाशय का खोदना शुभ नहीं होता है।

घर में स्थानों का निर्धारण

स्नानागारं दिशि प्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम्।
याम्यायां शयनागारंनैऋत्यां शस्त्रमन्दिरम् २५।
प्रतीच्यां भोजनागारं वायव्यां पशुमंदिरम्।
भांडकोशं चोत्तरस्यां ईशान्यां देवमंदिरम् ॥२६॥

मकान में पूर्व में स्नानगृह, अग्निकोण में रसोईघर, दक्षिण में शयनमंदिर, नैऋत्यकोण में शस्त्रमंदिर पश्चिम में भोजन करने का स्थान, वायव्यकोण में पशुशाला, उत्तर में भंडारघर, ईशानकोण में देवगृह बनवाना चाहिए।

गृहारम्भके मास

सौम्यफाल्गुनवैशाखो भाद्रश्रावणकार्तिकाः।
मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥२७॥

पौष, फाल्गुन, वैशाख, भाद्रपद, श्रावण, कार्तिक इन महीनों में गृहारम्भ और शिलान्यास और स्तंभप्रतिष्ठा शुभ है। ऐसा करने से पुत्रलाभ, आरोग्यता, आयु और धन की वृद्धि होती है।

अन्य मत से मास विचार

मेषे चैत्रे वृषे ज्येष्ठे आषाढ़े कर्कटे रवौ।
सिंहे भाद्रपदे तौलि आश्विने कार्त्तिकेऽलिगे २८॥
पौषे नक्र तथा माघे मकरे कुंभगेऽपि च।
प्रकुर्यान्मन्दिरं विद्वानन्यैः कैश्चिदीरितम् ॥२९॥

चैत्र के महीने में मेष का सूर्य, ज्येष्ठ मास में वृष का, आषाढ़ में कर्क का, भाद्रपद में सिंह का, आश्विन में तुला का, कार्तिक में वृश्चिक का, पौष में मकर का, माघ मास में मकर और कुंभ का सूर्य होतो गृहारम्भ करना चाहिए। यह कुछ विद्वानों का मत है।

गृहारम्भके नक्षत्र

त्र्युत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये।
धनिष्ठाद्वितये पौष्णे गृहारंभः प्रशस्यते ॥३०॥
आदित्यभौमवर्जं तु सर्वे वाराःशुभावहाः।
चंद्रादित्यबलं लब्ध्वा लग्ने शुभनिरीक्षिते ॥३१॥
स्तंभोच्छ्रायस्तु कर्तव्यो ह्यन्यत्तुपरिवर्जयेत्।
प्रासादेष्वेवमेवःस्यात् कूपवापीषु चैवहि ॥३२॥

तीनों उत्तरा, मृगशिरा, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, ये नक्षत्र गृहारंभ में ग्राह्य हैं। रवि, भौम, ये वार वर्जित करें। चन्द्र सूर्य बलवान् हों और स्थिरलग्न में शुभग्रह की दृष्टि हो तो प्रासाद, कूप, वापी का स्तम्भोच्छ्राय (पाया भरना) नींव भरना शुभ है।

गृहारम्भ में वृषचक्र

त्रिवेदाब्धि त्रिवेदाब्धि द्वित्रिभेष्वर्कतःशशी ।
कुर्याल्लक्ष्मीं समुद्वासं स्थैर्यं लक्ष्मीं दरिद्रताम् ३३॥
धनहानिं क्रमान्मृत्युमारंभे वृषचक्रकम् ॥

सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक पहिले तीन नक्षत्र लक्ष्मी-दायक, दूसरे ४ नक्षत्र उद्वासकारक, तीसरे चार नक्षत्र स्थिरता कारक, चौथे तीन नक्षत्र लक्ष्मी व पुत्रदायक, पाँचवे ४ नक्षत्र दरिद्रता कारक, छठे ४ नक्षत्र धनप्रद, पुनः दो नक्षत्र हानि कारक, तत्पश्चात् तीन नक्षत्र मृत्युकारक, इस क्रम से विचार करना चाहिए ।

शिलान्यास करनेका नक्षत्र

शिलान्यासः प्रकर्तव्यो गृहाणां श्रवणे मृगे ।
पौष्णे हस्ते च रोहिण्यां पुष्याश्विन्युत्तरात्रये ३३॥

श्रवण, मृग, रेवती, हस्त, रोहिणी, पुष्य, अश्विनो और तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शिलान्यास करने में श्रेष्ठ होते हैं ।

वर्ज्य दुष्टयोग

वज्रव्याघातशूलाश्च व्यतोपातश्च गंडकः ॥
विष्कंभपरिघौ वर्ज्यौ वारौ मंगलभास्करौ ॥३४॥

वज्र, व्याघात, शूल, व्यतीपात, गंड, विष्कंभ, परिघ ये योग और भौम, रवि ये वार शिलान्यास में त्याज्य हैं ।

स्तम्भारोपणे कूर्मचक्र विचार

तिथिस्तु पंचगुणिता कृत्तिकाऋक्षसंयुता ।
तथा द्वादशमिश्रा च नवभागेन भागिता ॥३५॥
जले वेदमुनिश्चन्द्राः द्विपंचवसुभिः स्थले ।

त्रिषष्ठ नवमाकाशे त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ॥३६॥
जले लाभस्तथा प्रोक्तं स्थले हानिस्तथैव च ।
आकाशे मरणं प्रोक्तं त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ॥३७॥

स्तम्भारोपण की तिथि को पाँच से गुणा करें और कृत्तिका से दिवसनक्षत्र की जितनी नक्षत्र संख्या आवे वह संख्या उसमें मिलानी चाहिए और बारह अंक उसमें और जोड़े फिर योगफल को नौ से भाग देना चाहिए। शेष ४, ७ या १ बचे तो कूर्म का वास जल में जानना चाहिए। इसका फल लाभ-दायक होता है। अगर ५, २ वा ८ शेष रहे तो कूर्म स्थल में रहता है। उसका फल हानि सूचक है। ३, ६, ९ शेष बचे तो कूर्म आकाश में रहता है उसका फल मृत्यु है।

अन्य मतेन स्तंभचक्र विचार

सूर्याधिष्ठितभद्वयं प्रथमतो मध्ये तथा विंशति
स्तंभाग्रे रससंख्यया मुनिवरैरुक्तो मुहूर्तः शुभः ।
स्तंभाग्र मरणं भवेद्गृहपतेर्मूले धनार्थक्षयो
मध्ये चैव तु सर्वसौख्यमतुलंप्राप्नोति-कर्ता सदा ॥३८

सूर्यनक्षत्र से अभिजित् सहित दिननक्षत्रतक गिने जो संख्या हो उनमें पहले २ नक्षत्र स्तंभ के मूल में रखे, उसका फल लक्ष्मीहानि, पुनः २० नक्षत्र मध्य में रखे, उनका फल अतुल सुख की प्राप्ति, फिर ६ नक्षत्र स्तंभ के अग्रभाग पर

रखें जिसका फल मृत्यु होता है। अतः जिस विभाग का शुभ फल हो उसी में स्तंभारोपण करना चाहिए।

जोता चढ़ानेका मुहूर्त (मोभ चक्र)

मूले मोभे त्रिऋक्षं गृहपतिमरणं पंचगर्भेसुखं स्या-
न्मध्येदेशाष्टऋक्षंधनसुतसुखदं पुच्छदेशेष्टहानिः।
पश्चादुदेयं त्रिऋक्षंगृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदंस्यात्
सूर्यर्क्षाच्चंद्रऋक्षंप्रतिदिनगणयेन्मोभचक्रं विलोक्य ३६

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिने। उसमें पहिले ३ नक्षत्र मूलभाग में धरें। उसका फल गृहपति का नाश है। फिर पाँच नक्षत्र गर्भभाग में रखे, जिनका फल सुखप्राप्ति है। फिर ८ नक्षत्र मध्यभाग में रखें। उसका फल धन पुत्र और सुख प्राप्ति है। पुनः ८ नक्षत्रों को पुच्छभाग में दें जिसका फल इष्टहानि होती है। तदनंतर ३ नक्षत्र अग्रभाग में रखें उसका फल सुख, भाग्य और पुत्र लाभ है। यह मोभचक्र जोता चढ़ाने में देखना चाहिए।

षड्वर्ग कोष्ठक सारिणी

	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
मेष	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	५	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	४	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	५	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	७	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	१
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	५	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि.	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृषभ	हो.	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	[illegible]	४	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	५	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	[illegible]	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मिथुन	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	[illegible]	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२[illegible]	३०
	कला	३	२०	१७	०	४०	३०	१४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०		१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
३ कर्क	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	५	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४
	न	४	४	[illegible]	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	[illegible]	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिंह	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	९	४
	त्रि:	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	५	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
६ कन्या	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	[illegible]	[illegible]	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्ग कोष्ठक सारिणी

राशि																											
	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१८	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
६ तुला	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृश्चिक	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४		४	४	४
	स.	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ धन	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

२३

	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४८	४०	३०	०
	विकल	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
९ मकर	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुम्भ	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	१	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मीन	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	[illegible]	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

द्वार देहली चक्रम्

सूर्यर्क्षाद्युगभैःशिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततःकोणभे
नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत्।
देहल्यां गुणभैर्मृतिर्गृहपते मध्यस्थितैर्वै भवेत्
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयंशुभम्४०

द्वार की स्थापना करते समय यह चक्र विचारते हैं। सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनने पर पहले ४ नक्षत्र उपर की ओर रखें। जिसका फल राज्यप्राप्ति, फिर द्वार के कोणों पर ८ नक्षत्र रखें, हर द्वार के कोण में दो दो नक्षत्र रखें। जिसका फल उद्वास, दो दो नक्षत्र करके ८ नक्षत्र शाखाओं में रखें। जिसका फल लक्ष्मी प्राप्ति, फिर ४ नक्षत्र देहली पर रखें। जिसका फल राज्य पद प्राप्ति होगा। फिर ३ नक्षत्र दरवाजे के मध्य भाग में रखें जिनका फल मृत्यु होता है।

गृह में कूप की दिशा और उसका फल

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाश-
स्त्वीशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः।
सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च
संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ॥४१॥

घर के बीच में कुआँ खोदने से अर्थनाश होता है। ईशान में पुष्टि, पूर्व में ऐश्वर्यवृद्धि, आग्नेयकोण में पुत्रनाश, दक्षिण में स्त्री-विनाश, नैर्ऋत्य में गृहपति की मृत्यु, पश्चिम में संपत्ति लाभ और वायव्यकोण में शत्रुपीड़ा तथा उत्तर में सुख की प्राप्ति होती है।

कपाट चक्र

कृताकराब्धियुग्मराममन्तकाश्चवारिधौ
करौ समुद्रसूर्यभाद्दिनर्क्षकं फलं वदेत् ।
धनागमं विनाशसौख्यबन्धनंमृतिः क्षतिः
शुभं च मन्दमङ्गलं शुभं कपाटचक्रयोः ॥४२॥

नवीन द्वार बन जाने पर उसमें किवाड़ (पल्ले) जोड़ते समय इस कपाटचक्र को विचारना चाहिए । सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनें । प्रथम चार नक्षत्र धनागमकारक, फिर दो नक्षत्र विनाशकारक हैं, पुनः चार नक्षत्र सौख्यप्रद हैं । फिर दो नक्षत्र बन्धन दायक हैं. फिर तीन नक्षत्र मृत्यु करते हैं, फिर दो नक्षत्र क्षति देते हैं, तत्पश्चात् चार नक्षत्र शुभदायक हैं. पुनः दो नक्षत्र मङ्गलकारक हैं, फिर शेष चार नक्षत्र शुभकारक होते हैं ।

गृह-प्रवेश मुहूर्त

तपः फाल्गुने ज्येष्ठराधेषु पौष्णे
मृगे ब्राह्मचित्रानुराधोत्तरासु ।
सिते रौहिणेये शनौ शीतभानौ
सुरेज्ये प्रवेशः शुभः सद्मनि स्यात् ॥४३॥

चैत्र को छोड़कर माघ से ज्येष्ठ तक के महीने में रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में शुक्र, बुध, शनि, सोम, और गुरुवार इन दिनों में गृहप्रवेश शुभ होता है ।

त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभै-
र्लग्ने त्रिषष्ठायगतैश्च पापकैः ।
शुद्धाम्बुरन्ध्रे त्रिजनुर्भमृत्यौ
व्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे ॥४४॥

त्रिकोण व केन्द्र तथा लाभ व धन और तीसरे स्थान में शुभग्रह हों तथा लग्न में तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें में अगर पापग्रह भी हो तो शुभ हैं। चौथे और आठवें स्थान में आठवाँ लग्न भौमवार, रिक्तातिथि, चरलग्न, अमावस्या और चैत्रमास गृहप्रवेश में त्याज्य हैं।

कलशचक्र

प्रवेश कलशेर्कर्द्धात्पंचनागाष्टषट् क्रमात् ॥
अशुभं च शुभं ज्ञेयमशुभं च शुभं तथा ॥४५॥

गृहप्रवेश काल में सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनने पर उसमें पहले ५ नक्षत्र अशुभ होते हैं। फिर ८ नक्षत्र शुभ हैं। पुनः ८ नक्षत्र अशुभ, पुनः ६ नक्षत्र शुभ, होते हैं। यह कुंभचक्र है।

वामार्क (सूर्य) विचार

रंध्रात्पुत्राद्धनादाया त्पंचस्वर्केस्थिते क्रमात् ॥
पूर्वाशादिमुखं गेहं विशेद्वामो भवेदतः ॥४६॥

घर में प्रवेश करने के समय सूर्य वाम भाग में होना चाहिए। गृहप्रवेश लग्न में अगर अष्टमस्थान से पाँच स्थानों में से सूर्य किसी भी स्थान पर हो तो घर का मुख पूर्व में होने से वाम सूर्य होता है। घर का मुख दक्षिण में होवे तो उसको संतान स्थान से पाँचस्थान में तथा घरका मुख पश्चिम हो तो २ रे स्थान से पाँच स्थान तक एवं गृहका मुख उत्तर में हो तो ११ वें स्थान से पाँच स्थान तक, सूर्य हो तो वह वामार्क होता है। घर से बाहर निकलने पर जो दिशा सामने होती है उसी दिशा में गृह का मुख होता है।

गृहे द्वार निवेशन प्रकारः

गृहस्य दैर्घ्ये नवधाविभक्ते
पूर्वादितो राम षडर्थ वाणे।
द्वारं तु सव्याच्छुभदं विभागे
सर्वत्र तुर्ये मुनयोवदन्ति ॥४७॥

घर की लम्बाई को ९ नौ भागों में बाटें। अगर पूर्व में दरवाजा करना हो तो दरवाजेसे बाहर निकलते समय जो बाँया भाग पड़ता हो उधर दो हिस्सा छोड़कर तीसरे भाग में, दक्षिण में दरवाजा रखना हो तो ५ पाँच छोड़कर छठे भाग में पश्चिम द्वार हो तो १ एक हिस्सा छोड़कर २ दूसरे भाग में तथा उत्तर में द्वार रखना हो तो ४ हिस्सा छोड़कर पाँचवें भाग में द्वार शुभ होता है। सभी दिशाओं में बांये ३ भाग छोड़कर ४ भाग में द्वार करना ऐसा भी मुनियों का मत है।

॥ श्रीः ॥

जातक-परिच्छेदः

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः ।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः ॥१॥

इस संसार में जातकशास्त्र से बढ़कर पुरुषों के लिये धनोपार्जन में सहायक तथा विपत्तिरूपी समुद्र से पार होने के लिए छोटे जहाज के समान और यात्राकाल में उत्तम सलाहकार और कोई दूसरा शास्त्र नहीं है।

इस जातकशास्त्र का मूलाधार इष्टसमय का लग्नचक्र होता है। यह इष्टसमय जानने से पूर्व हमें ज्योतिष के काल सूचक पारिभाषिक शब्दों से परिचित होना आवश्यक है।

जातकशास्त्र का दूसरा नाम होराशास्त्र है। होरा शब्द अहोरात्र से बनता है। अहोरात्र एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक के समय को कहते हैं। इसे २४ घण्टे या ६० घटी में सर्वत्र सीमित मान लिया गया है। अहोरात्र अंग्रेजी मान से घण्टा, मिनट और सेकेन्डों में विभाजित है एवं भारतीय परम्परा इसका विभाजन घटी, पल और विपल में करती है। इन दोनों समय सूचक मानों से परिचय हेतु निम्न तालिका प्रस्तुत है :—

समय सूचकसारिणी

१ घण्टा = २½ घटी
१ मिनट = २½ पल
१ सेकेण्ड = २½ विपल
२४ घन्टे = ६० घटी
२४ मिनट = १ घटी
२४ सेकेण्ड = १ पल

जैसे आधुनिक आंग्ल परम्परा के अनुसार रात्रि १ बजे से पुनः अग्रिम रात्रि के १२ बजे तक २४ बजते हैं। उसी प्रकार भारतीय परम्परा की घड़ियाँ सूर्योदय से ०० घटी से पुनः दूसरे सूर्योदय के पूर्व तक ६० घड़ियाँ बजाती हैं। इन्हीं को जहाँ हम अँग्रेजी मत से दिन के १ बजे को १३ बजे कहेंगे वहीं पर भारतीय परम्परा के अनुसार सूर्योदय से (६ बजे सूर्योदयमानकर) दिन के १३ बजे को १७ घटी ३० पल दिन के १३ बजे का इष्ट काल कहलाता है।

नोटः—यह इष्ट काल सूर्योदय से प्रारम्भ होने के कारण प्रति दिन घटता बढ़ता रहता है।

इष्ट काल परिभाषा

"सूर्योदयाद्गतः कालः घट्याद्योत्रेष्टमुच्यते"

सूर्योदय से लेकर जन्म समय तक के समय मान में व्यतीत घड़ी पल इत्यादिकों को इष्ट काल कहते है।

हमलोग आजकल समय जानने के लिए घड़ियों का उपयोग करते हैं। ये घड़ियाँ स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार चलती हैं। और स्टैण्डर्ड समय एक निश्चित स्थान के रेखांश का होता है किन्तु हरभिन्न २ स्थानका समय सूर्योदय के अनुसार भिन्न भिन्न होता है।

भारत वर्ष का स्टैन्डर्न्ड ममय ८२।३० रेखांश पर मिर्जापुर शहर का है। इस रेखा देश से पूर्व पश्चिम स्थानों में जो समय का अन्तर बढ़ता और घटता रहता है, उसे देशान्तर कहते हैं। इस देशान्तर का ज्ञान अक्षांश और देशान्तर बोधक सारिणी (पृ.३६१) से होता है। सारिणी में नहीं दिये गये देश का देशान्तर भूगोल चित्रावली (एटलस) में से ८२।३०

रेखांश से जन्म देश का जितना रेखांश का अन्तर हो उसको ४ से गुणा करने पर देशान्तर मिनिटादि में निकलता है। अगर स्टैण्डर्ड रेखा से अभीष्ट नगर पूर्व हो तो देशान्तर को इष्ट काल में जोड़ दीजिए तथा अभीष्ट नगर पश्चिम में हो तो देशान्तर को इष्ट काल में से घटा दीजिए। जन्म देश का इष्ट काल हो जावेगा।

वेलान्तर संस्कार

सूर्य घड़ी और चालू घड़ियों में प्रतिदिन कुछ न कुछ मिनटात्मक अन्तर रहता है। वर्ष में कुछ दिन यह अन्तर रेलवे घड़ी के समय में धन और कुछ दिन ऋण रहता है इसका विवरण पृ. ३८० पर दी गयी सारिणी से ज्ञात होगा। दिसम्बर महीने की २३ वीं तारीख से १५ अप्रैल तक तथा १५ जून से २ सितम्बर तक वेलान्तर धन होता है तथा बाकी समय में ऋण रहता है।

चरसंस्कार और सूर्योदयास्त

इष्ट देशका सूर्योदय एवं सूर्यास्त बनाने में इसकी आवश्यकता होती है प्रायः प्रत्येक प्रसिद्ध पञ्चाङ्ग में चर सारणी दी हुई रहती है। इष्ट स्थान का सूर्योदयास्त बनाने के लिए हमें (१) क्रान्ति (पृ. ३७७) (२) वेलान्तर (पृ.३८० (३) चरान्तर (पुस्तक में दी गई सारिणी से देखिये) (४) देशान्तर (५) किरण वक्री भवन संस्कार के मिनिटादि। इतने उपकरणों की आवश्यकता होती है। किरण वक्री भवन संस्कार सूर्य उदय में ऋण और अस्त में धन होता है। ० अक्षांश से २० अक्षांश तक किरण वक्रीभवन १ मिनिट, ३० अक्षांश तक २½ मि०, ४० अक्षांश तक २¾ मिनट ५० अक्षांश तक २¼ मिनिट, ५५ अक्षांश तक ३½ मि० तथा ६० अक्षांश तक ४ मिनिट रहता है।

भारत वर्ष के प्रमुख नगरों का अक्षांश देशान्तर				स्थानीय
नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश ० '	पूर्व रेखांश ० '	समय का अन्तर मि. से.
१ अगरतला	त्रिपुरा	२३–५२	९१–१६	+३५– ४
२ अजमेर	राजस्थान	२६–२७	७४–४०	–३१–२०
३ अमृतसर	पञ्जाब	३१–३७	७४–५३	–३०–२८
४ अयोध्या	उत्तर प्रदेश	२६–४८	८१–१४	– ५– ०
५. अलवर	राजस्थान	२७–?४	७६–३८	–२३–२८
६. अलमोड़ा	उत्तर प्रदेश	२९–३७	७९–४०	–११–२०
७. अलीगढ़	,,	२७–५४	७८–५	–१७–४०
८. अहमदाबाद	गुजरात	२३–२	७२–३७	–३९–३२
९. आगरा	उत्तर प्रदेश	२७–१०	७८–२	–१७–५२
१० आजमगढ़	,,	२६– ५	८३–१२	+ २–४८
११. आरा	बिहार	२५–३६	८४–४२	+ ८–४८
१२. इटावा	उत्तरप्रदेश	२६–४७	७९– २	–१३–५२
१३. इन्दौर	मध्य प्रदेश	२२–४३	७५–५३	–?६–२८
१४. इम्फाल	मणिपुर	२४–५४	९३–५४	+४५–३६
१५ उज्जयिनी	मध्य प्रदेश	२३–११	७५–४३	–२७– ८
१६ उदयपुर	राजस्थान	२४–३५	७३–४२	–३५–१२
१७. उन्नाव	उत्तर प्रदेश	२६–३६	८०–३०	– ८– ०
१८ इलाहाबाद	,,	२६–२६	८१–५०	– २–४०
१९. कटक भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०–१८	८५–५४	+१३–२६
२०. कटनी	मध्य प्रदेश	२३–५०	८०–२३	– ८–२८
२१. कलकत्ता	प. बंगाल	२२–३५	८८–२१	+२३–२४
२२ काठमाण्डू	नेपाल	२७–४२	८·–१७	+११– ८
२३. कालीकट	केरल	११–१५	७५–४५	–२७– ०
२४. कानपुर	उत्तर प्रदेश	२६–२?	८०–२१	– ८–३६
२५. कुर्ग	मैसूर	१२–२५	७५–४३	–२७– ८
२६ कुर्नूल	आंध्र	१५–५०	७८– ३	–१७–४८
२७. कुरुक्षेत्र	पंजाब	३०– ०	७६–४८	–२२–४८
२८. कोयम्बटूर	मद्रास	११– ०	७६–५८	–२?– ८
२९ कोलम्बो	सीलोन	६–६५	७९–५१	–१०– ६
३०. कोलार स्वर्ण	मैसूर	१२–५४	७८·१८	–१६–४९

भारतवर्ष के प्रमुख नगरों का अक्षांश देशान्तर				स्टैं समय से
नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश ° '	पूर्व रेखांश ° '	स्थानीय समय का अन्तर मि. से
३१. गया	बिहार	२४-४८	८५- १	+१०- ४
३२. गंगटोक	सिक्किम	२७-२०	८८-३५	+२५-२०
३३. ग्वालियर	मध्य प्रदेश	२६-१४	७८-१०	−१७-२०
३४. गाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५-३६	८३-३५	+ ४-२०
३५. गोरखपुर	,,	२६-४८	८३-२४	+ ३-३६
३६..गोवा	गोवा	१५-२५	७३-४७	−३४-५२
३७. गोंदिया	महाराष्ट्र	२१-२८	८०-१२	− ९- २
३८. चण्डीगढ़	पञ्जाब	३०-४०	७६-५२	−२२-३२
३९. चंदौसी	उत्तर प्रदेश	२८-२७	७८-४९	−१४-४४
४०. छपरा	बिहार	२५-४७	८४-४७	+ ९- ८
४१. जबलपुर	मध्य प्रदेश	२३-१०	७९-५८	−१०- ८
४२. जम्मू	कश्मीर	३२-४४	७४-१४	−३०-२४
४३ जमशेदपुर	उड़ीसा	२२-४६	८६-१२	−१४-४८
४४. जयपुर	राजस्थान	२६-५१	७५-५०	−२६-१०
४५. जामनगर	गुजरात	२२-२७	७०- ५	−४९-४०
४६. जालंधर	हरियाणा	३१-१९	७५-३५	−२९-४०
४७. जोधपुर	राजस्थान	२६-१८	७३- २	−३७-५२
४८. झाँसी	उत्तर प्रदेश	२५-२१	७४-३४	−३१-४४
४९. तिरुची	मद्रास	१०-५०	७८-४२	−१५-१२
५०. त्रिवेन्द्रम्	केरल	८-३०	७६-५७	−२२-१२
५१. दरभंगा	बिहार	२६-१०	८५-५५	+१३-४०
५२. दिल्ली (नई)	दिल्ली	२८-३८	७७-१४	−२१- ४
५३. दुर्ग	मध्य प्रदेश	२१-११	८१-२१	− ४-३६
५४. द्वारका	गुजरात	२२-१६	६८-५७	−५४-१२
५५. धार	मध्य प्रदेश	२२-३६	७५-१८	−२८-४८
५६ नागपुर	महाराष्ट्र	२१-९	७९- ६	−१३-३६
५७ नीमच	मध्य प्रदेश	२४-२७	७४-५२	−३०-३२
५८. पटना	बिहार	२५-३७	८५-१०	+१०-४०
५९ पटियाला	पंजाब	३०-२२	७६-२५	−२४-१०
६०. प्रतापगढ़	उत्तर प्रदेश	२५-५३	८१-५८	− २-८

भारत वर्ष के प्रमुख नगरों का अक्षांश व देशान्तर				स्टै. समय से
नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश, °	पूर्व रेखांश, °	स्थानीय समय का अन्तर मि. से.
६१. प्रयाग	उत्तर प्रदेश	२५–२५	८१–५३	—२–२८
६२. पीलीभीत	,,	२८–४२	७९–४८	–१०–४८
६३. पुनाका	भूटान	२७–३५	८९–५१	+२९–२०
६४. पूना	महाराष्ट्र	१८–३०	७३–५२	–३४–३२
६५. पोर्ट ब्लेअर	अदमान. नि.	११–५०	९२–४६	+२९–४
६६. फतेहपुर	उत्तर प्रदेश	२५–५	८०–५२	–६–३२
६७. फर्रुखाबाद	,,	२७–२३	७९–३७	—११–३२
६८. बक्सर	बिहार	२५–३४	८४–१	+६–४
६९. बड़ौदा	गुजरात	२२–१८	७३–१३	–३७—८
७०. बम्बई	महाराष्ट्र	१८–५७	७२–५०	–३८–४०
७१. बरेली	उत्तर प्रदेश	२८–२२	७९–२४	–१२–२४
७२. बस्ती	,,	२६–५४	८२–४२	+०—४८
७३. बहराइच	,,	२७–३४	८१–३८	—३–२८
७४. बाँदा	,,	२५–२८	८०–१२	—९—१२
७५. बिजनौर	,,	२९–२३	७८–११	—१७–१६
७६. बिलासपुर	मध्यप्रदेश	२२–५	८२–१०	—१—२०
७७. बीकानेर	राजस्थान	२८–१	७३–१९	—३६–४४
७८. बेतिया	बिहार	२६–४८	८४–३३	+८—१२
७९. बंगलौर	मैसूर	१२–५८	७७–३५	—१९–४०
८०. भाटपारा	मध्य प्रदेश	२१–४६	८१–५७	—२—१२
८१. भावनगर	गुजरात	२१–४७	७२–९	—४१–२४
८२. भुज	,,	२३–१५	६९–४०	—५१–२०
८३. भोपाल	मध्य प्रदेश	२३–१६	७७–२३	—२०–२८
८४. भंडारा	महाराष्ट्र	२१–९	७९–४२	—११–१२
८५. मथुरा	उत्तर प्रदेश	२७–२८	७७–४१	—१९–१६
८६. मदुरा	मद्रास	९–५५	७८–८	–१७–२८
८७. मद्रास	,,	१३–६	८०–१५	—९—०
८८. मीरजापुर	उत्तर प्रदेश	२५–१०	८२–३३	+०—१२
८९. मुंगेर	बिहार	२५–२३	८६–३०	+१६–०
९०. मुजफ्फरपुर	,,	२६–७	८५–२७	+११–४८

भारतवर्ष के प्रमुख नगरों का अक्षांश देशान्तर				स्टैंसमयसे स्थानीय समय का अन्तर
नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश ° "	पूर्व रेखांश ° '	मि. से.
९१. मुरादाबाद	उत्तर प्रदेश	२८–५०	७८–५०	–१४–४०
९२. मेरठ	"	२९—१	७७–४५	–१९– ०
९३. मैनपुरी	,	२७–१३	७९ - २	–१३–५२
९४. मैसूर	कर्नाटक	१२–१९	७६–४०	–२३–२०
९५ राजकोट	वम्बई	२२–१७	७० ४९	–४६–४४
९६ राजनन्द गाँव	मध्य प्रदेश	२१—५	८१–५	—५–४०
९७ रायपुर	"	२१–१५	८१–३८	— ३–२८
९८. रायबरेली	उत्तर प्रदेश	२६–१४	८१–१३	—५ — ८
९९. रेवाँ	मध्य प्रदेश	२४–३२	८१–१७	– ४–५२
१००. लखनऊ	उत्तर प्रदेश	२६–५१	८०–५५	– ६–२०
१०१. लखीमपुरखीरी	"	२७–५७	८०–४९	– ६–५४
१०२. लश्कर	मध्य प्रदेश	२६–१०	७८–१०	–१७–२०
१०३. लुधियाना	पंजाब	३०–५६	७५–५२	–२६ - ३२
१०४. वाराणसी	उत्तर प्रदेश	२५–१२	८३– ०	+ २ – ०
१०५. शाहजहाँपुर	"	२७–५४	७९–५७	–१०–१२
१०६. शिलाङ्ग	मेघालय	२५–३४	९१–५४	+ ३७-३५
१०७. शोलापुर	महाराष्ट्र	१७–४०	७५–५५	–२६–२०
१०८. श्रीनगर	कश्मीर	३४ – ५	७४–५०	–३०–४०
१०९. सतना	मध्य प्रदेश	२४–३४	८०–५५	– ६–२०
११०. सहारनपुर	उत्तर प्रदेश	२९–५८	७७–३२	–१९–५२
१११. सागर	मध्य प्रदेश	२२–५०	७८–४५	–१५ – ०
११२. साहिबगंज	बिहार	२५-१३	८७–४०	+ २०-४०
११३. सीतापुर	उत्तर प्रदेश	२७–३६	८०–४०	– ७ २०
११४. शिमला	हिमांचल प्र०	३१ – ६	७७–१०	–२१–२०
११५. सूरत	गुजरात	२१–१२	७२–५०	–३.–४०
११६. सुलतानपुर	उत्तर प्रदेश	२६–१५	८२ · ४	– –४४
११७. हरदोई	"	२७–२४	८०– ६	– ९–३६
११८. हरद्वार	,	२९–५८	७८– ८	–१७–२७
११९. हापुड़	"	२८–४५	७७–४६	–१८–५६
१२०. हैदराबाददक्षिण	आंध्र	१७–२७	७८–३०	–१६ – ०

कुछ विदेशों की अक्षांश व देशान्तर सारिणी

प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश ° '	ग्रीनीच समय GMTसे क्षे.स्टैं.सम घं. मि	भारतीय स्टैं.टा.से क्षेत्रीय से समयान्तर घं मि.
१. अमन	जॉर्डन	३१-५७ उ.	३५-५७ पू.	+२- ०	-३-३०
२. एडन (अदन)	एडन	१२-५८ उ.	४५- १ पू.	+३- ०	-२-२०
३. एथेन्स	ग्रीस	३७-५९ उ.	२३- ० पू.	+२- ०	-३-३०
४. ओटावा	कनाडा	४५-२६ उ	७५-४१ पू.	+५- ०	-१०-३०
५. अंकारा	तुर्किस्तान	३९-५२ उ.	३२-५९ पू.	+२- ०	-३-३०
६. करांची	प पाकिस्तान	२४-५१ उ.	६७- ० पू.	+२- ०	-०-३०
७. कानबेरा	ऑस्ट्रेलिया	३५-१५ द	१४९- ८ पू.	+१ -०	+४-३०
८. काबुल	अफगानि.	३४-३१ उ.	६९-१२ पू	+४-३०	-१- ०
९ काहिरा	मिश्र	३०-१ उ.	३१-१३ पू.	+२- ०	-१- ०
१०. ग्रीनीच	इङ्गलैण्ड	५१-२९ उ.	०-० पू.	+०- ०	-३-३०
११. जाकार्ता	इंडोनिया	७-५७ द.	११०-२० पू.	+७-३०	-५-६०
१२. जिब्राल्टर	जिब्राल्टर	६- ७ उ.	५-२२ पू	+१- ०	+२- ०
१३. जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६-१२ उ.	६-९ पू	+१- ०	-४-३०
१४. जेरुसलेम	इसराईल	३१-४८ उ.	३५-१२ पू.	+२- ०	-३-३०
१५. टोकियो	जापान	३५-३९ उ.	१३९-४५ पू.	+९- ०	+३-३०
१६. ढाका	पू पाकिस्तान	२३-४३ उ.	९०-२५ पू.	+६- ०	+०-३०
१७. तेहरान	ईरान	३५-४४ उ.	५१-२७ पू.	+३-३०	-२- ०
१८. दमिश्क	सीरिया	३३-३० उ.	३६-१८ पू	+२- ०	-३-३०
१९. न्यूयार्क	अमेरिका	४०-४३ उ.	७४- ० पू.	+५- ०	-१०-३०
२०. पेंकिंग	चीन	३९-५० उ.	११६-२० पू	+८- ०	+२-३०
२१. पेरिस	फ्रांस	४८-१० उ.	२-२० पू.	+१- ०	-४-३०
२२. प्योंगयांग	उ कोरिया	३९- ० उ.	१२५-३० पू.	+९- ०	+३-३०
२३. फारमोसा	फार्मोसा	२५-१८ उ.	१२१-३२ पू.	+९- ०	+३-३०
२४. बगदाद	इराक़	३३-१८ उ.	४४-३० पू.	+३- ०	-२-३०
२५ बर्न	स्विट्जरलैंड	४६-५७ उ.	७-२८ पू.	+१- ०	-४-३०
२६. बर्लिन	पू. जर्मनी	५२-३२ उ.	१३-२४ पू.	+१- ०	-४-३०
२७ बुडापेस्ट	हंगरी	४७-२९ उ.	१९- ५ पू.	+१- ०	-४-३०
२८ बेलग्रेड	युगोस्लाविया	४४-५० उ.	२०-३१ पू.	+१- ०	-४-६०

कुछ विदेशों की अक्षांश व देशान्तर सारिणी

प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश ° '	पूर्वरेखा ° '	ग्रीनीच समय GMT से क्षे.स्टै सम घं. मि	भारतीय स्टैं टा से क्षेत्रीय स्टं समयान्तर घं. मि.
२९. बैंकॉक	स्याम	१३-४५ उ	१००-३० पू.	+ ७-०	+ १-३०
३०. बॉन	पं जर्मनी	५०-४३ उ.	७ ६ पू.	+ १-०	-४-३०
३१. ब्रूसेल्स	बेल्जियम	५०-११ उ.	४-२१ पू.	+ १-०	४-३०
३२. मॅड्रिड	स्पेन	४०-२५ उ.	३-४५ पू.	+ १-०	-८-३०
३३. मॉस्को	रूस	५५-४५ उ.	३७-३५ पू.	+ ३-०	-२-३०
३४. मांडले	ब्रह्मदेश	२२-० उ.	९६-५ पू	+ ६-३०	+ १-०
३५. मेक्सिको	मेक्सिको	१९-२५ उ.	९९-१७ पू.	+ ६-०	-११-३०
३६. रियाध	सऊदी अरब	२४-५० उ.	४६-१८ पू.	+ ३-०	-२-३०
३७. रोम	इटली	४१-४५ उ	१२-२९ पू.	+ १-०	-४-३०
३८. रंगून	ब्रह्मदेश	१६-४८ उ.	९६-८ पू.	+ ६-३०	+ १-०
३९. लिस्बन	पुर्तगाल	८-४१ उ.	९-१० पू.	- ०-०	-५-३०
४०. लन्दन	इङ्गलैण्ड	५१-३२ उ.	०-५ पू.	- ०-०	-५-३०
४१. ल्हसा	तिब्बत	२९-४० उ.	९१-८ पू.	+ ५-३०	- ०-०
४२. वाशिंगटन	अमेरिका	३८-५३ उ.	७७-० पू.	- ५-०	-१०-३०
४३. वेलिंग्टन	न्यूजीलैण्ड	४१-९ उ	१७४-४६ पू.	+ १२-०	+ ६-३०
४४. सिंगापुर	मलाया	१-१६ उ.	१०३-४७ पू.	+ ७-३०	+ २-०
४५. सेऊल	द. कोरिया	३७-४० उ.	१२७- ० पू.	+ ९-०	+ ३-३०
४६. हांगकांग	हांगकांग	२२-१८ उ.	११४-१० पू.	+ ८-०	+ २-३०

इष्ट स्थान का स्पष्ट सूर्योदय बनाने के लिए हमें प्रथम यह देखना होगा कि हमारा अभीष्ट अक्षांश भूमध्य अक्षांश से उत्तर है या कम (दक्षिण) ? अगर उत्तर है तो उत्तरी अक्षांश तथा दक्षिण होगा तो दक्षिणी अक्षांश माने जायेंगे। इसी प्रकार क्रान्ति का सम्बन्ध सूर्य की गोलगत स्थिति से रहता है सायनमेषराशि में (ता० २२ मार्च) सूर्य के प्रवेश से सायन कन्यार्क ता० २३ सितम्बर तक उत्तरा क्रान्ति

और इसके अतिरिक्त सायनार्क तुला से २४ सितम्बर से सायन मीनार्क २१ मार्च तक दक्षिणा क्राँन्ति रहती है।

इष्ट स्थान का सूर्योदय साधन करते समय यदि इष्ट स्थानीय अक्षांश उत्तर अक्षांश हो तथा क्रान्ति भी उत्तरा हो तो चरमिनट को प्रातः काल के मध्यम सूर्योदय मान ६ घण्टे में से घटाना होगा तथा क्रान्ति दक्षिण हो तो चर का धन संस्कार करना होगा और सूर्यास्त साधन में ऋणकी जगह धन और धन की जगह ऋण संस्कार करना होगा। उत्तरा क्रान्ति में दक्षिण अक्षांश के देशों में सूर्योदय साधन में चर-मिनट धन तथा दक्षिण क्रान्ति में चर मिनट ऋण होते हैं तथा सूर्य के अस्त साधन में विपरीत संस्कार करने होते हैं।

सूर्योदयास्त सहित इष्ट काल साधन

उदाहरणः —

वि० सं० २००८ श्रावण शुक्ल १ शुक्रवार ता० ९ जुलाई सन् १९७१ ई० को लखनऊ में प्रातः १० बजे किसी बालक का जन्म हुआ है।

इष्ट स्थान लखनऊ का अक्षांश २६।५१ उत्तर एवं रेखांश ८०। ५५ स्टैण्डर्ड रेखा से पश्चिम है। स्टैण्डर्ड टाईम रेखा से लखनऊ का रेखान्तर ६ मि० २२ सेकेण्ड पश्चिम है। क्रान्ति सारिणी (पृ. ३७६) के अनुसार उस दिन क्रान्ति उत्तरा २२।५७ है।

अब चरान्तर जानने के लिए हमने चरान्तर सारिणी के अनुसार अक्षांश २६ और क्रान्त्यंश २२ के कोष्ठक में से चरांतर ४५ मि० २८ सेकेन्ड ग्रहण किया। तत्पश्चात् २७ अक्षांश और २२ क्रान्त्यंश पर से सारिणीगत अङ्क ४७ मि० ३२ सेकेन्ड को लेकर पूर्वागत ४५ मि० २८ सेकेण्ड को इसमें से घटाया तो शेष १ मि० ४ सेकेण्ड हुआ। यह २२ उत्तरा

क्रान्ति रहने पर १ अक्षांश में होने वाला चरान्तर है चूंकि; हमारा अभीष्ट स्थानीय अक्षांश २६।५१ है और हमने केवल २६ अक्षांश का ही चरान्तर मालुम किया है। इसलिए ५१ अक्षांश सम्बन्धी कला का अन्तर मालुम करना है इसके लिए त्रैराशिक नियम का आश्रय लेकर गणित किया गया। जब १ अंश या ६० कला में चर सम्बन्धी अन्तर = २ मि. ४ से०

तब $\frac{१}{६०}$ अंश या १ कला में „ „ $\frac{२ \text{ मि० } ४}{६०}$

$= \frac{१२४}{६०}$

५१ कला में $\frac{१२४ \text{ से०} \times ५१}{६०}$

$\frac{\overset{३१}{\cancel{१२४}} \times \overset{१७}{\cancel{५१}}}{\cancel{६०}\ \cancel{१०}\ ५}$

$= \frac{३१ \times १७}{५} = \frac{५२७}{५}$

$= १०५\frac{२}{५}$ से०

= १ मिनट ४५ सेकेण्ड

∴ २६ अक्षांश ५१ कला एवं २२ क्रान्त्यंश का चरान्तर = ४५ मि० २८ + १ मिनट ४५ सेकेण्ड = ४७ मिनट १३ सेकेण्ड।

∵ २६।५१ अक्ष० और २२ क्रा० का चरान्तर = ४७ मि० १३ से० है तो ∴ २६।५१ अ० और २२।३१ क्रा० में कितना चरान्तर होगा ?

∵ २६ अक्षांश और २२ क्रान्त्यशत का चरान्तर = ४५ मि. २८ से. है। और २६ अक्षांश और २३ क्रान्त्यंश का चरान्तर = ४७ मि. ४८ से. है।

अतः १ क्रा० या ६० क्रान्तिकला का चरान्तर = (४७।४८-४५।२८)
= २ मि० २० से०

∵ १ क्रान्त्यंश या ६० क्रान्तिकला का चरान्तर = २ मि० २० सै०

∴ १ क्रान्तिकला का चरान्तर = १४० ÷ ६०

∴ २३ क्रांतिकला का चरान्तर $\frac{७}{३} \times \frac{३१}{१} = \frac{२१७}{३}$ सेकेण्ड

= १ मिनट १२ सेकेण्ड।

∵ २६।५१ अक्ष० ओर २२।३१ क्रां० में चरान्तर है ४७।४८+१ मि० १२ से०=४६।० मिनट।

वेलान्तर सारिणी पृ. ३८६ पर से ८ जुलाई का वेलान्तर + ४ मि. ५५ सेकेन्ड आया है।

अब हमने पहले (पृ. ३६६) बताये गये तरीके के अनुसार लखनऊ के स्थानिक मध्यम सूर्योदय के समय ६ घं. में चरान्तर ४९ मि. उत्तर अक्षांश उत्तर क्रान्ति होने से घटाया तो=६ घं. ० मि.–४६ मि० =५ घं. ११ मि. हुआ इसमें लखनऊ पश्चिम रेखांश होने से चूंकि सूर्योदय स्टैंडर्ड रेखा स्थान से बाद में होगा अतः रेखांश का अन्तर (देशान्तर) इसमें धन कर दिया तो=५ घं. ११ मि.+६ मि. २२ से. ५ घं. १७ मि. २२ से. हुआ। अब इसमें वेलान्तर संस्कार +४ मि. ५५ से. और जोड़ दिया तो ५। १७। २२+ ०। ४। ५५=५। २२। १७ बजे लखनऊ का स्टैण्डर्ड टाइम का सूर्योदय का हुआ।

लखनऊ का स्टै. टाईम से सूर्योदय बनाने के बाद अब स्टै. टा. १० बजे का इष्ट काल बनाते हैं।

चूंकि, यह १० स्टै. टा. रेखा पर बजा है। इसे लखनऊ में परिवर्तित करने के लिए स्टैण्डर्ड रेखा से पश्चिम लखनऊ होने से देशान्तर—६ मि. २२ सेकेण्ड को इसमें से घटाया तो १० घ. ० मि.—० घं. ६ मि. २२ सेकेण्ड तो=८ घं. ५३ मि. ३८ सेकेण्ड लखनऊ का स्टैण्डर्ड समय हुआ।

अब चूंकि लखनऊ का जन्म समय ९ बजकर ५३ मिनट ३८ सेकेण्ड है तथा लखनऊ का सूर्योदय ५ बजकर

२२ मिनट १७ सेकेण्ड पर है इनको इष्ट काल बनाने के लिए पृ०—३५८ पर बताये गये तरीके के अनुसार घटाया गया

९ घं. ५३ मि. ३८ से.
—५ घं. २२ मि. १७ से.

तो ४ घं. ३१ मि. २१ से. इतना घन्टा मिनट सेकेण्डात्मक इष्टकाल हुआ इसको २। से गुणा करने पर—

४ घं. ३१ मि. २१ से.
×२॥

१० । ७७॥ । ५२॥
=११ । १८ । २२। ३० यह घटी,

इपल और विपल तथा प्रतिपल में शुद्ध इष्टकाल हुआ । चूँकि; इष्टकाल घटी पल में रहता है अतः विपल दि २२।३० छोड़ दिया गया । और ११ घटी १८ पल इष्ट माना गया । कुछ लोग सूर्योदय में वेलान्तर करने के बाद भी इष्ट काल में वेलान्तर करते हैं, सो ऐसा उचित नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि; यह संस्कार एक बार कर देने से ही शुद्ध इष्ट हो जाता है ।

इष्ट देशीय तिथ्यादि बनाने का तरीका

इष्ट स्थान के तिथि नक्षत्र योग और करण बनाने के लिए उनमें 'पंचांगीय देश से इष्ट देश पूर्व हो तो धन तथा पश्चिम हो तो देशान्तर संस्कार ऋण करने से इष्ट स्थान के तिथ्यादि मान हो जावेंगे ।

उदाहरण —

जैसे काशी के हृषीकेश पञ्चाङ्ग में विक्रम संवत् २०२८ श्रावण कृष्ण १ तिथि शुक्रवार को

	तिथिमान	नक्षत्रमान	योगमान	करणमान दिया है
	२४।१२	उषा ४७।१६	वैधृति ३४।३५	कौलव २४।१३
इसमें देशान्तर	—१६ प.	—१६	—१६	—१६
	२३।५६	४७।०	३४।१९	३।५६

यह लखनऊ का परिवर्तित पञ्चाङ्ग होगा ।

इष्ट स्थान का दिनमान

इष्ट जन्म स्थान का दिनमान बनाने के लिए इष्ट स्थान के सूर्योदय को १२ घं. में से घटा कर शेष को ५ से गुणा कर देंगे तो घट्यादि दिन मान होगा।

उसी दिन के दिनमान का उदाहरण—

चूँकि लखनऊ का सूर्योदय घं. मि. ५।२२ है इसको १२।० में से घटाया तो १२।० – ५।२२ = ६।३८ हुआ
इसको ५ से गुणा किया तो × ५
३३।१० यह
घट्यादि लखनऊ का दिनमान हो गया।

ग्रहस्पष्ट का तरीका

बड़े पञ्चाङ्गों में प्रायः प्रतिदिन के सूर्योदय अथवा मिश्रमान कालिक ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं। छोटे पंचांगों में तथा बड़ों में भी प्रायः आठ २ दिन के ग्रह स्पष्ट किये हुये लिख दिये जाते हैं। इस ग्रहस्पष्ट के समय को पंक्तिकाल कहते हैं। इस पंक्तिकाल और इष्टकाल से धन और ऋण चालन बनाया जाता है। जिससे ग्रह स्पष्ट होते हैं।

धन और ऋण चालन बनाने का प्रकार—

पंक्तिः स्वेष्टाद्भवेदग्रे पंक्त्यामिष्टं विशोधयेत्।
तच्चालनं ऋणं ज्ञेयं व्यत्यये व्यत्ययं विदुः॥२॥

अगर वारादि पंक्तिकाल वारादि इष्टकाल से अधिक हो तो पंक्तिकाल में से इष्टकाल के वार घटी, पल, घटा देने पर जो शेष बचता है, वह वारादि ऋण चालन कहलाता है। इसके विपरीत अगर वारादि इष्टकाल पंक्तिकाल से अधिक हो तो वारादि इष्टकाल में से पंक्तिकाल घटाने पर जो शेष रहता है वह धन चालन कहलाता है।

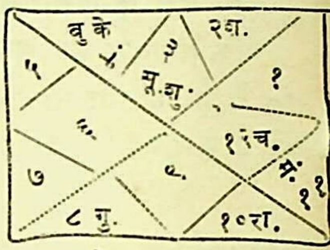
उदाहरण—जैसे श्रावण मास में पंक्ति काल इस प्रकार है।—

पं० श्रावण कृ० ८ गुरौ सूर्योदये

स्पष्ट ग्रहाः द्युगणः १७६

अयनांशाः २३।२६।२०

सू	चं.	मं.	बु.	गु	शु	श	रा	के.
२	११	१०	३	७	२	१	९	३
२९	२३	३	१९	६	१७	९	२२	२२
२	४५	३	३	०	२८	१८	८	८
८	५८	२६	१०	४५	४	२१	२१	२१
५७ ७	८५८ ५६	४ १८	६४ ४३	३ १४	७३ ७	५ ५५	३ ०	३ [illegible]



इसके अनुसार से हमारे वाराद जन्मेष्ट श्रावण कृष्णा प्रतिपदा शुक्रवार सूर्योदयादिष्टम् ११ घटी १८ पल को रवि से गिनने पर शुक्रवार की संख्या ६ के बाद ११।१८ लिखने से ६।११।१८ हुआ। चूंकि; पंक्ति इस शुक्रवार के बाद अष्टमी बृहस्पतिवार की है इसलिए शनिवार तक की वार संख्या ७ और उसके बाद बृहस्पतिवार की संख्या १२ और चूंकि; उसदिन सूर्योदय के ग्रह स्पष्ट हैं और सूर्योदय के समय इष्ट काल ० घटी ० पल रहता है। अतः वारादि पंक्ति काल १२।०।० है। इष्टकाल से पंक्तिकाल आगे है। इस लिये वारादिपंक्तिकाल में से वारादि इष्टकाल, को घटाया गया।

∵ वारादिपंक्ति काल = १२ । ० । ०

इसमें से ऋण वारादि इष्टकाल = ६ । ११ । १८

∴ ऋण चालन = ५ । ४८ । ४२

यह वारादि ऋण चालन हुआ।

स्पष्टग्रह साधन-विधि

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषट्हृताः।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः॥३॥

इस श्लोक के अनुसार पहले चालन बनाने के प्रकार से आये हुये धन या ऋणचालन को जो ग्रह स्पष्ट करना है उसकी गति से गुणा करना चाहिए। प्राप्त फल को ६० से भाग देने से लब्ध फल अंश कला विकलादि होता है। उसे पंक्ति स्पष्ट में दिये हुए ग्रह राश्यादि से ऋणचालन होने पर घटाने से और धनचालन होने पर जोड़ देने से यह स्पष्ट ग्रह जन्मेष्ट कालिक होता है। ग्रह स्पष्ट करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है, कि; राहु, केतु हमेशा वक्र गति से चलते हैं। अतः इनके लब्ध फल का विपरीत संस्कार करना होता है। अर्थात् ऋण की जगह धन और धन की जगह ऋण चालन की क्रिया होगी। यह क्रिया प्रत्येक ग्रह के वक्री रहने पर होती है। कहीं २ पंचांगों में दैनिक ग्रहस्पष्ट तो दिये रहते हैं, लेकिन; ग्रहों की गति नहीं रहती वहाँ दो दिन के स्पष्ट ग्रहों का अन्तर करने पर दैनिक गति आती है।

उदाहरण—

ऊपर ऋण चालन = ५। ४८। ४२ आया है। इसको सूर्य स्पष्ट करने के लिये सूर्य की गति ५७। २ से गुणा किया

५ । ४८ । ४२
×५७ । २

१० । ९६ । ८४
२८५ । २७३६।२३९४

तो गुणनफल २८५।२७४६।२४९०।८४ हुआ इसको सठियाने से

५ । ३१ । २७ । ३१ । २४ इतना लब्ध अंशादि हुआ इसको ऋणचालन होने से पंक्तिस्थसूर्य २ । २९ । २ । ८ में से घटाया २ । २९ । २ । ८

−० । ५ । ३१ । २७

शेष २ । २३ । ३० । ४१ इतना स्पष्ट सूर्य हुआ। इसी

तरह चन्द्रमा को छोड़कर अन्य ग्रहों का भी स्पष्ट करना चाहिए।

चन्द्रस्पष्ट-प्रकार

चन्द्रस्पष्ट करने से पूर्व जन्मनक्षत्र का भयात और भभोग बनाना पड़ता है।

भयात—जन्मसमय तक बीते हुए जन्म नक्षत्र के घट्यादि काल को भयात कहते हैं। जन्म नक्षत्र की भिन्न २ स्थितियों में भयात भी भिन्न-भिन्न प्रकार से मालुम किया जाता है।

यथा—

प्रथम प्रकारः—

गतर्क्षनाडी खरसेषु शुद्धा
सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्तम्।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य
निजर्क्षनाड़ी सहिता भभोगः ॥४॥

जब जन्मदिन की पंचाङ्गीय पंक्ति में दिया हुआ नक्षत्र अपने सूर्योदयादिष्ट से अधिक हो तो जन्म तिथि (दिन) से पहली तिथि वाले नक्षत्र (गतनक्षत्र) को ६० में से घटाकर अपना सूर्योदयादिष्टकाल उसमें जोड़ देने से भयात होता है।

जैसे बुधवार को कृत्तिका का मान ४८।१६ है तथा बृहस्पतिवार को रोहिणी ४६।२ है तथा गुरूवार को इष्ट १३।७ है तो पूर्वदिन की कृत्तिका के घटयादि मान ४८।१२ को ६० घटी अहोरात्रमान में से घटाने पर ११।४४ बुधवार का रोहिणी शेष रहा इसमें अपना इष्ट घट्यादि १३ ७ जोड़ने पर भयात २४। ५१ हुआ।

द्वितीय प्रकार—

'यदाऽभीष्टमानं-गतर्क्षाद्धिकंस्या-
तदाऽभीष्टमानाद्विशोध्यं भमानम् ।
भयातं तदैवं गतर्क्षोनषष्टि-
र्युताऽभीष्टनक्षत्रमानैर्भभोगः' ॥५॥

जब जन्मदिन के पंचाङ्गीय पंक्ति में दिये गये नक्षत्र मान से इष्टकाल अधिक होता है, तब इष्टकाल में से जन्मदिन के नक्षत्रकाल (क्योंकि उस दिन पंक्ति में लिखे हुए नक्षत्र का मान कम है। अतः वह गत नक्षत्र और उससे आगे आनेवाला नक्षत्र जन्मनक्षत्र है) को घटा देने से भयात होता है। जैसे बुधवार को कृत्तिका ४८।१६ है और इष्ट काल ५०।२ है तो भयात ५०।२—४८।१६ = १।४६ हुआ।

तृतीय प्रकार—

क्षय नक्षत्र में जन्म होने से भयात साधन प्रथम प्रकार से ही होता है।

जैसे—किसी पंचाग में

तिथि ५ बुधवार को रेवती ५।२०
,, ६ गुरुवार को { अश्विनी २।२५
भरणी ५६।०
७ शुक्रवार को कृत्तिका ५८।३ ।

बालक का जन्म बृहस्पतिवार को ५।२५ इष्ट पर हुआ इसका मतलब उसका जन्म भरणी नक्षत्र में हुआ। अतः इष्ट काल ५।२५ में से दिन नक्षत्र अश्विनी का मान २।२५ घटा देने से ३।० घटी भयात हो गया। चतुर्थप्रकारः—उसी दिन अगर इष्ट काल ५९।५ पर हो अर्थात् अश्विनी और भरणी दोनों नक्षत्रों के भुक्तिकाल के बाद हो तो दोनों नक्षत्रों के उस

दिन के भुक्तिकाल को जोड़कर इष्ट में से घटा देने पर शेष भयात होगा। जैसेः-अश्विनी२।२५+ भरणी ५६।० = ५८।२५ भयात = ५९।०५-५८।२५=०।४० हुआ । पञ्चमप्रकार-- अगर नक्षत्र की वृद्धि होरही हो अर्थात् एक ही नक्षत्र दो या तीन दिन तक हो और उसमें बालक का जन्म हो तो जन्म नक्षत्र का भयात बनाने के लिए-जिस दिन वह नक्षत्र प्रारम्भ हुआ है अगर उसी दिन गतनक्षत्र से अधिक इष्ट काल हो तो इष्ट में से गतनक्षत्र घटाकर शेष भयात होगा। षष्ठप्रकार- अगर दूसरे दिन पूरे नक्षत्र काल में जन्म हो तो ६० में से पूर्व दिन के नक्षत्र मान को घटाकर इष्ट जोड़ने से भयात होगा। सप्तम प्रकार—अगर उसी ३ रे दिन उस जन्म नक्षत्र के मान के पूर्व ही इष्ट काल हो तो ६० में से घटायी हुयी गत नक्षत्र की घटियों के शेष और उसमें दूसरे दिन का ६० घटी नक्षत्र मान तथा ३ रे दिन का दिया हुआ जन्मेष्ट जोड़ने से भयात होगा।

उदाहरण—जैसे अष्टमी रविवार को रोहिणी ५८।१० घटी पल नवमी सोमवार को मृगशिरा ६०।० तथा दशमी मंगलवार को मृगशिरा ३।३५ पल है इसमें यदि रविवार को किसी का जन्म इष्टघटचादि ५९।२५ पर हो तो उसका भयात ५९।२५—५८। १० = १.१५ होगा। अगर सोमवार को ६।१० इष्टकाल है तो भयात = ६०-५८।१० = १।५० रवि को मृगशिरा मान बचा (१) इसमें इष्ट जोड़ने से १।५०+६।१० = ८।० भयात तीसरे दिन अर्थात् दशमी मंगलवार को इष्ट १।५ है तो भयात =६०।०-५८।१०=१।५०+६०।०+१।५ = ६२।५५ भयात होगा।

भभोग—जन्मनक्षत्र के पूरे भोगकाल को भभोग कहते हैं। अर्थात् जन्मनक्षत्र के आरम्भ होने से समाप्त होने तक की सम्पूर्ण घड़ियाँ भभोग कहलाती हैं।

क्रान्ति सारिणी २२ मार्च से २३ सितम्बर तक उत्तरा क्रान्ति और २४ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिणा क्रान्ति रहेगी

जनवरी	२३ द ४	२३ १	२२ १६	२२ ४९	२२ ४४	२२ ३६	२२ ३०	२२ २२	२२ १३	२२ ५	२१ ५८	२१ ४९	२१ ४०	२१ ३०	२१ १८	२१ ९	२० ५७	२० ४३	२० ३२	२० २१	२० ७	१९ ५४	१९ ४१	१९ २५	१९ १२	१८ ५७	१८ ४२	१८ २५	१८ १०	१७ ५७	१७ ५०
फरवरी	१७ २४	१७ २	१६ ४८	१६ ३०	१६ १३	१५ ५५	१५ ३७	१५ २०	१४ ५९	१ ४५	१४ २१	१४ २	१३ ४१	१३ [illegible]	१३ २	१२ ४०	१२ १९	११ ५९	११ ४०	११ १९	१० ५५	१० ३३	१० २२	९ ५०	९ २८	९ ६	८ ४४	८ २०			
मार्च	७ १८	७ ३६	७ १३	६ ४९	६ २५	६ ३	५ ४१	५ १७	४ ५३	४ ३२	४ ८	३ ४३	३ २०	२ १६	२ ३३	२ ८	१ ५४	[illegible] २१	० १५	० ३३	०द १	०उ १५	० ३८	१ ३	१ २७	१ ५१	२ १७	२ ३८	३ १	३ २४	३ ४७
अप्रैल	४ १०	४ ३३	४ ५९	५ २४	५ ४८	६ ११	६ ३४	६ ५७	७ १९	७ ४२	८ ४	८ २६	८ ४८	९ १०	९ ३१	९ ५३	१० १४	१० २५	१० ५५	११ १४	११ ३५	११ ५५	१२ १७	१२ ३७	१२ ५७	१३ १६	१३ ३५	१३ ५६	१४ १५	१४ ३३	
मई	१४ ५१	१५ १	१५ २८	१५ ४५	१६ ३	१६ २०	१६ ३७	१६ ५३	१७ ९	१७ २[illegible]	१७ ४[illegible]	१७ ५५	१८ १[illegible]	१८ २७	१८ ४०	१८ ५[illegible]	१९ १०	१९ २५	१९ ३[illegible]	१९ ५०	२० [illegible]	२० १[illegible]	२० २७	२० ३९	२० १०	२१ १	२१ ११	२१ २१	२१ ३१	२१ ४०	२१ ४९
जून	२१ ५७	२२ ४	२२ १२	२२ २०	२२ २७	२२ ३३	२२ ४०	२२ ४६	२२ ५१	२२ ५७	२३ १	२३ ५	२३ १०	२३ १४	२३ १६	२३ २०	२३ २३	२३ २५	२३ २६	२३ २७	२३ [illegible]	२३ २८	२३ २७	२३ २६	२३ २५	२३ २३	२३ २१	२३ १९	२३ १७	२३ ३	
जुलाई	२३ १०	२३ ७	२३ ३	२२ ५८	२२ ५३	२२ ४६	२२ ४०	२२ ३५	२२ २७	२२ २०	२२ १४	२२ ५	२१ ५७	२१ ४९	२१ ४	२१ ३०	२१ २०	२१ १०	२१	२० [illegible]	२० २८	२० २७	२० १५	२० ३	१९ ५१	१९ ३८	१९ २५	१९ ११	१८ ५७	१८ ४३	१८ २९
अगस्त	१८ ३	१७ ५९	१७ ४३	१७ २७	१७ १२	१६ ५६	१६ ४०	१६ २३	१६ ५	१५ ४८	१५ ३१	१५ १३	१४ ५५	१४ ३७	१४ ९	१३ ५९	१३ ४०	१३ २	१३	१२ ४३	१२ ३९	१२ ४	१२ १४	११ २३	११ ३	१० ४२	१० २१	९ ५९	९ ३०	९ १७	८ ५६
सितम्बर	८ ३४	८ १२	७ ११	७ २८	७ ६	६ ४३	६ २२	५ ५९	५ ३६	५ १४	४ ५२	४ २९	४ ५	३ ४४	३ २०	२ ५६	२ ३२	२ ११	१ ४९	१ २४	१ ३०	० ३६	०उ १५	०द ११	० ३३	० ५०	१ २१	१ ४४	२ ८	२ ३१	
अक्टूबर	२ ५३	३ १७	३ ४१	४ ४	४ २७	४ ५१	५ १३	५ ३६	५ ५९	६ २२	६ ४५	७ ७	७ ३०	७ ५२	८ ५	८ ३६	८ १७	९ २०	९ ४७	१० ४	१२ २४	१० ४६	११ ९	११ २८	११ ५०	११ ११	१२ [illegible]१	१२ ५१	१३ ०	१३ [illegible]१	१३ ५१
नवम्बर	१४ ११	१४ ३०	१४ ४९	१५ ८	१५ २६	१५ ४४	१६ ३	१६ २२	१६ ४०	१६ ५७	१७ १४	१७ ३१	१७ ४७	१८ ३	१८ १८	१८ ३५	१८ ५०	१९ ५	१९ १[illegible]	१९ ३१	१९ ४०	२० ०	२० १[illegible]	२० २४	२० २६	२० ४८	२१ ०	२१ १२	२ २३	२१ ३१	
दिसम्बर	२१ ४३	२१ ५१	२२ १	२२ ९	२२ १८	२२ २५	२२ ३३	२२ ३९	२२ ४६	२२ २	२२ ५६	२३ १	२३ ६	२३ ११	२३ १५	२३ १८	२३ २१	२३ २३	२३ २५	२३ २६	२३ २६	२३ २७	२३ २७	२३ २६	२३ २५	२३ १४	२३ २२	२३ २०	२ १७	२३ १४	२३ द १०

पूर्व में दिये हुए विक्रम संवत् २०२८ श्रावण कृष्ण १ शुक्रवार को जन्मेष्ट घटी ११।१८ पर के भयात भभोग और चन्द्रस्पष्ट को उदाहरण रूप में यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। भाद्र शुक्ल तिथि १५ गुरुवार को पूर्वाषाढ़ा का मान घट्यादि ४८ २४ हैं। श्रावण कृष्ण तिथि १ शुक्रवार को उत्तरा षाढ़ा का मान घट्यादि ४७। ० है। शुक्रवार को इष्ट ११ घटी १८ पल है। चूंकि; इष्ट काल से पञ्चाङ्गीय दिन नक्षत्र उत्तराषाढ़ा का मान अधिक है, इसलिए जन्म नक्षत्र उ. षा. है और गत नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा हुआ। इसे अर्थात् पू. षा. ४८।२४ को अहोरात्र मान ६०। ० घटी में से घटाया तो शेष ११।३६ यह गुरुवार को उ. षा. का मान मालुम हुआ। इसमें इष्ट काल जोड़ देने से ११।३६+११। १८ = २२। ५४ शुक्रवार को जन्म समय तक बीता हुआ उ. षा. जन्म नक्षत्र का मान हुआ। इसी को भयात कहते हैं।

भभोग बनाने के लिए गुरुवार के अहोरात्रमान से पूर्वाषाढ़ा का मान निकाल लेने पर बचे हुए उत्तराषाढ़ा के मान ११।३५ को शुक्रवार के उ. षा. के मान ४७। ० घटी में जोड़ देने से ५८। ३६ यह सम्पूर्ण उ. षा. का भोग मान भभोग कहलावेगा।

चन्द्र स्पष्ट बनाने का प्रकार

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्
खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम्।
नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्टवेदाः भभोगेन भक्ताः ॥६॥

पलात्मक भयात को ६० से गुणा करके गुणन फल में पलात्मक भभोग से भाग देने पर जो लब्धि पलादि आवेगी

उसको जन्म नक्षत्र से पहले नक्षत्र (अर्थात् अश्विनी से गत नक्षत्र) तक गिनने पर जो संख्या आवे उसे ६० गुणा कर गुणन फल में जोड़ दें। पुनः जोड़फल को २ से गुणा करें एवं गुणन फल को ९ से भाग देंवे, तो लब्धि अंशादि चन्द्रमा होगा। इस अंशादि चन्द्रमा के ३० से अधिक अंश होने पर ३ का भाग देकर भागफल राशि और शेष अंश होंगे। यह चन्द्र स्पष्ट हो जावेगा। ४८००० को ६० से गुणाकर उसमें पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्धि कलादि चन्द्रमा की स्पष्टगति होगी।

उदाहरण - जन्मनक्षत्र उत्तराषाढा है

घट्यादि भयात = २२ । ५४
×६०
१३२०
+५४
पलात्मक भयात १३७४

भभोग : ५८।३६
×६०
३४८०
+३६
पलात्मक भभोग ३५१६

१३७४
×६०
३५१६)८२४४०(२३
७०३२
१२१२०
१०५४८
१५७२
×६०
३५१६)९४३२०(२६
७०३२
२४०००
२१०९६
२९०४
×६०
३५१६)१७४२४०(४२
१४०६०
३३६००
३१६४४
१९५६

शेष आधे से अधिक बचा रहा है इसलिए लब्धि में १ और जोड़ लिया गया। लब्धि पलादि २३ । २६ । ४९ हुई। इसमें गत नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा की अश्विन्यादि गणना से आगत संख्या २० को ६० से

६०
×२०

गुणाकर उसे गुणनफल = १२०० में जोड़ दिया तो १२२३ । २६ । ४९ हुआ इसको दो से गुणा किया २४४६ । ५३ । ३८ हुआ। इसमें ९ से भाग दिया—

९) २४४६ । ५३ । ३८ (२७१
१८
६४
६३
१६
९
७
×६०
४२०
+५३
९)४७३ (५२
४५
२३
१८
५
×६०
३००
+३८
९)३३८(३७
२७
६८
६३
५

शेष ९ के आधे से अधिक है अतः लब्धि में एक और जोड़ दिया गया। लब्धि २७१।५२।३८ यह अंशादि स्पष्ट-

चन्द्रमा हुआ। इसके अंश २७१ में ३० का भाग देने पर ९ राशि १ अंश हुए इनको २७१ के स्थान पर रखने से हमारा राश्यादि स्पष्ट चन्द्र ९। १। ५२। ३८ हो गया। अब हमें चन्द्रमा की गति निकालनी है।

```
           ४८०००
             ×६०
३५१६ ) २८८०००० ( ८१९
       २८१२८
       ------
         ६७२०
         ३५१६
        -----
        ३२०४०
        ३१६४४
        -----
          ३९६
          ×६०
   ..............
   ३५१६)२३७६०(६
        २१०९६
        -----
         २६६४
```

लब्धि ८१९।६ यह चन्द्रमा की कलादि गति हुई।

लग्न साधन

फलितज्योतिष में अनेक प्रकार के लग्नों के नाम आये हैं किन्तु, फलित कहने में प्रायः दो प्रकार के लग्नों का उपयोग ज्योतिषीगण करते हैं, एक भावलग्न (भूकेन्द्रीय लग्न) और दूसरा क्रान्तिवृत्त स्थानीय लग्न। फलितोपयोगी लग्न विषय का विशेष विवेचन श्री पं० रामयत्न ओझा ने अपने 'फलित विकास' और श्री सीताराम झा ने 'लग्न विवेक' नामक ग्रन्थ में किया है। आप लोगों ने अदृष्ट फलोपयोगी भूकेन्द्रीय राश्युदय लग्न को माना है जो सर्वत्र ५-५ घटी मान के होते हैं। वृहत्पाराशरहोरादि में इस लग्न को भावलग्न बतलाया गया है।

भावलग्न साधन प्रकार

इष्टं घट्यादिकं षड्घ्नं फलमंशादिकं च तत् ।
योज्यमौदयिके भानौ भावलग्नं स्फुटं भवेत् ॥७॥

इष्टकाल के घटी पल को ६ से गुणा करने पर गुणनफल अंशादि होगा । उसको जन्म दिन के प्रातःकालिक (औदयिक) सूर्य में जोड़ देने से स्पष्टभाव लग्न होगा ।

जन्मकालिक (तात्कालिक) स्पष्ट सूर्य से औदयिक सूर्य बनानेका तरीका यह है कि सूर्य की कलादि गति को इष्ट काल से गुणा करके ६० से भाग दे देंवे जो लब्धि कलादि आवें उसको जन्मकालिक (तात्कालिक) स्पष्ट सूर्य में से घटादेंगे तो प्रातः कालिक (औदयिक) स्पष्ट सूर्य होगा । फिर इसमें पूर्वागत अंशादि जोडदें तो भाव लग्न स्पष्ट हो जावेगा ।

उदाहरण—इष्ट घटी ११।१८ है इसको ६ से गुणा किया तो ६७।४८ अंशादि हुआ । ६७ अंश में ३० का भागदेने पर २ । ७ । ४८ राश्यादि हुआ इसको औदयिक स्पष्ट सूर्य २ । २३ । १९ । ५७ में जोड़ने से ५।१।७।५७ स्पष्टभाव लग्न हुआ ।

सारिणी से लग्न साधन

ग्रहण एवं ग्रहों के उदयास्तादि दृष्टफल के लिए उपयोगी क्रान्तिवृत्तीय लग्न पर भी भावस्पष्ट बनाकर फल कहने की वहुप्रचलित प्रथा है । इसविषय का सर्वोत्तम ग्रंथ श्रीपण्डित मीठालाल हिम्मत राम ओझाजी ज्यौतिष प्राध्यापक वाराणसेय संस्कृतविश्वविद्यालय का 'भारतीय कुण्डली विज्ञान' नामक ग्रंथ है । इस एक पुस्तक से आप देशी और विदेशी कुण्डली निर्माण विषयक सभी सामग्री प्राप्त करलेंगे । इसमें ० अक्षांश से ६६ अक्षांश तककी लग्न सारणियां दीगई हैं । सारिणी से लग्न बनाने का तरीका यह है—

यत्सूर्यराश्यंश समानकोष्ठेघट्यादिकं स्वेष्ट घटीयुतंतत्।
तत्तुल्यघट्यादि भवेद्धियत्रतात्तियगूर्ध्वांङ्कमितंहि लग्नम्

अक्षांश पर से पलभाज्ञानकी सारिणी

अक्षांश.	अंगुलादि पलमा			अक्षांश.	अंगुलादः पलमा		
१	०	१२	३४	२८	६	२२	४८
२	०	२५	९	२९	६	३९	४
३	०	३७	४४	३०	६	५५	४१
४	०	५०	२	३१	७	१२	३६
५	१	३	०	३२	७	२	५३
६	१	१५	४	३३	७	७	३१
७	१	२८	२३	३४	८	५	३८
८	१	४१	१७	३५	८	४	७
९	१	५४	०	३६	८	४३	५
१०	२	६	५४	३७	९	२	३५
११	२	९	५५	३८	९	२२	३०
१२	२	३३	०	३९	९	४३	१
१३	२	४६	[illegible]	४०	१०	४	९
१४	२	५९	२८	४१	१०	२५	५०
१५	३	१२	५४	४२	१०	४८	१८
१६	३	२६	२४	४३	११	११	४
१७	३	४०	५	४४	११	३५	२४
१८	३	५३	५६	४५	१२	०	०
१९	४	७	५५	४६	१२	२५	३७
२०	४	२२	१	४७	१२	५२	५
२१		३६	[illegible]	४८	१३	१९	३८
२२	४	५०	२२	४९	१३	४८	[illegible]
२३	५	५	३८	०	१४	१८	३
२४	५	२०	३१	५१	१४	४९	८
२५	५	३५	४२	५२	१५	२१	३२
२६	५	५१	७	५३	१५	५५	३
२७	६	६	०	५४	१६	१	१०

अक्षांश २६।५१

लखनऊ की लग्न सारिणी

अंश → / राशि ↓	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	·	५	५	५	५	५	५		६	६	६	६	६	६
	४२	५७	४	११	१८	२६	३३	४	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४९	१५	३	१२	२०	२८	३७	४५	५३	२	१०	८	२७	३५	४३
	५९	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	५७	१७	३७	५७	७	३७	५७	१७	३९	५७	१७	३७	५७	१७	३७	५९	१७	३७	५७	१७	४७	५७
१ वृषभ	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	११
	५२	०	८	१७	२५	३३	४	५०	०	१०	२०	३१	४१	५	१	११	१	·१	४१	५१	·	१२	२२	३२	४२	१२	२	१०	१२	३२
	१७	३७	५७	१७	३७	५७	१७	३	४३	४९	५५	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४२	५५	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९
२ मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१	१३	१३	१३	१३	·३	१४	१४	१४	१·	१४	१४	१५	१·	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१५	१७
	४२	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	५	६	·७	३९	५०	२	·३	२५	३६	४७	५९	१०	२·	३३	४५	५६	७	१९	३०	४·	५३	५
	५५	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	३	२९	५·	२१	४७	१३	३९	५	३१	५५	२३	४९	१५	४१	७	३३	५९	२५	५१	१७	४	६
३ कर्क	१·	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	९	१९	१९	१९	१९	२०	१०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२·	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	१६	२८	३६	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२३	३·	४६	५७	९	११	·२	४४	·५	·	१९	३०	४२	·३	५	१७	२८	·०	५
	३५	१	२७	५३	१९	४५	११	३७	१३	४·	२५	·	३७	१३	४९	२·	·	३७	१३	४९	२५	·	३·	१३	४९	२५		३७	१३	४
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	·४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	·५	·६	२६	६	२६	२·	२७	२७	२७	२७	२७	७	२८	२८	२८
	३	१५	२६	·८	४९	१	१३	२४	३५	४७	·८	९	·१	३२	४३	५५	६	१७	·८	४	५१	·	१४	२५	३६	४८	५२	१०	२१	३१
	२५	१	३७	१३	४९	२५	·	३७	५५	१३	३१	४९	७	२५	४३	·	१९	३७	५५	१३	३१	४९	७	२५	४३	·	१९	३७	५५	१३
५ कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३·	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३·	३१	३१	३१	३·	३२	३२	३२	३०	३३	३३	·३	३३	३३	३४	३३
	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	·	१५	२७	३८	४९	०	३४
	३१	४९	७	२५	४३	१	१९	३७	५४	१३	३१	४९	७	२५	४३	१	१९	३७	५५	१३	३१	४९	२	२५	४३	१	१९	२७	५५	१:

लखनऊ की लग्न सारिणी

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
राशि	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
६	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७
↓ तुला	३१	४९	७	२५	४३	१	१९	३७	१३	४९	२५	१	३७	१३	४९	२५	१	३७	१३	४९	२५	१	३७	१३	४९	२५		३७	१३	४९
	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
७	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३	४२
वृश्चिक	२५	१	३७	१३	४९	२५	१	३७	३	२९	५५	२१	४७	१३	३९	५	३१	५७	२३	४९	१५	४१	७	३३	५९	२५	५१	१७	४३	९
	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
८	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५
धन	२५	१	७	१३	१९	४५	११	३७	४३	४९	५५		७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९
	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
९	५	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३३	४	४९	५८	६	१४	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३८	४६	५४	३	११	१९
मकर	५५	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	५७	१७	७	५७	१७	३३	५७	१७	३७	५७	१७	३७	५९	१७	३९	५९	१७	३७	१७	१७	२	५९
	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३३	४१	४८	५५	३	१०	१७	२४	३१	३८	४६	५३	०	७	१५	२२	२९	३६	४०	५१	५८	५
कुम्भ	१७	३७	५७	१७	३७	५७	१७	३७	५१	५	१९	३३	४७	१	१५	२९	४३	५७	११	२५	३९	५३	७	२१	३५	४९	३	१७	३१	४५
	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०		१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	१२	२०	२७	३४	४९	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५४	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५२	५९	६	३	२१	२८	३५	४२
मीन	५९	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	१	१५	२९	४३	५७	११	२५	३९	५३	७	२१	३५	४९	३	१७	३१	४५

हमारे जन्म देश के अक्षांश को लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की जो राशि बगल में दी हुई रहती है और अंश उपर दिया हुआ हैं उसकी सीध में पड़ने वाले अङ्क को लेकर उसमें अपने इष्ट घट्यादि को जोड़ देंगे और पुनः योगफल को लग्न सारिणी में ढूँढेंगे। बगल में वायीं ओर दिये गये राशि स्थानीय अङ्क जन्मलग्न की राशि और उपर वाले अङ्क अंश होंगे। अगर योगफल में ६० से अधिक अंक हों तो ६० में से घटाकर शेष अङ्क सारिणी में ढूँढेगें।

उदाहरण—जैसे वि० सं० २०२८ श्रावण क्र १ शुक्रवार को सूर्य ३।२३ है। इष्ट ११।१८ हैं और लखनऊ के अक्षांश २६।५१ हैं। अब आप पृष्ठ संख्या ३८४पर दी हुई २७ वें अक्षांश की सारिणी क्योंकि, आधे अक्षांश या ३० कला से उपर होने से अग्रिम संख्या ग्रहण होगी अथवा किसी समीपवर्ती स्थान के पञ्चांग की लग्न सारिणी में सूर्य की राशि २ एवं २३ अंश की सीध में पड़ने वाले कोष्ठक में देखा तो १५।५६।२३ अङ्क उपलब्ध हुए। इनमें इष्टकाल ११।१८ जोड़ा तो २७।१४।१३ आये। इनको सारिणी में खोजा तो राशि वाले खाने में ४ राशि तथा तथा अंश वाले खाने में २२ अङ्क मिले। अर्थात् सिंह लग्न के २२ अंश बीत चुके हैं। लग्न सम्बन्धी कला एवं विकला मालुम करने के लिए लग्न के अंश सम्बन्धी कोष्ठक (२२ वें अंश के कोष्ठक) तथा उससे अग्रिम कोष्ठक (२३ वें अंश के कोष्ठक के अकों को घटाकर एक जातीय (पलात्मक या विपलात्मक) बना लेगे। फिर लग्न सम्बन्धी अंश (२२ वे अंश) के कोष्ठक में आये हुए अंक को और योगफल के अङ्कों (२७।१४) को परस्पर घटाकर एक जातीय बनाकर ६० से गुणा करेंगे। तत्पश्चात् गुणनफल में प्रथम अन्तर संख्या का भाग देंगे तो लब्धि लग्न सम्बन्धी कला आवेगी शेष को पुनः ६० से गुणा करके उसी (प्रथम अन्तर संख्या) से भाग देने पर लग्न की विकला आवेगी

पूर्वोक्त उदाहरण में जैसे:—२७।२५।२५=२३ वें अंश के कोष्ठ की अङ्क संख्या

—२७।१४।७= २२ वें अंश के कोष्ठक की अंक संख्या

प्रथम अन्तर संख्या ११।१८

इसको एक जातीय बनाया ११।१८
×६०
६६०
+१८
६७८ हुए

पुनः योगफल २७।१४।३३

तथा—२७।१४।७=२३ वें अंश की कोष्ठक संख्या
०।०।२६

इसको एक जातीय (विपलात्मक) होने से एक जातीय बनाने आवश्यकता नहीं है। सिर्फ ६० से गुणने पर २६×६०=१५६० हुए इसमें ६७८ प्रथम अन्तर संख्या के भाग देने पर

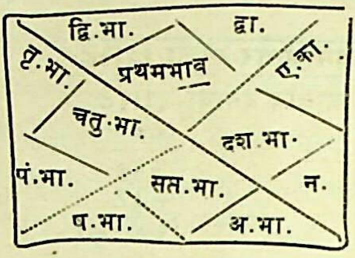
```
६७८) १५६० (२          ६७८) १२२४० (१८
     १३५६                  ६७८
     ----                  ----
      २०४                  ५४६०
      ×६०                  ५४२४
     ----                  ----
     १२२४०                 ××३६
```

२ कला १८ विकला लब्धि हुई। इसको लग्न ४।२२ के आगे रखने पर ४।२२।२।१८ यह स्पष्टराश्यादि जन्मलग्न हो गया।

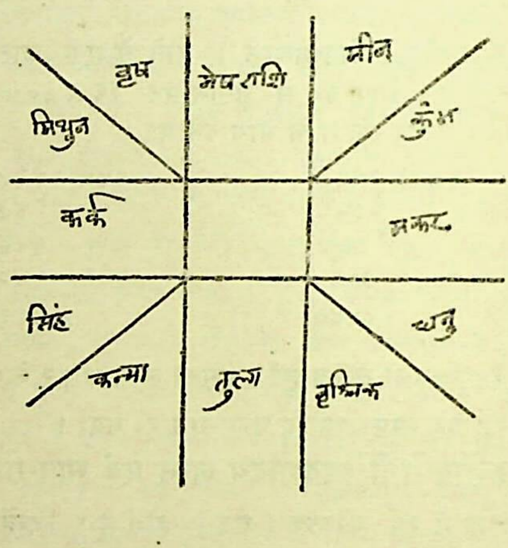
दृष्ट फलोपयोगी स्वदेशोदय-लग्न एवं भाव-साधन

कुण्डली चक्र में १२ कोष्ठक (घर) होते हैं। जिन्हें गृह, भाव, स्थान आदि नामों से पुकारा जाता है। कुण्डली के प्रथम स्थान को जन्म लग्न या तनु भाव, दूसरे को धन, तीसरे को सहज या भ्राता, चौथे को सुख या माता, पांचवें को पुत्र या विद्या, छठे को शत्रु, ७ वें को स्त्री, ८ वें को आयु, ९ वें का भाग्य, १० वें को कर्म, ११ वें को लाभ और १२ वें भाव को व्ययभाव कहते हैं। पश्चिम, मध्य, व उत्तरी भारत के गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, बिहार,

पंजाब, काश्मीर, नेपाल, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र प्रदेश में कुण्डली का निम्न स्वरूप प्रचलित हैं —



किन्तु आसाम, बंगाल और उड़ीसा में लोग कुण्डली चक्र भिन्न प्रकार से बनाते हैं—



इस चक्रमें प्रथम स्थान से मेषादिराशि स्थिर रूप से मानी जाती हैं। जिसराशि में लग्न होगा वहाँ अन्य ग्रहों के राशिन्यास की तरह लग्नम् या ल० लिख देते हैं।

दक्षिण भारत (मद्रास, तमिलनाडु मैसूर, आन्ध्र, केरलादि प्रदेश) में कुण्डली चक्र निन्न प्रकार से लिखा जाता है—

मीन	मेष	वृष	मिथुन
कुम्भ			कर्क
मकर			सिंह
धन	वृश्चिक	तुला	कन्या

इसमें भी राशियाँ उपर बनाए गये खानों (स्थानों) में स्थिर रहती हैं जिन राशियों में ग्रह और लग्न रहेंगे उनका उनका उनमें न्यास कर देते हैं।

वेलान्तर सारिणी ता० २६ दिसम्बर से ता० १६ अप्रैल तक तथा ता० १५ जून ता० २ सितम्बर तक फल धन रहेगा इससे अतिरिक्त समय में ऋण रहेगा)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	+३ ७	+१३ ३१	+१२ ३८	+४ १५	-२ ४९	-२ २९	+३ २९	+६ १८	+० ९	-९ ५८	-१६ २०	- [illegible]
२	३ ३	१३ ०१	१२ २७	३ ५७	२ ५६	२ २	३ ४१	६ १४	+० ०	१० १७	१६ २२	१० ५७
३	४ ४	१३ ४७	१२ १४	३ ३८	३ २	२ १२	३ ५२	६ १[illegible]	-० १९	१० ३६	१६ २३	१० ३३
४	४ ३३	१३ ५३	१२ ३	३ २१	३ १०	२ १	४ ५	६ ५	० ३८	१० ५४	१६ २३	१० १२
५	४ ५९	१४ ००	११ ५१	३ ४	३ १७	१ ५२	४ १५	६ २	० ५६	११ १३	१६ २२	९ ४७
६	५ २५	१४ ६	११ ३७	२ ४४	३ २	१ ४०	४ २६	५ ५६	१ १७	११ ३२	१६ २२	९ २२
७	५ ५३	१४ १०	११ २३	२ २९	३ २४	१ २९	४ ३६	५ ५०	१ ३८	११ ४९	१६ १९	८ ५६
८	६ १९	१४ १३	११ ९	२ १२	३ ३१	१ १७	४ ४६	५ ४२	१ ५८	१२ ६	१६ १५	८ ३३
९	६ ४५	१४ १७	१० ५५	१ ५५	३ ३४	१ ८	४ ५५	५ ३५	२ १८	१२ २२	१६ १३	८ [illegible]
१०	७ ११	१४ १८	१० ४०	१ ४०	३ ३८	० ५५	५ ३३	५ १८	२ ३६	१२ ४०	१६ ८	७ [illegible]
११	७ ३०	१४ २१	१० २४	१ २२	३ १०	० ४३	५ १४	१५ ३१	३ १	१२ ५६	१६ २	७ [illegible]
१२	७ ९	१४ २०	१० ७	१ ८	३ ४२	० ३१	५ २२	५ ९	३ २१	१३ १३	१५ ५६	६ [illegible]
१३	८ २३	१४ १६	९ ५२	० ५१	३ ४३	० २०	५ ३९	४ ५९	३ ४१	१३ २७	१५ [illegible]९	६ [illegible]
१४	८ ४५	१४ १९	९ ३७	० ३३	३ ४५	-० ७	५ ३७	४ ४९	४ ३	१३ ४३	१५ ४२	५ [illegible]
१५	९ ७	१४ १७	९ २०	० २३	३ ४४	+० ६	५ ४३	४ ३७	४ २४	१३ ५६	१५ ३२	५ [illegible]
१६	९ २०	१४ १३	९ ५	+० ५	३ ४५	० १८	५ ५०	४ २[illegible]	४ ४४	१४ ०	१५ ३३	४ [illegible]
१७	९ ५०	१४ ११	८ ४६	+० [illegible]	० ४४	० ३०	५ ५६	४ १५	५ [illegible]	१४ २२	१५ १३	४ [illegible]
१८	१० ११	१४ ८	८ २७	० २४	३ ४[illegible]	० ४५	६ २	४ २	५ २८	१४ ३५	१५ १	३ [illegible]
१९	१० २९	१४ २	८ ११	० ३९	३ ४३	० ५७	६ ६	४९	५ ५१	१४ ४६	१४ ५८	३ [illegible]
२०	१० ४८	१३ ५९	७ ५३	० ५१	३ ३८	१ १०	६ ९	३ ३५	६ ११	१४ ५९	१४ ३६	२ [illegible]
२१	११ ६	१३ ५१	७ ३५	१ ४	३ ३३	१ २२	६ १[illegible]	३ २०	६ ३०	५ ८	१४ २२	२ [illegible]
२२	११ २३	१३ ४३	७ १७	१ १८	३ ३३	१ ३७	६ १७	३ ६	६ ५४	१५ १९	१४ ७	१ [illegible]
२३	११ ३९	१३ ३७	६ ५८	१ २९	३ २८	१ ५०	६ १९	२ ११	७ १६	१५ २[illegible]	१३ ५२	१ [illegible]
२४	११ ५५	१३ २९	६ ४१	१ ४१	३ २[illegible]	२ १	६ २०	२ ३६	७ ३६	१५ ३८	१३ ३५	० [illegible]
२५	१२ ११	१३ २०	६ २४	१ ५०	३ १८	२ १३	६ २३	२ २१	७ ५६	१५ ४५	१३ १७	-० [illegible]
२६	१२ २४	१३ १०	६ ४	२ ४	३ १२	२ २७	६ २४	२ ३	८ १७	१५ ५२	१२ १	+० [illegible]
२७	१२ ३७	१३ ०	५ ४५	२ १४	३ ५	२ ४०	६ २५	१ ४८	८ ३८	१५ ५०	१२ ४२	० [illegible]
२८	१२ ४८	+१२ ४६	५ २८	२ २३	२ १	२ ५१	६ २४	१ ३१	८ ५८	१६ ५	१२ २२	१ [illegible]
२९	१३ १		५ ८	२ १३	२ ५३	३ ६	६ २३	१ १२	९ १८	१६ ८	१२ २	१ [illegible]
३०	१३ १२		४ ५२	-२ ४१	२ ४५	+३ १७	६ २२	० ५६	-९ ३८	१६ १४	-११ ४१	२ [illegible]
३१	+१३ २२		+४ ३३		२ २७		+६ २०	+० ३७		-१६ १७		+२ [illegible]

विंशोतरी मत से महादशा में अन्तर्दशायें

१. सूर्य-दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-कृत्तिका, उ. फा., उ. षा.

दशा	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	.	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिवस	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

२. चंद्र-दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा
नक्षत्र-रोहिणी, हस्त, श्रवण

दशा	चं.	मं	रा	गु.	श.	बु.	के	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिवस	०	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०

३. मंगल दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-मृगशीर्ष, चित्रा, धनिष्ठा

दशा	मं.	रा	गु.	श.	बु	के	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिवस	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

४. राहु दशा वर्ष १८ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा

दशा	रा.	गु.	श	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	०
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिवस	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

५. गुरु-दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भाद्रय,

दशा	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिवस	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

६. शनि-दशा वर्ष १९ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-पुष्य, अनुराधा, उ. भाद्र.

दशा	श.	बु	के.	शु.	सू	चं.	म.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिवस	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

७. बुध-दशा वर्ष १७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

दशा	बु.	के.	शु	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२		१	०	[illegible]	[illegible]	२
मास	४	११	१०	१	५	११	६	३	८
दिवस	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

८ केतु-दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र-अश्विनी, मघा, मूल

दशा	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा	गु.	श	बु
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिवस	२४	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

९. शुक्र, दशा वर्ष २० में अन्तदशा
नक्षत्र-भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पू. षा.

दशा	शु	सू.	चं	म.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिवस	०	०	०	०	०	०	०	०	०

लग्नादि साधन के उपकरण

(१) लङ्कोदय (२) स्वदेशीय अक्षांश (३) पलभा (४) चर-खण्ड (५) अयनांश (६) सूर्य (७) नत (८) रवि क्रांति (९) चरपल (१०) रेखांश (११) देशान्तर (१२) दिनमान (१३) सूर्योदयास्त।

लङ्कोदयमानानि

लङ्कोदयाः विघटिका गजभानि गोऽङ्क
दस्रास्त्रिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः।
हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैः
मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः॥६॥

मेषादि ३ राशियों के क्रमशः २७८, २९९, ३२३ इसके पश्चात् कर्कादि ३ राशियों के इसके विपरीत ३२३, २९९, २७८ पलात्मक उदयमान होते हैं, फिर घट (तुला) राशि के मान से मीन पर्यन्त ६ राशियों के पलात्मक मान इनके उलटे क्रम से अर्थात २७८, २९९, ३२३, ३२३, २९९, २७८ पल होंगे। इनमें अपने २ स्वदेशीय चरखण्डों को मेषादि ३ राशियों के उदयमान में से घटाने तथा कर्कादि छः राशियों के उदयमान में जोड़ने एवं पुनः मकरादि ३ राशियों से घटाने से इष्ट अक्षांश वाले देश के उदयमान होते हैं।

(२) स्वदेशीय अक्षांश का ज्ञान एटलस या देश काल बोधक सारिणी पृ० ३६१ से होगा।

(३) पलभा का ज्ञान पृ० ३८३ पर दी गई अक्षांश से पलभा ज्ञान सारिणा से होगा। जैसे लखनऊ अक्षांश २७ की पलभा ६ अङ्गुल ७ व्यंगुल होगी। अक्षांश को ३ से गुणाकर २५०० का भाग देने पर पलभा होती है।

(४) चरखण्ड

चर खण्ड पलभा से बनते हैं। पलभा को ३ स्थान पर रख कर पहले स्थान की पलभा को १० से गुणा करे तो प्रथम चरखण्ड, दूसरे

स्थान की पलभा को ८ से गुणा करें तो द्वितीय चरखण्ड और तीसरे स्थान की पलभा को १० से गुणा कर ३ से भाग देवें तो यह तृतीयांश तीसरा चरखण्ड होगा। भारतीय कुण्डली विज्ञान नामक ग्रंथ में हर अक्षांश की सारणी के साथ पलभा व चरखण्ड दिये गये हैं। पलभा ६।७ पर निम्न चरखण्ड होंगे।

प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान	तृतीय स्थान
६ । ७	६ । ७	६ । ७
×१०	×८	×१०
६०।७०	४८। ६	६०।७०

ये क्रमशः प्रथम चरखण्ड ६१।१० द्वितीमचरखराड ४८।५६
तृतीय चरखण्ड=६१।१०÷३=२०।२३ हुए।

(५) अयनांश (Preccession)

सूर्यादि ग्रहों के दक्षिण और उत्तर अयन का प्रारम्भ क्रान्ति वृत्त के जिन बिन्दुओं में होता है उसके समीपवर्ती तारे दुबारा अयन प्रारम्भ में ठीक उसी स्थान में नहीं दिखलाई पड़ते हैं। वे वहाँ से पूव दिशा की ओर चले जाते हैं जब कि; हमारे यहाँ मकर राशि के शून्यांश पर ही उत्तरायण का प्रारम्भ मानते चले आ रहे हैं किन्तु; इस अयन आरम्भ के भाग (स्थान) सम्बन्धी अन्तर के कारण हमारी काल गणना के दो भेद सायन और निरयण हो गये हैं। अयन को वेधोपलब्ध गति ५० विकला वार्षिक मानी गयी है। अयनांश की गति ग्रहलाघव के अनुसार ६० विकला वार्षिक है जो अन्य मकरन्दादि ग्रंथों की अपेक्षा वेधोपलब्ध गति के नजदीक है।

ग्रहलाघवीय अयनांश लाने के लिए अभीष्ट शक वर्ष में से ४४४ घटाकर ६० से भाग देने पर अयनांश होते हैं इसमें अभीष्ट सूर्य के राश्यंशादि को ५ से गुणा करके जोड़ देने से स्पष्ट अयनांश होगा। ४४५ शकाब्द शून्यायनांश वर्ष था। वेधोपलब्ध अयनांश का सूक्ष्म ज्ञान तो सूर्य की छाया से ही होता है। फिर भी आधुनिक ज्योतिर्विद निम्न क्रिया करते हैं—

वर्तमान शक वर्ष में १८०० घटाकर एक जगह ७० से और दूसरी जगह ५० से भाग देकर अंशादि और दो प्रकार के फल आवेंगे इन दोनों के अन्तर में २२।८।३३ अंशादि जोड़देने पर वर्ष में मेषको संक्रान्ति के शून्य अंश (शक वर्षारम्भ) का अयनांश होगा इसमें जन्म सूर्यतक के राशि व अंश तक का अयनांश और जोड़देने पर स्पष्ट सामयिक अयनांश होगा।

उदाहरण – वैक्रमाब्द २०२८ शकाशब्द १८९३ में स्पष्ट सूर्य २ २३ का अयनांश जानना है। ग्रहलाघवीय प्रकार—

१८९३–४४४=१४४९÷६०=२४।९ अंशकलादि इसमें २।२३×५ =११।५५ विकलादि जोड़ दिया तो २४।९।११।५५ स्पष्ट अयनांश हो गए इसमें ५५ प्रति विकला आधी विकला से अधिक होने से १ मानकर ११ के स्थान पर १२ विकला कर देने से २४।९।१२ अयनांश रखदिया।

वेधोपलब्ध अयनांश २३।४३।५५ होंगे। लग्नसाधन में अधिकांश लोग ग्रहलाघवीय अयनांश काम में लेते हैं। किन्तु, वेधोपलब्ध अयनांश मिलने पर उसेही काम में लावें।

लग्न साधन

तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांश सङ्गुणात्।
स्वोदयात्खाग्नि ३०लब्धं यत् भुक्तभोग्यंरवेःत्यजेत्१०
इष्टनाड़ीपलेभ्यश्च गत गम्यान्निजोदयात्।
शेपं खत्र्या ३० हतं भक्तमशुद्धेन लवादिकम्॥
अशुद्ध शुद्ध भे हीन युक् तनुः व्ययनांशकम्॥११॥

जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य में अयनांश जोड़ने पर सायन सूर्य होता है। लग्न का साधन दो प्रकार से होता है (१) भुक्त प्रकार (२) भोग्य प्रकार। अगर भुक्त प्रकार से लग्नसाधन करते हैं तो सूर्य के भुक्तांश को या भोग्य प्रकार से लग्न बनाते हैं तो सूर्य के भुक्तांशों को ३० अंश में घटा लेने से भोग्यांशादि बचेंगे। उन भोग्यांशादिको

सायन सूर्य राशि के स्वोदय मान से गुणा करके उस गुणनफल में ३० का भाग देने पर भागफल भुक्त या भोग्य पलात्मक फल आवेगा। तत्पश्चात् इष्ट काल के घटी पल को पलात्मक बनाकर उसमें से भुक्त काल या भोग्य काल को घटाकर शेष पलादि में से भुक्त प्रकार में गत राशि लग्नों के स्वोदय मान तथा भोग्य प्रकार में अग्रिम राशियों के स्वोदयमान जहाँ तक घट सकें-घटादेवें। जब नहीं घटे तो शेष को ३० से गुणाकर अशुद्ध राशि (जो राशि इष्ट घटी के पलों में नहीं घट सको) उस राशि के स्वोदय मान से भाग देने पर लब्ध अंशादि रूप में फल आवेगा। उसे शुद्ध राशि (इष्ट के पल में जिस राशि का स्वोदय मान घट चुका हो) संख्या में जोड़ देंगे तो भोग्य प्रकार से सायन लग्न स्पष्ट होगा। भुक्त तथा भोग्य दोनों प्रकार से एकही अशुद्ध राशि आवेगी। भुक्त प्रकार में लब्ध अंशादि रूप फल को अशुद्ध राशि संख्या में घटाने से शेष सायनलग्न होगा। इस सायन-लग्न में से अयनांश घटाने पर शेष शुद्ध निरयण लग्न होगा। विदेशों में प्रायः सायनलग्न पर से फलादेशादि कहा जाता है। भारत में कुछ लोग सायनवादी हैं।

उदाहरण—

वैक्रमाब्द २०२८ श्रावणकृष्ण १ शुक्रवार इष्टम् ११।१८ स्पष्ट सूर्यमान २।२३।२०।४१ पलभा ६।७अयनांश २४।६।१२ चरखण्ड ६१,४९,२० हैं :-

	लंकोदय –चरखण्ड –लखनऊ के स्वोदय
मेष	२७८ – ६१ = २१७
वृष	२९९ – ४९ = २५०
मिथुन	३२३ – २० = ३०३
कर्क	३२३ + २० = ३४३
सिंह	२९३ + ४९ = ३४८
कन्या	२७८ + ६१ = ३३९
तुला	२७८+ ६१ = ३३९
वृश्चिक	२९९+ ४९ = ३४८
धन	३२३+ २० = ३४३
मकर	३२३ – २० = ३०३
कुम्भ	२९९ – ४९ = २५०
मीन	२७८ – ६१ = २१७

अब स्पष्ट सूर्य २।२३।३०।४१ में अयनांश २४।९।१२ को जोड़कर सायन सूर्य बनाया तो ३।१७।३९।५३ हुआ।

यह प्रसिद्ध ही है कि ग्रहादि के दिये हुए राश्यादि स्पष्ट सूचक अंक भुक्त होते हैं अर्थात् सायन कर्क राशि के १७ अंश ३९ कला और ५३ विकला बीत गये हैं।

अगर इष्टकाल दिनमान से न्यून हो तो भोग्य प्रकार तथा इष्टकाल दिनमान से अधिक हो तो भुक्त प्रकार से लग्न साधन में सुगमता रहती हैं। यहाँ इष्ट दिनमान से न्यून है अतः भोग्य प्रकार से लग्न बनाने में सुविधा होगी। इसलिए—३० अंश=१ राशि में से भुक्तांश १७।३९।५३ को घटाया गया तो शेष भोग्यांश १२।२०।७ हुए। इनको स्वदेशीय कर्क राश्युदयमान ३४३ पल से गुण किया—

१२।२०।७ भोग्यंश
× ३४३ कर्क राश्युदयमान (स्वदेशीय)

६८६।६८६०। ४०१
३४३
४११६

४२३१।०।१ यह गुणन फल हुआ अब ४२३१ में ३० का भाग दिया तो लब्धि १४१ हुई और शेष १ बचा इसको ६० से गुणा किया और इसमें अग्रिम संख्या ० जोड़ा जाय तो ६० ही रहे। इसमें फिर ३० से भाग दिया तो लब्धि २ शेष ० रहे इसको फिर ६० से गुणा कर १ जोड़ा तो १ ही रहा इसमें ३० का भाग नहीं जावेगा अतः अब १ को ६० से गुणाकर ३० का भाग दिया तो लब्धि २ हुई और शेष शून्य बचा। ये सब मिलकर भोग्य पलादि १४१।२।०।२ हुए इनको अब इष्ट काल ११।१८ का पलात्मक बनाने पर ६७८ पलात्मक इष्ट हुए। इसमें से पूर्व सख्या को घटाया तो शेष बचा ५३६।५७।५९।५८ अब इसमें से सायन सूर्य के अग्रिम राशियों का उदय मान घटाना चाहिए तो कर्क राशि से आगे सिंह का उदय मान घटाया गया—

५३६।५७।५९।५८
—३४८

१८८।५७।५९।५८ शेष बचा। अब इसमें से कन्या का मान ३३९ पल होने से नहीं घटेगा अतः कन्या के पूर्व सिंह शुद्ध राशि और कन्या अशुद्ध राशि हुई। अब शेष १८८।५७।५९।५८ को ३० से गुणा किया किया तो ५६४०।१७१०।१७७०।१७४० हुए। इनकोसठियाया (साठ से भाग दिया) गया तो ५६६८।५९।५९।० हुआ। इसको अशुद्ध राशि के स्वदेशोदय मान ३३९ से भाग दिया तो लब्धि १६।४३।२२ हुआ। ये अंशादिक हुए हैं। इसको भोग्य प्रकार से लग्न साधन होने से शुद्ध-राशि सिंह की संख्या ५ में जोड़ दिया तो सायन लग्न ५।१६।४३।२२ हो गया। इसमें से अयनांश २४।९।१२ घटाया तो शेष ४।२२।३४।१० यह स्पष्ट निरयण लग्न हुआ।

भुक्त प्रकार से लग्नानयन

भुक्त प्रकार से भी लग्न साधन का तरीका इसी इष्टकाल से यहाँ दिखलाया जा रहा है—सायन सूर्य के भुक्तांशादि १७।३६।५३ को कर्क के उदयमान ३४३ से गुणा किया तो ५८३१।१२३४८।१८१७९ हुआ। इसको सठियाने ६०५८।५९।५९ हुए। इसमें ३० का भाग देने से २०१।५७।५९ ये भुक्त पलादि हुए। तीसरी बार ३० का भाग देने पर शेष ५९ बचे थे। ये आधे से अधिक बचे तो प्रति बिपल संख्या में १ जोड़ा तो ६० प्रतिपल अर्थात् १ विपल होगया जिसे विपल में जोड़ देने से ५८ विपल होगये अर्थात् भुक्त पलादि २०१।५७।५९ की जगह २०१।५८।० हो गए। इसको पलात्मक इष्ट ६७८ में से घटायेंगे तो शेष ४७६।२।० बचे अब इसमें से सायन सूर्य की राशि से पहले की भुक्त राशियों के स्वदेशीय राश्युदय मान (मिथुन, वृष, मेषादि) इस उलटे क्रम से घटायेंगे तो लग्न अशुद्ध आवेगा इसलिए शुद्ध लग्न लाने के लिए इस इष्टकाल को भी अहोरात्र मान ६० घटी में से घटा लेना चाहिये तब भुक्तपलादि के घटाने की तथा उससे आगे की क्रिया करनी चाहिये। अतः ६० घटी अर्थात् ३६०० पल में से इष्ट पल ६७८ घटाये तो २९२२ पल हुए। अब इसमें से २०१।५८।० ये कर्क के भुक्त पलादि घटाए। शेष २७२०।२।० बचे। इसमें मिथुन का मान ३०३ वृष का मान २५० मेष का मान २१७ मीन का मान २१७ कुम्भ २५० मकर ३०३ धनु ३४३ वृश्चिक ३४८ तुला ३३९ इनको क्रमात् घटाते गये तो शेष १५०।२ पलादि बचे। इसमें कन्या का उदयमान ३३९ नहीं घटरहा है अतः कन्या अशुद्ध राशि हुई अब शेष १५०।२ को तीस से गुणा

क: के आये हुये गुणनफल ४५०१।०।० को अशुद्ध कन्या राशि के स्वदेशोदय मान ३३९ पलसे भाग दिया तो १३।१६।३८ ये भुक्तांश कुम्भ राशि के आये। इनको अशुद्ध कन्या राशि की संख्या ६ में से घटाया तो शेष ५।१६।४३।२२ सायन लग्न हुआ इसमें से अयनांश २४।९।१२ घटाने से ४।२२।३४।१० यह स्पष्ट निरयण लग्न हुआ।

विषम परिस्थिति में कथन—

भुक्तं भोग्यं स्वेष्ट कालान्न
शुद्धयेत्त्रिंशन्निघ्नात् स्वोदयाप्तंलवाद्यम्।
हीनं युक्तं भास्करे तत्तनु
स्याद्रात्रौ लग्नं भार्द्ध युक्ताद्रवेःस्तु ॥ १२ ॥

अगर भुक्त या भोग्य पलात्मक फल अपने इष्ट काल के पलों से न घटता हो तो उस फल को ३० से गुणाकर स्वोदय राशि के मान से भाग देने पर अंशादि प्राप्त होंगे। उन्हें भुक्त प्रकार होने पर औदयिक स्पष्ट सूर्य में घटाने से तथा भोग्य प्रकार होने पर औदयिक स्पष्ट सूर्य में प्राप्त फल को जोड़ने पर लग्न स्पष्ट होगा। औदयिक सूर्य स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सायंकालिक लग्न होगा।

दशम लग्नसाधन

एवं लङ्कोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात्।
पूर्व पश्चान्नतादन्यत्प्राग्वत्तद्दशमं भवेत् ॥१३॥

जैसे प्रथमलग्न का स्वदेश के उदयमानों पर से साधन किया जाता है, उसी प्रकार दशमलग्न भी लङ्कोदयमानों पर से बनता है। इसमें इष्टकाल के घटी पलादि की जगह नतकाल की घड़ियों और पलों को ग्रहण करते हैं। यदि पूर्वनत हो तो भुक्त प्रकार से और परनत हो तो भोग्य प्रकार से क्रिया करने पर सुगमता होती है। लग्न साधन की तरह ही से सब क्रियायें करने से दशमलग्न साधित होता है।

दशमलग्न के आवश्यक उपकरण

(१) सायन सूर्य (२) लङ्कोदयमान (३) नतकाल। सायनसूर्य और लङ्कोदय पहले बताया जा चुका है। अब नत साधन बतलाया जाता है।

नीलकण्ठोक्त नत साधन प्रकार

पूर्वंनतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं
दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ।
दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं
द्युरात्रि खण्डं त्वपरं नतं स्यात् ॥१४॥

दिनार्ध (दिनमान के आधे) से कम (पहले) का इष्ट काल हो तो दिनाध में से इष्ट काल को घटाने से दिवा पूर्वंनत होता है। दिनार्ध के बाद (दिनार्ध से अधिक) का इष्ट काल हो तो इष्ट में से दिनार्धं घटाने से दिवा परनत होता है। इसी प्रकार रात्र्यर्धं (रात्रिमान का आधा भाग) से रात्रिगत इष्ट (सूर्योदयादिष्ट में दिनमान घटाने पर रात्रिगत इष्ट होता है) कम हो तो रात्र्यर्ध में से रात्रिगत इष्ट घटाने पर रात्रि में पूर्वंनत होता है। यदि रात्र्यर्ध से रात्रिगत इष्ट अधिक हो तो रात्रिगत इष्ट में से रात्र्यर्धं घटाने से शेष रात्रिगत पश्चिम (पर) नत होता है। यहाँ इस श्लोक के अनुसार दशम साधन में बड़ी सजगता की जरूरत रहती है क्योंकि; पूर्वंनत काल होने पर लंकोदयमान से भुक्तप्रकार की पूर्वकथित लग्नसाधन विधि से नत को इष्ट मानकर साधितलग्न दशमलग्न तथा पश्चिमनत होने पर भोग्यप्रकार से साधित लग्न दशम लग्न होगा। मध्यरात्रि या उसके आसपास का इष्ट होने पर चतुर्थंलग्न का साधन जल्दी होता है और चतुर्थं भाव में छः राशि जोड़ने पर दशम होजायगा। मेषादि छः राशियों में जन्मलग्न हो तो वह प्रायः दशम राशि से ३ राशियों से अधिक अन्तर पर तथा तुलादि छः राशियों में प्रथम (जन्म) लग्न हो तो वह दशम भाव की राशि से ३ राशियों के भीतर में होता है। उपर्युक्त प्रकार से रात्रिगत इष्ट से रात्रिगत नत बनाया गया हो तो सूर्य की राशि में ६ जोड़कर सायनसूर्य बनाकर क्रिया करने से सुगमता रहेगी।

अन्य मतसे नत साधन—

मध्यरात्रि से मध्यान्ह तक पूर्वकपाल कहलाता है और मध्यदिन से मध्यरात्रितक पश्चिमकपाल कहलाता है। मध्यान्ह में सूर्य परमोन्नत अवस्था में रहता है अतः उससमय नत० शून्य होता है अतः नताभाव में दिनार्ध को ही इष्टकाल मानकर लङ्कोदय से

मध्यलग्न साधित होगा। यह तात्कालिक स्पष्ट सूर्यके बराबर ही होगा। मध्यरात्रि में नत परनत हो जाता है जो दिनार्ध+रात्र्यर्ध के बराबर होता है। उससमय का मध्यलग्न सूर्य में छः राशि जोड़ने के बराबर होगा। प्रथमलग्न राशि से गिनने पर ठीक दशवींराशि दशमभाव में शायद (सायन मेषादि या तुलादिराशिलग्न होनेपर) कभी २ और कहीं २ ही होती है। पूर्वकथित (नीलकण्ठोक्त) तरीके के अलावा नत साधन के सुगम प्रकार निम्न हैं—

(१) दिनोदय से दिनार्धतक के इष्ट में इष्ट को दिनार्ध में से घटाने से पूर्वनत, होगा। जैसे इष्ट ३।० और दिनार्ध १३।० है। यहाँ १३ ०–३।० = १० घटी पूर्वनत होगया। (२) दिनार्ध से सूर्यास्त तक के इष्ट काल में नतसाधन के लिए दिनमान में से इष्ट को घटाकर दिन शेष बनावें और फिर इस दिन शेष को दिनार्ध में से घटादें तो पश्चिमनत होगा। जसे:—दिनमान २६।० इष्ट २ ० और दिनार्ध १३।० है यहाँ दिनमान २६ ० में से इष्ट २०।० का घटाया तो २६।०–२०।० = ६।० दिन शेष रहा इसको दिनार्ध १३।० में से घटाया तो १३ ०–६।० ७।० घटी पश्चिम नत हुआ।

याम्योत्तर सूत्रसे सूर्य जितनो दूर पर लटका रहता है वही क्रम से पूर्व और पश्चिम नत होता है।

(३) अगर किसी का सूर्यास्त से मध्यरात्रि के भीतर का इष्ट हो तो दिनार्ध में रात्रि गत को जोड़ देने से पश्चिम नत होगा। जैसे इष्ट २८।० है और दिनर्ध १३।० है। यहाँ २८।० इष्ट में से दिनमान २६।० घटाने पर २।० घटी रात्रिगत काल हुआ। इसको दिनार्ध १३।० में जोड़दिया गया तो १३।० + २।० = १५।० पश्चिम नत हो गया। इसी प्रकार मध्य रात्रि से सूर्योदय के पूर्वकाल तक का नतसाधन करने में इष्ट काल को ६० घटी (अहोरात्र मान) में से घटाकर जो रात्रि शेष काल हुआ उसको दिनार्ध में जोड़ने से पूर्वनत होता है। जैसे इष्टकाल ५६ घटी है इसको अहोरात्र मान ६० घटी में से घटाया तो ६०–५६ = ४ घटी रात्रिकाल शेष हुआ। इसको दिनार्ध १३ में जोड़ा तो १३+४ = १७ घटी यह पूर्वनत होगया।

दशम साधन का उदाहरण

जैसे :—दिनमान ३३।१० इष्ट ११।१८ सायन सूर्य ३।१७।३९।५३ और अयनांश २४।९१२ हैं। दिनमान में २ का भाग देने पर

१६।३५ दिनार्ध है। अब यहाँ नियम (१) अनुसार दिनार्ध में से इष्ट घटाने से १६।३५—११।१८=५।१७ घट्यादि पूर्वनत हुआ। यहाँ पूर्वनत होने से भुक्त प्रकार से लग्न की तरह दशम साधन होगा। सूर्य के भुक्तांशादि १७।३६।५२ हैं इनको सायन सूर्य कर्क के लङ्कोदयमान ३२३ से गुणा किया—

१७।३६।५२
× ३२३
५४९१ १२५९७ ।३७ ११९

इसको सठियाने से ५७०५।४२।१९ हुआ। इसमें ३० से भाग देने पर १९०।११।२५ हुआ। अब इसको नत घटी ५।१७ के पल बनाकर उसमें से घटाया गया तो ३१७—१९०।११।२५=१२६।४८।३५ शेष बचे। इसमें से मिथुन का मान ३२३ नहीं घटा अतः मिथुन अशुद्ध राशि है। अब १२६।४८।३५ को ३० से गुणा किया तो ३७८०। १४४०।१०५० हुए। इनको सठियाया गया तो ३८०४।१७।३० हुआ इस गुणनफल में अशुद्ध राशि मिथुन के मान से भाग दियागया तो ३८०४।१७।३०÷३२३=११।४६।४० ये मिथुन के भुक्तांश हुए इनको अशुद्ध मिथुन की राशि संख्या ३ में से घटाया तो शेष २।१८।१३।२० यह सायन दशम स्पष्ट हुआ। इसमें से अयनांश २४।९।१२ घटाया गया तो शेष १।२४।४।८ यह निरयण दशम भाव स्पष्ट हुआ। जिस प्रकार सारणियों पर से लग्न साधन होता है उसी प्रकार दशम भाव साधन की भी सारणियाँ हैं भारतीय ज्योतिष (श्री नेमिचन्द्र जी जैन कृत) ग्रंथ में लग्न पर से दशम स्पष्ट की सरलतम सारणी दी हुई है। पाठक लाभ उठा सकते हैं।

द्वादशभाव साधन—

सषट्कलग्नखे जायातुर्यौ लग्नोनतुर्यतः।
षष्ठांशयुक्तनुः संधिरग्रे षष्ठांश योजनात् ॥१५॥
त्रयः ससन्धयोभावाः षष्ठांशो नैकयुक्खुखात्।
अग्रेत्रयः षडेवं ते भार्द्धयुक्ताः परेऽपिषट् ॥१६॥

लग्न या प्रथमभाव स्पष्ट में छः राशि जोड़ने पर सप्तमभाव और दशमभाव में छः राशि जोड़ने पर चतुर्थभाव होता है। चतुर्थभाव स्पष्ट में से लग्न स्पष्ट को घटानेपर जो शेष राश्यादि बचें उनको छः से भाग देकर जो लब्धि अंशादि के रूप में आती है। उसे षष्ठांश कहते हैं। इस षष्ठांश को लग्न में जोड़ने से लग्नसंधि और इस लग्नसंधि में पुनः षष्ठांश जोड़ने से धनभाव तथा धनभाव में पुनः षष्ठांश जोड़ने से धनभाव संधि तथा धनभाव संधिमें षष्ठांश युक्त करने से तृतीयभाव पुनः तृतीय भाव में षष्ठांश युक्त करने से तृतीय की संधि होती है और इस तृतीय की संधि में षष्ठांश जोड़ने से चतुर्थभाव स्पष्ट होगा। अब चतुर्थभाव से आगे षष्ठभाव की संधि पर्यन्त स्पष्ट क्रिया के लिए ३० अंश में से पूर्वागत षष्ठांश को घटाने पर जो शेष बचेगा उसे जोड़ते जाने से चतुर्थ से आगे संधि एवं भावों का स्पष्ट होगा। जैसे चतुर्थभाव स्पष्ट में इस संख्या को जोड़ने से चतुर्थभाव संधि तथा चतुर्थभाव संधि में जोड़ने से पंचम भाव तथा पञ्चमभाव में जोड़ने से उसकी संधि और पंचमभाव संधि में जोड़ने से षष्ठभाव तथा षष्ठभाव में जोड़ने से उसकी संधि होगी इस प्रकार ससन्धि छः भाव बन जाने पर प्रत्येक भाव और उसकी सन्धि में छः राशियाँ जोड़ते जाने से उससे अग्रिम ७ भाव सन्धि सहित हो जावेंगे इस प्रकार १२ भाव ससन्धि स्पष्ट होंगे।

उदाहरण

हमारा लग्न (तनु) भाव स्पष्ट ४।२२।३४।१० है। और दशम भाव स्पष्ट १।२४।४।८ है।

प्रथम भाव स्पष्ट ४।२२।३४।१० + ६।०।०।०

सप्तम भाव स्पष्ट = १०।२२।३४।१० हुआ।

इसी प्रकार दशम भाव १।२४।४।८

\+ ६।०।०।०

चतुर्थ भाव स्पष्ट = ७।२४।४।८ हुआ।

इस चतुर्थ भावमें से— ४।२२।३४।१० लग्न को घटाया

= ३।१।२९।५८ शेष बचा।

इसमें छः से भाग दिया

६) ३ । १ । २९ । ५८ (०।१५।१४।५९।४०
×३०
६) ९१ (१५
९०
१×६०+२९=८९
६) ८९ (१४
६
२९
२४
५
×६०
३००
+५८
६) ३५८ (५९
३०
५८
५४
४×६ =२४०
६) २४० (४०
२४०

सा ०।१५।१४।५९।४० यह षष्ठांश हुआ। अब इसको लग्न में जोड़ा

तो ४।२२।३४।१०।० प्रथम भाव
+०।१५।१४।५९।४० षष्ठांश
=५।७।४९।९।४० प्रथमभाव संधि
+०।१५।१४।५९।४०
५।२३।४।९।२० द्वितीय भाव
+०।१५।१४।५९।४०
६।८।१९।९।० द्वितीयभाव सन्धि
+०।१५।१४।५९।४०
=६।२३।३४।८।४० तृतीयभाव
+०।१५।१४।५९।४०
=७।८।४९।८।२० तृतीयभाव सन्धि
+०।१५।१४।५९।४०
७।२४।४।८।० चतुर्थभाव

अब चतुर्थभाव से आगे स्पष्ट करने के लिए षष्ठांश को १ राशि (३० अंश) में से घटाकर शेष जोड़ना पड़ता है। ऐसा करने पर ३०।०।०।०—१५।१४।५९।४० = १४।४५।०।२० इतना हुआ।

इसको ७।२४।४।८० चतुर्थभाव में जोड़ा
+०।१४।४५।०।२०
८।८।४९।८।२० चतुर्थभाव सन्धि
+।१४।४५।०।२०
८।२३।३४।८।४० पंचम भाव
+१४।४५।०।२०
९।८।१९।९।० पंचमभाव संधि
+१४।४५।०।२०
९।२३।४।९।२० षष्ठभाव
+१४।४५।०।२०
१०।७।४९।९।४० षष्ठभावसन्धि

इस प्रकार प्रथम (तनु) भाव से लेकर संधियों समेत छः भाव स्पष्ट हो गये। इनमें प्रत्येक भाव और उसकी संधियों में सिर्फ छः राशि जोड़ने पर सप्तमभाव से लेकर संधि सहित द्वादश भाव तक स्पष्ट होजावेगा।

प्रथम भाव+६ राशि=सप्तम भाव

प्रथम भाव सन्धि+६ राशि=सप्तमभाव सन्धि

द्वितीय भाव +६ राशि=अष्टम भाव

द्वितीय भाव सन्धि+६ राशि = अष्टम भाव सन्धि

तृतीय भाव +६ राशि=नवमभाव

तृतीय भाव सन्धि +६ राशि=नवमभाव सन्धि

चतुर्थ भाव +६ राशि दशम भाव

चतुर्थ भाव सन्धि +६ राशि =दशम भाव सन्धि

पंचम भाव सन्धि +६ राशि = एकादश भाव

पंचम भाव सन्धि +६ राशि = एकादश भाव सन्धि

षष्ठ भाव +६ राशि=द्वादशभाव

षष्ठ भाव सन्धि +६ राशि=द्वादश भाव सन्धि

१२ भावों के नाम

लग्न से लेकर १२ भावों की क्रमशः तनु, धन, सहज, सुख, सुत, रिपु, जाया, मृत्यु, भाग्य कर्म, आय और व्यय संज्ञा होती है।

ससंधयोद्वादश भावाः

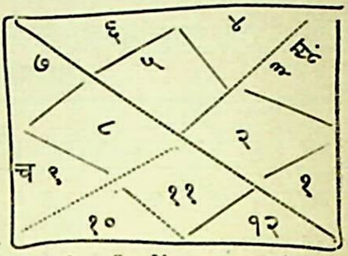
भावाः	तनु.	सं.	धन	स.	सहज	सं.	सुख	सं	पं.	सं	ष	सं.
रा.	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०
अं.	२२	७	२३	८	२३	८	२४	८	२३	८	२३	७
क.	३४	१९	४	१९	३४	४९	४	१९	३४	१९	४	४९
वि.	१०	९	९	८	८	८	८	८	८	९	९	९
प्र. वि.	०	४०	२०	०	४०	२०	०	२०	४०	०	२०	४०

भावाः	जाया	सं	आयु	स.	भाग्य	सं	कर्म	सं.	लाभ	सं.	व्यय	सं.
रा.	१०	११	११	०	०	१	१	२	२	३	३	४
अ.	२२	७	३	८	२३	८	२४	८	२३	८	२३	७
क.	३४	४९	४	१९	३४	४९	४	४९	३४	१९	४	४९
वि.	१०	९	९	९	८	८	८	८	८	९	९	९
प्र. वि.	०	४०	२०	०	४	२०	०	२०	४०	०	२०	४०

चलित कुण्डली में ग्रहन्यास

चलित चक्र में हम देखते हैं कि प्रत्येक भाव दो संधियों के बीच में पड़ते हैं यथा तनुभाव से पहिले व्ययभाव की सन्धि एवं आगे तनुभाव की सन्धि है। इसमें व्ययभाव की सन्धि गतसन्धि और तनुभाव की सन्धि एष्य (आनेवाली) सन्धि कहलाती है। अगर ग्रह की स्पष्टी गत सन्धि से न्यून हो तो ग्रह गत सन्धि में होकर पूर्वभाव का फल देगा अर्थात् चलित चक्र में सन्धि स्थान न होतो पूर्व भावमें उसे रखें तो कोई हर्ज नहीं है। अगर ग्रह की स्पष्टी एष्य सन्धि से अधिक हो तो आगे वाली सन्धि में होगा और वह आगेवाले भाव का फल देगा। उसे अगर चक्र में सन्धि स्थान न हो तो एष्य सन्धि या आगे वाले भावमें भी रख सकते हैं। गत सन्धि से अधिक और भाव के मध्य में रहने वाला ग्रह उसी भाव में रहेगा।

चलित चक्रमिदम्



उदाहरण—जैसे सूर्य २।२३।३०।४१ है। यह कर्म भाव की संधि स्पष्टसे अधिक और लाभभाव स्पष्टसे न्यून है अतः लाभभाव में सूर्य का न्यास हुआ। चन्द्रस्पष्ट९।१।५२।२८है यह पंचमभाव स्पष्ट से अधिक और पंचम भाव की संधि से न्यून है अतः पचम की संधि में चन्द्रमा होगा।

चलितचक्र का उपयोग

चलित चक्र की ग्रह स्थिति का उल्लेख सिर्फ दशाफल और रोग एव अरिष्ट विचार में कहीं २ फलित ग्रन्थों में मिलता है। योग विचार में जन्म लग्न कुण्डली का ही उपयोग होता है। पुराने समय से आज तक दैवज्ञ वर्ग फलादेश में जन्माङ्गचक्र की ही ग्रह स्थिति को प्रधान मानते हैं। चलित चक्र से सिर्फ ग्रह का बलाबल मात्र देखते हैं। अर्थात् भाव में ग्रह पूर्णफल और संधि में अल्पफल देता है आदि।

विंशोत्तरी महादशा

सूर्यचन्द्रकुजराहुगीष्पतिः
मन्दसौम्य शिखिभार्गवस्तथा।
वन्हिभात् क्रमशः दशाधिपाः
नखयुक्त शतायुसंज्ञके ॥१७॥

विंशोत्तरी दशा में सूर्य, चन्द्र, मङ्गल; राहु बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र ये क्रमशः कृत्तिका नक्षत्र से गिनने पर दशाओं के स्वामी होते हैं। जैसे—कृत्तिका जन्मनक्षत्र हो तो बालक का जन्म सूर्यकी दशामें, रोहिणी में होतो चन्द्र दशा, मृगशिरा में भौम की दशा आदि।

दशाजानने की रीति

कृत्तिकातः समारभ्य गणयेज्जन्मभावधिम्।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषे ज्ञेयो दशाधिपः ॥१८॥

कृत्तिका से जन्म नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने पर जो संख्या शेष बचे उसे सूर्य, चन्द्र, कुज० (१७ वें श्लोक) के अनुसार संख्या से दशा का स्वामी समझें।

दशाओं के वर्ष

षड्वत्सराणि सूर्यस्य चन्द्रस्यदशवत्सराः।
सप्तवर्षाणि भौमस्य राहोरष्टादशस्तथा ॥ १९ ॥
गुरो षोडशवर्षाणि सौरेरेकोनविंशतिः।
सौम्ये सप्तदशाब्दानि केतोस्सप्त समाःस्मृताः ॥२०॥
शुक्रस्य विंशतिः प्रोक्ताःसमाः विंशोत्तरी मते ॥

विंशोत्तरी मत से सूर्य की महादशा छः वर्ष चन्द्र की १० वर्ष भौम की ७ वर्ष, राहु की १८ वर्ष, गुरु की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष बुध की १७ वर्ष, केतु की ७ वर्ष तथा शुक्र की महादशा २० वर्ष की होती है।

महादशा का भुक्तभोग्य साधन

दशामानं भयातघ्नं भभोगेन विभाजितम्।
लब्धं वर्षादिकं ज्ञेयं मासाद्यापि तदग्रतः ॥२१॥

पलात्मक भयात को महादशा की वर्ष संख्या से गुणा करके उस गुणनफल से पलात्मक भभोग का भाग देने पर भागफल दशा के भुक्त वर्ष आवेंगे। फिर शेष को १२ से गुणा करके भभोग का

भाग देने से लब्धि भुक्त मास और इसके शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग देने पर लब्धि भुक्त दिन तथा शेष को ६० से गुणाकर पुनः भभोग से भाग देने पर लब्धि भुक्त (कला घटी) होंगी और फिर शेष को ६० से गुणा कर पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्धि भुक्त विकला होंगी। इनको जिस ग्रह की महदशा में जातक का जन्म हो उसके सम्पूर्ण वर्ष मान में से घटाने पर दशा के भोग्य वर्षादि आवेंगे।

जैसे - किसी का जन्मनक्षत्र उत्तराषाढ़ा है। भयात २२।५४ और भभोग ५८।३६ है। पूर्वोक्त श्लोक के अनुसार कृत्तिका से गिनने पर उत्तराषाढ़ा की संख्या १९ हुई। इसमें ९ का भाग देने पर शेष १ हुआ। अतः जन्मकाल में सूर्यकी महादशा हुई। जिसके दशा वर्ष ६ होते हैं अब पलात्मक भयात १३७४ को ६ से गुणा किया तो १३७४ ×६=८२४४ हुए इसमें पलात्मक भभोग ३५१६ से भागदिया तो लब्धि २ वर्ष हुए। शेष १२१२ को १२ से गुणाकिया तो १४५४४ हुआ। इसको पुनः ३५१६ भभोग से भागदिया तो लब्धि ४ मास हुए। पुनः शेष ४८८ को ३० से गुणा करनेपर गुणनफल १४६४० में ३५१६ भभोग का भागदिया तो भागफल ४ दिन और शेष ४८४ को फिर ६० से गुणाकर गुणनफल २५०४० में ३५१६ भागदेने से लब्धि ९ घटी होंगी। शेष ३३९६ को पुनः ६० से गुणाकरके गुणनफल २०१९६० में ३५१३ से भागदेने से लब्धि ५७ विघटी (पल) होंगे। ये २।४।४।९।५७ भुक्त वर्षादि हैं इनको दशा के कुल ६ वर्ष में से घटाया गया तो शेष ३।७।२५।५०।३ भोग्य वर्षादि हुए। इन्हीं भोग्य वर्षादिकों को दशा चक्रमें लिखा जाता है। इन भोग्य वर्षादिकों को अपने जन्म संवत् और सूर्य स्पष्ट में जोड़ देने से जन्मदशा का स्पष्ट भोगकाल मालुम होगा। उसमें आगे के दशाओं के वर्ष जोड़ने से सभी दशाओं का भोगकाल संवत् और सौर संक्रान्ति के राशि और अंशों में मालुम होगा।

विंशोत्तरी महादशा चक्रम्

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु
व.	३	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
मा.	७								
दि	२५								
घ	५०								
प	३								
संवत्	संवत्	संवत्	संवत्	संवत्	संवत्	सं०	सं०	सं०	सं०
२०२८	२०३१	२०४१	२०४८	२०६६	२०८२	२१०१	२११८	२१२[illegible]	२१४५
सू.	सू.	सू.	सू	सू	सू.	सू	सू.	सू.	सू
२	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
२३	१६	१९	१६	१९	१९	१६	१९	१९	१९
३०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
४१	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४

अन्तर्दशा जानने का प्रकार

प्रत्येक ग्रह की महादशा में नवों ग्रहों का भोग होता हैं। उसे अन्तर्दशा काल कहते हैं। इसके ज्ञान हेतु, विंशोत्तरी मत से महादशाओं में अन्तर्दशाऐं, शीर्षक सारिणी पृ. ३८१ पर दीगई है। फिर भी यहाँ उसे गणित के द्वारा जानने का तरीका दे रहे हैं—

दशा दशाहताः मासाश्चैक स्थानं विना परे ।
एक स्थानं त्रिगुणितं दिनान्यन्तर्दशाक्रमः ॥२२॥

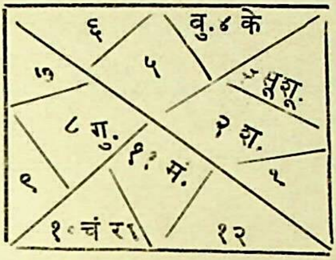
जिस किस ग्रह की महादशा में जिस ग्रह की अन्तर्दशा जाननी हो उन दोनों के दशा वर्षों को परस्पर गुणा करें। गुणनफल में ईकाई के अंक को ३ से गुणा करदें तो दिन एव शेष दहाई और सैकड़ा के स्थान वाले अंक तुल्य मास होंगे। जैसे—सूर्य महादशा में मङ्गल का अन्तर्दशा काल जानना हो तो सूयदशा वर्ष ६ तथा भौम दशावर्ष ७ को गुणाकरने पर ४२ हुआ। इसमें ईकाई का अंक २ है इसको ३ से गुणाकरने पर ६ दिन हुए तथा दहाई स्थानीय अंक मास होगा। अर्थात् सूर्य महादशा में मंगल की अन्तर्दशा ४ मास ६ दिन होगी।

जन्मपत्र लेखन प्रकार

स्वस्ति श्रीमन्नृपतिवरवीरविक्रमार्क राज्याऽऽरोहण कालादतीताब्दवृन्देषु २०२८ तज्जेता श्रीमच्छालिवाहन शकाख्यवत्सरेषु १८९३ सौम्यायने सौम्यगोले च ग्रीष्मर्त्तौ मासोत्तमे श्रावण मासे कृष्णपक्षे १ प्रतिपदि तिथौ शुक्रवासरे २२।५७ उत्तराषाढ़ाभे ४७।० वैधृतियोगे ३४।१९ सामयिके कौलवकरणे ६३।५७ एव पञ्चाङ्गे तत्र दिवामानम् ३३।१० रात्रिमानम् २६।५० अहोरात्रमानम् ६०।० श्रीसूर्योदया दिष्टम् ११।१८ भयातम् २२।५४ भभोगः ५८।३६ स्पष्टसूर्यमानम् ?।२३।२०।४१ स्पष्ट लग्नमानम् ?।२२।३४।१० स्पष्ट भावलग्नम् ५।११।७।५७ आंग्लमानेन दिनांक ९ जुलाई सन् १९७१ ई० प्रातः काले भारतीय स्टै. टा. १० घं० वादनो परि लखनऊ नगरे विप्रकुलभूषण पूज्य प० श्रीवेणीमाधवजी उपाध्याय तत्पुत्र श्री माननीय पं० चुन्नीलालजी उपाध्याय गृहे तदीया पाणिगृहीतो धर्मभार्या स्वदक्ष कुक्षौ उभय कुलानन्ददायिनं पुत्ररत्नं प्रसुवे ॥ स च देवद्विजाऽऽशीर्वचसा दीर्घमायुरस्तु ॥ अथाऽऽस्यार्भकस्य उत्तराषाढ़ाभस्य द्वितीय पादे जनिवशाज्जन्म नाम 'भो' अक्षरोपरि चि भोलानाथ उपाध्यायः तदनुसारं जन्म राशि मकरः तदीशो मन्दः वेश्य वर्णः चतुष्पद वश्यः नकुलं

योनिः मनुष्यगणः अन्त्यानाड़ी मूषक वर्गः इति सकल शुभकर्मादौ विचार्यम् ॥

॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥



A.M. और P.M. का अर्थ

आजकल प्रायः जन्म समय के बाद ए० एम० या पी० एम० लिखा रहता है। 'A. M. का प्रयोग अर्ध रात्रि में ० बजने के बाद से दिन के १२ बजे तक के समय सूचनार्थ तथा P. M. का प्रयोग दिन में १२ बजे के बाद से रात्रि १२ बजे तक के समय ज्ञान हेतु होता है।

फलित विचार

अब जन्म पत्रिका तैयार होने के बाद उसके शुभाशुभ फल जानने के लिए कुछ उपयोगी फलित के सूत्र यहाँ दिये जा रहे हैं।

सद्याजातस्यविचारणीयाः

गंडांतेंद्रभशूल पात परिघ व्याघात गंडावमे
संक्रांति व्यतिपात वैधृति सिनीवाली कुहू दर्शके।
वज्रे कृष्ण चतुर्दशासु यमघंटे दग्धयोगे मृतौ
विष्टौ सोदरभेजननं पितृभे शस्ताशुभा शांततः२३

बालक के पैदा होने पर ज्योतिषी को सर्वप्रथम पञ्चाङ्ग खोलकर देखना चाहिए कि बालक गण्डान्त (तिथि, लग्न और नक्षत्र सम्बन्धी) ज्येष्ठा नक्षत्र शूल, पात, परिघ, व्याघात गण्ड, अवम

(तिथि, नक्षत्र, योगादि क्षयदिन) संक्रान्ति व्यतिपात, वैधृति और अमावस्या, वज्रयोग, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, यमघण्ट, दग्धयोग, मृत्यु योग, भद्रा तथा सोदर भाई, पिता और माता के जन्म-नक्षत्रों में तो पैदा नहीं हैं ? अगर इनमे बालक पैदा हो तो वह शांति करने से ही दीर्घायु और परिवार के लिए शुभ होता है ।

इनकी शान्ति विधि बृहत्पाराशरहोरा, संस्कार दीपक, शांति-प्रकाश, शान्ति मयूख, शान्तिसार आदि ग्रन्थों में एवं मुहूर्त चिन्ता-मणि की पीयूषधारा टीका एवं मुहूर्त चिन्तामणि की प्रमिताक्षरा टीकाओं में वर्णित है ।

इसके अतिरिक्त ज्योतिश्चन्द्रार्क में एक ही गाँव में एकही सगोत्र कुल में ७ दिन के भीतर २ बालक पैदा हों तथा यम दंष्ट्रा योग (तुला के सूर्य में ० अंश से १२ अंश तक) में पैदा बालक की भी शान्ति करनी चाहिए ऐसा कहा हैं ।

मूल और आश्लेषा जननफल

आद्ये पिता नाशमुपैति मूले
पादे द्वितीयेजननी तृतीये ।
भ्राता विपद्येत तथा चतुर्थे
सर्वत्रसत्स्यादहिभे विलोमम् ।।२४।।

मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न बालक अपने पिता का, द्वितीय चरण में माता और तीसरे चरण में भाई का नाशक होता है तथा मूलका चतुर्थ चरण सर्वत्र शुभ होता है । आश्लेषा में इसके विपरीत फल होता है । जैसे आश्लेषा का १ चरण शुभ, द्वितीय चरण भाई को कष्ट तीसरा माता को और चौथा पिता को कष्ट प्रद होगा ।

त्रिविध गण्ड

नन्दिकायास्तिथेरादौ पूर्णानां च तथान्तिमे ।
घटिकैका शुभे त्याज्या तिथिगण्डोऽयमुच्यते २५

नन्दा (पृ० १९) तिथि के प्रारम्भ और पूर्णातिथि के अन्तको १-१ घड़ी शुभकार्यों (बालक के जन्मादि) में त्याज्य है। ये तिथिगण्ड कहलाती हैं।

लग्न गण्ड

मीन वृश्चिक कर्कान्ते घटिकार्धं परित्यजेत्।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्धकम् ॥२६॥

मीन, वृश्चिक तथा कर्क लग्न के अन्त की आधीघड़ी तथा मेष सिंह और धनु लग्नके प्रारम्भ की आधी घड़ी लग्न गंड कहलाता है। ये भी शुभकार्य और जन्म में निन्द्य हैं।

नक्षत्र गण्ड

ज्येष्ठाश्लेषा रेवतीनामन्त्ये च घटिकाद्वयम्।
आदौ मूलमघाश्वीनां भगण्डो घटिकाद्वयम् ।२७।

नक्षत्रोंमें ज्येष्ठा, श्लेषा और रेवती के अन्तको २ घड़ियाँ तथा मूल, मघा और अश्विनी के आरम्भ को २ घड़ियाँ नक्षत्रगंड कहलाती हैं। ये भी पूर्ववत् जन्म और शुभकार्यों में अशुभ होता हैं।

ज्येष्ठा जननफल

ज्येष्ठाऽद्येऽग्रजं हन्ति द्वितीये चरणेऽनुजम्।
तृतीये मातरं हन्ति स्वयमेवं तुरीयके ॥२७॥

ज्येष्ठा नक्षत्र का प्रथमचरण बड़े भाई को, द्वितीय चरण छोटे भाई को, तृतीय चरण माता को तथा चौथा चरण स्वयं जातक को मृत्यु तुल्य कष्ट दायक होता है।

पारिवारिकजनों को नेष्ट योग

चित्राद्यर्द्धे पुष्यमध्ये द्विपादे
पूर्वाषाढ़ा धिष्ण्यपाद तृतीये।
जातः पुत्रश्चोत्तरार्धे विधत्ते
माता पित्रोर्भ्रातरं बाल नाशम् ॥२८॥

चित्रा का पहला और दूसरा, पुष्य का दूसरा और तीसरा, पूर्वाषाढ़ा का तीसरा चरण और उत्तराषाढा का आद्य चरण, क्रमशः माता पिता, भाई और स्वयं बालक का नाश करने वाले होते हैं।

द्वितीय प्रकार

सूर्यात्तातस्य नवमश्चन्द्रान्मातुश्चतुर्थकः।
भौमाद्भ्रातुस्तृतीयो ज्ञाच्चतुर्थो मातुलस्य च २०
पुत्रस्य पंचमो जीवान्भृगो सप्तमकः स्त्रियः।
क्रूरखगोऽरिष्टकरो शनेः मृत्युप्रदोऽष्टमः ॥३०॥

यदि बालक का जन्म कुण्डली में सूर्य से नौवें पापग्रह होतो पिता को इसी प्रकार चन्द्रमा से ४ थे माता को, मंगल से तीसरे भाई को, बुध से ४ थे मामा को, गुरु से ५ वें पुत्र को शुक्र से ७ वें स्त्री को और शनि से ८ वें क्रूर ग्रह बैठा हो तो स्वयं की आयु के लिए अनिष्टकारक होगा।

तृतीय प्रकार

दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञितौ
शनैश्चरेन्दू निशि तद्विपर्ययः।
पितृव्यमातृस्वसृसंज्ञितौ च
तावथौजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ ॥३२॥

जातक का दिन में जन्म होतो सूर्य पिता, शुक्र माता और रात्रिका जन्म होतो शनि पिता, चन्द्रमा माता दिन के जन्म में शनि पितृव्य (चाचा) और चन्द्रमा मौसी (मांकी बहिन। और रात्रिके जन्म में सूर्य चाचा और शुक्र मौसी के विषय में सुखासुख के सूचक होते हैं। इसको जानने का प्रकार यह है कि दिन के जन्म में सूर्य विषम राशियों (मेष, मिथुन, सिंह तुला, धनु और कुंभ) में पिता को शुभ तथा रात्रि के जन्म में चाचा को शुभ, शुक्र दिन

के जन्म में सम (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मकर और मीन) राशियों में माता को शुभ और रात्र में मौसी को शुभ तथा शनि रात्रि के जन्म में विषम राशियों में पिता को शुभ, दिन में चाचा को शुभ, चन्द्रमा रात्रि के जन्म में सम राशियों में माता को शुभ और दिन में मौसी को होते हैं तथा इसके विपरीत रहने पर अशुभ फलदायक होते हैं।

त्रिखल विचार

सुतत्रये सुता चेत्स्यात् तत्त्रये वा सुतो यदि।
मातापित्रोः कुलस्यापि तदानिष्टं महद्भवेत् ॥३३॥
तत्र शान्तिं प्रकुर्वीत वित्तशाठ्य विवर्जितः।

अगर लगातार ३ लड़के पैदा होकर फिर कन्या हो अथवा ३ लड़कियों पर लड़का हो तो उसे त्रीतर कहते हैं। यह त्रीतर लड़का या लड़की माता पिता या कुल के लिए महान् अनिष्ट कारी होता है। इसकी शान्ति होनी चाहिए।

तद्वत्सदन्तजातस्य पादजातस्तथैव च।
अकाल प्रसवेचापि विकृतः प्रसवेऽपि च ॥३४॥
प्रथमं दन्तनिर्मुक्तिरूर्ध्वं बालस्य चेद्भवेत्।
क्लेशाय मातुलस्येह तदा प्रोक्तामनीषिभिः ॥३५॥

इसी प्रकार जो बालक दाँत सहित पैदा हो, पैरों की ओर से पैदा हो, अकाल (समय से पूर्व ही) पैदा होगया हो अथवा विकृत अनेक बाहु, मुख पश्वादिकी आकृति वाला) रूप में पैदा हो तो उसकी भी शान्त होती है। अगर बच्चे के पहिले ऊपर की पंक्ति में दाँत निकलें तो वह अपने मामा के लिए कष्ट कारक होता है।

पायाविचार

राजस्थान, हरियाणा, नेपालादि देशों में बालक के पैदा होने पर पाया पूछा जाता है। शेखावाटी में पाये का विचार जन्मलग्न से चन्द्रमा की स्थिति देखकर इसश्लोक से करते हैं—

चन्द्रमा से पादविचार

जन्माङ्गरुद्रेषुसुवर्णपादं
द्विपञ्चनन्दैः रजतं पदः स्युः ।
त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं सदा स्यात्
लोहं च रिष्फाष्टचतुर्थ संस्थे ॥३६॥

जन्म लग्न से चन्द्रमा १, ६, ११वें स्थान में हो तो सुवर्णपाद २, ५, ९वें हो तो रजतपाद, ३, ७, १० वें हो तो ताम्रपाद और, ४, ८, १२, वें हो तो लोहे का पाया होता है।

जोधपुर और बीकानेरादि देशोंके लोग नक्षत्र से पादविचार करते हैं। इसविषय में दो विभिन्न श्लोक मिलते हैं।

नक्षत्र से पादविचार

आर्द्राद्वादशरूपाणि ज्येष्ठासप्तसुवर्णकम् ।
पूभादौ पञ्चताम्राणि कृत्तिकात्रयलोहकम् ॥३७॥

बच्चे का जन्म आर्द्रा नक्षत्र से लेकर १२ नक्षत्रों में होतो चाँदी का पाया तथा ज्येष्ठा से लेकर ७ नक्षत्रों में सोने का पाया एवं पूर्वाभाद्रपद से लेकर ५ नक्षत्रों में ताम्रपद और कृत्तिकादि नक्षत्रों में लोहे के पाये में होता है।

नक्षत्र से द्वितीय प्रकार

आर्द्रादौ दशरूपाणि, विशाखायुगलौहकम् ।
पूर्वाषाढ़ासप्तताम्रं रेवतीषट्हेमकम् ॥३८॥

आर्द्रा से लेकर १० नक्षत्रों में जन्म होतो चाँदी का पाद, विशाखादि ४ नक्षत्रों में लौहपाद, पूर्वाषाढ़ा से ७ नक्षत्र ताम्रपाद और रेवती से छः नक्षत्रों में सुवर्णपाद होता है।

आयु योगः

केन्द्रेकोणगृहे स्थिताः कविगुरुज्ञाः पूर्णमायुर्भवेत्
मध्यायुष्यमथो धने च सहजे लाभे दिशन्ति स्थिताः ।

षष्ठे चाष्टमभे व्ययाख्य भवने स्वल्पायुरन्ये खला:
केन्द्राष्ट व्ययकोणगाः न शुभदा:जातस्य पुंस:सदा३९

किसी के जन्मलग्न से केन्द्र (१, ४, ७, १०) और कोण (५, ९) स्थानों में बुध, बृहस्पति और शुक्र स्थित हों तो वह बालक दीर्घायु होता है। अगर बुध, बृहस्पति और शुक्र धन (२) सहज (३) लाभ (११) भावों में स्थित हों तो वह बालक मध्यमायु तथा छठे आठवें या बारहवें भाव में उक्त ग्रह हों तो अल्पायु योग होता हैं। अगर पाप ग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) अष्टम, (८) व्यय (१२) और कोण (५, ९) भावों में हों तो बालक के लिए कष्ट कारी होते हैं।

अल्पायु योग:

रन्ध्राधीश निरीक्षिते स्फुटतरे लग्नेऽब्जलग्नेऽथवा
जन्मेन्द्वष्टमलग्नपे रविभुवा भूजेन वा वीक्षिते।
लग्नेशादि न वीक्षितं शुभ करैः खेटैर्भवेज्जातको
मार्कण्डेय समायुरप्यतितरामल्पायुपश्चास्पदः।४०।

किसी व्यक्ति के जन्मलग्न अथवा चन्द्रलग्न को अष्ठमेश देख रहा हो तथा जन्मलग्न और चन्द्रलग्न एवं अष्टमभाव के स्वामियों पर शनि या मङ्गल की दृष्टि हो और लग्नेश आदि उपर कहे हुए ग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट नहीं हों तो वह बालक मार्कण्डेय के समान आयु पाकर भी अल्पायुयोग भोगता है।

विद्या विचारः

वागीशबुधजीवेषु निर्विद्यो नाशगेषु च।
केन्द्रेषु ते त्रिकोणे वा स्वर्क्षे वा विद्ययान्वितः ॥४१॥
ज्ञानव्योमाधिवासास्तनुगुरूदशमस्थानपा:षड्बलाढय
जाता:षटशास्त्रवेत्तानिखिलनिगमविज्ञानदीक्षामुपैति

धर्मव्यापारलग्नाधिपबुधविबुधाचार्यपाकापहारे
सत्कर्माचारसर्वक्रतुफलनिगमज्ञानविद्याकरः स्यात्

अगर किसी बालक की कुण्डली में द्वितीयेश बुध और बृहस्पति ये सभी ग्रह नाश (६।८।१२) स्थानों में हों तो वह व्यक्ति विद्या रहित होता है। अगर ये ग्रह केन्द्र त्रिकोण या स्वक्षेत्र गत हों तो वह जातक विद्वान् होगा। ज्ञान (५।४।२ स्थान) एवं दशम भवन में लग्नेश नवमेश और दशमेश षड्बल (दृष्टि, स्थान, दिक्, चेष्टा, काल, निसर्गादि) से युक्त हों तो वह बालक छओं शास्त्रों का ज्ञाता एवं ज्ञान विज्ञान युक्त होता है। उसको लग्न नवम और दशम भाव के स्वामियों की दशा भुक्ति में सकल विध सदाचार एवं विद्या की प्राप्ति होती है।

राजयोग

प्रायः राज योग दो प्रकार के होते हैं (१) काल कृत (२) ग्रह कृत।

(१) कालकृत राजयोगः

रात्र्यर्द्धाद् द्युदलात्परं यदि भवेज्जातोद्धिनाड्यात्मके
कालेस्यान्नृपतिःजितारिरनिशंस्वाचारविद्यान्वितः४३

मध्य रात्रि (रात्र्यर्द्ध) अथवा मध्यान्ह से १ घटी पूर्व और १ पश्चात् ये दो घड़ी (४८ मिनट) का समय (अभिजित् संज्ञक मुहूर्त होने के कारण) शुभ काल कहलाता हैं इसमें उत्पन्न होने वाले बालक नृपति. (अनेक व्यक्तियों पर शासन करने वाले) शत्रुओं को जीतने वाले, सर्वदा अपने सदाचार का पालन करने वाले और विद्वान होते हैं।

(२) ग्रहकृत योग

ग्रह कृत शुभ योग निम्न प्रकार से होते हैं :—

(१) ग्रहों के स्वक्षेत्र, मूल त्रिकोण या उच्चराशिस्थ होने से इन योगों को महापुरुष योग कहते हैं। जैसे :—रूचक, भद्र, हंसादि योग।

(२) भिन्न २ भावों में बैठने से बनने वाली आकृतियों के आधार पर बनने वाले आकृति योग कहलाते हैं, जैसे :—नौ कूट, छत्रादि योग।

(३) विभिन्न एकही प्रकृतिकी राशियों में बैठने से बनने वाले योग योग आश्रय योग कहलाते हैं। जैसे रज्जु, नल, मूसलादि।

(४) एक से लेकर सात स्थानों में ग्रहों की स्थिति से होने वाले योग 'संख्या' योग कहलाते हैं। जैसे-वीणा दाम पाशादि।

(५) दो, तीन, चार आदि की संख्या में ग्रह युति से होने वाले 'युति' योग कहलाते हैं। जैसे बुधादित्य. गुरुचंद्र योग, सम्पत्ति योग आदि।

(६) सूर्य, चन्द्र, और लग्न से विभिन्न स्थानगत स्थिति से होने वाले योग अधम, केमद्रुम, केशरी आदि।

(७) विभिन्न भावों के स्वामियों की युति या क्षेत्र परिवर्तन अथवा विशिष्ट क्षेत्रगत से होने वाले योग। शख, चामर, चंद्रचूडादि योग। इस प्रकार विश्लेषण करने पर अनेक योगोंका ज्ञान पाठकों को सरलता पूर्वक हो जावेगा।

शुभाशुभ वर्षादि का ज्ञान

लग्नाद् द्वादशभावाः स्युः द्वादश वर्षस्यसूचकाः।
द्विरावृत्या भवेदब्दाः त्रयोदश पुरस्सराः ॥४४॥
त्रिरावृत्यास्तुषट्त्रिंशद्वर्षाणि स्युरिहायुषाम्।
आवृत्तिभिस्तु दशभिः पूर्णायुः पुरूषायुषः ॥४५॥
लग्नाद्यावन्मिते भावे तिष्ठन्ति क्रूर खेचराः।
तावद्वर्षे च मासे च दिने कष्टं विनिर्दिशेत् ॥४६॥

तत्तद्भावस्य कोणस्थाः यदि सर्वे शुभग्रहाः ।
तद्वर्षे तस्य भावस्य विशेषात्सुख कारकाः ॥४७॥
वर्ष संज्ञक भावस्य यदि कोणेषु सद्ग्रहाः ।
दैहिकं सकलं सौख्यं वर्षेऽस्मिन्नियतं शुभम् ॥४८॥

जन्म लग्न से द्वादश भाव क्रमशः १२ वर्षों के सूचक हैं। दूसरी आवृत्ति में लग्न में १३वां वर्ष तीसरी आवृत्ति में लग्न में २५वाँ वर्ष माने। इस प्रकार १० आवृत्तियों में मनुष्य की पूर्णायु के १२० वर्ष पूर्ण होते हैं। इस आवृत्ति क्रम से गिनने पर जिस भाव से जिस वर्ष का ज्ञान होता है अगर वह भाव पाप ग्रह से युक्त हो तो उस संख्या से सूचित वर्ष में तथा उस वर्ष संज्ञक भाव को लग्न मानकर १२ भावों को उस वर्ष के जन्म मास से १२ महीने १-१ भाव में मान कर जहाँ जहाँ पाप ग्रह हो उन महीनों में तथा जिस महीने का विचार चल रहा हो उस महीने को लग्न भाव मानकर फिर लग्नादि द्वादश भाव में १-१ दिन की कल्पना कर जिस भाव में पाप ग्रह आवे उसे दिन संख्या मान कर उस दिन को अरिष्ट (अशुभ फल) दायक समझें।

जिस भाव गतवर्ष का हम विचार कर रहे हैं उस भाव के त्रिकोण गत (५वें और ९वें भाव में) सभी शुभग्रह हों तो उस वर्ष उस भाव से सम्बन्धित शुभफल की प्राप्ति समझें। वर्ष संज्ञक भाव के कोण स्थानों में अगर शुभग्रह स्थित हों तो वह वर्ष शारीरिक दृष्टि से दैहिक सुख का सूचक होगा ऐसा समझें।

मेषलग्न जात फलम्

लग्ने क्रिये क्रोध परोऽतिलुब्धो
विदेशगोऽल्पात्मजसौख्यशीलः ।
प्राप्नोति भार्यां सुकुमारशीलां
पटुः परः श्रेष्ठविशिष्टकर्त्ता ॥४९॥

मेष लग्न में उत्पन्न जातक क्रोधी, अत्यन्त लोभी, विदेश में रहनेवाला, सुखी और शीलवान् होता है। उसकी पत्नी सुकुमारी और सुशीला होगी तथा वह बालक चतुर, श्रेष्ठ एवं विशिष्ट कार्यों को करने वाला होगा।

वृषलग्नजातफलम्

लग्ने वृषे स्यात्सुभगो यशस्वी
स्यादिष्टकर्मा वरभूषणेषु ।
लुब्धो अन्नपाने दयिताप्रियश्च
कल्पप्रियो वा पितृतोधिकः स्यात् ॥५०॥

वृष लग्न में उत्पन्न बालक सौभाग्यशाली यशस्वी शुभ-कर्म करने वाला, अच्छे वस्त्र एवं आभूषण पहनने वाला, खाने पीने का शौकीन, स्त्री प्रेमी, शरीर को स्वस्थ रखने वाला, अपने पिता से बढ़कर प्रसिद्ध होता है।

मिथुनलग्नजात फलम्

लग्ने च युग्मे विजितारि पक्षः
शास्त्रार्थ संगीतकलासु दक्षः ।
शोभारतः कामवशो यशस्वी
जातो नरः पूज्यतमः सुसभ्यः ॥५१॥

मिथुन लग्न में पैदा हुआ बालक शत्रुओं पर विजय पाने वाला, शास्त्रार्थ संगीत व कलाओं में चतुर, शोभा पानेवाला, कामी, यशस्वी, पूज्य और सुरूप होता है।

कर्क लग्न जातफलम्

कुलीरलग्ने विषमस्वभावः
सुबन्धुपूज्यः द्विजदेवभक्तः।
दाता सुधीर्दीनजनानुरक्तः
कफानिलात्मा चपलश्चशीघ्रः ॥५२॥

कर्क लग्नोत्पन्न बालक विषम स्वभाववाला, अच्छे स्वभाव के भाइयोंवाला, पूज्य, देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त, दाता, बुद्धिमान, दीनजनों से प्रेम करनेवाला; कफ एवं वायु मिश्रित प्रकृतिवाला; और फुर्तीला होता है।

सिंह लग्न जातफलम्

लग्ने हरौ सिंहमुखो महौजा
एकान्तप्रेमी नृपलब्धमानः।
धीरो गभीरश्च प्रसिद्धकर्मा
व्यापारशीलां लभते च भार्याम् ॥५३॥

उपरोक्त सिंह लग्न में उत्पन्न जातक सिंह के समान चेहरा एवं उसी तरह महान् ओजस्वी, एकान्त चाहनेवाला, राजसत्ता से मान प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला, धैर्य सम्पन्न गम्भीर, अपने कर्म से प्रसिद्धि प्राप्त करनेवाला तथा व्यापार वृत्तिवाली धर्म पत्नी प्राप्त करता है।

कन्या लग्न जातफलम्

कन्याविलग्ने मृदुवाग्दयावान्,
कामीसुरूपः सुभगो विनीतः ।
संगीत काव्य व्यवहारदक्षः
दाता रसज्ञो पर वित्तभोक्ताः ॥४५॥

कन्या लग्नोत्पन्न जातक कोमलवाणी वाला, दयालु, कामुक, सुन्दर भाग्यवान् एवं विनयी संगीत तथा काव्य निर्माण में निपुण, दान करनेवाला, रसज्ञ एवं दूसरे के धन का उपभोग करता है।

तुला लग्न जातफलम्

तुलाविलग्ने व्यवहारदक्षः
स्वजाति पूज्यश्च बहुकुटुम्बी ।
शुचिगुरुर्यानिकृदज्ञसेवी,
क्रुद्धां च मार्यां लभने मनुष्यः ॥५५॥

तुला लग्न में जन्मा बालक व्यवहार कुशल अपनी जाति में सत्कृत, बड़े परिवार वाला, अज्ञानियों से सम्पर्क रखनेवाला एवं क्रोधिनी पत्नी प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्न जातफलम्

कीटो च लग्ने दृढ़पीन देही
स्थिरः प्रचण्डो पिशुनानुरक्तः ।
नृपानुगः पापधनी क्रियावान्,
विश्वासहा मातुरनिष्टकारी ॥५६॥

जिसका जन्म वृश्चिक लग्न में हो मजबूत एवं स्थूल वह शरीर वाला हो, स्थिर महाक्रोधी, चुगलखोरों का प्रेमी, राजा का अनुपापाचार से धन वृद्धि करनेवाला, क्रियाशील, विश्वासघाती माता का अनहित करनेवाला होता है ।।

धनु लग्न जातफलम्

धनुर्विलग्ने पृथुतुंगमूर्धा,
बन्धुप्रियः शिल्परतश्च शूरः ।
परोपकारी बहुशास्त्रवेत्ता,
कफानिलात्मा मुखनेत्ररोगी ।।५७।।

धनुलग्न में पैदा होने वाला जातक मोटा ऊँचा, सिर रखनेवाला, बान्धवों का प्रिय, शिल्पी, शूर, परोपकारी, बहुत शास्त्र का जाननेवाला, कफ वात प्रकृतिवाला मुख एवं आँख की बीमारी भोगता है ।

मकर लग्न जातफलम्

नक्रे विलग्ने च चलस्वभावः
प्रवासशीलः बहुशास्त्रपाठी ।
धर्मानुरक्तः नृपशिल्पपण्य,
शौर्यार्जितस्वो जनकोऽङ्गनानाम् ।।५८।।

मकर लग्न में उत्पन्न जातक चञ्चल प्रकृति एवं पर देश रहनेवाला, बहुत से शास्त्र पढ़नेवाला, धर्मानुरागी, राजसी शिल्प का व्यापारी, अपने शौर्य बल से एवं ओज से स्त्रियों का संग्रह करता है ।।

कुंभ लग्न जातफलम्

गम्भीरः राजमान्यः सकलनरवरैः शंसितः रोमदेही
नित्यंलीलावतीनां नयनचपलैः सेवितः काव्यकर्ता ।
पाखण्डानांविरोधी सततनवनवोन्मेषिणीकल्पनावान्
हृद्देशे साम्यभावः निवसति कलशेजन्मजातःयदीयः ॥

कुम्भ लग्नोत्पन्न व्यक्ति गम्भीरराजसत्ता से मान प्राप्त, सभी श्रेष्ठतर जनों से प्रशंसित, उनका रोमावलि युक्ति प्रतिदिन चपलनयनी एवं लीलारत कामिनियों से सेवित, कवि, पाखण्ड विरोधी, निरन्तर बढ़ती प्रतिभावाला, समान हृदय से रहता है ॥५९॥

मीन लग्न जातफलम्

लग्ने झषे स्फीत चलत्कुटुम्बः
शौचश्रुताऽऽचाररतो विनीतः ।
गीतांगना कार्य सुशिल्पविज्ञः
कन्याप्रजः प्रत्ययकीर्तियुक्तः ॥६०॥

मीन लग्नवाला फैले एवं चलते कुटुम्ब वाला, पवित्र तथा शास्त्राचार में तत्पर, विनीत, गायिका जनों के कार्य व कला का जानकार, कन्याओं वाला विश्वस्त तथा यशस्वी होता है ।

अथ द्वादशभाव फलानि

तनुभाव फलम्

लग्नेबलिष्ठे जगति प्रभुत्त्वं
सुखस्थितिं देहबलं सुवर्चः ।
उपर्युपर्यभ्युदयाभि वृद्धिं
प्राप्नोतिबालेन्दु वदेषजातः ॥६१॥

जन्म लग्न के बलवान होने से जातक संसार में अपना प्रभुत्व स्थापित करता है, सर्वदा सुखमय स्थिति प्राप्त करे बलशाली, शरीर सुन्दर, तेजस्वी, क्रमशः चन्द्रकला के समान उत्तरोत्तर उन्नतिशील जीवन वाला होता है ।।

धनभाव फलम्

धनभं स्वामिसत्खेटैर्युग्दृष्टं धनवृद्धिदम् ।
क्षीणेन्दु पापयुक्दृष्टं विनास्वर्क्ष धनापहम् ।।६२।।

कुण्डली स्थित द्वादश भावों में दूसरा घर धन भाव कहलाता है यदि यह भाव अपने स्वामी एवं शुभग्रहों से दृष्ट हो तो धन की वृद्धि करता है एवं चन्द्रमा क्षीण हो अथवा पाप ग्रहों के साथ हो या दृष्ट हो वहाँ कोई भी स्वक्षेत्री ग्रह योग न होने से धन की हानि होती है ।।

लग्नस्थतुङ्गगखगे प्रभवेच्चलक्ष्मी
तुर्यस्थ तुङ्गखचरैरपि वित्तलाभः ।
आयस्थ तुङ्ग खगे च तथैव वित्तं
कर्मस्थ तुङ्ग खगे बहुराज्यसम्पत् ।।६३।।

लग्न में उच्च के ग्रह, हो तो धनयुक्त प्रभावशाली होता है चतुर्थ भाव में उच्च के ग्रह भी धन का लाभ करते हैं एवं लाभ स्थान (ग्यारहवें भाव) में उच्च ग्रह लाभप्रद धन दायक होते हैं एवं दशम भाव में उच्च ग्रह धनी होने के साथ राजसी वैभव प्रदान करते हैं ।।

सहजभाव फलम्

स्वस्वामिना शुभैःखेटैः सहजं युतवीक्षितः ।
भ्रातृसौख्यप्रदः क्रूरैः सहजार्तिप्रदः स्मृतः ।।

तृतीय भाव अपने स्वामी से तथा शुभग्रहों की दृष्टि से युक्त होने से जातक भाइयों का सुख पाता है यदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो भ्राता सम्बन्धी कष्ट बहुल होने से दुखी रहता है ॥

सुखभाव फलम्

स्वस्वामि शुभयुग्दृष्टं चतुर्थं मित्रसौख्यदम् ।
प्राप्नुवन्तिनराः जाताः क्षेत्रयानादि सम्पदः ॥
मित्रेभ्योलभते वित्तं बन्धुभिः सत्कृतिस्तथा ।
निपुणी जननीसौख्यं देशेशो नृपसम्मतः ॥

चतुर्थ भाव को सुखभाव कहते हैं यह भाव अपने स्वामी द्वारा तथा शुभग्रह से युक्त एवं दृष्ट होने से जातक मित्रों द्वारा सुख प्राप्त करता रहता है तथा ऐसे मनुष्य अपना खेत, सम्पदा व सवारी पाते हैं, माननीय हो मित्रों द्वारा धन प्राप्ति, बन्धु वर्ग से सत्कृत होते हैं, एवं निपुण माता का सुख अपने प्रदेश में अधिकार युक्त राजाओं के द्वारा सम्मत होते हैं ॥

सुतभाव फलम्

चन्द्राद्विलग्नादपि पुत्रभावःस्वनाथसौम्यग्रहदृष्टयुक्तः।
अपत्यसंभूतिकरोनराणां तदन्यथास्यात्तदलाभहेतुः॥

पंचम भाव सन्तान विद्या सम्बन्धी विषय में निर्णायक है चन्द्रमा से वा लग्न से पञ्चम भाव अपने स्वामी एवं सौम्य ग्रहों से देखा गया अथवा युक्त हो तो सन्तान वर्धक है ऐसा न होने पर इसके विपरीत फल होता है ॥

भूमिपुत्रो नन्दनस्थानसंस्थो
जातं जातं नन्दनं वा निहन्ति।
चेत्संदृष्टो देवपूज्येन नूनं
दैत्येज्येन स्यात्तदा–पूर्वजातम् ॥

मंगलदेव यदि सुत गृह में हों तो पैदा हो होकर सन्तान नष्ट होती है, यदि बृहस्पति या शुक्र से सम्यक् दृष्ट हो तो अपूर्व सन्तान प्राप्त हो अर्थात् कुल में वैसी सन्तति इसके पहले न हुई हो ॥

रविस्त्वेक पुत्रं त्रयं वा प्रदद्यात्
विधुः कन्यकायुग्मकं वा चतुष्कम्।
प्रदद्यात् कुजः पुत्रकाणां त्रयं च
बुधः पुत्रिकापञ्चकं वा चतुष्कम् ॥

यदि सूर्य ५ वें भाव में उपस्थित हो तो एक या तीन पुत्र देता है चन्द्रमा से दो या चार कन्या की प्राप्ति भौम तीन पुत्र और बुध चार अथवा पाँच कन्या की सृष्टि करता है ॥

सुतानां गुरु पञ्चकं वा चतुष्कं
सितो कन्यकादायकः भूरिसंख्या।
शनिश्चाल्पपुत्रं घटे पंचपुत्राः-
मृगे वेदकन्या शुभैर्वीक्षितश्चेत् ॥

यदि पंचम में गुरु हों तो पाँच या चार पुत्र देता है शुक्र बहु कन्या देता है। शनि देव थोड़ी सन्तान देते हैं। यदि शनि कुम्भ में हों तो पाँच पुत्र हों मकर राशि में होने से यदि शुभ ग्रह भी देखते हों तो चार कन्या होती हैं ॥

अजे कर्कटे शीघ्र संतानदाता
भवेद्राहुकेतू वृषे वा नराणाम् ।
तदीशो त्रिकस्थानगो नैव सौख्यं
भवेन्नंदने सिंहीपुत्रो यदा हि ॥

मेष, कर्क, वृष में यदि राहु केतु हों तो मनुष्यों को शीघ्र सन्तान की प्राप्ति कराते हैं, यदि पंचम राहु हो और उसका स्वामी त्रिक अर्थात् ६-८-१२-में हो तो सन्तान का सुख नहीं होता ।

रिपुभाव फलम्

रोगस्यचिन्तामपि रोगभाव
स्थितैर्ग्रहै र्वा व्यय मृत्यु संस्थैः ।
रोगेश्वरेणापि तदन्वितैर्वा
द्वित्र्यादि संवाद वशाद्वदन्तु ॥

शत्रु या रोग सम्बन्धी चिन्ता छः आठ या बारह भाव में जो ग्रह उपस्थित हों उनसे अथवा उस भाव के स्वामी से युक्त जो ग्रह हो उससे एवं अन्य दो तीन करके उपस्थित ग्रहों को देख कर परिस्थिति का विचार करना चाहिये ॥

ग्रह जन्य रोगाः

पित्तोष्णः ज्वर ताप नेत्रज शिरो
रोगाः रवेः कीर्तिताः ।
निद्रालस्य कफातिसारजरूजः
चित्तोद्भवाः चन्द्रमा

वक्ति भूमिसुतः विषार्त्तिमनल-
त्वग्दोषकुष्ठादिकम् ।
भ्रान्तिश्लेष्मज्वरं दृगामयगल-
घ्राणोत्थरोगाः बुधात् ॥
जीवः सूचयति ज्वरं-स्मृतिगतान्
रोगान् यकृत्प्लीहजान्
गुह्यस्यामय पाण्डु, श्लेष्मजगदैः
शुक्रः सदा पीडयेत् ॥
वातश्लेष्म विकार पादविहतिं
भ्रान्तिः शनैः पीड़नम्
स्वर्भानुर्हृदि ताप-कुष्ठ विमतिं
केतुस्तु प्रेतोद्भवम् ॥

सूर्य्य नारायण के प्रभाव से ज्वर, तपन, नेत्र एवं शिर सम्बन्धी विकार उत्पन्न होते हैं। चन्द्रमा से नीन्द, आलस्य, कफ, अतिसार एवं मानसिक बिकार उत्पन्न होते हैं एवं मङ्गल के द्वारा विषजन्य पीड़ा, अग्नि से कष्ट, त्वचादि चर्म रोग, कोढ़ आदि विकृतियें उत्पन्न होती हैं। बुध से भ्रम, कफ ज्वर, दृष्टि दोष, गला, नाक आदि में विकृति होती हैं। बृहस्पति ज्वर, स्मरण शक्ति में विकृति एवं तिल्ली प्लीहादि विकारों से पीडित करता है। शुक्र अन्त रंग, आत्म कष्ट पाण्डु, रोग बलगमी विकार देते हैं। शनि देव के कारण वायु बलगम पैर में चोट एवं भ्रमोत्पत्ति होती है एवं राहु केकारण

हृदय में ताप कोढ़ कुबुद्धि एवं केतु से प्रेत बाधा की उत्पत्ति होती है ॥

स्त्रीभाव फलम्

कुभार्यासप्तमे पापाः सौम्याः सर्वजनप्रियाः ।
गुरुशुक्रौ शचीतुल्यां रूपलावण्य शालिनीम् ॥

सप्तम में पाप ग्रह होने से कुभार्या योग होता है सौम्य ग्रह होने से उसकीसुशीला पत्नी परिवार को प्यारी होती है । गुरु एवं शुक्र के सप्तमगत होने से इन्द्राणी के समान सलोनी भार्या प्राप्त होती है ।

लग्ने व्यये च पाताले निधने भर्तृमन्दिरे ।
मङ्गले विधवानारी गुरुयोगेक्षणं विना ॥

लग्न में, बारहवें, सातवें, आठवें, एवं चतुर्थ गृह में यदि बृहस्पति का योग या दृष्टि नहीं और इन भावों में मङ्गल उपस्थित हो तो कन्या विधवा होती है ॥

रमणीहरयोग

शुक्रः खलान्तर्गतः सखलः सिताद्वा
पापाः सुखास्त मृतगाः रमणीहराःस्युः ।
चन्द्राद्विलग्नाच्च खलाः कलत्रे
हन्युः कलत्रं यदि चाष्टमे वा ॥

शुक्र दुष्ट ग्रहों के मध्य में हो या साथ में रहा हो अथवा शुक्र से पाप ग्रह सुख स्थान में, सातवें अस्त मृत्यु स्थान में हो तो पुरुष के लिए स्त्री हानिकारक होते हैं चन्द्र से या लग्न से

सप्तम दुष्ट ग्रह हों या अष्टम में हों तो स्त्री की मृत्यु करते हैं ॥

घून कुटुम्ब गतौ यदि पापौ
दारजयोग वियोग करौ तौ ।
तादृग्योगज दार समेतः
जीवति पुत्रधनादियुतश्च ॥

सप्तम में अथवा द्वितीय में पाप ग्रह हो तो स्त्री सम्बन्धी वियोग के कारक होते हैं यदि स्त्री के भी वैसे ही योग हो तो वे दम्पति पुत्रधनादि सहित सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं ।

आयुर्भाव फलम्

कर्मेशरन्ध्रतनुपाः बलशालिनश्चे-
ज्जातश्चिरायुरिनन्दन योगहीना ।
द्वावप्यतीव बलिनौ यदि मध्यमा-
युरेकोबली लघुतरायुरनायु रन्य ॥
स्वस्थे रन्ध्रपतौ चिरायुरुदय छिद्राधिपौ षष्ठ गौ
रिष्फस्थौ यदि वा समेति
मनुजो जातश्चिरायुर्बलम् ।
व्यापारोदय रन्ध्र राशिपतय
केन्द्र त्रिकोणायगाः
दीर्घायुर्विबलाः सभानुतनयाः
यद्यल्प मायुंर्भवेत् ॥

शनि से रहित दशमेश अष्टमेश लग्नेश यदि बलशाली हों तो इनमें जन्म लेने वाला दीर्घायु होता है। यदि इन तीनों में से दो अतीव बलवान हों तो मध्यम आयु पाने वाले होते हैं यदि इन तीनों में से एक बली हो तो थोड़ी से थोड़ी आयु होती हैअन्यथा जातक नष्ट आयु होता है।।

अष्टमेश अष्टमभाव में हो या लग्नेश और अष्टमेश छठे या बारहवें भाव में होतो मनुष्य दीर्घायु होता है। दशम भाव तनुभाव अष्टम भाव के स्वामी केन्द्र या त्रिकोण भावों में प्रबल हों तो दीर्घायु होगी अगर ये तीनों बलरहितया शनि के साथ हों तो अल्पायु कारक हैं।

भाग्यभाव फलम्

भाग्यप्रभावगुरूधर्मतपःशुभानि
सञ्चिन्तयेन्नवमदेव पुरोहिताभ्याम्।
भाग्येशदेवसचिवौ शुभवर्गयातौ
भाग्ये शुभग्रहयुते समुपैति भाग्यम्।।
सकलगगनवासाः स्वोच्चगाः भाग्यराशौ
धनकनकसमृद्धं श्रेष्ठमुत्पादयन्ति।
यदि शुभखचरैन्द्रैः तत्र दृष्टाः नभोगाः
विनिहत रिपुपक्षो दिव्यदेहः सुकीर्तिः।।

गुरु और भाग्य (नवम) भाव से धर्म वृद्धि तपो बलादि शुभफलों का विचार करे वृहस्पति व भाग्येश शुभवर्ग के हों भाग्य स्थान शुभग्रह युक्त हों तो जातक भाग्यवान् होता है तथा सभी खेचर हैं यदि वे स्वोच्चस्थ होकर भाग्य राशि में पड़े हों तो

धन स्वर्णादि से समृद्ध एवं श्रेष्ठ उत्पन्न करते हैं यदि नवम भाव को शुभ खेचर पति देखते हों तो शत्रुपक्ष क्षय दिव्य देह सुन्दर कीर्ति वाला होता है ॥

दशम्भाव फलम्

दशमभवननाथे केन्द्रकोणे धनस्थे
बलवति निजकान्तिर्योग सिंहासनाख्यः ।
स भवति नरनाथो देशविख्यातकीर्तिः
मदगलितकपोलः तिष्ठति द्वारदेशे ॥
अर्थाप्तिः पितृजननीसपत्नमित्र
भ्रातृस्त्री भृतकजनाद्दिवाकराद्यैः
होरेन्द्वोर्दशम गतैर्विकल्पनीया
भेन्द्वर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या ॥

दशमेश केन्द्र में, धनस्थान में एवं कोण में बलवान होकर उपस्थित हों तो कान्ति युक्त होता है यह सिंहासन योग कहलाता है ऐसे योगवाला नरपति, स्वदेश में प्रसिद्ध एवं यशस्वी होगा द्वार पर उसके जल सिक्त कपोल हाथी झूलते हैं ॥

लग्न से या चन्द्रमा से सूर्य आदि दशम में हों तो क्रमशः पिता, माता, शत्रु, भाई, स्त्री, नौकरादि के माध्यम से धन लाभ कहना चाहिए । जन्म लग्न और जन्म चन्द्र से दश मेश जिस नवांश में हो उसके स्वामी के स्वभाव से जीविका विचार कहना चाहिये ।

आयभाव फलम्

आयस्थः शुभखेचरः शुभधनं
पापास्तु पापार्जितम् ।
मिश्रैर्मिश्र धनं समेति
मनुजः तज्जातकोक्तं वदेत् ॥

लाभ स्थान में शुभग्रह शुभ लाभप्रद एवं पाप ग्रह पाप द्वारा धनोपार्जन कराते हैं, मिश्र ग्रह मिश्र फल प्रद होते हैं मनुष्य ऐसे जातक का उपरोक्त फल कहे ॥

लाभस्थानपतौ विलग्नभवनात् केन्द्रत्रिकोणस्थिते
लाभेपापसमन्विते तु धनवान् तुङ्गादि राश्यंशके ।
तत्तत्कारकवर्गतो बलवशाद् योगानुसारं वदेत्
तत्तत् खेटदशापहार समये क्तिं वदेत्तद्दिशि ॥

यदि लाभमेश जन्म लग्न से केन्द्र अथवा कोण में हों अथवा लाभस्थान में अपने उच्च या स्वक्षेत्र राशि या नवांश गत पापग्रह हो तो जातक धनी होगा । लाभकारक ग्रह के वर्ग से, ग्रहबल से, ग्रहयोगों के अनुसार उन-उन ग्रहों के दशा, अन्तर्दशाओं के समय में तथा लग्नकारक ग्रह की दिशा से द्रव्य की प्राप्ति कहनी चाहिए ।

व्ययभाव फलम्

लग्नस्वामिनि रिष्फगे तु वियति क्रूरे सचन्द्रे कुजे
जातोऽसौ परदेशगः सुखधनत्यागी दरिद्रो भवेत् ।
उच्चस्थे शुभखेचरे व्ययगते पापग्रहैः शोभने
सन्दृष्टे शुभवर्गके च विपुलं स्वर्गादिभोगं वदेत् ॥

जन्मलग्नेश व्ययभाव में हों तथा दशमभाव में क्रूर ग्रहों के साथ चन्द्रमा और मंगल हो तो जातक परदेश में रहनेवाला सुख और धन से रहित एवं दरिद्र होगा।

उच्चराशिस्थ शुभग्रह १२वें भाव में शुभवर्ग गत हो और उसे शुभ और पापग्रह देखते हों तो वह जातक उत्कृष्ट स्वर्गादि सुखों का भोग करनेवाला होगा।

रिष्फस्थानगते शुभे शुभयुते सौम्यग्रहालोकिते
तन्नाथे विबलेऽरि नीच गृहगे वित्तव्ययाभावभाक्।
त्यागी शुभग्रहयुते कृषकश्च धर्मी
पापेऽवसानगृहगे तु विवादशीलः।
नेत्रामयः पवनकृच्चपलोऽटनः
स्यादुच्चस्व मित्रभवने तु परोपकारी॥

व्ययभाव में कोई शुभग्रह यदि शुभग्रहों से युक्त तथा शुभग्रहों से दृष्ट हो तथा व्ययेश निर्बल होकर शत्रु या नीच राशि में हो तो वह व्यक्ति कंजूस होगा अर्थात् उसके यहाँ धन के व्यय का अभाव रहेगा।

बारहवें भाव में शुभग्रह हो तो व्यक्ति कृषक एवं धार्मिक होगा। पापग्रह १२ वें भाव में हो तो व्यक्ति विवाद शील, नेत्र रोगी, चंचल और भ्रमणशील होगा। अगर ग्रह अपनी उच्चराशि या मित्रराशि का हो तो व्यक्ति परोपकारी होगा।

अथ पञ्च महापुरुषयोगाः

रुचक भद्रक हंसक मालवाः
सशशका इति पञ्च प्रकीर्त्तिताः॥

स्वभवनोच्च गतेऽथ चतुष्टये
क्षितिसुतादिषु तान् क्रमशो वदेत् ॥

मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, ये पाँच ग्रह स्वराशि वा अपनी उच्च राशि में स्थित होकर यदि केन्द्र १-४-७-१० में बैठे हों तो भौम से रुचक, बुध से भद्रक, गुरु से हँस शुक्र से मालव्य एवं शनि से शश नाम के पाँच महापुरुष योग बनते हैं ॥

"रुचकयोग-फलम्"

दीर्घाऽस्यः स्वच्छकान्तिर्वहुरुचिरवलः
साहसाऽवाप्तकार्यः
चारुभ्रूर्नीलकेश श्चरणरणगतो मन्त्रविच्चोरनाथः॥
रक्तः श्यामोऽतिशूरो रिपुवलमथनः कम्बुकण्ठः प्रधानः
क्रूरः भर्त्ता नराणां द्विजगुरुनिरतः दक्षौम
सज्जाऽनुरक्तः ॥

लम्बामुख, स्वच्छकान्ति, अधिकप्रशस्त, बलशाली, अपने साहस बल से कार्मसिद्ध करनेवाला, आकर्षक भौहें नीले केश एवं रणोन्मुख चरणों वाला, मन्त्रों का मर्मज्ञ, चोरों का रक्षक, लाली लिये सांवला रङ्ग, अत्यन्त शूर, शत्रु बल को मसलने वाला, शंख के समान ढबुवा गर्दन- स्ववर्ग में प्रधान क्रूर स्वाभाव, मनुष्य समूह का पालक, ब्राह्मण गुरु जन की सेवा करने वाला एवं सुन्दर रेशमी वस्त्र सज्जा का शौकीन होता है ॥

"अन्यच्च"

खट्वाऽङ्गपाशबृषकार्मुकवज्रवीणा
चक्राऽसिहस्तचरणश्चतथाऽङ्गुलिश्च ॥
मन्त्राऽभिचार कुशल स्तुलयाऽग्रहस्त
मध्यश्च तस्य कथितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥

खाट का पाया, पाश (फन्दा), उत्तम धनुष, बज्र, बीणा चक्र, तलवार आदि चिह्न हाथ पाँव तथा अंगुलियाँ में हों मन्त्रादि अभिचार कुशल, हाथ में तुला लक्षित हो मध्य कोटि, का दीर्घ सुख हो ऐसा फल रूचक योग में होता है ॥

अन्याच

विन्ध्याचलं सह्य गिरिम्भुङ्क्तेऽ-
वनीश्च सप्तति शरदास् ।
शस्त्राऽनलकृतमृत्युः प्रयाति
देवालयं रुचकः ॥

विन्ध्य पर्वत सह्याऽद्रि स्थलों का उपभोग करने वाला सत्तर शरदृऋतुओं पर्यन्त जीवन एवं अन्त में शस्त्र या अग्नि से देव स्थान में मृत्यु प्राप्त करे यह रूचक योग का फल है ॥

भद्रकयोग-फलम्

शार्दूलप्रतिमाननो गजगतिः पीनोरुवक्षस्थलो
लम्बापीनसुपुष्टबाहुयुगलतत्तुल्य मानोच्छ्रयः ॥
मानी बन्धुजनोपकारनिपुणः श्रीभद्र योगोद्भवः
राजाऽशीतिमितायुरेति विपुलप्रज्ञायशोवित्तवान् ॥

सिंहराज की प्रतिमा के समान मुख, गज की चाल मजबूत जांघ एवं छाती, लम्बी मोटी मजबूत बाहों की जोड़ी, उसी अनुसार उँचाई, मान युक्त सम्बन्धी, जनों पर अहसान चढाने में चतुर, श्रीभद्र योग में जन्म लेने वाला होता है, राजसी वैभव बढ़ी चढी बुद्धि, यशस्वी, धनी एवं अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करता है ॥

"हंस योग फलम्"

रक्ताऽस्योन्नतनासिकः सुचरणो
हंस स्वरः श्लेष्मकः
गौराऽङ्गः सुकुमारदारसहितः
कन्दर्प तुल्यः सुखी ॥
शास्त्रज्ञानपरायणोऽतिनिपुणः
श्रीहंसयोगेगुणी
जातोऽशीतिकमायुरेति स युगं साधु-
क्रियाऽचारबान् ॥

लाल चित्ताकर्षक चेहरा, ऊँची नाक, सुन्दरचरण हंस, का सा स्वर, बलगमी शरीर, गौर अङ्ग, अति सुकुमारी धर्म पत्नी का सहयोग साक्षात् काम देव की सुन्दरता एवं सुख पूर्ण जीवन, साधुप्रकृति, तद्वत् आचारव्यवहार, शास्त्रज्ञान रसिक एवं सच्चे कर्मकुशल हंस योग में उत्पन्न व्यक्ति के गुण मिलते हैं एवं दीर्घ आयु लगभग ८४ वर्ष की उप भोग करे ॥

मालव्य योग फलम्:

स्त्रीचेष्टोललिताऽङ्गसन्धिनयनः सौन्दर्यशाली गुणी
तेजस्वीसुतदारवाहनधनी शास्त्रार्थवित् पण्डितः
उत्साह प्रभुशक्ति मन्त्र चतुरस्त्यागी परस्त्रीरतः
सप्तत्यब्द मुपैतिसप्त सहितं मालव्य योगोद्भवः ॥

अर्थ :—स्त्रियों की तरह हाव-भाव, लुभावने अङ्ग जोड़, सौन्दर्यशाली आँखें, गुणवान्, तेजस्वी, स्त्री पुत्रवाहन एवं धनादि युक्त, शास्त्रों का मर्म जाननेवाला विद्वान् उत्साही, प्रभुत्ता शक्ति सम्पन्न, मन्त्र मन्त्रणा चतुर, त्यागी किन्तु पर स्त्रियों पर प्रभाव एवं अधिकार रखनेवाला मालव्ययोगोत्पन्न व्यक्ति सतहत्तर वर्ष की आयु का उपभोग करता है ॥

॥ शशयोग फलम् ॥

भूपो वा सचिवो वनाऽचलरतः सेनापतिः क्रूर धीः
धातोर्वादविनोदवञ्चनपरो दाता सरोषेक्षणः ॥
तेजस्वीनिजमातृभक्तिनिरतः शूरोऽसिताऽङ्गःसुखी
जातःसप्ततिरायु रेति शशके जारक्रिया शीलवान् ॥

अर्थ :—भूपति अथवा उसका मन्त्री वन पर्वतों में रहनेवाला, सेनापति, कठोर बुद्धि, धातु सम्बन्धी विवाद में निपुण एवं ठगनेवाला, दानी, क्रोधी आँखें, तेजस्वी, निज माता की भक्ति में तन्मय रहनेवाला शूर गेहूँवां रंग, सुखोपभोगी, व्यभिचारी एवं सत्तर वर्ष की आयु उपभोग करता है ।

अथ महादशा फलानि

सूर्य महादशा फलम्

करोति सुस्थो विजयं दिनेश-
स्तैक्ष्ण्यं सदोद्योगरतिं सुखं च ।
क्रौयर्धिभूपैः कलहैधनाप्तिं
वनाद्रि संचारमतिप्रसिद्धिम् ॥

यदि श्री सूर्य नारायण जन्म कुण्डली में अच्छे स्थान पर अच्छी अवस्था में उपस्थित हों तो जातक विजय प्राप्त करता है एवं तीक्ष्ण (तीखा) स्वभाव तथा श्रेष्ठ उद्योगों में रति वाला होता है सुखोपभोग करता है क्रूर मार्ग वाले राजाओं भूमि पतियों के कलह से धन प्राप्ति वनों पर्वतों में पर्यटन से अति प्रसिद्धि प्रदान करते हैं ॥

चन्द्रमहादशाफलम्

मनः प्रसादं प्रकरोति चन्द्रमा
सर्वार्थसिद्धिं सुख भोजनञ्च ।
स्त्री पुत्र भूषाम्बर रत्नसिद्धिं
गोक्षेत्रलाभं द्विज पूजनञ्च ॥

श्री चन्द्रमा देवता मन की प्रसन्नता सर्व प्रकार से धन प्रप्ति सुख, खान, पान, स्त्री सन्तान, आभूपण नवरत्न आदि गाय एवं खेती बाड़ी तथा पूज्य ब्राह्मणों के प्रति पूजा सत्कार की भावना देते हैं ॥

भौम महादशा फलम्

क्षिति तनयदशायां क्षेत्र वैर क्षितीश-
प्रतिजनित विभूतिः स्यात्पशुक्षेत्रलाभः।
सहजतनयवैरं दुर्जन स्त्रीषु सक्तिः
दहन रूधिर पित्तव्याधिरर्थोपहानिः ॥

मङ्गल देवता की दशा में अपने क्षेत्र में वैर एवं राज द्वारा वैभव वृद्धि, पशु तथा खेती आदि से लाभ, भाई तथा सन्तान से शत्रुता, दूषित स्त्रियों में आसक्ति, अग्नि से कष्ट रक्त पित्त विकार एवं धन की हानि करते हैं ॥

बुध दशा फलम्

सौम्यः करोति सुहृदा गम मातम सौख्यम्
विद्वत् प्रशंसित यशश्च गुरु प्रसादम्।
प्रागल्भ्य मुक्ति विषयेऽपि परोपकारं
जायात्मजा सुहृदाँ कुशलं महत्त्वम् ॥

श्री बुध देवता स्व दशा में मित्रों से मिलाप अपना सुख विद्वज्धनों से प्रशंसित यशस्वी गुरुजनों का कृपापात्र मुक्ति विषय को लक्ष कर के प्रगल्भता से तत्पर होकर परोपकार करना स्त्री पुत्र एवं मित्रों की कुशलता को महत्त्व देने वाला होता है ॥

श्री गुरु की दशाफल

धर्म क्रियाषि ममरेन्द्र गुरु र्विधत्ते
सन्तान सिद्धि मवनीपति पूजनश्च।

श्लाघ्यत्त्व मुन्नत जनेषु गजाश्व यान
प्राप्ति वधू सुत सुहृद् युति मिष्ट सिद्धिम् ॥

श्री देव गुरू बृहस्पति देव धर्म कर्म में प्रवृत्ति तथा सन्तानप्राप्ति, राजा द्वारा सम्मानप्राप्ति, उच्च वर्ग से प्रशंसित होना हाथी घोड़ा वाहनादि की प्राप्ति, बहू बेटा मित्रों से साथ तथा मनोरथ की सिद्धि करते हैं।

श्री शुक्र दशा फलम्

क्रीड़ा सुखोपकरणानि सुवाहनाप्तिं
गो रत्न भूषणनिधि प्रमदा प्रमोदम् ।
ज्ञानक्रियां सलिलयान मुपैति शोक्रयां
कल्याण कर्म बहु मानमिलाऽधिनाथात् ॥

श्री शुक्र दशाफल

खेल कूद के सुखद उपकरण, सुन्दर वाहन की प्राप्ति, गाय रत्न आभूषण वगैरह धन एवं कामिनियों से मनो विनोद, ज्ञान पूर्ण क्रिया जलयान कल्याण के कर्म तथा पृथ्वी पति से सन्मान श्री शुक्र दशा में सुलभ होते हैं।

श्री शनि दशा फल

पाकेऽर्कजस्या निज दार सुताऽति रोगान् ।
वातोत्तरान् कृपि विनाश मसत् प्रलापम् ॥
कुस्त्रीरतिम्परिजनै वियुति म्प्रवास ।
माक स्मिकं स्वजन भूमि सुखाऽर्थ नाशम् ॥

श्री शनि देव की दशा में अपनी स्त्री सन्तान आदि में बीमारियों का प्रकोप आन्धी पानी आदि प्राकृतिक प्रकोप के

कारण खेती का विनाश, उलूल जलूल बकना दुश्चरित्र स्त्री से प्यार, परिवार से वियोग, परदेश गमन, अचानक अपने की अचल सम्पत्ति सुख शान्ति एवं अर्थ प्राप्ति की हानि होती है।

राहु दशा फल

असुर वर दशायां दुःख भावोऽथवा स्व
दति गहन गदार्त्तिः सूनु भार्या वियोगः
विषभयमरिपीड़ा वीक्षणोर्द्धाऽङ्ग रोगः
सुहृदि कृषि विरोधो भूपतेर्द्वेष लाभः

श्री राहु देव की दशा में अति दुखी अथवा किसी असाध्य रोग से पीड़ित होना, स्त्री पुत्रादि का बिछुड़ना विष से भय (खतरा), शत्रु से सन्ताप आंख एवं देह के उपरी भाग में व्याधि, मित्र से कृषि सम्बधि विरोध एवं राजा से द्वेषोंत्पत्ति होती है।

श्री केतु दशा फल

शिखि जनित दशायां शोकमोहौ हि स्त्रीजौ
प्रभुजन परिपीड़ा वित्त नाशोऽपराधः
प्रभवति तनुयानां प्रोषणं स्वीय देशाद्
दशन चरण रोगः श्लेष्म सन्तापनञ्च

श्री केतु देव की दशा में कामिनियों द्वारा शोक मोह की प्राप्ति, शासक वर्ग से सताया जाना, धन हानि एवं अपराध की उत्पत्ति अपनी सन्तान का अपने देश से निष्क्रमणा दान्त और पैरों में पीड़ा से कष्ट होता है।

क्रान्त्यंश चरज्ञान-सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	११	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	६	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२१	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१९	७	५६	४७	३८	२९	२१	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२२	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	५८	८	८	३०
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५	५७	४	१०	१९	२७	३८	[illegible]	१९	१०	२४	३५	१२	७	२४

चरज्ञान-सारिणी

क्रान्त्यंश

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	
	९	१८	२७	३६	४४	५४	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	१७	१७	३७	५८	२
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२३	५०	२२	३४	५६	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	
	२३	४७	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३	३५	३
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४२	२७	१०	२३	५	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२२	११	५९	४९	४२	३५	३०	५७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	१०	४३	३०	२३	३१	३०	४१	३
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	१७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४३	४६	३८	५२	५६	२	६	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	८	२
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	३३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	१	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५२	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३२	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	७	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

क्रान्त्यंश चरज्ञानरिणी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
१४	९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	[illegible]	५२	५	१९	३६	५५	[illegible]	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	[illegible]	५	४८	३६	२८	२५
३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
२४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	२४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
२१	४६	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
४८	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४६	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७३	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५
०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
९	७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४१
४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	५६	३९	३०	३२
४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
३६	१३	५०	२७	५	४७	२९	१३	०	४९	४१	३७	३६	४	४९	३	१०	४८	५०	५८	४८	४७	५५	१४

क्रान्त्यंश चरज्ञानसारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
५०	४ ४६	९ ३२	१४ १९	१९ ७	२३ ५६	२८ ४७	३३ ३९	३८ ३४	४३ ३१	४८ ३१	५३ ३५	५८ ४२
५१	४ ५६	९ ५३	१४ ५१	१९ ४९	२४ ४९	२९ ५०	३४ ५३	४० ०	४५ ७	५० १८	५५ ३३	६० ५२
५२	५ ७	१० १५	१५ २३	२० ३२	२५ ४३	३० ५४	३६ १०	४१ २७	४६ ४७	५२ ७	५७ ३७	६३ ९
५३	५ १८	१० ३७	१५ ५७	२१ १८	२६ ४०	३२ ४	३७ ३१	४२ ५९	४८ ३२	५४ ८	५९ ४८	६५ ३२
५४	५ ३०	११ १	१६ ३३	२२ ४	२७ ४०	३३ १६	३८ ५५	४४ ३७	५० ५२	५६ ११	६२ ४	६८ २
५५	५ ४३	११ २६	१७ १०	२२ ५६	२८ ४३	३४ ३१	४० २४	४६ १८	५२ १८	५८ २०	६४ २८	७० ४१
५६	५ ५६	११ ५२	१७ ५०	२३ ४८	२९ ४९	३५ ५१	४१ ५७	४८ ७	५४ १९	६० ३५	६७ ०	७३ २८
५७	६ १०	१२ २०	१८ ३१	२४ ४४	३० ५६	३७ १०	४३ ३६	५० १	५६ २८	६३ १	६९ ४०	७६ २५
५८	६ २४	१२ ४९	१९ १५	२५ ४२	३२ १२	३८ ४४	४५ १७	५१ ५९	५८ ४४	६५ ३८	७२ ३०	७९ २६
५९	६ ४०	१३ २०	२० १	२६ ४४	३३ २९	४० १८	४७ १०	५४ ६	६१ ६	६८ १६	७५ ३०	८२ ५२
६०	६ ५६	१३ ५२	२० ५०	२७ ५०	३४ ४६	४१ ५७	४९ ७	५६ २१	६३ ४१	७१ ६	७८ ४२	८६ २५
६१	७ १३	१४ २७	२१ ४२	२८ ५९	३६ १९	४३ ४३	५१ ११	५८ ४६	६६ १९	७४ १२	८२ ५	९० १२
६२	७ ३२	१५ ४	२२ ३८	३० १७	३७ ५०	४५ ३६	५३ २४	६१ १६	६९ १५	७७ २१	८५ ४६	९४ ७
६३	७ ५१	१५ ४३	२३ ३७	३१ ३३	३९ ३२	४७ ३७	५५ ४७	६४ २	७२ २६	८१ ५९	८९ ४२	९८ १९
६४	८ १२	१६ २५	२४ ४०	३२ ५८	४१ २०	४९ ४६	५८ ११	६६ ५९	७५ ४८	८४ ४६	९३ ५५	१०३ २१
६५	८ ३५	१७ ११	२५ ४९	३४ ३०	४३ १५	५२ ४	६१ ४	७० १०	७९ २५	८८ ५२	९८ ३३	१०८ २४
६६	८ ५९	१८ ०	२७ २	३६ ९	४५ २०	५४ ३७	६४ १	७३ ३६	८३ २१	९३ १९	१०३ ३३	११४ ४

क्रान्त्यांश					चरसारिणी							
अक्षांश	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	६३ ५३	६९ ९	७४ २९	७९ ५६	८५ २८	९१ ४	९६ ५४	१०२ ५०	१०८ ५४	११५ ८	१२१ ३१	१२८ ११
५१	६६ १६	७१ ४४	७७ १७	८२ ५७	८८ ४४	९४ ३७	१ ० ३	१०६ ४७	११३ ११	११९ ४३	१२६ २७	१३३ २५
५२	६८ ४५	७४ २६	८० १४	८६ ८	९२ ६	९८ १९	१०४ ३६	१११ ४	११७ ४३	१२४ ३४	१३१ १८	१३८ ५८
५३	७१ २२	७७ १७	८३ ११	८९ २८	९५ ४५	१०२ १०	१०८ ४६	११५ ३	१२२ ३०	१२९ ४१	१३७ ८	१४४ ५२
५४	७४	८० १७	८६ ३४	९३ ०	९९ ३७	१०६ १६	११३ ९	१२० १५	१२७ ३१	१३५ ९	१४३ ०	१५१ १०
५५	७६ ५९	८३ ३६	९० ०	९६ ४२	१०३ ३३	११० ३५	११७ ४२	१२५ १७	१३२ ५९	१४० ५८	१४९ १६	१५७ ५६
५६	८० ४	८६ ४६	९३ ३८	१०० ३८	१०७ ३९	११५ ११	१२२ ४७	१३० ३८	१३८ ४५	१४७ ११	१५६ ०	१६५ १३
५७	८३ १८	९० १९	९७ २६	१०४ ४९	११७ १०	१२० ५	१२८ ५	१३६ २१	१४४ ५६	१५३ ५४	१६३ १६	१७३ ७
५८	८६ ४४	९४ ४	१०१ ३४	१०९ १६	११७ १०	१२५ १९	१३३ ४५	१४२ ३२	१५१ ३६	१६१ ८	१७१ ९	१८१ ४६
५९	९० २३	९८ ४	१०५ ५६	११३ ५६	१२२ २०	१३० ५६	१३९ ५१	१४९ ८	१५८ ५०	१६९ १	१७९ ४७	१९१ १५
६०	९४ १७	१०२ २०	११० ३७	११९ ५	१२७ ५४	१३७ ०	१४६ २७	१५६ १९	१६६ ४१	१७७ ३९	१८९ १८	२०१ ५०
६१	९८ १	१०६ ५५	११५ ३८	१२४ ३६	१३३ ५४	१४३ ३३	१५३ १७	१६४ ७	१७५ १९	१८७ १०	१९९ ५४	२१३ ४५
६२	१०४ ५६	१११ ५१	१२१ ३	१३० ३२	१४० २८	१५० ४०	१६१ २६	१७२ ४७	१८४ ५२	१९७ ४९	२११ ५३	२२७ २७
६३	१०७ ४६	११७ ११	१२६ ५५	१३७ ०	१४७ २९	१५८ २९	१७० ४	१८२ १९	१९२ ३२	२०९ ५१	२२५ ४०	२४३ ३७
६४	११२ ५७	१२२ ५८	१३२ १८	१४४ २	१५५ १६	१६७ ६	१७९ ३८	१९३ ४	२०७ ३८	२२३ ४३	२४१ ५८	२६३ ७
६५	११८ ४२	१२९ १७	१४० ११	१५१ ४७	१६३ ५२	१७६ ४०	१९० २३	२०५ १४	२२१ ३७	२४० ११	२६२ ११	२८९ १९
६६	१२४ ५६	१३६ १३	१४७ ५७	१६० ३२	१७३ २८	१८७ २२	२०२ ३६	२१९ १९	२३८ १५	२६० ३८	२८९ ४४	३५४ ४०

वेलान्तर सारिणी (दिसम्बर ता० २६ से एप्रैल ता० १६ तक तथा जून ता० १५ से सितम्बर ता० २ तक फल धन रहेगा इससे भिन्न समय में ऋण रहेगा)

तारीख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	+३	३		४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१	११	१२	१२	१२	१३	१३	+१३
	७	३५	४	३३	५९	५२	५३	१९	४५	११	३५	५९	२३	४५	७	२०	५०	११	१९	४८	६	२३	३९	५५	११	२४	३७	४८	१	१२	२२
फरवरी	+१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	+१२			
	३१	४१	४७	५३	०	६	१०	१३	१७	१८	२१	२०	१९	९	१७	१३	११	८	२	५६	५१	४३	३७	२९	२०	१०	०	४९			
मार्च	+१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	८	८	८	७	७	७	६	६	६	५	५	५	५	४	+४
	३८	२७	१४	३	५१	३७	२३	९	५५	४०	२४	७	५२	३७	२०	५	४०	७	११	५३	३५	१७	५८	४१	२४	४	४५	२८	८	५२	३३
एप्रैल	+४	२	३	३	३	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	+०	-०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	-२	
	१५	५७	३८	२१	४	४४	२९	१२	५५	४०	२	८	५१	३३	२२	५	१०	२४	३७	५१	४	१८	२९	४१	५०	४	१४	२३	३२	४१	
मई	-२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	-२
	४९	५६	२	१०	१७	२१	२४	३१	३४	३८	४०	४२	४३	४५	४४	५	४४	४२	४०	३८	३४	[illegible]	२८	२३	१८	१२	५	१	५३	४५	३७
जून	-२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	-०	+०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	+३	
	२९	२०	१२	१	५२	४०	२९	१७	८	५५	४३	३१	२०	७	६	१८	३०	४५	५७	१०	२२	३७	५०	१	१३	२७	४०	५१	६	१७	
जुलै	+३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	+६
	२९	४१	५२	५	१५	२६	३६	४६	५५	३	१३	२२	३९	३७	४३	५०	५६	२	६	९	१४	१७	१९	२०	२३	२४	२५	२४	२३	२२	२०
अगस्त	+	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	०	+०
	१८	१४	११	५	२	५६	५०	४२	५	२८	१८	९	५९	४९	३७	२६	१५	२	४९	३५	२०	६	५१	३६	२१	३	४८	३१	१२	५६	३७
सितम्बर	+०	+०	-०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	-९	
	९	०	१९	३८	५६	१७	३८	५८	१८	३९	१	२१	४१	३	२४	४४	७	२८	५१	११	३०	५४	१६	३६	५६	१७	३८	५८	१८	३८	
अक्तूबर	-९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	४	१४	१४	१४	१५	१५	५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	५८	१७	३६	५४	१३	३२	४९	६	२२	४०	५६	१३	२७	४३	५६	१०	२२	३५	४७	५९	८	१९	२८	३८	४५	५२	५९	५	८	१४	१७
नवम्बर	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	
	२०	२२	२३	[illegible]	२२	२२	१९	१५	१३	८	२	५६	४९	४२	३२	३३	१३	१	१८	३६	२२	७	५२	३५	१७	१	४२	[illegible]	२	४१	
दिसम्बर	११	१०	१०	१०	९	९	८	८	८	७	७	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	-०	+०	०	१	१	२	+२
	१२	५७	३३	१२	४७	[illegible]	५६	३३	६	३९	[illegible]	[illegible]	१७	४०	२०	५२	२२	५४	२५	५५	२४	५५	२१	[illegible]	२५	५	३५	५	३४	४	३३